गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २०

बाल आ किशोर उपन्यास



खण्ड १

गजेन्द्र ठाकुरक अड़तीस कृतिक
पाठाधारित आधुनिक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार
गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक
आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २०

बाल आ किशोर उपन्यास

खण्ड १

गजेन्द्र ठाकुरक अड़तीस कृतिक

पाठाधारित आधुनिक साहित्यिक समीक्षा

मूल साहित्यकार

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

२०२६

सर्वाधिकार

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

https://videha-ejournal.github.io/videha/

अनुक्रमणिका

१. कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

२. तरहड़िमे परीलोक

३. बाल गुरु

४. दीना-भदरी

५. अमर बाबा

६. मोतीदाइ

७. राजा सलहेस

८. बगियाक गाछ

९. बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

१०. चौहड़मल आ रेशमा

११. महुआ घटवारिन

१२. छेछन

१३. गरीबन बाबा

१४. वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

१५. गांगोदेवीक भगत

१६. मीरांसाहेब

१७. जट-जटिन

१८. लालमैन बाबा

१९. मूँगा आ जालिम सिंह

२०. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

२१. बत्तू

२२. भाट-भाटिन

२३. बिहुला

२४. ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

२५. डाकू रौहिणेय

२६. डोकी डोका

२७. गोनूझा आ दस ठोप बाबा

२८. ज्योति पँजियार

२९. कौवा आ फुद्दी

३०. माधव सिंह आ अमता गाम

३१. मोतीसाएरि

३२. मूर्खाधिराज

३३. नैका बनिजारा

३४. रघुनी मरर

३५. राजा अनसारी

३६. राजा ढोलन

३७. उगना

३८. ऊँटनी

सम्पादकीय भूमिका

मैथिली बाल आ किशोर कथासाहित्यक अध्ययनमे कथा कहल जाएबाक ढंग, बालपात्रक दृष्टि, लोकविश्वासक अद्भुत विधान आ सामाजिक न्याय सम्बन्धी प्रश्न सभकेँ एक संग पढ़ब आवश्यक अछि। एहि ग्रन्थमे मूल पाठक घटनाक्रम, पात्रक निर्णय, कथन-स्वर, अध्यायक रचना आ चित्र-संकेतक आधारपर अड़तीस कृतिक स्वतंत्र आलोचना प्रस्तुत कएल गेल अछि।

प्रथम कृति ‘कूट नाम : तरहड़िमे गोहि’ डिजिटल अपराध आ प्रमाण-विमर्शक किशोर उपन्यास अछि। तकर बाद संकलित सैंतीस ग्राफिक बालउपन्यासमे लोकनायकक गाथा, भक्तिपरम्परा, बालमनोविज्ञान, पर्यावरण, वर्ग-जाति, स्त्रीक स्वायत्तता, अद्भुत साहस, करुणा आ हास्यक अनेक रूप भेटैत अछि। ई वर्गीकरण कृतिक मुख्य प्रवृत्ति बुझबाक उपाय अछि, सभ रचनाक पूर्ण अर्थक स्थानापन्न नहि।

आलोचनाक मूल अनुशासन ई रहल अछि जे कथा-विश्वक चमत्कार केँ सत्यापित ऐतिहासिक घटना वा वैज्ञानिक सिद्धान्तक दर्जा नहि देल जाए। तहिना लोकगाथामे उपस्थित हिंसा, जातिगत बहिष्कार, बालविवाह अथवा स्त्रीक अपमान केँ परम्पराक नामपर नैतिक स्वीकृति नहि देल जा सकैत। एहन प्रसङ्गसभक साहित्यिक प्रभाव आ मानवीय परिणाम पृथक रूपसँ परीक्षण योग्य अछि।

रस, ध्वनि, चरित्र-विन्यास, कथा-क्रम, व्यंग्य, लोकस्मृति आ दृश्यात्मक रचनाक अध्ययन भारतीय काव्यशास्त्रीय संवेदनासँ जुड़ैत अछि। प्रमाण, अनुमान, भ्रम आ साक्ष्यक प्रश्न नव्य-न्याय सम्बन्धी पठनक अवसर खोलैत अछि। सामाजिक इतिहास

आ आधुनिक बालसाहित्यक आलोचनासँ एहि विवेचनक तुलनात्मक आधार बढ़ैत अछि। सभ अध्यायक मत मूल कृतिक उपलब्ध पाठसीमामे राखल गेल अछि; किछु अनिर्णीत प्रश्न अनिर्णीतहि छोड़ल गेल अछि।

कृति १ : कूट नाम : तरहड़िमे गोहि

अध्याय ० — तरहड़िमे गोहि

अभिलेखक दू पेटार आ अपराधक बदलैत व्याकरण

उपन्यासक प्रवेश-दृश्य ‘चन्ना गाछी’ लगक पुरान धोधरिमे घटित होइत अछि। बाहर ऋतु फेरबदल करैत अछि, भीतर कागजक गन्ध आ धूरि एकहि ठाम ठहरल अछि। ई विरोधाभास केवल वातावरण-सज्जा नहि : अपराध बदलैत रहैत अछि, मुदा ओकरा सुरक्षित रखनिहार अभिलेख स्वयं स्थिरताक दावा करैत अछि। नन्द आरुणि फाइलक घटना पढ़ैत छथि, गोप कुमार घटनाक पाछाँक नियम। एहि भूमिकाविभाजन सँ कथा दू प्रकारक ज्ञान अलग करैत अछि—सूचनाक संकलन आ सूचना सँ नियम निकालबाक विवेक।

पहिल पेटार खटाँसक मामला बन्द होएबाक चिन्ह अछि। दोसर पेटारपर ‘बादक पानि’ लिखल अछि। कथाकार एहि दू वस्तुकेँ काल-व्यवस्थाक उपकरण बनबैत छथि। पहिल अपराधमे गोली, भय आ देखल जा सकैत व्यक्ति छल; दोसरमे संख्या, खाता, अदृश्य हस्ताक्षर आ दूरी। नव पेटारक सामग्रीमे शारीरिक हिंसाक चिह्न नहि भेटब, हिंसाक समाप्ति नहि, क्षतिक माध्यमक परिवर्तनक संकेत अछि। गोप कुमार नव अपराधक जे रूप बतबैत छथि, ओहिमे घरक केवाड़ी तोड़बाक आवश्यकता समाप्त भऽ गेल अछि, मुदा घरक जीवनपर आक्रमण समाप्त नहि भेल अछि।

‘गोहि’क बिम्ब विशेष ध्यान योग्य अछि। एक कात जीव आ दोसर कात जाल; ऊपर थिर पानि आ नीचाँ लुका कऽ चलैत शिकारी। एहि कारण पाठ अपराधीकेँ मात्र रहस्यमय महादैत्य नहि बनबैत; ओ पाठककेँ पूछब सीखबैत अछि जे अपराधक पुनरुत्पादन कोन सामूहिक आदति आ व्यवस्थागत अवसरसँ सम्भव होइत अछि। नन्दक अनभिज्ञता पाठकक प्रवेश-द्वार बनैत अछि। गोप कुमारक व्याख्या शिक्षणक कार्य करैत अछि, मुदा ओ कार्य सम्पूर्ण उत्तर शुरूमे नहि दऽ दैत; कथा भीतर पैसबाक उत्कण्ठा बनौने रखैत अछि।

औपन्यासिक स्तरपर ‘फाइल भीतर फाइल’क व्यवस्था एकटा द्विस्तरीय आख्यान रचैत अछि। बाहरी कथा नन्द–गोपक, भीतरी कथा नव अपराधक। एहि सँ उपन्यासक समय सीधा आगाँ नहि बहैत; पुरान प्रकरण वर्तमानक प्रश्न आ भविष्यक संशयक माध्यम बनैत अछि। एहन संरचना पाठकक निर्णय स्थगित रखैत अछि : कोनो मोटरी बन्द होएब नैतिक प्रश्नक समाप्ति नहि।

सचित्र संस्करणक आरम्भिक अभिलेख-कोठरीक दृश्य दू मनुष्यकेँ एक खुलैत पेटारक लग देखबैत अछि; अगिला चित्रमे कागजक मोटरी पर झुकल नजरि अछि। चित्रसभ कथाक पुरान अभिलेखीय ठामकेँ मूर्त बनबैत छथि, मुदा डिजिटल अपराधक वास्तविक तकनीकी सत्य प्रमाणित नहि करैत छथि। एहि भेदक रक्षा समीक्षा लेल आवश्यक अछि।

एहि आरम्भक सामर्थ्य एतय अछि जे रहस्यक प्रश्न ‘अपराधी के?’ सँ पहिने ‘अपराध केँ चिन्हबाक पद्धति की?’ बनि जाइत अछि। सीमा एतबा जे गोप कुमारक वचन कई बेर सूत्रात्मक भऽ जाइत अछि; मुदा नन्दक ठोस प्रश्न तकर अमूर्तता घटबैत अछि। आरम्भ पाठककेँ अनुमानसँ धीरज दिश लऽ जाइत अछि।

अध्याय १ — नाम बिना जाल

गरीबी, अपमान, यन्त्र आ अदृश्य अधिकारक लालसा

पहिल अध्याय डिजिटल अपराधक आयोजनसँ पहिने ओ बालकक समाज देखबैत अछि जकर असली नाम बहुत पछाँ खुलबाक अछि। कमला-बलान लगक बाढ़िप्रवण गाम, ईंटा-भट्ठाक लेल बाहर कमाएब जाइत पिता, रोपनी करैत माय, अनियमित इजोत आ घरक अभाव—ई सभ ओकर बाल्यजीवनक भौतिक परिस्थिति थिक। लेखक ओकर यान्त्रिक कौशल कैं जन्मजात चमत्कार नहिएँ, अभ्यास आ उत्सुकताक रूपमे उभारैत छथि : बन्द रेडियो खोलब, टूटल तार जोड़ब आ घड़ी-जकाँ वस्तुक भीतर झाँकब, सभ सीखबाक अपना ढंग छी।

बूढ़ी स्त्रीक रेडियो पुनः बजबैत बालककैं धनसँ बेसी मान्यता भेटैत अछि। ई दृश्य पछिला घटनाक विपरीत-बिन्दु बनैत अछि। मोबाइल-दोकानमे मालिकक श्रम-विभाजन ओकर प्रतिभाकैं रोकैत अछि; पैसाक अस्पष्ट गड़बड़ीक दोष बिनु प्रमाण ओकरापर चढ़ाओल जाइत अछि। मालिकक जाति-संकेतित अपमान बालकक आत्मबोध बदलि दैत अछि। कथा एतय सामाजिक अवमाननाक मानसिक परिणाम पर सूक्ष्म विचारक अवसर दैत अछि—देखल जाएबाक तीव्र इच्छा आ स्वयं नुकायल रहबाक इच्छा एक संग उभरैत अछि।

मुदा एहि सामाजिक कारणसभकैं अपराधक अनिवार्य औचित्य मानब उचित नहि। अनेक मजदूरक सन्तान अपमान सहैत छथि, अपराधक जाल नहि बनबैत छथि।

लेखकक वास्तविक आलोचनात्मक उपलब्धि ओहि दोसर निर्णयमे अछि जतय बालक अपन कौशलक उपयोग करबाक बाट चुनैत अछि। तकनीकी दक्षता अपने नैतिकता नहि सिखबैत; ओ दक्षताकेँ परोपकारक रेडियो-मरम्मतिसँ दोसराक पाइ हरबाक प्रणाली दिश मोड़ैत अछि। एही चयनमे पात्रक नैतिक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

दुकानक बाहर अकेल ठाढ़ बालकक दृश्य आ पछाँ अन्हरगर यन्त्र-कक्षमे अनेक संगणकक सोझाँ झुकल युवकक चित्रक बीच दृष्टिगत परिवर्तन अछि। पहिलमे सामाजिक बहिष्करण, दोसरमे निजी नियंत्रणक भ्रम। चित्रसभ पाठकक सहानुभूति जगबैत अछि; मुदा सहानुभूति आ निरपराधिताक भेद एकर पाठमे हरदम राखब पड़त।

नामक मेटायब यहाँ अस्तित्व-विज्ञानक संकट सेहो अछि। अपराधी नाम हेराएब चाहैत अछि, मुदा प्रभावक माध्यमें सभक नजरिमे रहब सेहो चाहैत अछि। ‘तलगोहि’ एहि विरोधाभासक कूटनाम बनैत अछि। जीव पानिक तर रहैत अछि, मुदा ओकर हलचल ऊपर अनुभवल जाइत अछि। ई चरित्र-निर्माण विशुद्ध ‘दुष्ट जन्म’क सूत्रसँ बेसी जटिल अछि; सामाजिक अवमानना ओकरा बुझबैत अछि, मुदा ओकर कर्मक नैतिक छूट नहि दैत।

अध्यायक अन्तमे नन्द आ गोपक संवाद कथाक प्रारम्भिक प्रतिपक्षकेँ स्पष्ट करैत अछि। शारीरिक आतंकक परिचित विधि सँ अलग एखन सूचना-नियंत्रणक भय अछि। प्रथम अध्याय सफलतापूर्वक अपराधीकेँ रहस्य, मनुष्य आ संरचना—तीनू स्तरपर उपस्थित करैत अछि।

अध्याय २ — कार्यदलक नव पानि

पुरान अनुभव आ नव अनुसन्धानक संगम

दोसरा अध्यायमे विशेष कार्यदलक संस्थागत इतिहास उपस्थित होइत अछि। खटाँसक विरुद्ध अस्थायी व्यवस्था आब स्थायी कार्यालय, अभिलेख, नक्शा आ साझा सूचना-प्रणालीमे बदलल अछि। ई संक्रमण साहित्यिक अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि : व्यक्तिगत साहससँ संस्थागत स्मृति दिस कृतिक गति बढ़ैत अछि। लेखक कार्यदलक सफलता कैं गोली वा अद्वितीय नायकत्वसँ बेसी धैर्य, समन्वय आ सन्दर्भक पुनर्परीक्षणसँ जोड़ैत छथि।

अरुणेश मिश्रक व्यक्तित्वमे बीतल जाँचक थकान अछि, मुदा प्रमाणक शुचिता अक्षुण्ण अछि। अभयकान्त झा आवाज आ दूरभाष-संकेतक पुरान पद्धतिसँ शुरू करैत छथि; बदलल अपराधमे ओकर सीमा देखैत छथि। सुनयना ठाकुर एहि अभावक बीच नब दृष्टि लऽ कऽ अबैत छथि। सयकड़ो छोट शिकाइत एक-एक देखलापर असम्बद्ध लगैत अछि, मुदा सुनयना ओहि सभमे शब्द-चयन, प्रक्रिया आ दोहरायल गलतीक समानता पहचानैत छथि। एहि मे पात्रक बौद्धिक कार्य कथा-घटनाक भीतर विकसित होइत अछि; केवल ‘कुशल विशेषज्ञ’ कहि परिचय देल नहि जाइत।

गिट्ठऽक बिम्ब इहाँ तर्कक उपकरण बनैत अछि। अलग-अलग तार अछि, मुदा ओ सभ सम्भावित रूपसँ एकैं ठाम बान्हल हो सकैत अछि। अरुणेशक आपत्ति अत्यन्त आवश्यक : समान तरीका देखलाक बादो समान अपराधी निश्चित नहि होइत अछि। एहि ठाम उपन्यासक नव्य-न्यायसंगत प्रवृत्ति देखाइत अछि—हेतुक पर्याप्तता, अनुमानक

सीमा आ प्रत्यक्ष प्रमाणक माँग। कृतिक संवाद विद्या आ शंका कैँ विरोधी नहि, सहयात्री मानैत अछि।

सुनयनाक महत्त्व स्त्री-अनुसन्धानक सांकेतिक उपस्थिति मात्र नहि। ओ दैनिक सूचना कैँ एहन प्रश्न पूछैत छथि जाहि प्रश्नक आदति संस्थाक पुरान लोकमे नहि छल। छोट शिकाइतकैँ नगण्य मानबाक व्यवहार बदलि जाइत अछि। ई न्यायिक दृष्टिकोणक लोकतन्त्रीकरण थिक : क्षतिक मानवीय मूल्य रकमक पैघ-छोट मापसँ निर्धारित नहि होइत अछि।

सचित्र मूलमे सुनयनाकैँ संगणकक सोझाँ एकाग्र देखाओल गेल अछि, दोसर दृश्य सभमे दफ्तरक समूह-परामर्श अछि। ई दृश्य पृष्ठक लय बदलबैत अछि, मुदा लेखकक संवादक स्थान नहि लैत। पाठ आ चित्र संग मिलि पुरान कागज आ नव स्क्रीनक दृश्य-प्रतिमान रचैत अछि।

अध्यायक सीमा पर सेहो विचार आवश्यक : डिजिटल सूचना-विश्लेषणक कतेको चरण कथात्मक संक्षेपमे अछि; तकनीकी क्रिया-विवरणसँ बेसी पाठ अनुसन्धानक नैतिक पद्धति पर केन्द्रीत अछि। अपराध-रोमांचक दृष्टिसँ ई धीमापन बुझा सकैत अछि; मुदा पुस्तकक केन्द्रीय न्यायविचार लेल ई रचनात्मक चयन अछि।

अध्याय ३ — दू पानिक संगम

अदृश्य संख्यासँ भौतिक सम्पत्तिक प्रश्न

तेसर अध्याय नव अपराधक महत्त्वपूर्ण भौतिक सीमा खोलैत अछि : संख्या बनल पाइ अन्ततः जीवनक वस्तु, भूमि, मकान अथवा उपभोगमे बदलय चाहैत अछि। तलगोहिक तकनीकी नियन्त्रण अपूर्ण अछि जखन धरि संख्याक आर्थिक परिणाम भौतिक संसारमे प्रवेश नहि करैत। एहि प्रश्नक मार्फत लेखक आभासी अपराधकेँ वास्तविक आर्थिक संस्थासँ जोड़ैत छथि। उपन्यास केवल पर्दापर चमकैत अंकर कथा नहि रहि जाइत; ओकर सम्बन्ध श्रम, अधिकार आ सम्पत्तिक रचनासँ जुड़ि जाइत अछि।

बिरजू साह पुरान अपराध-व्यवस्थाक आर्थिक मध्यस्थ छथि। खटाँसक समयक भय-आधारित धन आ तलगोहिक समयक सूचना-आधारित धन, दुनूकेँ ‘साफ’ रूप देबाक सामाजिक लालसा अछि। पात्र-द्वयक सम्बन्ध वैर-विरोधी युगक सरल टक्कर नहि : पुरान ढंगक उपयोगिता नव अपराध लेल शेष अछि। एहि कारण ‘दू पानिक संगम’ शीर्षक विषयक वास्तविक सार पकड़ैत अछि। एकर पाछाँ अपराधक निरन्तरता अछि—माध्यम फेरल, लाभ-परिवर्तनक इच्छा नहि फेरल।

बिरजूक श्रमक नाम ‘पाइक धोबी’ कहब स्वयं चरित्रक आत्मप्रस्तुति थिक, निष्पक्ष नैतिक मूल्याङ्कन नहि। ओ अपन भूमिकाकेँ सेवाकार्य कहि अपराधक लाभार्थीसँ दूरी स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि। पाठक केँ एहि वाक्यक पाछाँक विडम्बना देखबाक अछि : पाइ ‘उज्जर’ भऽ सकैत अछि, ओकर उपार्जनक हिंसा ओहिसँ मेटाइत नहि।

कथानकमे ई संगम आगामी अनुसन्धानक बाट बनबैत अछि। पुरान प्रकरणक बाँचल नोक-निशान नव प्रकरणक संग तुलनीय भऽ जाइत अछि। जँ नव डिजिटल जगत अपन परिचय नुकबैत अछि तऽ जमीनमे परिणत पैसाक व्यवहार सामाजिक स्मृतिमे छाप

छोड़ैत अछि। ई विचार उपन्यासक रहस्यसँ अधिक, ओकर इतिहास-दृष्टिक मूलतत्त्व छी।

एहि अध्यायक आलोचनात्मक सीमा ई अछि जे आर्थिक तकनीकक समूची प्रक्रिया उपन्यास लिखनिहारक कथात्मक समझावन पर टिकल अछि। ओकरा वास्तविक बैंक-विधि अथवा वित्तीय अनुसन्धानक प्रमाण-पत्र नहि मानब। कृतिमे ओकर प्रयोजन दू व्यवस्था जोड़ब आ अपराधक प्रभावक अन्तिम धरातल चिन्हित करब अछि।

अध्याय ४ — पहिल गिट्ठऽ

मनोजक मार्फत अभिलेखमे जीवित मनुष्यक प्रवेश

चारिम अध्यायमे भव्य अपराध-जालक रहस्य एक बेर छोट घरक असुरक्षामे उतरैत अछि। मनोज अपन पिता बीमारी, बहिनक बियाहक ऋण आ रोजनामचाक अभावसँ घेरायल युवक अछि। ओकर बैंक-खाताक उपयोगसँ अपराध-शृंखलाक पहिल मानवीय सम्बन्ध भेटैत अछि। ई दृश्य महत्त्वपूर्ण अछि, कारण कृति एखन धरि सांकेतिक नाम, संख्या आ सूचना-पद्धतिक चर्चा करैत छल; आब कथक प्रमाणक दोसर छोरपर काँपैत मनुष्य ठाढ़ करैत छथि।

मनोजक क्रिया नितान्त निरपराध घोषित कऽ देब साहित्यिक सरलीकरण होयत। ओ अपना नामपर खाता देबाक सहमति दैत अछि। मुदा ओ अपराधक विशाल जालक मालिक नहि, आर्थिक विवशतामे फँसल कड़ी अछि। अरुणेश–अभयकान्तक दृष्टि एहि दू बातकेँ एक संग राखैत अछि : कानूनक प्रश्न आ मनुष्यक परिस्थिति। अभयकान्तक

एक कप चाह देबाक प्रसङ्ग केवल करुणाक सजावट नहि; पूछताछक स्वर बदलबाक क्षण अछि। इहाँ विश्वासक सम्भावना खुलैत अछि आ अपराध-जालक ‘छोट माछ’ ओकर अनुचित संरचनाक साक्षी बनबाक मौका पबैत अछि।

गिट्ठऽ पहिनेक अध्यायमे अनुसन्धानक अनुमान छल; आब मनोजक जिअैत अनुभव सँ ओकर जाँच सम्भव होइत अछि। ई अनुमानक माटिपर उतरब थिक। सुनयना जकर समानता डिजिटल निशानमे देखैत छलीह, से एखन जीवित पथक सहायता सँ परखल जा सकैत अछि। तथापि एक ठाम पहुँचल कड़ी सम्पूर्ण जालक सिद्धि नहि; कृति स्वयं एही सावधानी पर टिकैत अछि।

अध्यायक अन्तमे ‘तलगोहि’ नामक संकेत पहिल बेर कार्यदलक सोझाँ स्पष्ट होइत अछि, मुदा ओ असली परिचय नहि। पाठकक मनमे ज्ञानक दू स्तर बनैत अछि : संकेत मिलब आ व्यक्ति सिद्ध होएब। एहि विभाजनसँ कथा अपूर्ण खोजकेँ समयसँ पहिने विजय नहि मानैत।

सामाजिक पाठ सेहो गहिर अछि। मनोजक गरीबी दया मात्र नहि उत्पन्न करैत; अपराध-जाल कोना असमान आर्थिक अवस्थाक फायदा उठा सकैत अछि, से दिखबैत अछि। छोट कड़ी कानूनी जोखिम बेसी उठबैत अछि, जालक शीर्षस्थ नियन्त्रक दूर रहैत अछि। एहना स्थितिमे न्याय छोट लोकक गिरफ्तारीपर समाप्त नहि हो सकैत अछि।

चारिम अध्यायक प्रमुख उपलब्धि एतय अछि जे प्रमाण-शोध आ करुणा एक-दोसराकेँ कमजोर नहि करैत। करुणा सँ सही प्रश्न पुछबाक बाट खुलि सकैत अछि, मुदा उत्तरक स्वतन्त्र जाँच तखनहुँ अनिवार्य अछि।

अध्याय ५ — नाम बदलल, निशान बचल

कूटनामक मृत्यु आ व्यवहारक निरन्तरता

एहि अध्यायमे तलगोहि अपन चारूकातक ‘चुप्पी’ महसूस करैत अछि। मनोजक सम्पर्क बन्द, पहिनुक साथी जवाब नहि दैत, पुरान मंच शान्त—एहि सभ विखण्डित संकेतकेँ ओ खतरा बुझैत अछि। अपराधी स्वयं ओही निरीक्षण-विधिक सहायता लैत अछि जाहि विधिसँ कार्यदल ओकरा चिन्हबाक प्रयास करैत अछि : अलग घटनाक बीच सम्बन्ध जोड़ब। एहि दर्पणात्मक रचनासँ जाँचक दुनू पक्ष बौद्धिक रूपसँ सक्रिय देखाइत छथि।

बिरजू साह ओकरा ‘पानिक भीतर’ रहबाक परामर्श दैत छथि। तलगोहि अपन नाम मेटबैत अछि आ पनिकौआ कूटनाम अपनबैत अछि। ई परिवर्तन नहिएँ भेष-बदलाक साधारण घटना, नहिएँ चरित्रक वास्तविक पुनर्जन्म। नाम दूटा अछि, मुदा काजक क्रम, संपर्कक ढंग आ दोहरायल छोट त्रुटि समान। लेखक ‘नाम कपड़ा, चालि देह’क प्रतिमा द्वारा अपन मुख्य विचार व्यक्त करैत छथि। कपड़ा इच्छानुसार बदलि सकैत अछि; देहगत आदति पुनरावृत्तिक माध्यमसँ पहचान बनबैत अछि।

सुनयना पहिने हताश होइत छथि, कारण तलगोहिक नाम बन्द भऽ गेल। अभयकान्त हुनका स्वयं पुरान निष्कर्षक स्मरण करबैत छथि—नाम नहि, तरीका जाँचू। ई घटनाक मानसिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। तेज अन्वेषक सेहो अपन सिद्धान्त संकटमे बिसरि

सकैत अछि; सहयोगक अर्थ तकर स्मरण कराएब अछि। एतय अनुभवी सहयोगी नव पीढ़ीक प्रतिभाकेँ दबबैत नहि, ओ प्रतिभाकेँ अपन सही आधारपर घुरबैत छथि।

मुदा कथाक ‘एक्के त्रुटि’केँ एखन पर्यन्त स्वतंत्र न्यायिक पहचानक अपरिवर्तनीय प्रमाण कहब असंगत होयत। समान व्यवहार अनेक कारणसँ भऽ सकैत अछि। लेखक स्वयं बादक अध्यायसभमे एहि सावधानीकेँ आवश्यक मानैत छथि। एहि अध्यायक निष्कर्ष जाँचक नव दिशा थिक, दण्डादेश नहि।

नन्द आरुणिक बाह्य कथा एहि निर्णयक अर्थ दोहरबैत अछि : न्यायालय मनुष्य आ आरोपक विधिक प्रमाण माँगैत अछि, स्मृति व्यवहारक पुनरावृत्तिक संकेत रखैत अछि। एहि भेदकेँ न्यायालय बनाम स्मृतिक सरलीकृत विरोध मानब नहि; दुनूक कार्य अलग अछि। साहित्यिक रूपमे नाम बदलबाक दृश्य पुस्तकक शीर्षककेँ नितान्त औचित्य दैत अछि।

अध्याय ६ — दूरीक द्वन्द्व

डिजिटल छाहसँ माटिपर पएरक निशान धरि

‘दूरीक द्वन्द्व’मे सुनयना एक डिजिटल ठाम सँ दोसर धरि संकेत पछुआइत छथि, मुदा लक्ष्य हर बेर कने आगाँ खिसकि जाइत अछि। कथाकार एहि अनुवर्तनकेँ नदीक माछ आ हाथक दूरीसँ देखबैत छथि। ई रूपक पाठककेँ तकनीकी प्रक्रियाक पूर्ण विवरणक आवश्यकता बिना अनुसन्धानक असममित शक्ति-बोध दैत अछि : अपराधीक चुनेल क्षेत्रमे अपराधीकेँ स्थानीय लाभ अछि।

अभयकान्त एहि प्रतिस्पर्धाक मैदान बदलबाक निर्णय करैत छथि। डिजिटल पानिमे अपराधी गहींर डुबकी मारि सकैत अछि; मुदा आर्थिक लाभ जखन घर, जमीन वा भौतिक खरीद बनैत अछि, तखन सामाजिक ठाममे तकर निशान रहि जाइत अछि। एहि कारण ‘नव पानि’ आ ‘पुरान माटि’ केवल अलंकार नहि, अनुसन्धानक दू परस्परपूरक सूचना-क्षेत्र बनैत अछि। उपन्यास अपराध-शोधकेँ अद्भुत यन्त्रक विजय बनाकऽ नहि छोड़ैत; ओ सामुदायिक स्मृति आ भौतिक परिस्थितिक महत्त्व सेहो स्वीकारैत अछि।

अरुणेश सुनयना आ अभयकान्तक ज्ञानकेँ एक-दोसराक विकल्प नहि मानैत छथि। आधुनिक संकेत-पठन बिना पुरान धनमार्गक परीक्षण अपूर्ण अछि; पुरान मार्गक अनुभव बिना डिजिटल अन्वेषण अधूरा। ई संवाद उपन्यासक सामूहिक नायकत्वक प्रधान उदाहरण अछि। केओ एकटा पात्र पूर्ण समाधान नहि जनैत; प्रश्नक आकार बदलला पर दल अपन संरचना बदलैत अछि।

धीरकेतु झाक वापसी एहि पद्धतिक मानवीय विस्तार अछि। हुनका संगणकक सूक्ष्म संकेत नहि बुझाइत, मुदा व्यक्तिक चालि, अज्ञात पाइक बाट आ पुरान व्यवहारक अनुभव अछि। लेखक हुनका सर्वज्ञ रहस्यवादी नहि बनबैत; हुनकर ज्ञानक सीमाओ स्पष्ट करैत छथि। एहि सूक्ष्मतासँ पीढ़ीक प्रश्न प्रतिस्पर्धाक बदला सहभागितामे बदलैत अछि।

एहि अध्यायमे आर्थिक जीवनक आधारभूत सत्य—संख्या अपन आपमे भोजन नहि—पुनः आबैत अछि। एहि वाक्यक पुनरावृत्ति कतेको पाठककेँ व्याख्यात्मक बुझा सकैत अछि। तथापि संरचनाक दृष्टिसँ ई केन्द्रीय बिम्बक पुनरागमन थिक, जे अगिला अध्यायक प्रत्यक्ष आर्थिक सुरागक तैयारी करैत अछि।

अध्याय ७ — बूढ़ गोहिक छाया

पुरान वित्तीय मार्गक दुधारी स्मृति

अध्याय ७ मे बन्द चिनी-मिलक खाता, धर्मशालाक अचानक जीर्णोद्धार आ पोखरिक ठेकाक असामान्य राशि एक-एक कऽ सामने अबैत अछि। लेखक पहिले सावधानीसँ ई स्वीकार करैत छथि जे एहि घटनासभमे अलग-अलग देखलापर अपराध अवश्यंभावी नहि। मिल फेर खुलि सकैत अछि, दान भऽ सकैत अछि, ठेका महग भऽ सकैत अछि। आलोचनात्मक रूपमे ई स्वीकारोक्ति महत्त्वपूर्ण अछि, कारण रहस्यक हर विचित्र तथ्य अपराधक निश्चित प्रमाण नहि होइत।

अभयकान्त खटाँसक समयक कागज निकालि नव पैसाक बाटसँ मिलबैत छथि। समान क्रम, समान प्रकारक बेनामी कारोबार आ पुरान विधिक पुनरागमन देखैत छथि। धीरकेतु झा एहि पहिचानक आधारपर बिरजू साहक नाम लैत छथि। अध्याय ‘बूढ़ गोहि’क उपस्थिति सँ अपराधक सामाजिक समय विस्तार करैत अछि : हिंसक अपराधीक मृत्यु भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर आर्थिक संरचनाक लाभार्थी अनेक बरख धरि सक्रिय रहि सकैत छथि।

बिरजू स्वयं सामान्य कथाक निर्णायक हत्यारा नहि; ओ मध्यस्थता, मौन आ कागजी रूपान्तरणक परम्परा थिकथि। कथाकारक चित्रमे हुनकर हाथ रक्तसँ बेसी कागजक

संग जुड़ल अछि। ई रूप साहित्यिक दृष्टिसँ तीक्ष्ण अछि : हिंसा केवल शरीरपर आघात नहि, ककरो संचय आ जीवन-सम्भावनाकेँ संस्थागत रास्तासँ हरब सेहो अछि।

अरुणेश फेर याद करबैत छथि जे बिरजू दिस संकेत जाएब गिरफ्तारीक स्वतन्त्र आधार नहि। यदि समयसँ पहिने हुनका पकड़बाक प्रयास कएल जाए, तँ अदृश्य आयोजक सतर्क भऽ सकैत अछि। अतः कथा ‘शीघ्र पकड़ल’क रोमांचसँ बेसी अनुसन्धानक क्रम आ प्रमाण-सुरक्षाक प्रश्न रखैत अछि।

नन्द–गोप संवादमे अपराधक स्मृति दुधारी कहल गेल अछि। अपराधी पुरान जालसँ नव पाठ सीखैत अछि; अन्वेषक सेहो ओही जालक बचल छापसँ नव अपराधक पहचान संभव करैत अछि। एहि विचारमे उपन्यास अपन ऐतिहासिक पद्धति निर्मित करैत अछि : इतिहास नहिएँ केवल पूर्व घटनाक तालिका, बल्कि वर्तमानक संरचनामे पुरान प्रतिरूपक परीक्षा छी।

सामान्य भौतिक सुरागक विस्तारक कारण अध्याय अपेक्षाकृत शांत अछि; मुदा ई धीमापन कथाक गहराइ बढ़बैत अछि। असली लक्ष्य व्यक्ति नहि, व्यक्ति धरि पहुँचबैत सम्बन्धक शृंखला अछि।

अध्याय ८ — जे नाम मेटौलक, से देखाइ चाहैत छल

मान्यताक भूख आ अपराधीक आत्म-विरोध

अष्टम अध्याय उपन्यासक सबसँ तीव्र मनोवैज्ञानिक मोड़सभमे अछि। पनिकौआक रूपमे लुकायल अपराधी धन आ नियन्त्रण अर्जित कऽ लेने अछि, मुदा ओकर बाल्यक अपमान एखनहुँ अनुत्तरित अछि। मोबाइल-दोकानक मालिक जकरा जाति आ श्रमक आधारपर नीच देखौने छल, तकर आँखिमे अपन सफलता देखएबाक लालसा मरल नहि। पहिनुक अपराधी-गठनक बीज एतय फलबैत अछि—ओ अनाम रहिकऽ प्रभुत्व चाहैत अछि, मुदा अनाम रहब कारण ककरो सोझाँ ‘हम एही छी’ कहि नहि सकैत।

एहि विरोधाभासक समाधान लेल ओ अपन माएक घर पक्का करवबैत अछि, गामक बाट सुधरबैत अछि, पुरान दोकानदारक परिवार धरि अज्ञात धन पहुँचेबैत अछि। एहि सभ क्रियाक सामाजिक परिणाम बाह्य रूपसँ कल्याणकारी बुझा सकैत अछि, मुदा उपन्यास हुनका नैतिक प्रायश्चित्त कहल नहि मानैत। साधनक स्रोत, भेजनिहारक उद्देश्य आ नियंत्रित गोपनीयता अलग प्रश्न अछि। माता-पिताक प्रति बचल लगाव वा सामाजिक मान्यताक भूख ओकर दोसर लोकक आर्थिक क्षतिकेँ मेटबैत नहि।

धीरकेतु झा अचानक आयल धनक सूचना देबैत छथि। अभयकान्त तकर वितरणमे आर्थिक लाभसँ बेसी भावनात्मक केन्द्र देखैत छथि। ई अन्वेषणक महत्त्वपूर्ण नब पद्धति अछि : अपराधी द्वारा कएल असामान्य वित्तीय निर्णयक पाछाँ सम्बन्धक स्मृति पढ़ब। सुनयना पुरान विद्यालय, दोकान आ गामक अभिलेख देखैत छथि। एहि कार्यसँ डिजिटल कूटनामक सम्भावित सम्बन्ध एक गामक छूटि गेल बालकसँ बनैत अछि।

किन्तु अध्यायक श्रेष्ठ नैतिक क्षण अरुणेशक सावधान निर्णयमे अछि। अज्ञात धन आ अतीतक एक नामक सम्बन्ध रोचक अछि, प्रमाणसिद्ध नहि। एकरा न्यायालयमे उभारबाक लेल स्वतन्त्र आधार चाही। समीक्षक लेल ई महत्त्वपूर्ण भेद अछि :

मनोवैज्ञानिक व्याख्या कथाक भीतर सम्भाव्य भऽ सकैत अछि, मुदा विधिक निश्चयक पर्याप्त कारण ओहिमात्रसँ नहि बनैत।

अध्यायक शीर्षक अपराधीक भीतरी विडम्बना पूर्णतः व्यक्त करैत अछि। कूटनाम ओकर रक्षा करैत अछि, परन्तु वएह नाम ओकर अस्तित्वक मान्यताक बाट रोकैत अछि। तखन ओ स्वयं पानिसँ किनार दिस पहिल पएर बढ़बैत अछि। कथानकमे ई कड़ी बादक निर्णायक त्रुटिक मनोवैज्ञानिक भूमिका अछि।

तथापि लेखकक व्याख्यात्मक वाक्य अनेक स्थानपर पात्रक भीतरक अर्थ स्पष्ट-प्रस्तुत करैत अछि। किछु स्थानमे पाठकक स्वतन्त्र अनुमान लेल अधिक मौन राखल जा सकैत छल। ई सीमा रहितो सामाजिक अपमान, शक्ति-लालसा आ आत्म-पहिचानक त्रिकोण एहि अध्यायकेँ कृतिक केन्द्र बनबैत अछि।

अध्याय ९ — अनुमान आ प्रमाण

तत्काल नियन्त्रणक प्रलोभन आ विधिसम्मत धैर्य

नवम अध्यायक पहिल दृश्य सुनयनाक अधीरतासँ खुलैत अछि। हुनका लग एक सम्भावित असली नाम, बाल्यक गाम आ घटनाक भावनात्मक सम्बन्ध अछि; तखन गिरफ्तारी किएक नहि? अरुणेश एहि प्रश्नक उत्तरमे उपन्यासक न्यायविचारक केन्द्रीय सीमा खींचैत छथि : शक अनुसन्धानक दिशा हो सकैत अछि, मुदा न्यायिक सिद्धिक स्थान नहि लऽ सकैत। कागज, साक्षी, समय-संगति आ घटनासँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध—ई सभक अभावमे पहचानक रोचक कथा अपराधक प्रमाण नहि।

‘जागल प्रतीक्षा’क भाव अध्यायक महत्त्वपूर्ण नैतिक उपलब्धि अछि। अरुणेशक धैर्य निष्क्रियता नहि; ओ स्वतन्त्र प्रमाण सुरक्षित रखबाक तैयारी अछि। एतय जाँचक गति आ न्यायिक शुद्धताक बीच तनाव उपस्थित अछि। सुनयना जायज प्रश्न करैत छथि : जावत प्रतीक्षा, तावत नव पीड़ित? कृति एहि कठिनाइकेँ सम्पूर्ण रूपसँ समाधान नहि दैत, मुदा तत्काल गिरफ्तारी आ अन्ततः प्रभावी न्यायबीचक सम्भावित अन्तरपर जोर दैत अछि।

एहि बीच पनिकौआक भीतर नब सामाजिक भूख उभरैत अछि। बिना नामक धन आ शक्ति ओकरा पर्याप्त नहि। ओ दोसराक नामपर वैध दोकान, समाज-सेवा आ संरक्षण देनिहार प्रभावशाली लोकसँ सम्बन्ध बनबैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठाक चाह ओकर अपराधक गुप्त सीमारेखाकेँ पार करबैत अछि। पुरान खटाँस आ नव पनिकौआक तुलनामे एकहि तृष्णाक अलग माध्यम देखाओल जाइत अछि—पहिलक भय-प्रसिद्धि, दोसरक धनजनित प्रतिष्ठा।

एहि अध्यायक सशक्त विडम्बना ई अछि जे अपराधीक स्वेच्छाचालित परिवर्तन जाँचक सम्भावित सहायता बनैत अछि। कार्यदल ओकरा सार्वजनिक बनबाक लेल विवश नहि करैत; ओकर भीतरी अभाव ओकरा स्वयं सार्वजनिक ठाम दिस खींचैत अछि। मुदा सामाजिक दिखाई देब आ विधिसम्मत पकड़ा जाएब अलग अवस्था थिक, एही कारण लेखक अरुणेशक अनुशासन छोड़ेब नहि चाहैत छथि।

आलोचनात्मक रूपमे एतय न्याय-पद्धतिक विश्वसनीयता अर्जित करबाक प्रयास अछि, नहि कि वास्तविक दण्ड-प्रक्रियाक विधिक पाठ्यपुस्तक। लेखकक ‘प्रमाण’ शब्द

विचारक नैतिक भार वहन करैत अछि; विशिष्ट विधिक प्रावधानक पूर्ण विश्लेषण मूल पाठमे नहि अछि। कथाक आशय, अन्वेषणक अपने मनगढन्त निष्कर्षसँ बचब अछि।

अध्याय १० — दरार

दू अपराध-पीढ़ीक हितभेद आ अनुसन्धानक नैतिक अनिश्चितता

दसम अध्यायमे बिरजू साह आ पनिकौआक गठबन्धनक भीतरक फाट खुलैत अछि। बिरजूक जीवनभरक नीति अदृश्य रहब अछि, जखन कि पनिकौआ मान्यता लेल समाजक सोझाँ बढ़ब चाहैत अछि। एक गोटे लेल अपराध जीवित बचबाक आर्थिक युक्ति अछि; दोसर लेल अपने अस्तित्वक प्रभाव देखएबाक व्यसन। एहिसँ दू पीढ़ी अलग होइत छथि। दरार बाहरी पुलिस-बलसँ कम, जालक भीतर अलग-अलग आकांक्षा सँ अधिक बनैत अछि।

बिरजूक चेतावनी पनिकौआ अस्वीकार करैत अछि आ बूढ़ मध्यस्थकेँ भयमे जीबनिहार कहैत अछि। ई संवाद एकटा गूढ़ प्रश्न उठबैत अछि : जे लोक अपराधक मुनाफापर जीबैत अछि, ओ अपनाकेँ ‘निर्भय’ बुझब कियैक चाहैत अछि? भीतरक अभाव भरबाक लेल बाहरी प्रभुत्वक प्रदर्शन तखन अपरिहार्य बुझाइत अछि। पनिकौआ एही भ्रममे पुरान सहायकसँ दूर भऽ रहल अछि।

अभयकान्त तनावक लाभ उठाबैत छथि। प्रत्यक्ष गिरफ्तारीक बदला किछु सूचनाक कानाफूसी, अलग ठामक छापा आ पुरान परिचितक गिरफ्तारीक समाचार सँ बिरजू सतर्क होइत छथि। ओ अपन कागज समेटैत, सम्पर्क घटबैत आ धन सुरक्षित करबाक

चेष्टा करैत छथि। एहि प्रक्रियामे नब सुराग भेटैत अछि। साहित्यिक स्तरपर ई ‘दरारमे सँ पानि पैसब’क नाटकीय मूर्त रूप अछि।

तथापि एहि पद्धतिपर नैतिक प्रश्न आवश्यक अछि। डर उत्पन्न कऽ ककरो व्यवहार बदलायब अनुसन्धानक कथा-उपकरण अछि; एकरा स्वतः निर्दोष सरकारी आचरणक प्रमाण नहि कहल जा सकैत। मूल पाठ एहि निर्णयक व्यावहारिक फल दिखबैत अछि, मुदा प्रभावित व्यक्तिक अधिकार वा न्यायिक परीक्षणपर बहुत विस्तार नहि दैत। समीक्षा एहि मौनकेँ चिन्हित करैत अछि, जखन लेखकक उद्देश्यकेँ अपराधी-जालक भीतरक मनोवैज्ञानिक दरार देखब मानैत अछि।

बिरजू अन्ततः एहि कथासँ बाहर निकलि जाइत छथि। ओहि हटबकेँ ‘न्याय सम्पन्न’ कहब गलती होयत। कथक नन्दक प्रश्नमे ई असुविधा जोगैत अछि : बिरजू बचल कि नहि? गोप कुमारक उत्तर अधूरा व्यवस्था-संबन्धी चिन्ताकेँ बचौने रखैत अछि। ओहि अर्थमे दसमा अध्याय भौतिक शिकारक सफलता नहि, अपराधक संस्थागत अधूरापनक आलोचना सेहो अछि।

अध्याय ११ — किनार

अदृश्यताक विफल आश्रय आ खुलल छोड़ल बाट

एगारहम अध्याय पनिकौआक नव असहायताक दृश्यसँ आरम्भ होइत अछि। बिरजू साह चलि गेलाह; डिजिटल संख्या एखनहुँ शेष अछि, मुदा ओकरा उपयोगी भौतिक सम्पत्तिमे बदलनिहार विश्वस्त माध्यम नहि। अपराधी जतय पहिने सर्वशक्तिमान

बुझाइत छल, ओतय ओकर निर्भरता स्पष्ट होइत अछि। ई विडम्बना मुख्यतः जालक स्वभावसँ निकलैत अछि : कियो एक गोटे सभ कड़ी नहि होइत; जालक अत्यावश्यक मध्यस्थ हटिते शीर्षस्थ नियन्त्रकक सामर्थ्य घटि सकैत अछि।

पैनिक भीतरक सुरक्षा आ माटिपर आवश्यक पएरक विरोध एहि अध्यायमे उच्चतम तनाव धरि पहुँचैत अछि। पनिकौआ अपन पुरान डिजिटल ठाममे रहितो जीवन नहि चला सकैत; नव व्यक्ति पर भरोसा करब सेहो ओकरा जोखिम बुझाइत अछि। अपराध-प्रणालीक संगठित अविश्वास अन्ततः ओकर अपने नियन्त्रणकेँ कमजोर करैत अछि। एतय ‘असगर’ होएब जीवनक सामान्य दुःख नहि, अपराधीक नीति-जनित अलगाव अछि।

अभयकान्त सभ बाट बन्द करबाक बदला एक बाट खुलल छोड़ब चुनैत छथि। कथा एहि बाटकेँ पुलिस द्वारा बनाओल रास्ता बतबैत अछि, जकर दिशा कमला-बलानक पार अछि। पाठक परिप्रेक्ष्यमे ई निर्णय रहस्यक उन्नतिक क्षण अछि—जतय लक्ष्य अपन स्वतन्त्र निर्णय बुझैत अछि, ओहि निर्णयक विकल्पसभ पहिनेसँ नियन्त्रित भऽ चुकल अछि।

एतय कथाक शक्ति आ सीमा साथ-साथ अछि। शक्ति ई जे शिकारक भौगोलिक चिन्ह ‘किनार’ पहिनुक रूपकसभसँ जुड़ि कऽ ठोस मार्ग बनैत अछि। सीमा ई जे जाँचक रणनीतिक समूचा संचालन संक्षिप्त प्रतीकात्मक रूपमे देखाओल गेल; नैतिक-वैधानिक सुरक्षा उपन्यास एखन धरि स्पष्ट नहि करैत। कथात्मक स्तरपर ई व्यवस्था विश्वासनीय तनाव रचैत अछि, मुदा वास्तविक जीवनक आदर्श प्रक्रिया घोषित करबाक पर्याप्त आधार नहि।

‘किनार’क अर्थ जिअबाक सम्भावना सेहो अछि आ पकड़ा जेबाक क्षेत्र सेहो। नदीक दुनू कात, पानिक भीतर आ बाहर, गुप्त नाम आ स्थायी देह—सभ द्वैत एहि अध्यायमे एकत्र होइत अछि। पूर्व बिम्ब एखन प्रत्यक्ष घटना बनेबाक तैयारीमे छथि।

अध्याय १२ — जलसमाधि

देहक अनुपस्थिति, मृत्यु-अनुमान आ कथात्मक छल

बारहम अध्याय मूल आख्यानक प्रथम अन्त-जकाँ बनैत अछि। पनिकौआ खुलल बाट दिस बढ़ैत अछि; कमला-बलानक डोंगी, अन्हार, भीजल झोरा आ भँवरक प्रसङ्ग अबैत अछि। लेखक जानि-बुझि घटनाक सटीक विवरण सीमित रखैत छथि। नदीमे डगमगाएल डोंगी, बादमे भेटल झोरा आ चप्पल, मुदा देहक अनुपस्थिति—एहि सभसँ मृत्यु-धारणा बनैत अछि, प्रत्यक्ष निर्विवाद मृत्युप्रमाण नहि।

एहि भेदपर कृतिक पूरा अन्तनिर्णय निर्भर अछि। मृत्यु ‘भेल’ कहि पाठक पक्का मानि सकैत छथि, कारण वर्णन नदीक भयावहताकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। मुदा जखन देह नहि भेटैत, तखन मूल प्रमाण केवल डोंगी आ वस्तुक बरामदगी अछि। कथाकार एतय पाठककेँ ठीक ओही त्रुटिक अनुभव करबैत छथि जकर विरुद्ध अरुणेश पहिने चेतौने रहथि—सम्भावना केँ निष्कर्ष बुझि लेब। एहि कारण आख्यान-तकनीक स्वयं तर्क-विचारक परीक्षा बनि जाइत अछि।

घटनाक बाद अपराधीक असली नाम ‘छोटन’ सामने अबैत अछि। ई साधारण नाम आ तलगोहि/पनिकौआक भयावह नामसभक अन्तर कथाक मानवीय व्यङ्ग्य अछि।

बाल्यक एकटा मामूली पहचान पुनः उभरैत अछि, जकरा पात्र स्वयं बहुत दूर पाछाँ छोड़ि देने छल। नामक विडम्बना एतय विशेष तीक्ष्ण अछि : ओ सभक नजरिमे आबय चाहैत छल, मुदा कथित जलसमाधिक क्षणमे ओकर देहो नहि देखल जाइत।

तथापि ‘छोटन’क खुलासा अलग सामाजिक प्रश्न सेहो आनैत अछि। जाति, श्रम आ अभावसँ जुड़ल पहिचान कूटनामक चकाचौंधक नीचे दबि गेल छल। ई नाम भेटब अपराध माफ करब नहि, व्यक्ति केना अपन मूल सन्दर्भसँ कटैत अछि से बुझबाक अवसर अछि।

उपसंहारमे गोप कुमार अपराधी व्यक्ति मरला पर सेहो जालक तरीका बचि सकबाक चेतावनी दैत छथि। नन्द मोटरी बन्द करैत छथि आ पाठ प्रथम समापनक आकार लैत अछि। मुदा एतय समीक्षाकेँ निर्णायक सावधानी चाही : **मूल पुस्तक एकर बाद ‘समाप्त’ लिखि फेर ‘अध्याय ०० : जालक भीतर जाल’ खोलैत अछि।** अतः बारहम अध्यायक मृत्यु-विधान अन्तिम प्रमाणित कथान्त नहि; ई जानि-बुझि गढ़ल प्रथम अन्त अछि। एहि अन्तक वास्तविक अर्थ अगिला नव अध्याय ०० पढ़लाक बादे स्पष्ट होइत अछि।

साहित्यिक सफलताक दृष्टिसँ ई अध्याय पाठकक स्मृति आ शंकाक परीक्षा लेत अछि। एकर भावुक अन्तिमता प्रभावी अछि; मुदा जँ पाठक पाछाँक अध्याय नहि पढ़थि, तँ पूरा कृतिक तर्क उलटि जाएत। एही कारण मूल संरचनाक पूर्ण सुरक्षा अनिवार्य अछि।

उपसंहार — प्रथम समाप्ति : स्मृति, नाम आ जालक शेष प्रश्न

मूल रचनाक ‘उपसंहार’ अध्याय १२क बाद आ प्रथम ‘समाप्त’क पहिने उपस्थित अछि। एतय नन्द आरुणि बुझैत छथि जे दोसर गोहिक कथित अन्त पहिल अपराधीक अन्तसँ मिलता-जुलता अछि। गोप कुमार ई सरल निष्कर्ष स्वीकार नहि करैत। व्यक्ति समाप्त भेलो पर जालक पद्धति जीवित रहि सकैत अछि; बिरजू-जकाँ पुरान मध्यस्थक बचल रहब अपराधक ऐतिहासिक उत्तरजीविताक उदाहरण अछि।

ई समापन आत्मतुष्ट विजयगान नहि। नन्द ‘हम की जितलहुँ?’ पूछैत छथि; गोप उत्तरमे नामक बदला निशानक पहिचानकेँ उपलब्धि बतबैत छथि। एतय कृतिक बृहत्तर ऐतिहासिक चेतना प्रकट होइत अछि—व्यक्ति पर विजय संभव, मुदा व्यवस्थागत पुनरागमनक संभावना शेष। अभिलेख-रक्षा एहि पुनरागमनक विरुद्ध सामाजिक स्मृतिशक्तिक कार्य करैत अछि।

उपसंहारमे दुनू पेटार साथ राखल जाइत अछि : एकटा बन्दूकक, दोसर संख्याक। ई रूपक पुरान आ नव अपराधक माध्यमगत अन्तर स्वीकारैत, तकर लाभ, भय आ संरक्षणक समान प्रवृत्तिक परीक्षण करैत अछि। तेसर अपराधीक सम्भावना सेहो उठैत अछि, जाहि सँ कथाकार सम्पन्न घटनाक बाहर भविष्यक प्रश्न बचा रखैत छथि।

मुदा एहि उपसंहारक ‘समाप्त’ अन्तिम सत्य नहि। मूल पुस्तकमे ओकर तुरन्त पाछाँ नव अध्याय ० खुलैत अछि आ छोटनक कथित मृत्यु पुनः परखल जाइत अछि। तैं ई उपसंहार साहित्यिक दृष्टिसँ ‘पहिल अन्त’ अछि—जानि-बुझि अपूर्ण। एहि प्रसङ्गमे पाठकक अपने विश्वासक सीमा रचनाक अन्तर्निहित प्रश्न बनैत अछि।

अन्तिम अध्याय ० — जालक भीतर जाल

पहिल समाप्तिक विखण्डन आ प्रमाणक पुनर्स्थापना

मूल पुस्तक ‘समाप्त’ लिखि पाठककेँ एक बेर कथाक बाहर पठबैत अछि, मुदा तत्काल नव ‘अध्याय ०’ खुलैत अछि। ई पुनरारम्भ केवल आश्चर्य-उत्पादक परिशिष्ट नहि, सम्पूर्ण उपन्यासक प्रमाण-विचारक निर्णायक परीक्षा अछि। नन्द आरुणि उठि जाएबाक तैयारी करैत छथि; गोप कुमार ‘फाइल’ आ ‘रेकर्ड’क अन्तर बताकऽ हुनका रोकैत छथि। पहिल सार्वजनिक फाइलमे छोटनक जलसमाधि देखाओल गेल छल। पेटारक पाछाँ नुकायल करिया मोटरीमे गोपक गुप्त विवरण अछि। एक कथा ‘पूर्ण’ होएबाक दावा करैत अछि, दोसर कथा ओहि पूर्णताक शर्त पर प्रश्न करैत अछि।

सुनयना घटनाक एगारहम दिन भीजल झोरा फेर जाँचैत छथि। प्रश्न सरल मुदा तीक्ष्ण अछि : जे मनुष्य सम्पूर्ण जीवन अपन निशान नुकौने रहल, ओ संकटमे अपन सभ जीवनक प्रमाण एकहि झोरामे किएक छोड़त? देह नहि भेटल; मृत्यु निष्कर्ष नहि, संभावना अछि। सुनयना स्वयं जीवित रहबाक घोषणा सेहो नहि करैत छथि। ई दोसर अतिशयोक्तिसँ बचब उपन्यासक नैतिक सफलता अछि। शंका बचल रखब आ ओहि शंकाकेँ परखबाक साधन खोजनाइ अन्वेषणक प्रामाणिक रूप बनैत अछि।

न्यायिक अनुमतिक बाद कार्यदल पुरान जालक नियंत्रित ‘छाह’ रचैत अछि, जाहिमे वास्तविक पीड़ित वा वास्तविक धन नहि। एकटा संकेतमात्र सँ अपराधीक पहचान घोषित नहि होइत; समयान्तरालमे कतेको संकेत, समान जाँच-क्रम, ठहरबाक लय आ मानवीय सम्बन्ध जोड़ल जाइत अछि। अरुणेशक संयम फेर उपस्थित अछि। गुमटी धरि

पहुँचलापर सेहो तुरन्त गिरफ्तारी नहि; अलग-अलग स्रोतक निष्कर्ष एक-दोसराकेँ पुष्ट करैत अछि तखनहि ‘अनुमान नहि’क स्थिति आबैत अछि। एहि प्रसङ्गमे पूर्व अध्यायक पद्धति घटनाक स्तरपर सत्यापन पबैत अछि।

छोटन सीमालग एक सामान्य मोबाइल-मरम्मतिक गुमटीमे भेटैत अछि। एहि दृश्यक मार्मिकता एतय अछि जे तेरह बर्खक बालकक यान्त्रिक दक्षता पुनः उपस्थित अछि, मुदा आब ओ दक्षता अपराधजाल आ गुप्त पहिचानक लमहर काल पछाँ जीवित बचल अछि। चरित्रक जैविक निरन्तरता नामसभक विखण्डनकेँ पार कऽ उभरैत अछि। सुनयना ओकर ‘तरीका’सँ पहुँचल छथि, कूटनामसँ नहि। छोटनक पुरान नाम बजिते ओकर प्रतिरोध टूटैत अछि।

अन्तिम पृष्ठसभ विशेष व्याख्यात्मक सतर्कता माँगैत अछि। कथा नदीक डोंगी, चप्पल, भीजल झोरा आ पानिक भँवर केँ मूर्त घटनाक रूपमे देखबैत अछि; फेर अन्तिम संवाद ओ दृश्यकेँ ‘साइबर-नदी’ आ डिजिटल पर्दाक भाषामे पुनर्व्याख्या करैत अछि। समीक्षा एकरा बिना भेदक केवल ‘वास्तविक नदी नहि छल’ अथवा ‘सभ वस्तु केवल यन्त्र छल’ कहि निश्चित नहि बनाओत। पाठमे यथार्थवादी दृश्य आ साइबर-रूपकक परत एक-दोसरामे पैसैत अछि; ‘सभटा साइबर छल’ मूल कथनक साहित्यिक प्रभावो अछि। एहि मिश्रित स्तरक कारण पाठक पर दृश्य-विश्वसनीयता आ बिम्ब-व्याख्याक चुनौती एक संग पड़ैत अछि।

एहि अतिरिक्त नैतिक प्रश्न ई अछि जे छोटन पकड़ायलाक बादो सार्वजनिक जलसमाधि-अभिलेख तत्काल नहि बदलल गेल। पाठमे कारण शेष अपराध-जालक जाँचक गोपनीयता कहल गेल अछि; मुदा अभिलेखक सार्वजनिक सत्य आ गोपनीय राज्य-सूचनाक भेद आलोचनात्मक परीक्षणक विषय बनैत अछि। गोप कुमारक वचन

‘किछु सत्यक रक्षा चुप्पीसँ’ एकटा सम्भाव्य तर्क अछि, सर्वकालिक न्यायसिद्धान्त नहि। गोपनीयताक नियन्त्रण, उत्तरदायित्व आ नागरिकक अधिकारपर पाठ अपेक्षाकृत कम समय दैत अछि; ई कृतिक गम्भीर आलोचनात्मक सीमा छी।

दुनू अध्याय ० एक-दोसराक प्रतिबिम्ब अछि। पहिलमे नन्द नव मोटरी खोलैत छथि, अन्तिममे पेटारक पाछाँक गुप्त मोटरी। पहिलमे नाम–निशानक प्रश्न उठैत अछि, अन्तिममे नाम-अनुक्रम छोड़ि जीवित व्यक्ति धरि पहुँचबाक परीक्षण सम्पन्न होइत अछि। ‘जलसमाधि’क मृत्यु कूटनामक मृत्यु सिद्ध होइत अछि। छोटन जीवित न्यायिक हिरासतमे अछि। एहि प्रकार कथाक वास्तविक अन्त ‘अपराधी मरि गेल’ नहि, ‘पहिचान पुनः प्रमाणित भऽ गेल’ अछि।

अन्तराध्यायिक अध्ययन : सात विमर्श

१. दू अध्याय ० आ वृत्ताकार संरचना। आरम्भिक अध्याय ० अभिलेख-प्रवेशक प्रशिक्षण दैत अछि; अन्तिम अध्याय ० ओहि प्रशिक्षणक परीक्षा लैत अछि। पहिल पेटारसँ दोसर पेटार, दोसर पेटारसँ करिया मोटरी—दस्तावेजक परत बढ़ैत अछि। ‘समाप्त’क बीचमे रहब पाठकक सहज अन्त-स्वीकारक प्रवृत्ति उजागर करैत अछि।

२. सामाजिक अपमानसँ मान्यताक भूख धरि। अध्याय १ मे मोबाइल-दोकानदारक अपमान चरित्रक स्मृतिमे बसैत अछि; अध्याय ८ मे ओहि कस्बा दिश गुप्त धनक प्रवाह, अध्याय ९ मे प्रतिष्ठाक चाह, अध्याय १० मे बिरजूसँ दरार बनैत अछि। भावनात्मक व्याख्या अपराधक औचित्य नहि।

३. सामूहिक अनुसन्धान-पद्धति। अध्याय २ मे सुनयना व्यवहारक समानता, अध्याय ४ मे मनोजक मानवीय कड़ी, अध्याय ६–७ मे अभयकान्त आ धीरकेतु पुरान आर्थिक मार्ग, अध्याय ९ मे अरुणेशक प्रमाण-नियम, आ अन्तिम ० मे सभ पद्धति स्वतन्त्र स्रोतद्वारा जुड़ैत अछि। नायक व्यक्तिगत सर्वज्ञता नहि, परस्परपरीक्षित ज्ञान अछि।

४. मनोज आ बिरजू : असमान कड़ी। मनोज आर्थिक विवशतामे खाता दैत अछि; बिरजू पुरान अपराधी-धनक मध्यस्थता जानि-बुझि निभबैत छथि। दुनू जालक हिस्सा रहितो हुनक स्वायत्तता, लाभ आ निर्णयक विस्तार समान नहि। ‘सभ कड़ी समान अपराधी’ निष्कर्ष उचित नहि।

५. पानि, माटि, गोहि, जाल आ किनार। पानि अदृश्य संचरण आ बचावक क्षेत्र, माटि भौतिक लाभक क्षेत्र, गोहि नियन्त्रक, जाल संरचना आ किनार जोखिमपूर्ण रूपान्तरणक स्थल अछि। अन्तिम अध्याय एहि बिम्बसभकेँ उलटैत अछि : नदी व्यक्ति नहि, ओकर बनाओल कथाकेँ डुबबैत अछि।

६. अनुमान आ प्रमाणक बदलैत अनुपात। आरम्भमे नाम, संख्या आ चुप्पी अलग सूचना अछि। अध्याय ४ मे मनोजक साक्ष्य, ७ मे पुरान धन-मार्ग, ८ मे भावनात्मक स्थान-सम्बन्ध, ९ मे एहि सभक अपर्याप्तता, अन्तिममे बहुस्रोत मिलानक निर्णायक स्थिति बनैत अछि।

७. चित्र आ गद्यक सम्बन्ध। मूल पुस्तकमे अभिलेख-कोठली, पेटार, रेडियो-मरम्मति, मोबाइल-दोकान सँ निकालल बालक, संगणकक कक्ष आ अन्वेषण-समूहक चित्र अछि। चित्र दृश्य-गति बनबैत अछि; प्रकाशित कथामे उल्लिखित तकनीकी वा

ऐतिहासिक तथ्यक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। कतिपय पूर्णपृष्ठीय चित्र पाठकक पढ़बाक लय बदलैत अछि।

सम्पूर्ण उपन्यासक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

विषय आ संरचना

‘कूट नाम : तरहड़िमे गोहि’ अपराध-रोमांचक बाहरी आवरणमे ज्ञान, नैतिकता आ सामाजिक स्मृतिक उपन्यास अछि। एकर मूल प्रश्न अपराधीक नाम नहि, अपराध-प्रणालीक निरन्तरता आ प्रमाणक भरोसेमन्द आधार अछि। कथामे पहिल दृश्यसँ अन्तिम दृश्य धरि दुइ प्रकारक कथा चलैत अछि : नन्द–गोपक अभिलेखीय पाठ आ छोटनक जीवन–कार्यदलक अनुसन्धान। ई द्विस्तर उपन्यासकेँ एक साधारण अन्वेषणक क्रमसँ अलग पहचान दैत अछि।

चरित्र-योजना

छोटनक शैशव, अपमान, यान्त्रिक प्रतिभा, अपराध-संगठन आ मान्यताक भूख कृतिक प्रमुख मानविकी सूत्र अछि। सुनयना नव तकनीकी दृष्टि, अभयकान्त अनुभवजन्य अनुशासन, अरुणेश अनुमानक नैतिक सीमा, धीरकेतु स्थानीय आर्थिक स्मृति आ गोप कुमार ऐतिहासिक पाठ-विवेकक प्रतिनिधि छथि। एहि भूमिकासभमे किछु पात्र प्रतीकात्मक रूपसँ स्पष्ट विभक्त छथि; हुनकर व्यक्तिगत जीवनक जटिलता सीमित देखाइत अछि। मुदा जखन ई समूह घटना-साक्ष्यपर बहस करैत अछि, तखन हुनकर अन्तर कथा आगाँ बढ़बैत अछि।

भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय पक्ष

भयानक रसक मुख्य स्रोत प्रत्यक्ष रक्त नहि, अदृश्य क्षतिक आशंका अछि। करुणाक क्षण मनोजक विवशता आ छोटनक बाल्यक अवमाननामे अछि; अद्भुतक रूप नव उपकरण वा ‘अजेय’ पात्रक विस्मयसँ कम, लुप्त तथ्यक धीरे-धीरे खुलबासँ बनैत अछि। शान्त रसक चरम कथित जलसमाधिक थिर पानि नहि; अन्तिम मोटरी बन्द होएबाक बादक विवेकपूर्ण स्थिरता बुझि पड़ैत अछि। ई अर्थान्वेषण पाठकक अनुभवपर निर्भर अछि, वस्तुनिष्ठ एकमात्र वर्गीकरण नहि।

नव्य न्याय आ प्रमाण-विचार

पाठमे बारम्बार अनुमानकेँ प्रमाण न मानबाक चेतावनी अछि। व्यवहारक समानता कारण-सम्बन्धक पर्याप्त प्रमाण नहि; नाम-सदृश्यता स्वतन्त्र पहचान नहि; देहक अनुपस्थिति मृत्यु सिद्ध करबाक प्रमाण नहि। अन्तिम अध्यायक बहु-स्रोत मिलान एही त्रुटिसभ सँ रक्षा करबाक कथा-उपाय अछि। तर्कक दृष्टिसँ पुस्तक अभियोग-पूर्व विवेक आ अनुमेय निष्कर्षक मर्यादा रखैत अछि। तथापि पारम्परिक नव्य न्यायिक संज्ञा-संरचनाक पूर्ण औपचारिक प्रतिपादन मूल उपन्यास नहि करैत, तैं एहि विश्लेषणकेँ तर्क-पद्धतिक साहित्यिक समानता रूपमे बुझबाक चाही।

पाश्चात्य कथावैज्ञानिक पक्ष

उपन्यास फ्रेम-कथा, बहुकालिक अभिलेख-पाठ, आवर्तक बिम्ब आ पुनर्लिखल अन्तक संयोजन करैत अछि। नन्दक सीमित वर्तमान-दृष्टि आ गुप्त मोटरीक विलम्बित उद्घाटन पाठकक ज्ञान नियंत्रित करैत अछि। ‘समाप्त’क बाद पुनः अध्याय ० पाठकक कालबोधकेँ उलटि दैत अछि। ई संरचनात्मक चयन केवल चौंकाएब नहि, पाठक द्वारा मानल पहिल अन्तक विश्वसनीयताकेँ पुनर्परीक्षित करब अछि।

इतिहास आ समाज

कमला-बलानक भूगोल, ईंटा-भट्ठाक श्रम, रोपनी, कस्बाक फोन-दोकान, बेरोजगारी आ छोट ऋण आर्थिक असमानताक पृष्ठभूमि बनैत अछि। अपराधक डिजिटल रूप एहि स्थानीय आधारकेँ विस्थापित नहि करैत; ओकर लाभ उठबैत अछि। अपराध एकटा ‘अदृश्य’ प्रणाली होयब कारण माटिक जीवनपर ओकर प्रभाव घटैत नहि।

भाषा आ शैली

मैथिली गद्यक मुख्य विशेषता छोट संवाद, समरूप छवि आ आवर्तक प्रश्न अछि। ‘पानि’, ‘गोहि’, ‘माटि’, ‘निशान’, ‘नाम’ सन शब्द प्रतीक बनि कथाक आरम्भसँ अन्त धरि घुरैत अछि। एहि पुनरावृत्तिक कारण विषयक एकता बलगर अछि, मुदा कतहु-कतहु विचारक पात्रमुखी व्याख्या अधिक होइत अछि, जइ सँ पात्रक मौन आ पाठकक स्वतन्त्र निर्णयक अवसर संकुचित होइत अछि। आधुनिक यन्त्र-शब्दक संग स्थानीय व्यवहारक शब्दावली साहित्यिक तनाव रचैत अछि।

रूप आ दृश्य-विन्यास

चित्रसभ कथाक दृश्य-गति बदलबैत अछि। पूर्णपृष्ठीय चित्रक बीच छोट अनुच्छेद वा अल्प शब्दवला पृष्ठक उपस्थिति लिखित व्याख्यासँ दृश्यात्मक प्रभाव दिस गमन करबैत अछि। ई सचित्र कथा-कौशलक विशिष्ट गुण अछि; पुस्तककेँ केवल निरन्तर गद्य उपन्यास मानि एकर मापन उचित नहि। तथापि चित्रसभक बीच एके दृश्य-प्रकारक पुनरावृत्ति पर स्वतंत्र दृश्य-सम्पादन आवश्यक बुझि पड़ैत अछि।

सीमा आ अनिर्णीत प्रश्न

पहिल, अपराध-जाँचक मनोवैज्ञानिक प्रेरणा आ न्यायिक सीमा पर स्पष्ट उपदेशात्मक संवाद कतेको बेर दोहराइत अछि। दोसर, सीमापार आर्थिक जालक व्यावहारिक प्रक्रिया कथाक आवश्यकता अनुसार संक्षिप्त अछि; ओकरा बाह्य वास्तविकता प्रमाणित करबाक दावामे बदलायब अनुचित। तेसर, बिरजू-जकाँ बाँचल मध्यस्थक उत्तरदायित्व आ सार्वजनिक मृत्यु-अभिलेख सुरक्षित रखबाक नैतिक वैधता स्पष्ट समाधान नहि पबैत अछि। चारिम, अध्याय १२क सजीव नदी-वर्णन आ अन्तिम अध्यायक ‘साइबर-नदी’क भाषा बीच यथार्थ आ रूपकक सीमा सचेत पाठक लेल बहसक बिन्दु रहैत अछि। ई सीमा चिन्हबाक अर्थ कृतिक कलात्मक प्रयोजन नकारब नहि।

अन्तिम निर्णय

एहि उपन्यासक विशिष्ट साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे ओ अपराधक गुत्थी सुलझेबाक संग पाठकक निश्चितता पर प्रश्न उठबैत अछि। छोटनक असली नाम अन्तिम समाधान नहि; असली समाधान सत्यक परीक्षणक विधि अछि। पहिल अन्तमे

जकरा मृत मानि लेल जाइत अछि, अन्तिम अध्याय देखबैत अछि जे ओ जीवित अछि; जे नाम मरल, से कूटनाम छल। एहि अर्थमे पुस्तकक केन्द्र स्थिर अछि—अपराधीक नाम बदलबाक सामर्थ्यसँ बेसी स्थायी ओकर अपन तरीका आ ओकरा चिन्हबाक सामूहिक स्मृति। ई कृति आधुनिक अपराध-बिम्बकेँ मिथिलाक भूगोल, श्रमजीवन आ इतिहासक स्मृति सँ जोड़बाक कारण मैथिली आख्यानमे उल्लेखनीय विवेचन-योग्य स्थान बनबैत अछि।

मूल ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। कूट नाम : तरहड़िमे गोहि। विदेह, लेखक-प्रदत्त सचित्र Word मूल पाण्डुलिपि; मूल प्रकाशकीय विवरण २०२२/२०२६; ISBN 978-93-345-1251-9।

ई समीक्षा-ग्रन्थक सम्पूर्ण आलोचना, पात्र-नाम, अध्याय-क्रम आ मूल कथा-सम्बन्ध एहि मूल पाण्डुलिपिक आधारपर तैयार अछि।

कृति २ : तरहड़िमे परीलोक

उपक्रम : अक्षरमुष्टिका

बाबीक कोरा, अक्षर आ कल्पनाक प्रवेश

उपक्रममे बा ओमकेँ हाथक मुद्रासँ अक्षर बनायब सिखबैत छथि। एतय भाषा पुस्तकक बाहरी माध्यम मात्र नहि, कथा खोलबाक पहिल काज अछि। बाक आँगुर आ ओमक कोमल पकड़ि अक्षरक आकृति बनबैत अछि; एहि सान दृश्यसँ बालकक देह, स्मृति आ भाषा एक संबंधमे आबैत अछि। रात्रिक थकानक बादो ओम ‘परीबला’ खिस्सा मांगैत अछि। लोककथा जन्म लैत अछि कागजक अधिकारसँ नहि, पीढ़ीक मध्य उच्चरित कथनसँ।

बाहर सियारक आवाज आ भीतर लालटेनक पीयर इजोत, गामक यथार्थ केँ फैन्टेसीक द्वार बनबैत अछि। बा जखन चन्ना गाछी, कारी कौआ, धोधरि आ उज्जर परीलोकक नाम लैत छथि, तखन कथाक आगामी बिम्बसभ बोलचालक सांस्कृतिक सम्पत्तिक रूपमे जन्मैत अछि। अन्तिम उपसंहारमे ओमक मुट्ठीमे बांक आँगुर बचल रहबाक दृश्य एहि उपक्रम सँ वृत्त पूरा करैत अछि। दुनू कात कथा आ अक्षर देहक स्मृतिसँ जुड़ल अछि।

ई प्रस्तावना बालक लेल सुनबाक सहजता बनबैत अछि आ सजग पाठक लेल प्रश्न सेहो छोड़ैत अछि: जे अद्भुत संसार सुनाओल जा रहल अछि, ओकर सत्ता ‘बाहर’ अछि

वा बूढ़ पीढ़ीक स्मृति, बालकक कल्पना आ कथावाचिक रचना भीतर? मूल कथा एहि प्रश्नक एकमात्र निर्णय नहि दैत। एही खुलापन फैन्टेसीक रचनात्मक सामर्थ्य अछि।

अध्याय १ : चन्ना गाछीक झमटगर बोन

आमक गन्धसँ भयक धोधरि धरि

प्रथम अध्यायमे चन्ना गाछीक आम-बोन बालकक परिचित अनुभवक क्षेत्र अछि। आस्था साथी सभक संग आम चुनैत अछि। ओकर दस-बर्खीय व्यक्तित्वक मूल परिचय ‘प्रश्न पुछबामे निर्भीक’ होयब अछि; कथाकार एहि गुणकेँ सुरुमे स्पष्ट करैत छथि, ताकि अगिला सोलह अध्यायमे ओकर प्रश्न-क्षमता कथा चलाबय। आमक गन्ध, टोकरी, साथीसभक हँसी आ भोरक बसात पढ़निहारकेँ प्रत्यक्ष स्थानीय संसार दैत अछि।

बोन घन होइत अछि, इजोत पातर आ सामूहिक हँसी पाछाँ छूटि जाइत अछि। कथा भयकेँ अचानक नहि फेकैत; परिचित इन्द्रियानुभव एक-एक कऽ कम करैत आस्थाकेँ एकाकी बनबैत अछि। पहिने एकटा कारी कौआ, तकर बाद झुंड। गाछक कारी धोधरि आरम्भमे भयावह बुझाइत अछि, मुदा काक-आक्रमणक क्षण वएह एकमात्र आश्रय बनि जाइत अछि। एहि प्रकार खतरा आ सुरक्षा एकही वस्तुमे समाहित छथि—जे धोधरि भीतरक भयक मुख छल, वएह नव संसारक प्रवेश-द्वार भेल।

अध्यायक चित्रक्रम एहि परिवर्तनकेँ विस्तार दैत अछि। आम चुनैत बालिका, त्रिकोणी आकृतिसँ बनल घन बोन, कारी कौआ आ मुख सन खुजल गाछक खोखला तना—ई

चारि दृश्य एकटा क्रम बनबैत अछि। चित्र पाठककेँ कथाक भयक गति पाठ सँ अगुआओल अनुभूति करबैत अछि। विशेषतः गाछक देहमे मुख-जकाँ धोधरि सामान्य वनस्पति केँ सजीव-अपरिचित वस्तु बनबैत अछि।

बाल-साहित्यिक दृष्टिसँ आस्थाक प्रतिक्रिया विश्वसनीय अछि : ओ बहादुरीक भाषण नहि दैत, डेरा कऽ भागैत अछि। भयक प्रतिकूल निर्णयसँ कथा खुलैत अछि; एकर अर्थ आस्था ‘भूल’ कएलक, एहन नैतिक निष्कर्ष नहि। अप्रत्याशित संसारमे प्रवेश स्वयं अनुभव सँ सीखबाक आरम्भ अछि। अध्यायक अन्तमे दिशा, ऊपर-नीचाँ आ समयक स्थिर मान्यता विचलित होइत अछि। ई स्थानान्तरण आगामी वैज्ञानिक प्रश्नसभक मनोवैज्ञानिक आधार तैयार करैत अछि।

अध्याय २ : खसब, जे उड़ब सन लगलै

भारहीनता, दिशाभ्रम आ अपरिचित आकाश

दोसरा अध्यायमे धोधरिसँ खसबाक अनुभव ‘उड़बाक’ सन होइत अछि। एतय भौतिक प्रक्रियाक यथार्थवादी नकल करबाक बदला कथाकार अनुभूतिक भाषा चुनैत छथि। आस्थाकेँ ने गिरबाक सामान्य पेटगुड़गुड़ी, ने हवा लगबाक आघात। हाथ फैलौला पर पाँखि-जकाँ लागब शरीरक सीमा बदलबाक बाल-कल्पना अछि। तथापि अतिलाघवक अनुभवमे सेहो ओकर प्रश्न जीवित अछि—ई खसब कतय रुकत? विस्मय भयकेँ समाप्त नहि करैत; दुनू एक संग रहैत अछि।

समयक व्यतिक्रम—घड़ीक हिसाबे बहुत देर बीतब—सांसारिक नियमक स्थगनक संकेत अछि। आस्था नरम ठामपर बिना चोट पहुँचैत अछि; आकाश नील नहि, दूधक छाल्ही सन उज्जर अछि। इन्द्रिय-रूपक मैथिलीक परिचित घरेलू वस्तुसँ अपरिचित ब्रह्माण्डक रंग व्यक्त करैत अछि। दूधक छाल्ही सन उज्जरता फैन्टेसी कैँ बिल्कुल विदेशी रूप नहि दैत; ओ गामक अनुभव सँ बनल अद्भुत ठाम अछि।

आस्था सोचैत अछि जे गाछक धोधरि भीतर कतबा आर लोक वा पशु-पाखी बिलायल होएत। ग्रामीण स्मृतिमे भुतहा गाछक लोकविश्वास एतय नव अर्थ पबैत अछि। कथाकार एही क्षण रहस्यकैँ केवल निजी दुर्घटना नहि रखैत, सामुदायिक गुमशुदगीक सम्भावनाक प्रश्नमे बदलैत छथि। यद्यपि एखन ओकर ठोस उत्तर नहि, प्रश्नक विस्तार कथाक नैतिक क्षेत्र बढ़बैत अछि।

अध्यायक दृश्यपटलमे उज्जर विस्तार आ हरियर बिन्दु महत्त्वपूर्ण अछि। अदृश्य गहराइसँ निकलि रंगक छोट बिन्दु दिस दृष्टि जाएब पाठककैँ प्रथम भेटक तैयारी करैत अछि। ई दृश्यात्मक विराम ग्राफिक उपन्यासक खास लय बनबैत अछि—कतेको पृष्ठ दृश्य, अल्प पाठ, फेर निर्णायक प्रश्न। एहि सम्पादनमे श्रव्य लोककथा आ दृश्य फैन्टेसीक सम्मिलन अछि।

अध्याय ३ : टुराकोस

दूर महादेशक मित्रता आ भाषाक अद्भुत समानता

तेसर अध्यायमे हरियर बिन्दु एकटा हरियर पाँखिवाली चिड़ै रूपेँ साकार होइत अछि, जकर उड़बाक पाँखिक रंग लाल अछि। ओ अपन नाम टुराकोस आ अफ्रीकासँ आबबाक परिचय दैत अछि। आस्था अपन एशियाक परिचय दैत अछि आ तुरन्त प्रश्न करैत अछि—चिड़ै मनुष्यक बोली केना बजैत अछि? ओ प्रश्न केवल अद्भुत वस्तुपर आश्चर्य नहि, कथाक नियम बुझबाक विधि अछि। ‘एतय सभ मनुष्य-जकाँ बाजैत अछि’ सुनि ओ लगाओल नियम कैँ फेर परखैत अछि : अफ्रीकामे रहिते टुराकोसक बोलबाक क्षमता समान रहै कि नहि?

टुराकोसक आस्थाक कान्हपर बैसब बालिका–पशु मित्रताक सरल दृश्य अछि, मुदा एहि परस्पर स्पर्शमे अविश्वाससँ विश्वास दिस परिवर्तन अछि। नाम, महादेश आ प्रजातिक अन्तर रहितो दुनू यात्रिकक स्थिति एक अछि—दुनू असगर आ घरक बाटसँ अपरिचित। एहि कारण मित्रता केवल मधुर भावना नहि, यात्रा करबाक व्यावहारिक सहारा सेहो अछि।

बरखामे टुराकोसक लाल रंग झड़बाक प्रसङ्ग एकर चित्रात्मक उपस्थिति जटिल करैत अछि। हरियर रंग स्थिर, लाल रंग पानिसँ उतरैत। आस्थाक होलीवला प्रश्न स्थानीय रंगलिपिक अनुभव कैँ अफ्रीकी पक्षीक देहसँ जोड़ैत अछि। अद्भुत संसार वास्तविक पक्षीविज्ञानक प्रतिवेदन नहि, मुदा रंग, बरखा आ हँसीक संयोग बालिका लेल अनुभवक वैविध्य बनबैत अछि।

अध्यायक सर्वाधिक अर्थवान क्षण टुराकोसक हँसी थमबाक अछि। ओहो बाहर निकलबाक बाट ताकि रहल अछि। एहि उत्तरसँ टुराकोस मार्गदर्शक सर्वज्ञ पात्र नहि रहैत; ओ समान जोखिमवला साथी बनैत अछि। ज्ञानक असमानता घटैत अछि, संयुक्त

जिज्ञासा बढ़ैत अछि। बालकक यात्रा कथामे ई परिवर्तन महत्त्वपूर्ण अछि : अद्भुत पशु ‘उद्धारकर्ता’ नहि, सह-अन्वेषक बनि रहल अछि।

अध्याय ४ : बिनु सूर्यक इजोत

विज्ञानक प्रश्न आ व्यवस्थित कृत्रिम संसार

चारिम अध्यायक आरम्भमे एहन प्रकाश अछि जकर प्रत्यक्ष सूर्य नहि। रस्ता साफ आ असामान्य रूपसँ चिक्कन अछि; सामान्य चलबो अत्यधिक गतिमय भऽ जाइत अछि। आस्था अपन स्कूलक विज्ञान-पाठ सँ समझब चाहैत अछि जे वृक्षसभ प्रकाशसंश्लेषण केना करैत छथि। कार्बन डाइऑक्साइड, पातक रन्ध्र, जड़िसँ पानि आ खनिज, सूर्य-विकिरण, क्लोरोप्लास्ट आ ऑक्सीजन—ई संदर्भक उल्लेख लेखकक उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि : फैन्टेसी बालिकाक वैज्ञानिक प्रश्नक विरोधी नहि।

टुराकोस तुरन्त वैज्ञानिक समाधान नहि दैत; ओ आस्थाक तीक्ष्ण बुद्धिक प्रशंसा करैत कहैत अछि जे एहन लोकक आवश्यकता अछि। ‘आवश्यकता’ शब्द पर आस्था कैँ खटकब कथाक पहिल व्यापक राजनीतिक संकेत अछि। जकरा एक सुन्दर संसारमे प्रतिभाक आदर बुझायल छल, से सम्भव अछि नियन्त्रणक संसाधनक खोज हो। एहि शब्दक अनेक अर्थक बीज अध्याय १० मे सपनाक वस्तुगत उपयोगक रहस्य खोलत।

तितली आ टिकुलीक प्रवेशसँ दल विस्तृत होइत अछि। दू पाँखिवाला आ चारि पाँखिवाला प्राणीसभक बीच वर्गीकरणक दृश्योपमा अछि; किंतु ओ सभ जियैत परिचित जाति-विज्ञानक पूरा विवरण नहि। कथाक विज्ञान वास्तविक अवधारणाक नाम

लैत अछि, मुदा अद्भुत क्रिया मनगढन्त विश्वक नियमपर निर्भर अछि—दुनू स्तर मिश्रित करब समीक्षा लेल अनुचित होयत।

उत्तरबरिया महारक उल्लेख प्रकाशक प्रश्नकेँ सत्ता आ पर्यावरणक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि। जरि प्रश्न उठल जे बिना सूर्य इजोत कतयसँ, तकर पछाँ जागत प्रश्न—कृत्रिम ऊर्जा ककरा लग अछि, ककरा लेल काज करैत अछि, आ एही उज्जरतेक ओइपार की नुकायल अछि? एहि क्रममे ‘परीलोक’क सुन्दरता स्वतन्त्र प्राकृतिक अस्तित्व नहि, सम्भवतः निर्मित प्रणाली बनि रहल अछि।

अध्यायक उपलब्धि केवल स्कूलक विज्ञान-पाठ दोहरायब नहि; प्रश्न पूछैत बालिकाक दृष्टिसँ जड़वत् संसारकेँ अनिश्चयक रूपमे राखब अछि। पाठक केँ तत्काल समाधान नहि भेटब, ओकर जिज्ञासाकेँ सक्रिय बनबैत अछि।

अध्याय ५ : महारक ओइपारक खिस्सा

सुरम्य स्थानक पर्यावरणीय अधःपक्ष

पाँचम अध्यायमे परीलोकक उत्तरी महार सुन्दर दृश्यपटलकेँ दू भागमे बाँटि दैत अछि। महारक एहि कात कृत्रिम इजोत, सफाई आ विकास; ओहि कात कूड़ा-कचरा फेकबाक परिणामसँ बनल रेगिस्तान। टुराकोसक वचनमे रानीक आदेशक प्रभाव उपस्थित अछि। एतय कथा पर्यावरणक संकट केँ मात्र प्राकृतिक विनाश नहि, संस्थागत निर्णयक परिणाम बनबैत अछि। साफ-सुथर संसार अपन गन्दगी केँ अदृश्य ठाम धकेलि ‘सुन्दर’ रहबाक दावा करैत अछि।

आस्थाक पहिल नैतिक प्रतिकिया उल्लेखनीय अछि : जे लोक एतेक सुन्दर अछि, तकर एक कोन एतेक कुरूप किएक? बालिका सुन्दरता कैँ पूरा लोकक नैतिक गुण नहि मानि लेैत; ककरा सुन्दरता भेटल आ ककर भागमे हानि गेल, सेहो देखबाक प्रयत्न करैत अछि। ई बालसाहित्यक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि, कारण पर्यावरण शिक्षा उपदेशक बदला घटना आ प्रश्नक माध्यमसँ रचाइत अछि।

मम्बा साँपक प्रवेश भयक अपेक्षित छवि कैँ उलटैत अछि। पृथ्वीक ‘विषैला’ जीव परीलोकमे निर्विष भनल जाइत अछि आ मनुष्यक बोली बोलैत अछि। एहि नियमक अर्थ आरम्भमे सार्वभौम मैत्री बुझाइत अछि। मुदा महारक कचरा-क्षेत्रक उल्लेख दुनू प्रकारक ‘विष’क अन्तर पर विचार जगबैत अछि—देहगत विष तिरोहित मानल जाइत अछि, शासकीय निर्णयक विष मरुभूमि रचि रहल अछि। एहि तुलना कैँ प्रत्यक्ष लेखक-वचन नहि, पाठ-आधारित आलोचनात्मक सम्बन्धक रूपमे राखब उचित अछि।

हँसैत कूकाबुराक प्रवेशसँ वातावरणक गम्भीरता कने हलुक होइत अछि। हँसीक मधुरता कथाक सम्पूर्ण राजकीय भय कैँ नहि हटा सकैत। अन्तमे टुराकोस, मम्बा, तितली, टिकुली आ कूकाबुरा अपन-अपन धोधरिसँ एतय अएबाक गप स्वीकारैत छथि। आस्थाक दुर्भाग्य अलग नहि—सभ ‘आगन्तुक’ एक समान स्थिति भोगैत छथि। यात्रा एखन एक गोटेक पलायन नहि, समुदायगत स्वतन्त्रताक प्रश्न बनबाक दिस बढ़ैत अछि।

अध्याय ६ : आठ महादेशक धोधरि

प्रवेश-द्वारक बहुलता आ निकासक अनुपस्थिति

छठम अध्याय परीलोकक व्यवस्था कैँ वैश्विक बनबैत अछि। कथा आठ महादेश अथवा ध्रुवीय–महादेशीय क्षेत्र गनैत अछि—आर्कटिक, अण्टार्कटिक, एशिया, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका आ अफ्रीका। ई वर्गीकरण कथा-विश्वक अपन रचना अछि, वास्तविक भूगोलक मानक महादेश-संख्याक साक्ष्य नहि। प्रत्येक क्षेत्रसँ धोधरि ‘बनाओल गेल’ अछि, ई बात आस्थाक ध्यान पकड़ैत अछि : द्वार स्वयं प्रकृतिसँ नहि बनल, कियो ओकर निर्माण केलक।

बाहर निकलबाक बाट ‘औंठा आ आँखिक पहचान’सँ जुड़ल अछि, मुदा ओ समाधान पक्के रूपमे उपलब्ध नहि। सुनल-गप आ संस्थागत निश्चित जानकारीक भेद महत्वपूर्ण अछि। परीलोक कतेको प्राणी कैँ प्रवेश दैत अछि, मुदा निकासक स्पष्ट अधिकार नहि दैत। एकरे भीतर अतिथि-सत्कार आ नियन्त्रणक अन्तर्विरोध उद्घाटित होइत अछि। आस्था स्वयं आ आन सभक मुखपर हँसी देखैत अछि, मुदा सभ घर घुरबाक रस्ता सँ अनजान छथि।

एस्कीमो आ पोंग्यूइनक दृश्य वैश्विक वैविध्यक बाल-पहचान करबैत अछि। ध्रुवीय क्षेत्रसभपर कहियो राति नहि अथवा कहियो दिन नहि होएबाक कथन कथा-कल्पनाक अतिकथन अछि; एकरा वास्तविक खगोल-विज्ञानक अविचल नियम नहि मानल जाए। बाल-पाठक लेल ई प्रसंग आश्चर्यक माध्यम बनैत अछि, मुदा आलोचक लेल एहन वैज्ञानिक सामान्यीकरणक सीमा दर्ज करबो आवश्यक अछि।

पहिचानसँ संचालित निकासक व्यवस्था आधुनिक समाजक निजता आ आवागमनक अधिकारक रूपक बनि सकैत अछि। शरीरक औंठा, आँखि आ रेकॉर्ड शासनक प्रवेशपत्र बनि जाइत अछि। एखन रानी देखल नहि गेलीह, मुदा हुनक नामपर अधिकार-व्यवस्था आकार पाबि रहल अछि। एहि अदृश्य सत्ताक रूप अध्याय ८ आ अध्याय १५ मे विशेष अर्थ पओत।

अध्याय ७ : सात रंगक कियारी

वर्गीकरणक सुन्दरता आ बन्द व्यवस्थाक प्रश्न

सातम अध्यायमे रंगक विभूति कथा-संसारक प्रथमतः मनोहर दृश्य अछि। भटरंग, असमानी, नील, हरियर, पीयर, संतोल आ लाल—सात कियारी प्रशासन, शिक्षा, प्रयोगशाला, उपचार आ आवासक अलग क्षेत्र छथि। टुराकोस एक-एक रंगक सामाजिक काज गनबैत अछि। रंग केवल सजावट नहि; नागरिक जीवनक विभागक दृश्यभाषा बनैत अछि।

कियारीक सभसँ महत्वपूर्ण प्रश्न आस्था संतोल भागमे उठबैत अछि। मानसिक आ शारीरिक रूपसँ कमजोर कहल गेल मनुष्य, परी, पक्षी, पशु आ वनस्पति कैं एक शोध-वर्गमे राखल गेल अछि। बालिका पुछैत अछि—वनस्पतिक ‘मानसिक’ कमजोरी कोना? उत्तरमे पता चलैत अछि जे प्रयोगशालामे वृक्षसभ बोलब आ सोचब सीखलनि, किछु चलबो सीखलनि, आ किछु अन्हार लोक दिस पड़ा गेलनि। एहि खुलासासँ वैज्ञानिक ‘प्रगति’ पर नब नैतिक प्रश्न उठैत अछि : स्वतन्त्र संवेदनशील जीवक उत्पादनक बाद ओकरा एकर मूल स्थानमे रहबाक अधिकार अछि कि नहि?

आस्थाक दृष्टि अध्यायक रंगरूपकेँ पलटि दैत अछि : रंग सुन्दर अछि, विभाजन कठोर। एक रंगमे एक काज, एक घर, एक सीमा—ई व्यवस्थागत समरूपता कतेको हिसाबसँ सुविधा देत, मुदा जीवक भिन्न आकांक्षाक स्थान कतय? कथा विज्ञानक विरुद्ध नहि; विज्ञान द्वारा निर्मित अनुशासनपर विवेकपूर्ण प्रश्न अछि। एहिमे वैज्ञानिक उपलब्धि आ वैज्ञानिक सत्ताक एकरूपता मानब उचित नहि।

चित्रक पाठक-मनपर संभावित प्रभाव विशेष ध्यानयोग्य अछि। रंगीन पंक्ति आ ज्यामितीय विन्यास सुखद दृश्य रचैत अछि, जखन कि कथाक अर्थ ताहि सुव्यवस्थाक पाछाँक नियन्त्रण देखबैत अछि। ग्राफिक रूपमे ‘सुन्दर दृश्य’ आ ‘सन्दिग्ध समाज’क तनाव एहि अध्यायक सौन्दर्यशास्त्रीय केन्द्रीयता अछि। एहि अर्थमे सात रंगक कियारी नैतिक विचारक दृश्यकल्पना अछि।

अध्याय ८ : वनसप्तो ९९९९५७४५

नामक ठाम संख्या आ गोपनीय निगरानी

आठम अध्यायमे आस्था एक यान्त्रिक रूपेँ सफा संसारमे बिना बहैत हवाक अनुभव करैत अछि। गाछक पात स्थिर, काट-छाँट एक समान, हवा प्रयोगशालाक सीमित क्षेत्रमा मात्र। बालिका केँ चन्ना गाछीक स्वच्छन्द बसात मोन पड़ैत अछि। एहिसँ ‘जीवन’ आ ‘सजावट’क भेद स्पष्ट होइत अछि। वृक्ष सुन्दर लगै सकैत अछि, मुदा जँ ओकर स्वाभाविक हलचल रोकल गेल, तखन एकर जीवित सौन्दर्य प्रश्नाधीन अछि।

सात रंगक फाटकक लाल भागमे स्वागत करैत पात्र अपन नाम ‘वनसप्तो ९९९९५७४५’ बतबैत छथि। उपनामक पाछाँ लमहर संख्या आ हर नव जन्मक संग संख्या बढ़ब—ई व्यक्तित्वक वर्गीकृत अभिलेखनक सूत्र अछि। लोककथामे वनसप्तो हराएल बच्चाकेँ घर पहुँचेबैत छथि; एतय वएह लोकगाथाक संकेत प्रयोग भऽ रहल अछि, मुदा अतिथि केँ घर पहुँचेबाक आश्वासन उपलब्ध नहि। परम्परागत संरक्षणकारी नाम आ आधुनिक गणनायुक्त सत्ता परस्पर विरोधमे ठाढ़ छथि।

स्वागतक पहिनेसँ रानी आस्थाक नाम जानैत छथि—ई जानकारिक स्रोत प्रयोगशालाक निरन्तर अभिलेखन कहल गेल अछि। धोधरिमे खसबा कऽ पनिऔल जीवक प्रत्येक गतिविधि पर नजरि राखल जाइत अछि। कथा एहि सर्वेक्षण केँ ‘स्वागत’क भाषा भीतर नुकबैत अछि। बालसाहित्यक लेल ई असामान्य जटिलता अछि : निगरानी सदिच्छाक भेष धरि सकैत अछि, आ सुरक्षा-कथन स्वतन्त्रताक प्रश्न उठाबि सकैत अछि।

एहि अध्यायमे लोककथा विज्ञानक सौन्दर्यकरण नहि, सत्ता-विचारक आलोचनात्मक उपकरण बनैत अछि। वनसप्तोक लोकछवि आ संख्याबद्ध परिचयक द्वन्द्व बालिका केँ एहना संसारपर भरोसा नहि करबाक कारण दैत अछि। अंतिम निर्णय एखन नहि, मुदा प्रश्न अधिक स्पष्ट अछि—ककरा नामसँ चिन्हल जा रहल अछि, ककरा रेकॉर्डक भीतर राखल जा रहल अछि?

अध्याय ९ : स्वागत-कोठलीक बन्धन

आतिथ्यक भाषा आ देहपर नियन्त्रण

नवम अध्यायमे स्वागतक लाल भाग प्रवेशित आस्थाकेँ एक अलग कोठलीमे राखल जाइत अछि। एहि ठाम जमीन आ आकाशक बीचक निश्चित भेद समाप्त अछि; स्थानक कृत्रिम नियमसँ बालिका आश्चर्यचकित अछि। मुदा ‘स्वागत’क बाहरी शिष्टता मेहमानक स्वतन्त्र आवागमनक आश्वासन नहि। महलमे रानीसँ भेंट तऽ दूर, पहिले एकांत कोठली आ निद्राक अनुभूति अछि। एहि कारण अध्यायक शीर्षकमे अन्तर्निहित बन्धन सभक सोझाँ अबैत अछि।

आस्थाकेँ अनुभव होइत अछि जे परीलोकमे वायु सामान्य रूपेँ बहैत नहि, तथापि किछु अव्यक्त माध्यमसँ ओकर देहमे प्रवेश करैत अछि। ओ अनुमान करैत अछि जे एहिठाम साँस आ आहारक नियम साधारण पृथ्वी सँ अलग अछि। एहि अनुभवक समीक्षा मे वैज्ञानिक यथार्थ आ कथा-विश्वक कल्पना अलग रखबाक चाही। शरीर केँ रेकॉर्ड आ नियन्त्रित वातावरणक अधीन देखएबाक उपन्यासक विचार प्राथमिक अछि; वास्तविक शरीर-विज्ञानक सिद्धान्त प्रस्तुत करब एकर उद्देश्य नहि।

निद्रा आस्थाक स्मृतिमे माएक चूल्हि, बाबूक कान्ह आ गामक बाट फेर उपस्थित करैत अछि। सुन्दर परीलोकक भीतर ई घरेलू प्रसंग सभसँ अधिक जीवन्त अछि। बालिकाक इच्छा केवल अद्भुत वस्तु प्राप्त करब नहि, अपन सम्बन्धित संसारमे सुरक्षित घुरब अछि। ई भावनात्मक केन्द्र आगामी सपनाक वस्तुगत शक्ति सँ जुड़त।

ग्राफिक कथाविन्यासमे विश्रामक क्षण आवश्यक अछि। अनेक रंगक जगत आ नवीन प्राणीसभक भेटक बाद एक सुनसान स्वागत-कोठली पाठकक गति धीमा करैत अछि। थकान, निन्न आ घरक स्मृति सँ उपन्यास साहसिक यात्राकेँ बालमनोविज्ञानक मूल अनुभूतिसँ जोड़ैत अछि।

अध्याय १० : सपना जे सत्य भऽ गेल

कल्पनाशक्तिक दोहन आ बालिकाक प्रतिउत्तर

दसम अध्याय उपन्यासक प्रमुख रहस्य उद्घाटित करैत अछि। आस्था जे वस्तुसभ सपना मे घरसँ आनने छलीह—हेलीकॉप्टर, औजार, फल, मिठाइ, उपकरण आदि—ओ सभ जागलापर कोठलीमे उपलब्ध अछि। परीलोकमे सपनाक काज यथार्थ बनैत अछि। आरम्भमे ई नियम अद्भुत वरदान सन बुझा सकैत अछि, मुदा टुराकोसक स्पष्टीकरण एकरा सत्ता-संगठनक अधीन रखैत अछि। बाहरी क्षेत्रसभसँ जीव कैं एहि लेल अनबैत अछि जे ओकर सपना नूतन संसाधन उपलब्ध करा सकय।

एहि खुलासासँ पूर्व अध्यायसभक संकेत फेर अर्थ पबैत अछि। आठ महादेशक प्रवेश-द्वार, आस्थाक बुद्धिक ‘आवश्यकता’, अतिथिक अभिलेखन आ स्वागत-कोठली—ई सभ स्वतंत्र चमत्कार नहि, व्यवस्थित संकलनक अंग बुझाइत अछि। अतिथि स्वयं उद्देश्य नहि, ओकर कल्पना उपयोगी साधन अछि। कथावस्तु बालकक सपनाक शोषणक प्रश्न उठबैत अछि, जे बालसाहित्यक एक गंभीर सामाजिक रूपक बनि सकैत अछि।

मुदा स्वप्न-वस्तुक उपस्थिति आस्थाकैं निष्क्रिय नहि करैत। ओ देखैत अछि जे सपनामे आनल हेलीकॉप्टर महारक ओइपार पहुँचल अछि। परीलोकक साथीसभ अचानक चिन्तित भऽ जाइत छथि—विशेषतः सदिखन हँसनिहार कूकाबुरा। कथाक गति एहि ठाम बदलबैत अछि। जकर सपना सत्ताक लाभ लेल आवश्यक छल, ओहि सपनाक परिणाम सत्ता-नियन्त्रणक बाहर सेहो जा सकैत अछि।

आस्थाक पुछबारूप बुद्धि आ ओकर सपनाक सृजनशीलता अलग शक्तिसभ नहि; दुनू मिलि ओकर कर्तृत्व बनबैत अछि। तथापि सपना सँ वस्तु जन्मब एकटा कथासापेक्ष नियम अछि। एकर समकालीन सामाजिक अर्थ ‘बच्चाक कल्पनाक वस्तुगत महत्त्व’ अछि; वास्तविक प्रयोगसिद्ध वैज्ञानिक दावा नहि। एहि भेदेँ अध्यायक गहन रूपक बुझबा मे सहायता भेटैत अछि।

अध्याय ११ : हजार किलोमीटरक दौड़

समूहक गति आ अदृश्य रानीक सत्ता

एगारहम अध्यायमे आठो यात्री स्वागत-कोठली छोड़ि उत्तरबरिया महार दिस दौड़ैत छथि। आस्था अनुमान करैत अछि जे एतुक्का असाधारण चलबाक गति सँ दौगब आरो तेज होयत। ‘हजार किलोमीटर’क गणना बालिकाक कल्पनात्मक गणित अछि; यथार्थ भौतिक विज्ञानेक सूत्र मानब नहि। द्रुत गतिसँ सात रंगक कियारी पीछे छूटैत अछि, आ पाठकक दृश्य-संसार रंगसँ धूसर महार दिस मुड़ैत अछि।

दलमे प्रत्येक जीवक किछु संस्था-संबद्ध भूमिका अछि। टुराकोस वैज्ञानिक पक्ष, मम्बा सैन्य अनुशासन, एस्कीमो शिक्षा, तितली वनस्पति-शोध, टिकुली उपचार, कूकाबुरा अनुसन्धान आ पोंग्यूइन सुरक्षासँग जुड़ल अछि। ई विवरण पात्रसभ केँ महज बोलैत पशु-पाखी सँ आगे समाजक काज करैत प्राणी बनबैत अछि। तथापि एही भूमिकाक आधारपर कोन तथ्य स्वतंत्र रूपसँ प्रमाणित अछि, सेहो प्रश्न रहैत अछि।

आस्था पहिल बेर आश्चर्यसँ अधिक स्पष्ट शंका करैत अछि : रानी सभ आदेशक केन्द्र छथि, मुदा ककरो प्रत्यक्ष भेंट हुनकासँ नहि भेल अछि। एहि क्षण सत्ता वास्तविक व्यक्तिसँ बेसी आदेश आ सन्देशमे अस्तित्व राखैत अछि। ककरो नहि देखल शासकक नामे महार बनब, रेगिस्तान बनब, विभाग चलब—ई कथा-समाजक गम्भीर राजनीतिक विडम्बना अछि।

आस्था कैं ओहि विश्वसनीयताक अभाव खटकैत अछि, जकरा आन पात्रसभ आदतन स्वीकारि लेने छथि। ई बालिकाक स्वाधीन विवेकक प्रतीक अछि। ओ विद्रोहक भाषण नहि दैत, सत्यापनक सामान्य प्रश्न पुछैत अछि। एही कारण ओकर दृष्टि धीरे-धीरे आठो संगीक काजमे केन्द्रस्थ होइत अछि।

अध्याय १२ : तरहड़िमे तरहड़ि

गुप्त मार्ग, सात दरबज्जा आ रेगिस्तानक साक्षात्कार

बारहम अध्यायमे महारक जड़िमे गुप्त प्रवेशमार्ग भेटैत अछि, जकर भीतर फेर सात रंगक सात तरहड़ि अछि। उपन्यासक शीर्षकीय धोधरि-प्रवेशक एक नब छोट प्रतिरूप बनैत अछि। पहिल धोधरि अनचोक्के घटित विपदाक बाट छल; एहि भीतरक गुप्त मार्गमे पात्रसभ विचारपूर्वक उतरैत छथि। एही रूपान्तरसँ आस्थाक कर्तृत्व बदलैत अछि—अनायास खसल बालिका आब सचेत अन्वेषक अछि।

सात रंगक अन्तर्विभाजन पहिनुक प्रशासनिक पाँती सभ सँ जुड़ैत अछि। एक-एक जीव अपन-अपन विभागक गुप्त मार्ग चुनैत अछि; आस्था पोंग्यूइनक संग लाल मार्गमे जाइत

अछि। रंग कथाक दृश्य-ज्ञानक स्थायी संकेत बनि गेल अछि। कियारी, फाटक आ तरहड़ि—तीनू रूपमे रंग सीमांकन आ मार्ग-नियन्त्रणक उपकरण अछि।

विशेष पोशाक आ उपकरणक उल्लेख अछि, जे अन्हार क्षेत्रमे देखबाक आ असामान्य चलनिहार वनस्पतिक क्रिया बुझबाक सहायता देत। एतय वैज्ञानिक उपकरणक कथा-प्रयोजन अन्वेषण अछि, नहिएँ तकनीकी पाठ्यपुस्तक तैयार करब। उपकरणक सहायता सँ सुरक्षापूर्वक बाहर निकललाक बाद जे दृश्य देखाइत अछि, से रचनाक नैतिक उलटफेरक पूर्वपीठिका अछि।

ओहि पार रेगिस्तान, सुनसान रेत आ जीवनहीनता अछि। एके लोकक भीतर रंगीन समृद्धि आ कचरा-संचित उजाड़क विरोध बालिकाकेँ व्यथित करैत अछि। आस्था पहिल बेर एहि परीलोकक नाममे नहि, तिरस्कृत भूभागक अवस्था लेल दुख अनुभव करैत अछि। कथा अपन ‘अन्हार’क नैतिक अर्थ आओर जटिल बनबैत अछि; अन्हार केवल भय नहि, छोड़ि देल गेल संसारक स्मृति बनैत अछि।

अध्याय १३ : अन्हारमे खोज

हेलीकॉप्टरक पुनर्प्राप्ति आ अनिश्चित वैज्ञानिक प्रगति

तेरहम अध्यायमे आस्था अपन सपनाक हेलीकॉप्टरक रचना आ काज बुझाबैत अछि। सोझे ऊपर उड़ब-उतरब, यन्त्रक पाँखि, इन्धन आ उतरबाक ढाँचा—ई सभ बतबैत ओ केवल आश्चर्य अनुभवनिहार बालिका नहि रहैत, तकनीकी निर्णयमे भाग लैत सदस्य बनि जाइत अछि। ओकर वर्णन कथात्मक संकेत अछि; विमान-विज्ञानक पूर्ण

अभियांत्रिक सटीकता एकर प्रमाण नहि। तइयो बालिकाक ज्ञानकेँ दलक बुजुर्ग प्राणीसभ गम्भीरतासँ सुनैत छथि। बाल-साहित्यमे ई परिस्थिति उल्लेखनीय अछि, कारण बच्चाक जिज्ञासा प्रयोगसंगत काजमे बदलैत अछि।

दल आशंकित अछि जे तरहड़िक पार भागल चलनिहार वनस्पति हेलीकॉप्टर पाबि कऽ ओकर तकनीक अपन रूपमे बदलि सकैत अछि। एतय विज्ञानक नब सृजन आ जैविक परिवर्तनक प्रश्न खड़ा होइत अछि। आस्थाक वस्तु परीलोकक रानीक नियन्त्रणसँ निकलि दोसर अनिश्चित समाजमे पहुँचि गेल अछि। कथा एखन धरि ओ समाजकेँ भयकारी सुनाबैत अछि; पाठक सेहो समूहक चिन्तासँग अगिला पृष्ठ दिस बढ़ैत अछि।

सात घण्टाक दौड़क बाद रेत पघलि शीसा बनल प्लेटफॉर्मपर हेलीकॉप्टर भेटैत अछि, मुदा सीढ़ी, उतरबाक ढाँचा आदि अनुपस्थित। ई परिवर्तन दलक पहुँचलासँ पहिने कोनो सक्रिय बुद्धिक उपस्थिति प्रमाणित करैत अछि, मुदा ओकर नियत एखन स्पष्ट नहि। आस्था आ दल अनुमान करैत अछि; ओ अनुमानकेँ अंतिम दोषारोपण नहि बनाओल जाएब उचित। अध्ययनक दृष्टिसँ कृति एहि चरणमे अज्ञात जीव पर आशंकाक सम्पूर्ण तन्त्र स्थापित करैत अछि, ताकि अगिला दृश्य ओकर पुनर्मूल्याङ्कन करा सकय।

टिकुली आ तितली सँ भेटल आवाजक संकेत एक ‘ह्वेलक पीठ’ सन बालुक-ढिमका दिस लऽ जाइत अछि। प्रकृतिक एक आकृति दोसर आकृतिक रूपक बनैत अछि—रेत पर समुद्री प्राणीक पीठ। ई अन्तर्विरोध केवल अलंकार नहि, बालिका केँ नवीन संसार देखबाक कल्पनात्मक दृष्टि दैत अछि। अन्हारक यात्रा वास्तवमे सत्याक अनिश्चित मार्ग बनैत अछि।

अध्याय १४ : ह्वेलक पीठपर हरियरी

भयभीत मान्यताक उलटफेर आ वनस्पतिक स्वयंक्रिया

चौदहम अध्यायमे ह्वेलक पीठ सन ढिमकापर हरियर वनस्पतिक उपस्थिति समस्त कथा-विश्वक धारणा बदलि दैत अछि। महारक ओइपारक रेगिस्तानक बीच हरियर, साँस लैत, हिलैत गाछ-बृच्छ छथि। आस्था जकरा ‘किरदानी’ कहि चेताओल गेल छल, ओहि चलनिहार वनस्पतिक काज कैं उजाड़ पुनर्जीवित करबाक प्रयासक रूपमे देखैत अछि। इहिना घटनाक नैतिक मूल्याङ्कन एकाएक पलटैत अछि : परीलोकक शासकीय व्याख्यामे ‘भागल’ प्राणी खतरा अछि, मुदा दृश्य-पाठमे ओ जीवनक सृजनकर्ता बनि सकैत अछि।

दल पहिले सावधान अछि—रेतक ढिमकापर धँसब आ अनिश्चित वनस्पतिक व्यवहार। ई सावधानी कथाक भीतर तर्कसंगत अछि, मुदा आधारहीन भयक अन्तिम पुष्टि नहि। जखन गाछसभ आस्थाकैं अभिवादन करैत छथि, तखन परीलोकक कृत्रिम, स्थिर पात आ अन्हारक स्वतन्त्र हिलैत पातक भेद तीक्ष्ण होइत अछि। अधीन कियारीमे प्राकृतिक हवा उपलब्ध नहि; त्यागल क्षेत्रमे सजीव पात, संवाद आ स्वतन्त्र वनस्पति भेटैत अछि।

एक बच्चा-गाछ चलनिहार वनस्पतिक राजा सँ भेंटक मार्ग बतबैत अछि। आस्था युद्धक तैयारीक बदला मित्रतापूर्ण वार्ताक प्रस्ताव रखैत अछि। ई वाक्य बालक-नायिकाक नैतिक विकासक चरम-सूचक अछि। प्रवेश-द्वारमे कौआसँ डेरा कऽ नुकायल बच्ची अज्ञात जीवसँ संवादी सम्बन्ध चुनि रहल अछि। ओ ‘वीरता’क हिंसात्मक प्रदर्शन नहि करैत, विश्वासक परीक्षण द्वारा सत्य धरि पहुँचेबाक रास्ता खोलैत अछि।

पर्यावरणीय अध्ययनक दृष्टिसँ रेगिस्तान सँ वन बनबाक प्रक्रिया अद्भुत कथा-नियमक भीतर अछि; एकरा तत्काल व्यवहार्य पारिस्थितिकी विधि मानब नहि। मुदा नष्ट भूभागक पुनरुज्जीवन, फेकल गेल संसारक अधिकार आ मानवोत्तर जीवक स्वायत्तता—ई सभ पुस्तकक बृहत्तर साहित्यिक प्रश्न छथि।

अध्याय १५ : दुनू राजाक सत्य

परीलोकक छद्म सत्ता आ बाँचल जीवनक साक्ष्य

पन्द्रहम अध्याय कृतिक वैचारिक पराकाष्ठा अछि। सतरंगी गेटपर स्वागत-रेकॉर्ड आ संख्या नहि, एकटा बच्चा-गाछक प्रत्यक्ष सहचर्य अछि। आस्था कैं हवा, भूख आ साँस अनुभव होइत अछि; ओ अपन सपनाक आनल बिस्कुट खाइत अछि। जे अनुभव परीलोकमे अनुपस्थित छल, ओहि ‘अन्हार’मे जीवनक प्रमाण बनैत अछि। कथाक नैतिक भूगोल उलटि जाइत अछि : इजोतवला व्यवस्था निर्जीव नियन्त्रण हो सकैत अछि, अन्हार कहल गेल क्षेत्र स्वतन्त्र जीवन सँ भरल हो सकैत अछि।

हेलीकॉप्टरक नब रूप देखाइत अछि—छोट-छोट हेलीकॉप्टर चलबैत वनस्पति-पायलट। आस्थाक सपनाक तकनीक एतय आक्रमणक साधन नहि, सम्भावनाक ‘पाँखि’ अछि। ई पुनर्व्याख्या अत्यन्त अर्थवान अछि। विज्ञानक नैतिकता यन्त्रक अस्तित्वसँ निर्धारित नहि; ओकर प्रयोगक सामाजिक सम्बन्ध आ उद्देश्य सँ होइत अछि। परीलोकक भय-प्रचार आ अन्हारक वास्तविक दृश्यबीचक अन्तर पाठककैं अधिकार-प्रदत्त कथनक परीक्षण सिखबैत अछि।

दुनू राजा—दुनू चलनिहार–सोचनिहार वनस्पति—आस्थासँ भेंट करैत छथि। आस्था पहिने पूछैत अछि जे ओ लोक परीलोकक रानी कैँ नष्ट करऽ चाहैत छथि कि नहि। उत्तरमे मूल कथा उद्घाटित करैत अछि जे वास्तविक रानी नहि, वैज्ञानिक समूहक नियंत्रणकारी व्यवस्था अछि; महारक ओइपारक रेगिस्तान त्यागल हानिक परिणाम अछि, जकरा पुनर्जीवित करबाक प्रयास एतय चलैत अछि। कथित ‘परीलोक’क छवि वैज्ञानिक अधिकारवादक आवरण बनि जाइत अछि।

एहि उद्घाटनक साहित्यिक संरचना पाठकक ज्ञान लगातार बदलैत अछि। परीलोकक ‘रानी’ पहिने केवल नाम आ आदेशमे उपस्थित छलीह। आस्था बारम्बार हुनक प्रत्यक्ष दर्शनक प्रश्न उठौने छल। पन्द्रहम अध्याय ओहि प्रश्नक उत्तर नब समाजक साक्ष्य सँ दैत अछि। तथापि राजा सभक कथनको मूल कथा-संसारक पात्र-वचन बुझबाक चाही; ओकरा बिना विवेचनक बाह्य दस्तावेज-सत्य नहि बनाओल जाए।

एतय ‘समांतर सुधार-गृह’क उल्लेख प्रभावकारी अछि। विज्ञानक सत्ता सँ विकृत व्यवस्था कैँ सुधारबाक सामर्थ्य तलहटीमे बचल जीवन रखैत अछि। बालिका कैँ एहि साक्षात्कारमे आँसु अबैत अछि—अपना लेल नहि, ओहि सभ संख्या बनाओल जीव लेल जकर व्यक्तिगत परिचय मेटल गेल। करुणा एतय राजनीतिक नैतिकता बनैत अछि।

अध्याय १६ : अन्तिम सपना

सामूहिक मुक्ति आ स्मृतिक अनिश्चितता

सोहरहम अध्यायमे आस्थाक नब सपना कथा-परिवर्तनक केन्द्र बनैत अछि। पहिल सपना अनजाने मे संसारक उपयोगक वस्तु बनौने छल; अन्तिम सपना जानि-बुझि सबहक मुक्तिक उपाय रचैत अछि। आठो क्षेत्रक धोधरि बन्द होएबाक, छद्म परीलोकक व्यवस्था समाप्त होएबाक आ आगन्तुकसभक घर घुरबाक इच्छा बालिकाक निजी बचाव सँ बहुत आगाँ अछि। एहि क्षण पात्र परिपक्व होइत अछि—ओ मात्र अपने नहि बचब चाहैत, दोसरक प्रवेश-बन्धन सेहो समाप्त करब चाहैत अछि।

सपनाक सिद्धिमे दू राजाक सहभागिता उपस्थित अछि। अतः मुक्ति कैं केवल अकेली आस्थाक जादुई विजय कहब गलत होयत; ई सहयोगी कल्पना आ दूसरे समाजक इच्छाक सम्मिलित काज अछि। उपन्यासक आरम्भिक समूह-यात्रा अन्तमे सामूहिक निर्णयमे परिणत होइत अछि। लेखकक अद्भुत नियमानुसार सपना बाह्य परिवर्तन करैत अछि; वास्तविक समाजमे ई समाधान तत्काल लागू होयत, एहन वैज्ञानिक वा राजनीतिक दावा मूल पाठ नहि करैत।

चन्ना गाछी पुनः साधारण आमक गाछी बनि जाइत अछि। भुतहा नामक स्थानपर घर घुरैत बच्चासभक परिचित बाट लौटैत अछि। सबहक घर सुरक्षित लौटबाक संकेत कथाक बाल-पाठक लेल सांत्वना अछि। मुदा आस्थाक मनमे प्रश्न बचैत अछि—टुराकोस, मम्बा, कूकाबुरा, एस्कीमो, पोंग्यूइन, तितली आ टिकुली अपन-अपन घर पहुँचल कि नहि? नव लोकक उजरल व्यवस्था पछाँ की बचल? एहि प्रश्नक निश्चित उत्तर नहि।

एहि अनिर्णीत स्मृति सँ उपन्यासक अन्त भावुक रूपसँ समृद्ध अछि। विजयक बादो अनुपस्थित संगीक चिन्ता शेष; बाह्य बन्द दरबज्जाक भीतरक हल्लुक आवाज आस्थाकैं

सुनाइत रहैत अछि। एकर अर्थ यात्रा समाप्त भऽ सकैत अछि, मुदा अनुभवक नैतिक प्रश्न जागल रहैत अछि। स्वप्नशक्ति द्वारा मुक्ति कथाक सन्तोषदायी अन्त अछि, आ स्मृतिक असम्पूर्णता तकर गम्भीर प्रतिध्वनि।

उपसंहार : बा आ ओम

कथनक समाप्ति आ अक्षरमुष्टिकाक वृत्त

उपसंहारमे बा देखैत छथि जे ओम कथा सुनिते सुतल अछि। ओकर मुट्ठी एखनहुँ बांक आँगुर पकड़ेने अछि। उपक्रममे अंगुलीक मुद्रासँ अक्षर सीखबाक दृश्य फेर उपस्थित होइत अछि, मुदा एहि बेर निन्नक भीतर। आस्थाक लमहर यात्रा पाठकक अनुभवमे पूर्ण कथा छल, ओमक सुनबाक शरीरमे ओ एखनहुँ स्पर्शक रूपमे सुरक्षित अछि। लालटेनक इजोत धीरे-धीरे मिज्झर होइत अछि—उज्जर कृत्रिम आकाशक अन्त आ घरक सौम्य अन्हारक बीच दृश्य-साम्य बनैत अछि।

ई फ्रेम-द्वय बालपाठककेँ स्मरण करबैत अछि जे लोककथा देह, भाषा, आवाज आ निकटतासँ पसरैत अछि। धोधरि, परीलोक, सपनाक वैज्ञानिक कल्पना आ अन्तरमहादेशीय यात्रा अन्ततः बांक स्वरसँ उत्पन्न रूपकीय सत्य छथि। कथा एखन ‘वास्तविक’ भेल कि नहि—तकर एकमात्र उत्तर अनिवार्य नहि; ई कथा जे प्रश्न आ भावना उत्पन्न करैत अछि, ताहिमे ओकर प्रभाव अछि।

उपसंहारक संयम उल्लेखनीय अछि। मूल कथा बड़का राजकीय उलटफेरक बाद बहुत छोट घरेलू दृश्यपर समाप्त होइत अछि। शक्तिक नब केन्द्र नहि, बच्चाक निद्रा आ

वृद्धाक थकान अन्तिम मानवीय केन्द्र अछि। एही चयनसँ पुस्तक अपना अद्भुत संसारकेँ घरेलू जीवनक अन्तःस्मृति सँ जोड़ैत अछि।

समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

सचित्र फैन्टेसी, स्वतन्त्रता आ बाल-पाठकक प्रश्नाधिकार

१. बालकथाक संरचना आ कथात्मक स्तर

‘तरहड़िमे परीलोक’क कथा दू तहमे चलैत अछि। बाहरी तहमे बा ओमकेँ खिस्सा सुनबैत छथि; भीतरक तहमे दस-बर्खीया आस्था धोधरिसँ एक छद्म परीलोकमे प्रवेश करैत अछि। ई फ्रेम कथा लेल विशेष अर्थवान अछि : बालक-स्रोता आ बालिका-नायिका दुनू उपस्थित छथि। एक गोटे सुनि रहल अछि, दोसर प्रश्न करैत अछि। एहि सँ बालसाहित्यक शिक्षण वा कल्पना बाहर सँ थोपाल नहि बुझाइत; ओ बालमनक ग्रहण आ खोजक दू अवस्थासँ गुजरैत अछि।

मूल कृतिक १६ अध्यायक क्रम अनायास भय सँ अन्वेषण, तकर बाद सामाजिक शंका, फेर प्रत्यक्ष साक्षात्कार आ अन्तिम मुक्ति दिस बढ़ैत अछि। पहिल आठ अध्याय परीलोकक नियम स्थापित करैत अछि; नवम–दसम अध्याय सपनाक दोहनक वास्तविक भूमिका खोलैत अछि; एगारहम–बारहम सीमा पार करबैत अछि; तेरहम–पन्द्रहम वास्तविक सामाजिक उलटफेरक आधार बनबैत अछि; सोहरहम सामूहिक मुक्ति आ अनुभवक शेष स्मृति बनबैत अछि। उपक्रम–उपसंहार एहि लमहर यात्रा केँ छोट घरेलू वृत्तमे बाँन्हैत अछि।

२. बालमनोविज्ञान आ आस्थाक स्वाधीन दृष्टि

आस्थाक प्रमुख विशेषता वीरताक भाषण नहि, निरन्तर प्रश्न अछि। कौआक झुंड सँ डेराएब, धोधरिमे खसब, समयक बदलाव पर आश्चर्य, बोलैत चिड़ैसँ पुनः-पुनः प्रश्न, बिनु सूर्यक इजोतक स्रोत तकब, महारक ओइपार कूड़ाक कारण पुछब, वनस्पतिक बौद्धिक क्षमता पर शंका, रानीक प्रत्यक्ष अस्तित्व जाँचब—ई सभ दृश्य बच्चाक बुद्धिक क्रमिक विकास बनैत अछि। बालिका वयस्क अथवा अद्भुत प्राणी कहि देलक तैं तत्काल स्वीकार करबाक आदत नहि विकसित करैत।

तइयो आस्था सर्वज्ञ नहि। ओ असुरक्षित होइत अछि, थाकैत अछि, घरक स्मृति मे डूबैत अछि, आ दोस्तक सहायता लेल विवश अछि। ई अपूर्णता ओकर चरित्र कैं यथार्थगामी बनबैत अछि। रचनाक अन्तिम मोड़ केवल जादुई स्वप्नशक्तिक कारण नहि, कारण आस्था प्रश्न पुछबाक पद्धति सँ नव समाजक सत्य धरि पहुँचल छलीह। बालिकाक निर्णयक नैतिक वजन एही अनुभव सँ बनैत अछि।

३. रस, विस्मय आ सौन्दर्य

कथा अद्भुत रसक विस्तारपर आधारित अछि, मुदा भय, करुणा, हास्य आ शान्त भावक संग ओकर गतिशील सम्बन्ध अछि। चन्ना गाछीक कारी कौआ, दिशा-विहीन खसब आ अन्हारक मरुभूमि भय उत्पन्न करैत अछि। कूकाबुराक हँसी तनाव घटबैत अछि। घरसँ दूर आस्थाक स्मृति आ संख्याबद्ध प्राणीसभक दुर्दशा करुणा जाग्रत करैत

अछि। ह्वेलक पीठ-जकाँ ढिमकापर हरियर वनस्पतिक दृश्य अद्भुततक सकारात्मक रूप अछि, जे भयक अर्थ उलटि दैत अछि।

रंगक उपयोग अत्यन्त सजगता सँ कएल गेल अछि। आरम्भिक बोनमे हरियर, कारी, आमक पीयर; परीलोकमे दूध-सन उज्जरता आ सात रंगक विभाग; महारक ओइपार धूसरता; अंतिम हरियर पुनर्जन्म। मुदा 'रंग'क समीक्षामे केवल सुन्दरता देखब पर्याप्त नहि। नियन्त्रित परीलोक सेहो रंगीन अछि, स्वतन्त्रता-अधिकारक ठाम ओहि रंगमे अभाव अछि। सच्चा हरियरी अन्हारक ओहि पार भेटैत अछि। भाव-समृद्धि एहि विरोधमे अछि।

४. विज्ञान, तकनीक आ जादुई नियमक भेद

कृति विज्ञानक शब्दावली—पातक रन्ध्र, सूर्य-विकिरण, क्लोरोप्लास्ट, ऊर्जा, विमान, जैविक परिवर्तन, पहचान-तकनीक—क उपयोग करैत अछि। एकर साहित्यिक प्रयोजन नव प्रश्न उत्पन्न करब अछि। विज्ञानक उपयोगक दू रूप भेटैत अछि : एकटा शोधक नामपर नियन्त्रण आ बन्दीकरण, दोसर जीवनक स्वातन्त्र्य आ पुनरुज्जीवन। ई विरोध विज्ञान बनाम अविज्ञान नहि, नियंत्रणकारी विज्ञान बनाम उत्तरदायी उपयोगक रूपमे पढ़ल जाए।

तथापि आठ महादेशक वर्गीकरण, ध्रुवीय दिन-रातक सामान्यीकरण, हजार किलोमीटरक दौड़, स्वतः वस्तु बनैत सपना अथवा चलैत–सोचैत वृक्ष वास्तविक वैज्ञानिक तथ्यक पूर्ण विवरण नहि। बालपाठकक वैज्ञानिक शिक्षामे एहि प्रसङ्गसभ कैं कल्पना आ सत्यापित ज्ञानक भेद स्पष्ट रखैत पढ़ब उचित होयत। ई आलोचनात्मक

सावधानी मूल पुस्तकक कल्पनाशक्तिक अवमूल्यन नहि करैत; उलटे ओकर विधागत प्रकृति स्पष्ट करैत अछि।

५. सत्ता, अभिलेखन आ पहचान

परीलोक स्वयंकेँ मेहमाननवाजीक सभ्यता प्रस्तुत करैत अछि, मुदा आगन्तुकक निकास अस्पष्ट, प्रत्येक गतिविधिक अभिलेखन सामान्य, आ संख्याक आधारपर परिचय अनिवार्य अछि। ‘वनसप्तो ९९९९५७४५’क प्रसंग लोककथाक संरक्षणकारी नाम केँ प्रशासनिक संख्यामे बदलि दैत अछि। रानीक अधिकार सर्वत्र उद्धृत अछि, पर हुनका देखल कियो नहि। ई दृश्य आधुनिक संस्थागत अधिकारक आलोचनात्मक रूपक बनबैत अछि : सत्ता अपनाकेँ दृश्य करब आवश्यक नहि बुझैत, मुदा नागरिकक प्रत्येक क्रिया दृश्य रखबाक आग्रह करैत अछि।

आस्था एहि उलट सम्बन्ध पर प्रश्न करैत अछि। कोन आदेश देलक, कोन रानी अछि, आगन्तुक किएक आयल, सपनाक वस्तु ककर हाथ पहुँचल? बालिकाक प्रश्नशृंखला सत्ता केँ प्रमाण देबाक माँग करैत अछि। पन्द्रहम अध्यायक पर्दाफाशक कारण अधिकारक नाम आ वास्तविक संरचना अलग पहिचान पबैत अछि। ई बालसाहित्यमे स्वतन्त्रताक तर्कसंगत शिक्षा अछि, उपदेशक प्रत्यक्ष पाठ नहि।

६. पर्यावरण आ मानवोत्तर जीवनक अधिकार

उत्तरबरिया महारक ओइपार कूड़ा फेकि बनाओल रेगिस्तान सामाजिक-पर्यावरणीय अन्यायक बिम्ब अछि। सरस रंगक समाज अपन अवशिष्ट पदार्थक भार दोसर ठाम

छोड़ैत अछि। परीलोकक प्रयोगशालासँ भागल चलनिहार वनस्पति ओहि उजाड़मे नव जीवन रचैत अछि। ई उलटफेर उपन्यासक सर्वाधिक प्रभावी पारिस्थितिक कल्पना अछि : वैज्ञानिक प्रयोगक उत्पाद स्वयं जीवतन्त्रक पुनर्निर्माता बनि सकैत अछि।

वनस्पतिकेँ केवल सजावटी पदार्थ नहि, विचारशील आ संवादी पात्र बनाओल गेल अछि। किछु गाछ राजा, किछु बालक; सभक अपन सामुदायिक व्यवस्था अछि। जीवक वर्गीकरण, मर्यादा आ स्वायत्तता पर प्रश्न उठैत अछि। बालिका देखि पबैत अछि जे ‘अन्हार’ कहैत हानि करब आ ‘उज्जर’ कहैत पुण्य मानब एक ही प्रकारक पूर्वाग्रहक दू दिशा अछि। सत्यक कसौटी जीवित सम्बन्ध आ व्यवहार अछि।

७. ग्राफिक संरचना आ चित्रक प्रयोजन

मूल कृतिमे शीर्षकपृष्ठक मिथिला-शैली प्रेरित अलंकरण आ पश्चात् अनेक चित्रित पृष्ठक संयोजन अछि। प्रथम अध्यायक दृश्यक्रममे आम चुनैत आस्था, घन बोन, कारी कौआ आ मुख-जकाँ गाछक धोधरि चारि घेरामे प्रस्तुत अछि। कतहु ज्यामितीय खण्डकारी, कतहु लोकचित्रक किनार, कतहु अधिक यथार्थवादी चित्रण—शैलीक ई बहुलता बालक केँ एकाधिक दृश्यभाषामे कथा पढ़बैत अछि।

अनेक अध्यायमे चित्रक लंबा क्रमक बाद अल्प गद्य-पृष्ठ, फेर पुनः चित्र अछि। ई मुद्रण-विन्यास सामान्य गद्य उपन्यासक निरन्तर अनुच्छेद-पद्धतिसँ अलग अछि। चित्रसभ किछु घटनाक भावमय दृश्य बनबैत अछि; शब्द निर्णय, संवाद आ अर्थक विकास करैत अछि। आलोचनात्मक रूपमे ई कहब आवश्यक अछि जे चित्रक बहुलता मात्र ग्राफिक कथाक पूर्ण सफलता नहि; चित्रक क्रम, पात्रक पहिचानमे एकरूपता, दृश्यांतरण आ

स्वतन्त्र कथात्मक योगदान एक-एक कऽ जाँचबाक कसौटी अछि। नमूना चित्रसभमे विविध शैलीक मेल पुस्तकक समृद्धि सेहो अछि, आ दृश्य-एकरूपताक दृष्टिसँ पुनर्विचार योग्य बिन्दुओ।

८. मैथिली भाषा, लोक-स्मृति आ वैश्विक विस्तार

चन्ना गाछी, आमक बोन, बा, सियारक आवाज, लालटेन, दुभि, दूधक छाल्ही आ भातक घरेलू स्मृति मैथिलीक स्थानीय जीवन-मूल्य प्रस्तुत करैत अछि। एहि परिचित जगतसँ कथा अफ्रीकाक टुराकोस, ऑस्ट्रेलियाक कूकाबुरा, ध्रुवीय एस्कीमो-पोंग्यूइन आ अज्ञात वनस्पति-सभ्यता धरि जाइत अछि। वैश्विक पात्रसभ मैथिली भाषामे बोलैत छथि, तेँ कथा विदेशकेँ केवल विदेशी नामक संग्रह नहि रखैत; अपन भाषामे विश्वक कल्पना करबाक प्रयोग बनबैत अछि।

पाठमे संवादक प्रश्नोत्तर पद्धति बालकक जिज्ञासा केँ जीवित रखैत अछि। कतिपय ठाम कतेको तकनीकी नाम आ भौतिक विस्तार व्याख्यात्मक गति बढ़बैत अछि; अत्यधिक अवधारणा एक संग अएला पर बालपाठकक ग्रहण-क्षमता पर भार पड़ि सकैत अछि। एहन स्थानमे दृश्यक्रम सहायता करैत अछि, मुदा किछु विचारक पुनरुक्ति छाँटब प्रकाशकीय परिष्कारक अवसर हो सकैत अछि।

९. सीमासभ आ आलोचनात्मक प्रश्न

पहिल, विज्ञानक नामे प्रस्तुत चमत्कार आ सत्यापित वैज्ञानिक अवधारणाक भेद सबठाम समान रूपसँ स्पष्ट नहि। दोसर, कथित परीलोकक राजनीतिक संरचनाक रहस्य

अन्तिम दू अध्यायमे अत्यन्त सघन रूपेँ खुलैत अछि; पन्द्रहम अध्यायमे दुनू राजाक व्याख्यापर निर्णायक निर्भरता अछि। तेसर, सपनाक नियम अन्तिम मुक्ति कैँ त्वरित बनबैत अछि; व्यवस्था परिवर्तनक मानवीय–सामाजिक प्रक्रिया संक्षेपमे रहि जाइत अछि। चारिम, आठो संगीक व्यक्तिगत घर-वापसी स्पष्ट नहि, यद्यपि आस्थाक अन्तिम चिन्ता एहि अपूर्णताकेँ कलात्मक रूपमे जीवित रखैत अछि।

दोसरा पक्षमे ई सीमासभ कृतिक लघु बालफैन्टेसी रूपसँ जुड़ल छथि। उपन्यास प्रशासनक विस्तृत संवैधानिक विवेचन नहि, बच्चाक दृष्टिसँ देखल अज्ञात संसारक नैतिक परीक्षा प्रस्तुत करैत अछि। तेँ कृतिक सफलता ओहि ठाम परखबाक चाही जतय आस्था सुन्दर बाहरी रूपक भीतरी अन्याय पहिचानैत अछि।

अन्तिम निष्कर्ष

‘तरहड़िमे परीलोक’क विशिष्टता परीकथा सँ विज्ञान-फैन्टेसी, तकर बाद पर्यावरणीय आ सत्तासम्बन्धी प्रश्न दिस क्रमिक गमनमे अछि। बालिका अपन गामक आम-बोनसँ निकलि एक एहन साम्राज्य देखैत अछि जतय प्रवेश आसान, निकास दुर्लभ, नाम संख्या बनल आ सपना संसाधन मानल गेल अछि। अन्हार कहल गेल ठाममे ओकरा जीवन, हवा, मित्रता आ सत्य भेटैत अछि। अन्तमे ओ सपना अपन निजी बचाव लेल नहि, सबहक मुक्तिक कल्पना लेल उपयोग करैत अछि।

ई बाल-साहित्यक प्रधान नैतिक उपलब्धि अछि : बच्चाक प्रश्न अधिकारक अपमान नहि, सत्यक खोज अछि; सौन्दर्यक बाहरी रंग सभ दिन स्वतंत्रताक प्रमाण नहि; विज्ञानक उपलब्धि ककरो बन्धनक साधन बनि सकैत अछि, आ कल्पनाक श्रेष्ठ उपयोग

सामूहिक जीवनक विस्तारमे अछि। उपक्रमक बांक आँगुर सँ उपसंहारक ओमक मुट्ठी धरि कथा अपन भाषिक-सांस्कृतिक मूलक संग वापस जुड़ैत अछि। एहि वृत्तमे मिथिलाक लोककथा आ वैश्विक भविष्य-कल्पना एक नब बालकथात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। तरहड़िमे परीलोक : आस्था आ टुराकोसक धोधरि-दरबज्जा। ‘३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास’ संकलन, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क १, मूल मुद्रित पृष्ठ १–१७६ (संकलन PDF पृष्ठ ५–१८०)।

कृति ३ : बाल गुरु

उपक्रम : दू टा नाम

छोट नामक भीतर सामाजिक संसारक विस्तार

मूल कृतिक उपक्रम ‘ओम’ आ ‘मंशा’—दू छोट नामसँ शुरू होइत अछि। एहि छोटपन कें कथाकार अनुभवक अल्पता मानि नहि चलैत; ओ संकेत दैत छथि जे बादमे एहि दू नामसँ पैघ नैतिक बात खुलत। ई संकेत पाठकक अपेक्षा बनबैत अछि, मुदा उपक्रम स्वयं पूरा उत्तर नहि दैत। दिल्लीक आवासीय परिसरक बीच एकटा घासक पार्क कथाक वास्तविक प्रयोगभूमि बनैत अछि। सामाजिक विचारक आधार अदालत, विद्यालय वा धर्मसभा नहि, बच्चासभक खेलबाक ठाम अछि।

एहि प्रारम्भमे तीन तरहक ‘नाम’क प्रश्न पहिनेसँ जुड़ल देखाइत अछि : ओम-मंशाक व्यक्तिगत परिचय; दिल्लीक फ्लैटसभक भीतर मिथिला, पंजाब आ ओड़िशाक सांस्कृतिक परिचय; आ घरक काज करैत महुआ कें ओकर अपने नामसँ चिन्हबाक वा नहि चिन्हबाक प्रश्न। कथाकार एकटा नैतिक प्रसङ्ग लेल जे वातावरण चुनैत छथि ओ अन्तरभाषी नगरजीवनक काजक संग ठोस रूपसँ जुड़ल अछि। बालकथा एतय सामान्य ‘सभसँ प्रेम करू’क आदेश नहि; अपरिचित ककरा बुझल जाए, से सामाजिक प्रश्न बनबैत अछि।

उपक्रमक कथावाचक अग्रिम रूपसँ बतबैत छथि जे बच्चाक उत्तर बड़का लोककेँ सेहो नम्र बनाओत। एहि अग्रसूचनाक दू परिणाम अछि। एक दिस पाठक पूरा घटना पढ़बाक लेल उत्सुक होइत अछि; दोसर दिस कथा अपन निष्कर्षकेँ प्रारम्भेसँ नैतिक पाठक रूपमे चिन्हित करैत अछि। ई शैक्षिक बल कथा केँ दिशा दैत अछि, मुदा रहस्यक स्वतन्त्रता कने कम करैत अछि। बादक अध्यायसभक सौन्दर्य ई देखबाक विषय अछि जे कथावाचकक पहिनेसँ घोषित अर्थ घटनाक भीतर कतबा सहजता सँ प्राप्त होइत अछि।

अध्याय १ : दिल्लीक आवासीय परिसर

एके रंगक मकान, भीतर अनेक देश

पहिल अध्यायमे दिल्लीक आवासीय परिसरक बाहरी समानता आ भीतरी सांस्कृतिक भिन्नता कथा-संरचनाक पहिल विरोध अछि। ऊपर सँ सभ फ्लैट एकहि रंगक आ एकहि बनावटवला; मुदा ओमक घरमे अरबा चाउरक भात, तरुआ-तिलकोरक गन्ध आ मैथिली लोरी अछि। सामने मंशाक परिवारक पंजाबी खानपान आ पारिवारिक सम्बोधन अछि। समान स्थापत्य भीतर अलग-अलग भाषिक जीवन समाहित अछि। कथाकार एहि अन्तरकेँ संघर्षक कारण नहि, सहजीवनक स्वाभाविक धरातल बनबैत छथि।

ओमक माए गृहिणी छथि, पिता बाहर नौकरी करैत छथि। मंशाक माए-पिता दुनू नौकरी करैत छथि, तैं दिनक काजक बहुत हिस्सा महुआक हाथमे अछि। एहि संक्षिप्त व्यवस्थासँ बालकक देखभालक दू ढंग उपस्थित होइत अछि : गृहिणीक प्रत्यक्ष घरेलू श्रम आ वेतनभोगी देखभालक श्रम। दुनूक मानवीय मूल्य परिवारक वैधता सँ निर्धारित

नहि होइत अछि। विशेषतः महुआक प्रवेश नहि भेलो पहिने ओकर श्रमक आवश्यकता कथाक आधारमे स्थापित भऽ गेल अछि।

भिन्न घरेलू संस्कृति बतबैत कथाकार सांस्कृतिक बहुलताकेँ खानपान, सम्बोधन आ रोजमर्राक लयमे मूर्त करैत छथि। परन्तु कथाक वास्तविक प्रश्न ई नहि जे मिथिला आ पंजाबक भीतर अनिवार्य सांस्कृतिक फरक कतेक अछि; प्रश्न ई अछि जे लोक एक-दोसराकेँ पहिल-पहिल कोन दृश्यचिह्नसँ पहिचानैत अछि आ सान संवादक माध्यमसँ कोना से सीमा पार करैत अछि। ओम आ मंशाक दोस्तीक आगामी प्रसंग एहि दृश्यचिह्नसभकेँ मानवीय अन्तरंगता सँ पाछाँ छोड़ि देत।

ग्राफिक रूपमे एकर उपयुक्त दृश्य-भाषा दोहरायल फ्लैट, सामने-सामने परिवार आ अलग रसोईघरक परिवेश अछि। मूल कृति एहि प्रकारक चित्रित पृष्ठक संग गद्यक छोट खण्ड रखैत अछि; दृश्य-एकरूपता आ पात्रक पहचानक कसौटी सँ एकर महत्व अछि। ई चित्र-भूमि पाठक केँ बौद्धिक तर्क सुनबाक पहिने समाज देखबाक अवसर दैत अछि।

अध्याय २ : महुआ

कामक सम्बोधनक पाछाँ हेराएल नाम

दोसरा अध्यायक महुआ ओड़िशासँ आएल एक युवती छथि। कथाकार हुनकर उमरिक सम्बन्धमे विशेष टिप्पणी करैत छथि : अपन गाम रहितथि तँ अपने ककरो कोरा-काँख खेलितथि, मुदा दिल्लीमे मंशाक देखभाल करैत छथि। ई तुलना महुआक स्थितिमे बालपन आ जिम्मेदारीक असमान भार देखबैत अछि। ओ सवेरे उठबब, केश बान्हब,

दूध गरम करब आ साँझ पार्क लऽ जाएब सन काम करैत छथि। एहन छोट-छोट सेवा बिना औपचारिक भाषणक घरेलू श्रमक व्यापकता उजागर करैत अछि।

महुआक गामक ओड़िया गीत निजी स्मृतिक साक्ष्य अछि। ओ गीतक पूरा अर्थ सभकेँ नहि बुझबैत, गीत बीचमे थमि जाइत अछि। मौनक एहि क्षणमे गामसँ दूरी आ अपन नामक निजी जीवनक स्मृति बाँचल अछि। परिसरक पैघ लोक हुनका ‘मंशाबाली आया’ कहैत छथि—कामक नाँवसँ सम्बोधन; ओमक माए हुनका ‘महुआ’ कहि अपन लग बैसबाक आ खा लेबाक आग्रह करैत छथि। एहि छोट फरकमे कृतिक पहिचान-सम्बन्धी मूल विषय पहिल बेर सामाजिक रूपसँ साकार होइत अछि।

ई प्रसङ्ग श्रमक नैतिकता पर सूक्ष्म प्रश्न उठबैत अछि। ककरो काम जानब आ ओ लोककेँ एक स्वतंत्र मनुष्यक रूपमे जानब एक नहि। महुआक नाम, गीत आ घरक स्मृति हुनका केवल ‘देखभाल करबाक मशीन’ होएब सँ बचबैत अछि। कथामे सहानुभूतिपूर्ण ओमक माए एकटा सम्मानजनक सम्बन्धक सम्भावना देखबैत छथि। तथापि दया द्वारा सामाजिक अन्तर पूर्णतः समाप्त भऽ गेल अछि, एहन दावा मूल घटनासँ नहि निकलैत; महुआक रोजी, निर्णयक अधिकार आ अपन घर घुरबाक क्षमता पर पाठ चुप अछि।

चित्रात्मक संरचनामे झुलाक रस्सी, महुआक हाथ आ पार्कक बाहरी भाग जीविकाक अदृश्य श्रम केँ देखबाक अवसर दैत अछि। एहि अध्यायक मूल शक्तिस्थल श्रमिक पात्रकेँ अनाम पृष्ठभूमि नहि रहय देब अछि। कृतिक बादक ‘जे चिन्हैत अछि से अपमान नहि करैत’ सूत्र महुआपर लागू करिते पाठक देखैत अछि जे सम्मान बालकसभक दोस्तीपर सीमित नहि रहबाक चाही।

अध्याय ३ : घासक पार्क

बालकसभक अनौपचारिक सार्वजनिक संसार

तेसर अध्याय पार्ककेँ ‘बच्चासभक संसद’क रूपमे उद्घाटित करैत अछि। ओतय केओ साइकल चलबैत अछि, केओ गेंद खेलैत अछि, केओ खाली दौड़ैत अछि। एहि गतिविधिसभक बीच मित्रताक सम्बन्ध बिना औपचारिक विधिक बनैत अछि। ओम माएक संग अबैत अछि, मंशा महुआक संग। दुनूक पहिल भेटक निश्चित तारीख ककरो मोन नहि—ई अनुपस्थित सूचना कथा-दोष नहि, चारि बरखक दोस्ती अपन स्वभावेँ कैलेंडर सँ बेसी साझा अनुभवसँ बनल अछि।

ओम कम बाजैत आ बेसी सुनैत अछि; मंशा तामसदार आ बोलनिहार। ई चरित्र-विरोध आगामी संकटक आधार होइत अछि। मंशा ओकर रक्षा करैत अछि, ओम ओकर हाथ पकड़ि ओकरा थम्हबैत अछि। एतय ‘कम बोलब’ केँ अनिवार्य कमजोरी नहि, आ ‘प्रतिकार करब’ केँ अनिवार्य दोष नहि ठहरायल गेल अछि। दुनू बच्चाक सम्बन्ध परस्पर पूरक आ व्यवहारगत अछि। बादक अपमानक क्षण एहि भेदकेँ तीव्र बनाएत।

दिल्लीक छोट पार्कमे मिथिलाक बालक, पंजाबक बालिका, ओड़िशाक महुआ—एहि समीपस्थ उपस्थितिसँ कथाकार पूरा देशक एकटा सान रूपक बनबैत छथि। मुदा एकर सामाजिक विश्वसनीयता ‘सभ भिन्नता समाप्त’ होएबमे नहि, भिन्नताक बीच एक साधारण खेल बनबमे अछि। भाषा-संस्कृतिक अन्तर रहितो झुला साझा अछि, खेलेबाक समय साझा अछि, दोस्तीक भावना साझा अछि।

चित्रक क्रममे पार्कक एकटा सामुदायिक दृश्य जरूरी संरचनात्मक स्थान रखैत अछि। घरक पृथक् दृश्यसभक बाद खुलल घासक ठाम लोककेँ आपसमा देखबाक अवसर दैत अछि। जे संघर्ष बादमे होयत, ओकरा निजी फ्लैट नहि, ई सार्वजनिक खेलठाम साक्षी बनत। एहि कारण पार्क घटनाक पृष्ठभूमि मात्र नहि, सामाजिक मान्यताक परीक्षा-स्थल अछि।

अध्याय ४ : जन्मदिनक रीति

उपहारक व्यवहार आ घरक सीमा खोलबाक कला

चौथ अध्याय ओमक जन्मदिनक पुनरावृत्त उत्सव देखबैत अछि। ओमक माए अपन बेटाक संग मंशा लेल अलग उपहार कीनैत छथि। ई उपहार केवल पर्वक वस्तु नहि, घरक सदस्यताक विस्तारक संकेत अछि। मंशा महुआक संग तैयार भऽ पहुँचैत अछि, घण्टी बजैत अछि आ भीतर एना दौड़ैत अछि जेना ओ अतिथि नहि, परिवारक बच्ची हो। एहि आगमनमे बिना कानूनी अपनत्वक भावनात्मक स्वीकार अछि। गाम, प्रदेश, परिवार आ रोजी सभक सीमा पार कऽ उत्सवक साझा क्षण बनैत अछि।

कथामे महुआक रोजक देखभाल उत्सवक तैयारीक आधार अछि। मंशाक फ्रॉक, साफ-सफाई, समयपर पहुँचब—ई सभ कामक अदृश्यता केँ पाठक बूझि सकैत अछि, यद्यपि उत्सवक केन्द्र दुनू बच्चा छथि। ओमक माए अलग उपहार राखैत छथि; महुआ मंशाकेँ उत्सव धरि अनैत छथि। ई दू सहयोगी श्रम नीतिगत परिभाषासँ अलग घरेलू मनुष्यता रचैत अछि।

केकक अपन-अपन हिस्सा एक-दोसराकेँ खुआएब ओम–मंशाक सम्बन्धक सार्वजनिक पुष्टि अछि। कथाकार एहि दृश्यसँ ‘मित्रता सिखाओल नहि जाइत, अपने जनमैत अछि’ सन भाव व्यक्त करैत छथि। एहि कथनक समीक्षा करिते ध्यान देब आवश्यक अछि जे मित्रता सहज उत्पन्न होएत, मुदा ओकर संरक्षण निरन्तर व्यवहार आ देखभालपर निर्भर अछि। कृतिक पहिल चारि अध्याय ओहने निरन्तरता बनौने छथि।

मूल कथा एहि जन्मदिनक समय हुनकर चारि बरख पूरा भऽ पाँचम बरखमे प्रवेशक उल्लेख करैत अछि। एहि शैशवावस्थाक ध्यान राखब आगामी विवादक नैतिक मूल्याङ्कन लेल जरूरी अछि; ओमक उत्तरक मूल्य ओकर आयु कम होइतहुँ समझक गरिमा मे अछि। जन्मदिनक चित्र सामाजिक नजदीकीक स्मृति बनि अध्याय ११क कल्पित भविष्य-उत्सवमे फेर उभरैत अछि।

अध्याय ५ : नव बच्चा

खेल बिगाड़बाक शक्ति आ पैघ लोकक चुप्पी

पाँचम अध्यायमे सुसेन नामक नव बालक परिसरमे अबैत अछि। ओ उमरमे कने पैघ आ देहसँ मजबूत अछि। ओकर खेलक ढंग ककरो साइकलक घंटी बजाकऽ भागब, बालूक घर पएरसँ मेटाएब आ नाम बिगाड़ि कऽ पुकारब अछि। एहि घटनासभकेँ सामान्य खेलक शरारत कहि माफ करब बालकसभपर पड़ैत प्रभाव नहि देखब होयत। छोट बच्चासभ अपन बनाओल घर भंग होएब आ नाम बिगड़ब केँ वास्तव मे अपमानक रूपमे अनुभव करैत छथि। खेलक स्थलक्रम धीरे-धीरे भयक क्षेत्र बनि सकैत अछि।

पैघ लोकसभ नव बच्चाक व्यवहार कैँ ‘समय लागलापर सीखि जाएत’ कहि टारैत छथि। ई प्रतिक्रिया देखबैत अछि जे ककरो असामाजिक व्यवहारक प्रारम्भिक स्वरूप सामाजिक दृष्टिसँ अदृश्य रहि सकैत अछि। मुदा बच्चासभक प्रतिक्रिया ‘दूर रहू’ अछि। एहि दुई समूहक अन्तर कथाक तनाव बनबैत अछि। वयस्कक धैर्य कतेको बेर उपयोगी होयत, मुदा दुःख भोगनिहार बच्चाक बात नहि सुनब ओकर दोसर रूप अछि।

सुसेन ओमक चुप्पी कैँ निशाना चुनैत अछि। मंशा दोहामे रक्षा लेल पहिने ठाढ़ होइत अछि। कृतिक केन्द्र एतय दुष्ट बालक बनाम सज्जन बालकक स्थिर जाति-विभाजन नहि; सामाजिक पहचानक विफलता आ प्रतिक्रिया पद्धतिक अन्तर अछि। सुसेनक व्यवहार गलत अछि, मुदा ओ भविष्यमे बदलि नहि सकैत, एहन निश्चय मूल कथा नहि करैत। बादक ‘चिन्हब’क सूत्र एहि अपरिवर्तनीय दोषारोपणक विरोधमे अछि।

अध्यायमे शक्ति शारीरिक बलक रूपमे पहिने प्रवेश करैत अछि, तकर उत्तर मंशाक वाणीक दृढ़ता आ ओमक बादक व्याख्यामे भेटैत अछि। बचपनक संघर्षक एहि तिन्हेँ उपाय—बल, प्रतिरोध, समझ—कथा-विन्यासक तीन कड़ी बनैत अछि।

अध्याय ६ : काँटवला शब्द

नाम बिगाड़ब, अपमान आ लक्ष्यक परिवर्तन

छठम अध्यायक शीर्षकमे ‘काँट’ वस्तु नहि, शब्दक प्रभाव अछि। सुसेन आरम्भमे मंशाक दू-जुट्टी आ चेहरा पर ताना दैत अछि। मंशा उत्तर दैत अछि, आ ओकर एहि प्रतिक्रियाक कारण सुसेनक खेल चलि रहल अछि। संवादक आवृत्तिमे छेड़छाड़ आ

आहत होएबाक सामाजिक प्रक्रिया देखाइत अछि। व्यवहार केवल व्यक्तिगत लहजाक प्रश्न नहि, ककरा बारम्बार अपमान सहबाक लेल चुनल जाइत अछि, से सेहो प्रश्न अछि।

तेसर दिन सुसेन ओमकेँ ‘गन्दा’ कहैत अछि, ठीक मंशाक सोझाँ। ई शब्द पर ओम चुप रहैत अछि, अपन कपड़ा, सुसेन आ जमीन दिस देखैत अछि। लेखक ओकर प्रतिक्रिया क्रियात्मक मोनोगाथा सँ नहि, देहक छोट-छोट संकेतसँ व्यक्त करैत छथि। चुप्पीमात्रसँ ओमक मनक अन्तिम अर्थ एखन नहि बुझाइत; बादमे ओकर अपने कथनसँ ओकर वास्तविक बोध खुलेत। एहि कारण ई दृश्य पाठककेँ जल्दी मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष नहि देबाक आग्रह करैत अछि।

‘गन्दा’ शब्द सामाजिक गरिमाक विरोधमे प्रयोग होइत अछि। कृति एहि अपमान केँ स्पष्ट वर्ण अथवा जाति-आधारित आरोपक रूपमे निरूपित नहि करैत; तैं एकरा निश्चित जातिगत गारि कहब मूल पाठसँ बाहर होयत। मुदा देह, कपड़ा आ सामाजिक पहिचानक नामे एक बालक केँ नीच मानबाक प्रयत्न स्पष्ट अछि। छोट वाक्य चरित्रपर पैघ प्रभाव छोड़ैत अछि।

मंशाक भीतरक तामस एहि क्षण जन्मैत अछि। ओमपर आरोप सुसेनक विवेक सँ नहि, मंशाक सम्बन्धपर चोट करबाक प्रवृत्ति सँ जुड़ल अछि। एहि कारण मंशाक प्रतिवाद आत्मरक्षा मात्र नहि, सम्बन्धक सम्मान लेल सार्वजनिक घोषणा बनबाक अछि।

अध्याय ७ : मंशाक गर्जन

भयक विरोधमे स्वरक दृढ़ता

सातम अध्याय अत्यन्त छोट, मुदा कथात्मक तनावक चरम बिन्दु अछि। मंशा ऊँच स्वरमे कहैत अछि जे ओम ओकर दोस्त अछि, आ जकरा ओ ‘गन्दा’ कहैत अछि से स्वयं अपन व्यवहारक कारण निन्दनीय बनैत अछि। पार्कक खेलक गतिविधि एक क्षण रुकि जाइत अछि—झुला, गेंद, सभ बच्चाक दृष्टि ओकर वचन दिस मुड़ैत अछि। ई दृश्य शब्दक सामाजिक शक्ति देखबैत अछि।

मंशाक प्रतिवादमे साहस अछि; ओ हाथ उठाकऽ प्रहार नहि करैत। ई तथ्य महत्त्वपूर्ण अछि, कारण मूल कथा उसका प्रतिरोध कैँ हिंसाक पर्याय नहि बनबैत। मंशा ककरो पक्षमे खड़ा होएबाक उत्तरदायित्व निभबैत अछि। ओमक हाथ पकड़ि पार्कसँ बाहर जाएब ओकर घोषणाकैँ क्रियात्मक रूप दैत अछि। शब्दसँ सम्बन्ध घोषित होइत अछि, हाथ पकड़ेबाक दृश्यसँ ओ सम्बन्धक निरन्तरता व्यक्त होइत अछि।

एहि दृश्यपर दोसर आलोचनात्मक दृष्टि सेहो जरूरी अछि। मंशा सुसेनक अपमान कैँ सुसेन पर लौटबैत अछि; एहि कारण प्रतिरोधक भाषामे उलट गारिक छाया अछि। ओमक आगामी उत्तर एहि संघर्षमे एक दोसर सम्भावना खोजत। तैं कथाक नैतिक सन्तुलन केवल ‘मंशा सही’ अथवा ‘मंशा गलत’मे नहि, न्याय्य आक्रोश आ करुणामूलक समझक सहअस्तित्वमे अछि।

पार्कक दोसर बच्चा सभ एहि घटना सँ सीखैत छथि जे अपमानक विरोध बिना मारपीट सेहो भऽ सकैत अछि। एही अर्थमे मंशा स्वयं गुरुत्वक एक रूप धारण करैत अछि। ई रूप अध्याय १२ मे स्पष्ट कएल जाएत।

अध्याय ८ : शिकायत

रक्षाक बाद मौनक प्रश्न

अष्टम अध्यायमे मंशा ओमक घर जाएत अछि आ ओमक माएकेँ समूची घटना सुनबैत अछि। ओकर शिकायतक वास्तविक लक्ष्य सुसेन नहि, ओमक चुप्पी अछि। जे बच्ची दोस्त लेल लड़ी, तकरा दुःख अछि जे दोस्त स्वयं प्रतिवाद नहि केलक। एहि भावनासँ बालकक मित्रतामे निष्ठा आ परस्पर प्रत्याशाक रूप स्पष्ट होइत अछि। बच्चासभक संसारमे सम्बन्धक न्यायबोध कतबा तीक्ष्ण हो सकैत अछि, से कथाकार प्रभावी रूपेँ पकड़ैत छथि।

ओमक माए सेहो चुप्पीसँ उद्विग्न छथि। हुनकर प्रश्न मंशाक भावना केँ वैधता दैत अछि—अपमान होएला पर चुप किएक? मुदा कथा ओमक उत्तर देबाक पहिने एक विराम रखैत अछि। ओम शब्द सजबैत अछि, तकर बाद बजैत अछि। एहि लघु विरामक साहित्यिक महत्त्व अछि : शैशवक वाणी केँ तात्कालिक प्रतिक्रियासँ अलग, विचारक निष्कर्षक रूपमे देखाओल गेल अछि।

एहि दृश्यसँ ‘मौन’क द्वैधता स्पष्ट होइत अछि। चुप रहब भय, असहायता, सहमति वा विवेक—अनेक कारणसँ होइत अछि। केवल बाहरक व्यवहार देखिकऽ ओमक मनक निर्णय देब सम्भव नहि। मंशा अपन दृष्टिसँ ओकरा निष्क्रिय मानैत अछि, माए सेहो प्रश्न करैत छथि; मुदा पाठक केँ थोड़े प्रतीक्षा करबाक पड़त। एहि प्रतीक्षामे कथक लेखकक कथन-विधानक नैतिक गूढ़ता अछि।

अध्याय ८ कृतिक निर्णायक उत्तरक ठीक पूर्व स्थित अछि। एतय आरोपक दोहराव नहि, सत्यक नवीन व्याख्या जन्मब सँ पहिने प्रश्नक स्थिति स्थापित होइत अछि। यदि ई प्रश्न नहि रहैत, तऽ ओमक आगामी कथन एकाकी नीतिवचन होयत; एहि पात्र-सम्बन्धक पीड़ा ओकरा कथात्मक भार दैत अछि।

अध्याय ९ : बाल गुरुक उत्तर

अपमानक जड़िमे अज्ञान पहिचानबाक दृष्टि

नवम अध्याय मूल कृतिक केन्द्र अछि। ओम माएसँ कहैत अछि जे सुसेन ओकरा नहि चिन्हैत अछि; नव आएल अछि, तैं अपमान केलक; चिन्हि लेत तँ एना नहि कहत। ई कथनकेँ साधारण मौनक सफाइ कहब अपर्याप्त अछि। ओम समक्ष अपमानक कारणक एक नब व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि : सुसेनक व्यवहार केँ ओकर जन्मगत वा अपरिवर्तनीय दुष्टता नहि, सीमित परिचयक परिणामक रूपमे बुझबाक सम्भावना। एहि कारण ओ तात्कालिक प्रतिशोध नहि चुनैत।

चारि बरख पूरा कऽ पाँचम बरखमे पहुँचल बच्चाक मुखसँ एहना उत्तर निकलब कथा-विश्वक आदर्शीकरण अछि। वास्तविक बालमनोविज्ञानमे सभ बच्चा एहन विचार नहि करैत; मूल कथा सेहो एकरा प्रत्येक बच्चाक सामान्य प्रतिक्रिया नहि बनबैत। ई आदर्शीकरणक साहित्यिक प्रयोजन वयस्कक तुरन्त प्रतिवादक अपेक्षाकेँ उलटि देब

अछि। माए आ मंशा दुनू ओमक चुप्पीकेँ असमर्थता मानैत छलीह, मुदा उत्तर सुनिते चुप्पीक अलग अर्थ खुलैत अछि।

ओमक तर्कमे आस्था अछि जे ककरो चिन्हि लेबा पर ओकर व्यवहार बदलि सकैत अछि। एहि विश्वासकेँ वास्तविक जीवनक सार्वभौम गारंटी नहि मानल जाए। किछु अपमान जानि-बुझि, सत्ता-लाभ लेल सेहो कएल जाइत अछि, आ किछु व्यवहारक रोकथाम लेल वयस्क हस्तक्षेप जरूरी होइत अछि। एतय बालकक उत्तर एकटा नैतिक सम्भावना देखबैत अछि, नहिएँ शारीरिक वा मानसिक प्रताड़ना चुपचाप सहबाक सर्वमान्य उपदेश। एहि विवेकक संग पढ़ला पर कृतिक मूल्य आरो स्पष्ट होइत अछि।

मंशाक तामस थम्हि जाइत अछि आ माएक आँखिमे नोर अबैत अछि। पाठकक भावान्तरण केवल सुन्दर वचनक कारण नहि; पहिनुक अध्यायसभक आक्रोश, असमझ आ अपेक्षाक पृष्ठभूमि एहि वाक्यक नैतिक भार बनबैत अछि। ओम ‘गुरु’ केवल एहि लेल नहि जे ओ शान्त अछि, बल्कि एहि लेल जे ओ सामनेक व्यक्तिक विषयमे अपन ज्ञानक सीमाकेँ समझैत अछि। एही अर्थमे बालमन स्वयं समाजक ज्ञान-पद्धति सँ प्रश्न करैत अछि।

अध्याय १० : माएक नोर

वयस्क अनुभूतिक पुनःशिक्षा आ देखभालक बहुलता

दसम अध्यायमेक नोर दुःखक साधारण आवेग नहि। ओमक माए बुझैत छथि जे बच्चाक उत्तर हुनकर अपेक्षाकेँ पुनः जाँचबाक लेल बाध्य केलक। माएक नैतिक

अधिकार ओमक मौनक ठीक अर्थ पहिने नहि बुझि सकल; बेटाक उत्तर ओहि अधिकारक स्वयं-संशोधन बनैत अछि। बाल-साहित्यमे गुरु–शिष्यक स्थान बदलबाक ई एकटा महत्त्वपूर्ण क्षण अछि। शिक्षक कहनिहार वयस्क सेहो सीख सकैत अछि, बच्चाक अनुभव ज्ञानक योग्य स्रोत भऽ सकैत अछि।

कथाकार मंशाक रूप सेहो एहि क्षण नव ढंगसँ देखैत छथि। ओकर दु-जुट्टी किछु अस्त-व्यस्त, गाल तामससँ लाल, मुदा दोस्त लेल चिंता यथावत्। ओमक संयम आ मंशाक प्रतिरक्षात्मक साहस—दुनूक भावात्मक गुण अलग-अलग अछि। एक गोटेक नैतिक ऊँचाइ साबित करबाक लेल दोसरक साहस कैं खारिज नहि कएल गेल अछि। मातृत्वक दृष्टिसँ दुनू बच्चामे बचल मनुष्यता देखल जाइत अछि।

माए दुनूकैं हृदयसँ लगा लैत छथि। घरक भातक गन्ध, साँझक इजोत आ मंशाकैं अपने हाथ खुआएब पहिल अध्यायक घरेलू संस्कृति कैं भावनात्मक रूपसँ पुनः उपस्थित करैत अछि। महुआ नीचे प्रतीक्षामे ठाढ़ अछि। हुनक माथपर हाथ फेरबाक दृश्य देखि ‘माए’क विस्तृत रूपक उभरैत अछि—जन्म देब, दिनभर पोसब, स्नेहसँ अपन मानब आ बच्चासँ स्वयं सीखब। एहि सम्बन्धसभमे श्रमक असमानता ओझराएब नहि चाही; महुआक देखभाल सामाजिक व्यवस्था सँ उत्पन्न उत्तरदायित्व सेहो अछि, जकर अधिकारक प्रश्न अद्यापि शेष अछि।

कृतिक समेकित नैतिक अर्थ एहि अध्यायमे गहिर होइत अछि। शिक्षा आदेशसँ एक दिशा मे नहि चलैत; बच्चासँ वयस्क, स्नेहसँ श्रम, दोस्तीसँ परिवार—अनेक दिशामे चलैत अछि। एही कारण ‘बाल गुरु’क शीर्षकक आधार केवल ओमक वचन नहि, ओहि वचनसँ बदलबैत लोकक दृष्टि अछि।

अध्याय ११ : चिन्हब

अपेक्षित मेलक सम्भावना, घटित घटना नहि

एगारहम अध्यायक आरम्भ ‘तकर बाद की भेल?’ सन प्रश्नसँ होइत अछि। ई वाक्य पाठक कैं सुसेनक परिणति जनबाक इच्छा जगबैत अछि। मुदा कथाकार ओकर पछिला जीवनक निश्चित तथ्यक विस्तार नहि दैत; ओ एहि सम्भावना पर विचार करैत छथि जे घासक पार्कक खेलमे एक दिन सुसेन सेहो ओम-मंशाक घेरा धरि पहुँचि सकैत अछि। बल, परिचय आ खेलक सम्बन्ध सँ अपमानक शब्द दोस्तीमे बदलि सकैत अछि। एहि ठाम महत्त्वपूर्ण भेद ई अछि जे *भविष्यक अपेक्षा* कथाक *सम्पन्न घटना* नहि।

सामूहिक खेल पहचानक विद्यालय बनि सकैत अछि—संग दौड़ब, भिजब, हारब, जीतब, एक-दोसरक क्रम बुझब। ई ज्ञान औपचारिक पुस्तकसँ नहि, साझा क्रियासँ बनैत अछि। एहि कारण ओमक पूर्व कथनक सामाजिक परीक्षणक अवसर कथक भविष्यक कल्पना मार्फत खोलैत छथि। लेखक परिणाम घोषणा करबाक बदला सम्भावनाक नीतिगत मूल्यपर भरोसा रखैत छथि।

अगिला जन्मदिनमे उपहार एकटा बेसी कीनल जाएब आ दरबज्जापर घंटी अधिक बेर बाजब, ई सब वाक्य भावी मिलनक कल्पना अछि। एकर दृश्य प्रसन्नतापूर्ण अछि, मुदा मुख्य कथानकमे सुसेन क्षमा माँगलक वा निश्चित रूपसँ मित्र भेल, एहन घटना नहि देखाओल गेल। पाठककेँ ई खुलापन पहचानबाक चाही। यदि अन्तिम परिणाम पूर्ण खात्रीक रूपमे दर्ज करब तँ कथा यथार्थक एक आवश्यक अनिश्चितता गमाएत।

महुआक गीत फेर उभरैत अछि। ओकर गामक अधूरा गीत सम्भाव्यत: एहि घरेलू अपनत्वक बीच कने आगाँ बढ़ि सकैत अछि। महुआक नामसँ चिन्हल जाएब आ सुसेन द्वारा ओमकेँ चिन्हल जाएब—दू प्रसङ्ग अलग सामाजिक स्तरक छथि, मुदा दुनू एक विचार जोड़ैत अछि : सम्बन्धक विस्तार अपमानक भाषा घटेबाक बाट खोलि सकैत अछि। तथापि परिचय आ सम्मानक बीच स्वत: एक-एक कारण-परिणामक अपरिवर्तनीय नियम कहब उचित नहि।

अध्याय १२ : बाल गुरु

क्षमाक बुद्धि आ प्रतिरोधक साहसक युगल निष्कर्ष

बारहम अध्यायमे शीर्षकक अर्थ समेकित रूपसँ उद्घाटित होइत अछि। ‘गुरु के?’ प्रश्नक उत्तर जन्म-वर्ष, पद अथवा विद्यालयक अधिकार सँ नहि, अन्हारमे बाट देखेबाक कर्मसँ निर्धारित अछि। ओम अपमानक तुरन्त प्रत्युत्तर नहि चुनि ओ व्यक्ति केँ चिन्हबाक आवश्यकता दर्शबैत अछि। एहि अर्थमे ओकरा क्षमा, धैर्य आ अन्यक प्रति विश्वासक नैतिक शिक्षक कहल जाइत अछि।

मुदा लेखक मंशाकेँ पाछाँ नहि छोड़ैत छथि। ओ दोस्तक अपमानपर दृढ़तासँ ठाढ़ भेलीह, सत्य बाजलीह आ हाथ नहि उठौने विरोध केलनि। कथाक अन्तिम निष्कर्ष एहि कारण एकल मौनक विजय नहि, दू गुणक सहभागिता अछि—ओमक समझ आ मंशाक साहस। जँ ओम मात्र होइत तऽ कथा निष्क्रिय सहनशीलताक गलत अर्थ उत्पन्न करि सकैत छल; जँ मंशा मात्र होइत तऽ अपमानक प्रतिउत्तरक दूसरी कल्पना दबि जाइत। दुनूक संग कृति बच्चाक नैतिक कर्तृत्व केँ बहुरूपी बनबैत अछि।

ओमक सरल भाषामे व्यक्त बोध वयस्कक व्याख्याक आवश्यकता जगबैत अछि, मुदा वयस्कक एकाधिकार तोड़ैत अछि। महुआक श्रम, माएक भावानुभूति, मंशाक रक्षा आ सुसेनक असम्मान—एहि चारि सामाजिक स्तरक बीच ओमक वचन स्वतन्त्र शिक्षा बनि जाएत। ई शिक्षा धर्मोपदेशक रूपमे मात्र नहि, मित्रताक कष्टसँ जनमल सान घटनाक आधारपर प्रस्तुत अछि।

मूल कृति ‘बाल गुरु’क नामपर समाप्त होइत अछि। उपसंहार अथवा सुसेनक परिवर्तनक विस्तृत प्रकरण नहि जोड़ल गेल। पार्कक झुला आ दुनू छोट नामक प्रतिध्वनि आख्यानकेँ प्रारम्भक साझा ठाममे वापस लऽ जाइत अछि। एहि घुमावमे शिक्षा एक दिनक नैतिक घोषणापर समाप्त नहि; ओ समाजमे रहब-कहबाक निरन्तर अभ्यासक रूपमे बचल अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

बालगुरुत्वक आधार : अवस्था नहि, दृष्टि

‘बाल गुरु’क मुख्य सौन्दर्य एवं नैतिक प्रश्न एहि विरोधमे अछि : जे बच्चा हुनकर अधिकारक दृष्टिसँ ‘सीखएबला’ बुझाइत अछि, सएह एक क्षणमे वयस्कक समझक गुरु बनैत अछि। ओमक मुखसँ निकलल विचारक सामर्थ्य एतय मात्र नहि जे ओ ‘अच्छा बच्चा’ अछि; ओ अपमानक व्याख्यामे अन्यक अपरिचित स्थिति केँ स्थान दैत अछि। ओ सुसेनक अभद्र व्यवहारक समर्थन नहि करैत, मुदा ओकरा स्थायी दुष्टता कहि जीवनभरक निर्णय नहि दैत। एहि भेदकेँ ठीक राखि पुस्तक पढ़ब आवश्यक अछि।

वयस्क संसारमे प्रतिक्रिया अक्सर अपमानक भाषामे होइत अछि। मंशा प्रतिरोधक तत्परता देखबैत अछि; माए ओम सँ कारण पूछैत छथि। ओम अपन पक्ष बचएबाक प्रतिस्पर्धा नहि स्वीकारैत। एहि त्रिकोणक बीच ‘गुरु’क अर्थ पद नहि, सामर्थ्य बनैत अछि—क्रोधक तुरन्त प्रतिक्रिया सँ हटि स्थिति केँ एक व्यापक सन्दर्भमे देखब। पुस्तकक अन्तमे मंशाक प्रतिरोध सेहो गुरुत्वक एक दूसरा रूप मानल गेल अछि। एहि कारण नैतिकता एक सरल निर्देशमे बन्द नहि रहैत।

चिन्हब : ज्ञानक साहित्यिक आ नैतिक क्रिया

मूल कथा ‘चिन्हब’ शब्दक भीतर व्यापक सम्बन्ध रचैत अछि। मंशा ओमकेँ चिन्हैत अछि तैं ओकर अपमान सहि नहि सकैत; सुसेन ओमकेँ नहि चिन्हैत अछि तैं बेपरवाही सँ शब्दक चोट करैत अछि; ओमक माए महुआकेँ नामसँ चिन्हैत छथि, जखन दोसर लोक हुनका कामक नामे पुकारैत छथि। ई तीनू सम्बन्ध एकरे प्रकारक नहि—मित्रता, छेड़छाड़ आ घरेलू श्रमक सामाजिक असमानता अलग-अलग संरचना छथि। तथापि एक साझा विचार एतय उपस्थित अछि : ककरो एक चिन्ह, एक काम वा एक क्षणक व्यवहार धरि सीमित कऽ देब ओकर व्यक्तित्वक पूरा बोध नहि।

एहि पाठक विस्तार विशेष महत्त्व रखैत अछि, कारण कृति एक सामाजिक परीक्षा निजी परिवारसँ बाहर सार्वजनिक पार्क धरि पहुँचबैत अछि। किछु आलोचना एतय आवश्यक अछि : चिन्हबाक बादो लोक कखनो जानि-बुझि चोट पहुँचा सकैत अछि। अतः ओमक विश्वास नैतिक सम्भावना अछि, सामाजिक विज्ञानक निश्चित नियम नहि। बालपाठकक लेल सुरक्षित सन्देश होएत—समझक प्रयास करू, मुदा लगातार अपमान

वा धमकी कएल जाए तऽ भरोसयोग्य वयस्कक सहायता सेहो आवश्यक अछि। कथाक मंशा एहिमे पहिनेसँ प्रतिकारक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

मंशा आ ओम : प्रतिरोध आ करुणाक परस्परपरीक्षा

दुनू मुख्य बच्चाक विपरीत व्यक्तित्वक प्रस्तुति पुस्तकक रचनात्मक शक्ति अछि। मंशा तामसदार आ तेज बोलनिहार; ओम शान्त आ सुननिहार। संघर्षमे मंशाक ‘नहि’क शक्ति स्पष्ट होइत अछि। ओमक मौन एक क्षण एहन लगैत अछि जे मित्रक प्रयत्न व्यर्थ भेल; मंशाक शिकायत एहि अनुभवक वास्तविक बाल-भावना अछि। बादमे ओमक वचन ओकर चुप्पीक नब अर्थ खोलैत अछि।

दुनू भूमिका एक-दोसराकेँ निरस्त नहि करैत। यदि केवल क्षमाक चर्चा कएल जाए तऽ मंशाक साहस छूटि जायत; यदि केवल संघर्षक महिमा कएल जाए तऽ ओमक व्यापक दृष्टि खोइ जायत। लेखक अन्तिम अध्यायमे दुनू बच्चाकेँ गुरु कहल अर्थमे एहि द्वन्द्व केँ सुलझबैत छथि। बालसाहित्यक लेल ई महत्त्वपूर्ण अछि जे नैतिक बोधक कतेको रूप मान्य मानल जा सकैत अछि। कृतिक सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि एतय उपदेश नहि, परस्पर सम्बन्धक भीतर जगल संशय सँ निष्कर्ष धरि पहुँचेबाक क्रम अछि।

महुआक श्रम आ नगरक अन्तर-प्रदेशीय समाज

महुआक पात्र पृष्ठ-संख्या आ संवादक दृष्टिसँ केन्द्रीय ओम-मंशाक अपेक्षा कम दृश्य पबैत अछि, मुदा उपन्यासक सामाजिक विश्वसनीयतामे हुनकर भूमिका अनिवार्य अछि। मंशा रोज पार्क पहुँचैत अछि तऽ महुआक श्रमद्वारा। ओड़िशाक गाम सँ दूर दिल्लीक

फ्लैटमे हुनकर रहब, काम करबाक संग घरक गीत याद करब, निजी बोधक पुनर्प्राप्ति चाहैत अछि। ई कथा सहज रूपसँ देखबैत अछि जे पारिवारिक जीवनक रूपाकार ककरो अदृश्य श्रमपर आधारित अछि।

ओमक माए हुनका नामसँ संबोधित करैत छथि। एहि व्यवहारमे सांस्कृतिक सद्भाव अछि। मुदा श्रमिकक गरिमा केवल स्नेह पर आश्रित रहि नहि सकैत; पारिश्रमिक, अवकाश, निर्णयक स्वतंत्रता सन सामाजिक प्रश्न एहि लघु कृतिमे विस्तृत नहि कएल गेल अछि। ई सीमा चिन्हित करब स्नेहक मूल्य घटाएब नहि। उलटे पाठककेँ पूछबाक अवसर देब अछि जे ‘नामसँ चिन्हब’ सामाजिक बराबरी दिस पहिल डेग होइतहुँ अंतिम डेग किएक नहि।

बालकथाक स्थान-रचना आ काल

कथा दिल्लीक आवासीय परिसरक बीच पार्कमे स्थिर रहैत अछि। न कोनो लमहर तीर्थयात्रा, न दूरक युद्ध; बहुत सान घटनाक माध्यमसँ चरित्रमे परिवर्तन अछि। एहन संकुचित स्थलविशेष कथा केँ नैतिक घनत्व दैत अछि। निजी फ्लैटमे माए, घरेलू स्नेह आ देखभाल; सार्वजनिक पार्कमे सहपाठी, मित्रता, बलक प्रदर्शन आ अपमान; पुनः घरमे चर्चा—एहि आवागमनसँ कथा सामाजिक जाँचक वृत्त रचैत अछि।

पहिल चारि अध्याय आरम्भक पारिवारिक–मैत्री जीवन चित्रित करैत अछि; पाँचम अध्याय नव बच्चाक आगमनसँ संतुलन बदलैत अछि; छठम–आठम संघर्ष बढ़बैत अछि; नवम अध्याय भाषिक मोड़ बनैत अछि; दसम भावनात्मक प्रतिफल दैत अछि; एगारहम अध्याय भविष्यक सम्भावना बनबैत अछि; बारहम शीर्षकीय निष्कर्ष प्रस्तुत

करैत अछि। जन्मदिनक पुनरावर्तनक अपेक्षा सेहो समयक वृत्त बनैत अछि। कालक्रम स्पष्ट अछि, मुदा अन्तिम सुसेन-परिवर्तन अनिर्णीत राखल गेल अछि। ई खुलापन कृतिक नैतिक विश्वासक परीक्षण पाठकक जीवनमे छोड़ैत अछि।

चित्रात्मक विन्यासक आलोचना

मूल प्रकाशित PDF मे अध्यायवार चित्रक क्रम ‘चित्र १’ सँ ‘चित्र २४’ धरि चिन्हित अछि। बारह अध्यायक संग चित्रक नियमित उपस्थिति इशारा करैत अछि जे दृश्य-पाठ ओ पाठक लेल बनल अछि जकरा लमहर निरन्तर गद्यक अपेक्षा दृश्यगत विराम सहायक होएत। संकलनमे चित्र-पृष्ठ आ पाठ-पृष्ठ बेरा-बेरी अबैत अछि। एहि बेरा-बेरीक साहित्यिक प्रभाव अछि—दृश्यक अवधि बढ़ब, संवादक प्रमुख मोड़ सँ पहिने ठहरब, आ केन्द्रक भाव एक अलग पृष्ठसँ प्रस्तुत होएब।

चित्रक आलोचनामे मूल पाठक संग सामग्रीक दृश्यगत साम्य परीक्षण जरूरी अछि। उपलब्ध क्रमसँ चित्रक संख्या आ पृष्ठ-विभाजन प्रमाणित होइत अछि; तथापि प्रत्येक चित्रक रंग, आकृति, शैली वा पात्रक मुखाकृतिक पूर्ण दावे बिना पृथक प्रत्यक्ष दृश्य-जाँचक नहि कएल जाएत। एहि कारण एहि समीक्षा मे छवि-शैलीक असत्यापित विशेषणक बदला दृश्य-क्रमक प्रमाणित संरचना आ चित्र-गद्यक सम्भावित भूमिकाकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि।

बालसाहित्यक उपदेशात्मकता : रचनात्मक बल आ सीमा

‘बाल गुरु’ मूलतः एक स्पष्ट नैतिक कथा अछि। शीर्षक, उपक्रम आ अन्तिम कथन पाठककेँ आरम्भेसँ एक शिक्षा दिश लऽ जाइत अछि। एहि पद्धतिक बल ई अछि जे चारि–पाँच बरखक बच्चासभकेँ केन्द्रमे राखल कथा मे जटिल भाव सहज भाषा आ घटना द्वारा पहुँचैत अछि। कमजोरी ई जे कथक किछु स्थलपर नैतिक अर्थ सीधे बता दैत छथि, जाहि सँ पाठकक स्वतन्त्र अर्थान्वेषणक स्थान घटि सकैत अछि।

नवम अध्यायक ओमक उत्तर बहुत महत्वपूर्ण अछि, मुदा जँ एकरे सार्वभौम सच मानल जाए तँ बारम्बार पीड़ित बच्चासभक अनुभवक अवमूल्यन भऽ सकैत अछि। कथा स्वयं एहि सरलीकरणसँ कुछ हद धरि बाँचैत अछि, कारण मंशा प्रतिवाद करैत अछि आ ओकर प्रतिरोध सराहल जाइत अछि। तैं उचित पाठ ई अछि जे बालमैत्रीक भीतर करुणा, तथ्यक अपूर्ण ज्ञान आ आत्मसम्मान तीनू केँ समाहित कएल जाए।

समेकित साहित्यिक निर्णय

गजेन्द्र ठाकुरक ‘बाल गुरु’ बालमनोविज्ञानक सूक्ष्म घटनासँ बड़का सामाजिक विचार निर्माण करैत अछि। दिल्लीक एक आवासीय परिसर मिथिला, पंजाब आ ओड़िशाक लोककेँ साझा जीवनमे रखैत अछि। एहि बहुभाषी परिवेशमे एक अपमानक क्षण बच्चासभक तीन प्रतिक्रिया सामने आनैत अछि—सुसेनक असम्मान, मंशाक निर्भीक विरोध, आ ओमक चिन्हबाक सम्भावनामे विश्वास। पुस्तकक मुख्य कथात्मक उपलब्धि ई अछि जे ओमक संयमक महत्त्व मंशाक साहसकेँ नकारि नहि, ओकर संग रखैत अछि।

महुआक नाम आ श्रमिक-पहिचान कृतिक मूल ‘चिन्हब’ सूत्रकेँ मित्रता सँ आगे व्यापक सामाजिक सन्दर्भ दैत अछि। ओमक माए बच्चासँ सीखैत छथि; मित्रता परिवारक सीमा खोलैत अछि। तथापि सुसेनक परिवर्तन एखन पूर्ण प्रमाणित घटना नहि, भविष्यक कल्पना अछि। एही कारण कृतिक अन्त विश्वासक घोषणासँ बेसी अपेक्षाक रूपमे पढ़ल जाए तऽ अधिक सूक्ष्म अर्थ खुलैत अछि।

ई सचित्र लघु बाल उपन्यास मैथिली कथामे सामाजिक करुणा आ स्वाभिमानक युगल शिक्षा प्रस्तुत करैत अछि। एक बच्चा द्वारा दोसरकेँ चोट न पहुँचएबाक प्रयत्न आ एक बच्ची द्वारा दोस्तपर अपमान नहि सहबाक साहस—दुनू मिलि कृतिक नैतिक निष्कर्ष बनैत अछि। ‘गुरु’क पद एतय वयस्क अधिकारसँ नहि, अनुभवक समझ आ सम्बन्धक देखभालसँ निर्धारित अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। बाल गुरु : ओम, मंशा आ एकटा एहन उत्तर जे बड़कोकेँ झुका देलक। ‘३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास’, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क २, संकलन PDF पृष्ठ १८१–२९३। मूल लेखकीय अधिकार-सूचना : © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

कृति ४ : दीना-भदरी

उपक्रम : माटिक दू बेटा

श्रमिक-वीरगाथाक वैकल्पिक नायकत्व

लोकवीरक परिचय प्रायः राजमहल, युद्ध अथवा कुल-परम्परासँ शुरू होइत अछि। एहि उपक्रममे ओकर विपरीत घटैत अछि। जोगियानगरक माटिमे दीना आ भदरीक नाम बसल अछि; हुनकर सम्बन्ध मुसहर समाज आ खेत-काजसँ बनैत अछि। लेखक आरम्भे घोषणा करैत छथि जे ई राजा-रानीक खिस्सा नहि। एहि नकारमे कृतिक साहित्यिक विकल्प स्पष्ट अछि—समाजक ओहि श्रमजीवी समुदायक वीरता देखब, जकर जीवन सामान्यतः सत्ता द्वारा विस्मृत राखल जाइत अछि।

उपक्रममे कोदारि, बाँहि आ माटिक प्रतीक आवर्तित होइत अछि। खेतीक कामसँ जुड़ल औजार नायकत्वक प्रतीक बनैत अछि, परन्तु ओ औजारक अर्थ पहिने श्रम अछि, युद्ध नहि। पछिला घटनामे बलक दमन आ मृत्युक माध्यमसँ नायकक अमरत्व रचल जायत। ‘दुखान्त’ शब्द पहिनेसँ पाठककेँ तकर सूचना दैत अछि, मुदा कथक लक्ष्य नायक मरलाह कि बचलाह, एतबामात्र नहि; हुनकर सामाजिक स्मृति कोना बनैत अछि, से अछि। एहि अर्थमे उपक्रम एकटा वैकल्पिक लोकइतिहासक साहित्यिक दावा प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय १ : पाँच-पाँच मोनक कोदारि

श्रमक देह आ बलक नैतिक आधार

पहिल अध्याय दीना-भदरीक पाँच-पाँच मोनक कोदारिक वर्णनसँ असाधारण शारीरिक बल रचैत अछि। दिनभरमे विशाल जमीन तामबाक सामर्थ्यक कथन वीरगाथाक अतिशयोक्तिपूर्ण विधान अछि; एकरा प्रयोगसिद्ध माप अथवा श्रम-विज्ञानक आँकड़ा मानब अनुचित। लेखक बलकेँ अद्भुत बनबैत छथि, मुदा तकर प्रयोजनक विषयमे निर्णायक अन्तर राखैत छथि—दुनू भाइ अपन शक्ति जीविकोपार्जन आ गामक सेवामे लगबैत छथि।

माए निरसो अपन बेटासभक हाथक ठेला देखैत छथि। एहि सान घरेलू प्रसंगमे बाहरी अलौकिक पराक्रमक पाछाँक मानव देह, पीड़ा आ देखभाल उपस्थित होइत अछि। एक ठाम नायकक बाँह विशाल अछि, दोसर ठाम ओही बाँहक हाथमे श्रमक ठेला। माएक चिन्ता नायककेँ निरपेक्ष प्रतीक नहि रहय दैत; ओकर थाकल देह मनुष्यक वास्तविक सीमासँ जुड़ल रहैत अछि। सामाजिक प्रतिष्ठा आ निर्धनताक विरोध सेहो एतय प्रकट अछि : लोक बलक गप करैत अछि, मुदा परिवारक आर्थिक अवस्था साधारण अछि।

अध्यायक अंतिम चेतावनी—नाम दूर धरि गेलाक संग शत्रुक कान धरि पहुँचेब—लोकवीरगाथाक नियतिक बनावट तैयार करैत अछि। शक्ति तत्काल सुरक्षा नहि, नव विपत्तिक कारण बनि सकैत अछि। कथक नायकक गर्वक आलोचना नहि करैत, कारण दुनू भाइ अहंकार नहि देखबैत; शत्रुक उत्पत्ति दोसराक शोषणकारी लालसासँ होइत अछि। एहि नैतिक कारण-भेदक आधारपर अगिला संघर्ष संगठित अछि।

अध्याय २ : जाँजरक जमीन्दार

अन्यायक समृद्धि आ मनुष्यकेँ पशु मानबाक दृष्टि

जाँजरक कनक सिंह आ बुधनीक समृद्धि श्रमजीवीक अधिकारक विपरीत देखाओल गेल अछि। आधा मजदूरी, कोड़ाक मारि आ दबायल आवाज—ई सभ कथामे अन्यायकेँ ठोस रूप दैत अछि। खेतमे अन्नक उपज अछि, मुदा ओकर उपलब्धिमे श्रमिकक नोर मिलल अछि। ई भाववाचक प्रतिमा उत्पादनक भौतिक समृद्धि आ उत्पादन-सम्बन्धक नैतिक असमानताकेँ एक संग रखैत अछि।

कनक सिंह दीना-भदरीक कोदारि आ बलक चर्चा सुनि हुनका मनुष्यक रूपमे नहि, अधिक खेती करा सकनिहार ‘बड़द’क रूपमे देखैत अछि। एहि दृष्टिमे दमनक सामाजिक मनोविज्ञान अछि : जे श्रमिक अधिकारसहित व्यक्तित्व अछि, से मालिकक लाभक साधनमात्र बनि जाइत अछि। लेखक जमीन्दारक हिंसाकेँ व्यक्तिगत क्रूरता जकाँ निश्चय प्रस्तुत करैत छथि, मुदा ओकर संरचनात्मक आधार मजदूरी आ खेतक नियन्त्रणमे देखल जा सकैत अछि।

जाँजरक मजदूरसभ चुप रहैत छथि, कारण पेट मालिकक हाथमे अछि। ई मौनकेँ स्वभावगत कायरता कहब पाठसँ बाहर होयत। रोजीक निर्भरता प्रतिरोधक सम्भावनाकेँ सीमित करैत अछि। दीना-भदरीक अपूर्व बल एहि स्थिर भयक वातावरणमे नब प्रतिकूल शक्ति आनैत अछि। कथा एतय वीरक बलकेँ सत्तापर प्रश्न उठेबाक संसाधन

बनबैत अछि; तकर आगामी हिंसात्मक परिणामक नैतिक जटिलता समीक्षा लेल खुलल रहैत अछि।

अध्याय ३ : मारि कऽ छोड़लाह

प्रतिरोधक उत्साह आ प्रतिहिंसाक संकट

तेसर अध्यायमे कनक सिंह मधुर वचनसँ दीना-भदरीकेँ अपन खेतमे काजक प्रस्ताव दैत अछि। दुनू भाइ प्रस्तावक पाछाँ मजदूरसभक अपमान आ अधूरा मजदूरीक पूर्व सूचना जानैत छथि। दीनाक प्रतिवाद मूल रूपेँ श्रमिक-गरिमाक घोषणा अछि : जे मजदूरकेँ मनुष्य नहि मानैत अछि ओकर खेतमे कोदारि नहि उतरत। एहि वाक्यमे सामाजिक समानताक प्रश्न सीधा मजदूरीक सम्बन्धसँ जुड़ल अछि।

जमीन्दारक गरजबला दबावक उत्तर दुनू भाइ शारीरिक प्रहारसँ दैत छथि। जमीन्दार भागैत अछि; दबायल मजदूरसभक हँसी पहिल बेर बाहर अबैत अछि। लोकवीरगाथाक पाठ एतय पीड़ित समुदायक अपमान-मुक्ति अनुभव बनबैत अछि, मुदा आलोचना केँ ईहो देखबाक अछि जे प्रतिकार हिंसक अछि। नैतिक भेद दमन आ स्वाभिमानक बीच अछि, तथापि हिंसाक कथात्मक उत्सव आधुनिक न्यायिक आदर्शक समानार्थक नहि।

अध्यायक सूक्ष्म रचनात्मक मोड़ ई अछि जे दुनू भाइ घटना पछाँ अपन खेतक काजमे घुरि जाइत छथि। हुनका लेल संघर्ष समाप्त, मुदा जमीन्दारक हवेलीमे पराजयक अपमान नव आगिक रूप लैत अछि। उत्पीड़कक स्मृतिमे लज्जा प्रतिशोधक इच्छा बनैत

अछि; एहिसँ दुनू भाइ जकरा एक घटना मानलनि, से बहुत लमहर शत्रुताक आरम्भ सिद्ध होइत अछि। बुधनीक उपस्थिति आगामी भाग्य-विधानक पूर्वपीठिका बनैत अछि।

अध्याय ४ : बुधनीक वर

वचनक धर्म आ न्यायबीचक असहनीय विरोध

चौथ अध्याय वीरगाथाकेँ साधारण मनुष्यक संघर्षसँ देवकथाक नैतिक संकटमे पहुँचेबैत अछि। बुधनी पति कनक सिंहक अपमान सुनि देवता राजा सलहेसक थानमे तप करैत अछि। सलहेस वर देबाक प्रतिज्ञा करैत छथि, तकर बाद बुधनी दीना-भदरीक प्राण माँगैत अछि। एहि घटनाक कारण-क्रम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि : वरदान पहिने देल गेल, इच्छाक न्याय्यता बादमे स्पष्ट भेल।

देवताक विवशता एहि अध्यायक नाटकीय केन्द्र अछि। वचन तोड़थि तँ देवत्वक प्रतिज्ञा टूटय, वचन रखथि तँ निरपराध श्रमिक-वीरक प्राण जाए। ई दुविधा भारतीय धर्मकथाक एक जटिल रूप थिक; सत्यपालनक औपचारिकता आ न्यायपालनक सारतत्त्व एक-दोसराक विरोधमे ठाढ़ छथि। कथक स्वयं ई असहायता देखबैत छथि, मुदा वचनक अपूर्व अधिकार पर कठोर प्रश्न करबाक स्थानो बचैत अछि : अन्यायक साधन बनि सकनिहार प्रतिज्ञा केहेन धर्मक रक्षा करैत अछि?

बुधनीकेँ केवल प्रतिशोधी स्त्रीक रूढ़ रूपमे पढ़ल जाए तँ सामाजिक हिंसाक मूल कारण—कनक सिंहक शोषण—पाछाँ पड़ि जाएत। ओकर क्रिया विनाशकारी अछि, तथापि कथाक सत्ता-संरचनामे ओ शोषक परिवारक हितरक्षाक माध्यम बनैत अछि।

सलहेसक करुण विवशता पछिला अध्यायसभमे त्रासद परिणाम पैदा करैत अछि; नायकक मृत्यु कोनो सामान्य युद्ध-समान पराजय नहि, अनुचित वचनक परिपालनक परिणाम बनेबाक अछि।

अध्याय ५ : सलहेसक सपना

अदृश्य आदेशक विश्वसनीयता आ त्रासदीक पूर्वरचना

पाँचम अध्यायमे सलहेस दुनू भाइक सपनामे उतरि कटैया बोनमे पैघ शिकार भेटबाक संकेत दैत छथि। शिकारी कौशल, वनजीवन आ देवतापर विश्वासक कारण दीना-भदरी एहि आज्ञाकेँ सौभाग्य मानैत छथि। दुनूकेँ एकहि प्रकारक सपना देखब संदेह घटबैत अछि। किंतु पाठक पूर्व अध्यायक कारण जानैत छथि—एहि आदेशक पाछाँ बुधनीक माँगल वरदान अछि। एतय नायकक विश्वास आ पाठकक ज्ञानक असमानतासँ करुण-त्रासदी जन्मैत अछि।

देवताक अपन पीड़ाक कथात्मक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि। सलहेस दीना-भदरीकेँ प्रेम करैत छथि, मुदा प्रतिज्ञाक कारण मृत्यु-पथ बतबैत छथि। तात्कालिक आज्ञापालन आ व्यापक न्यायबीचक अन्तर एहि दृश्यकेँ धार्मिक उपदेशक सरल स्वरूपसँ अलग करैत अछि। जे देवता शिकारीक रक्षा करैत छथि, हुनकेँ प्रिय भक्तक मृत्यु-द्वार खोलबाक विवशता अछि। लेखक देवशक्तिक प्रभाव स्थापित करैत ओहि शक्तिक नैतिक बन्धन सेहो देखबैत छथि।

सपनाक समानता कैँ कथाक भीतर दैवी संकेत मानल गेल अछि। बाहरी जीवनक अनुभव मे समान सपना देखब कोनो न्यायिक प्रमाण नहि, मुदा लोकवीरगाथाक नियति-निर्माण लेल ई सशक्त उपकरण अछि। शिकारक उल्लास पाठकक करुण पूर्वज्ञानक कारण विडम्बनामय होइत अछि। भय एहि लेल नहि जे नायक कमजोर छथि, बल्कि एहि लेल जे हुनकर विश्वासकेँ हुनक विरुद्ध उपयोग कएल गेल अछि।

अध्याय ६ : अमावस्याक बिदाई

माएक आशंका आ सामाजिक सम्बन्धक विस्तार

छठम अध्याय घरसँ वन दिस चलबाक यात्रा अछि। दीना-भदरी धनुष, तीर आ तरकस लैत छथि; बहुरन मामा संग चलैत छथि। माए निरसो रात्रिक जोखिमक चेतावनी दैत छथि। दुनू भाइ सलहेसक बजाहट पर भरोसा रखैत छथि, मुदा माएक हृदय निर्णयसँ सन्तुष्ट नहि। मातृत्वक एहि अन्तर्ज्ञानकेँ कथक अदृश्य भाग्यज्ञानक रूपेँ पढ़बैत छथि; समीक्षामे एकरा लोककथात्मक पूर्वाभासक तकनीक मानब उचित।

बाटमे जीतन यादव भेटैत छथि आ मित्रताक कारण शिकार-दलमे जुड़ैत छथि। दुनू भाइ, मामा आ मीतक चारिगोटेक दल लोकसम्बन्धक अलग सूत्र जोड़ैत अछि। नायक सामूहिक सामाजिक जालक भीतर छथि; तथापि आगामी वनयात्रा हुनका एही जालसँ अलग करबाक प्रक्रिया अछि। बहुरनक वृद्ध अनुभव आ जीतनक मित्रता भविष्यमे खबर, दाह-संस्कार आ स्मृति सँ जुड़बाक अछि।

अमावस्याक अन्हारक घनत्व क्रमशः बढ़ैत अछि। गामक अन्तिम दीप पाछाँ छूटलाक बाद कथा घरेलू सुरक्षासँ हिंसक नियतिक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। ई स्थानान्तरण मात्र रातिक प्राकृतिक विवरण नहि; घरक आँगन, आम व्यवहार आ माएक स्वर धीरे-धीरे दूर होएबक रचनात्मक क्रम अछि। कथाक चित्रित पृष्ठसभ एहि विरामकेँ दृश्यात्मक रूप देबाक संभावना रखैत अछि।

अध्याय ७ : सुनसान बोन

मौनक संकेत आ समूह-विच्छेदन

सातम अध्यायमे वनक अस्वाभाविक नीरवता प्रमुख घटना बनैत अछि। ने हरिणक चालि, ने बनसुगरक आवाज, ने खरहाक सरसराहट। शिकारक क्षेत्रमे जीवनक सम्पूर्ण आहट नहिएँ, खाली बादुरक उड़ब। बहुरन मामा ई अस्वाभाविकताकेँ अशुभ बुझैत छथि। मुदा नायकसभ देवताक आदेशपर भरोसा करैत आगाँ बढ़ैत छथि। पाठक जानैत छथि जे वनक मौन कथाक पहिने सँ रचल जालक संकेत अछि।

एहि अध्यायमे स्थान स्वयं सक्रिय प्रतिपक्ष बनैत अछि। पहिने बाट हेरायल, तकर बाद दिशा, फेर साथीसभक आहट। समूहक विखण्डन शत्रुक प्रत्यक्ष आक्रमणसँ पहिने घटैत अछि। दीना एकसर पड़ि जाइत छथि; मामा, जीतन आ भदरी अलग। लोकवीरगाथामे नायकक अजेय शारीरिक बलक विरोधमे भौगोलिक असहायता रचबाक ई अर्थवान तरीका अछि। बल शरीरमे अछि, मुदा बाट आ साथ पर नियंत्रण नहि।

बोनक भीतर बुधनी आ सलहेसक संयुक्त उपस्थिति निर्णायक अछि। एक दिस प्रतिशोधी याचिकाक विनाशकारी उद्देश्य, दोसर दिस वचनसँ विवश देवता; दुनूक सोझाँ निशस्त्र-जकाँ एकसर दीना। देवता आ विरोधिनी एके कथात्मक स्थलपर आनल गेल छथि, जाहि सँ पुण्य–पापक सरल दृश्यात्मक भेद धुँधला होइत अछि। एहि गम्भीर उलटफेरक बाद युद्ध शुरू होइत अछि, मुदा युद्धक नैतिक उत्तर पहिने सँ निश्चित नहि।

अध्याय ८ : खुनीमा बाघ

दुखान्त वीरतामे भक्ति आ अन्याय

आठम अध्यायमे बुधनी सलहेसक खुनीमा बाघ बजबैत अछि। दीना धनुष तानैत छथि, मुदा बाण लक्ष्यसँ भटकि जाइत अछि। कथा स्पष्ट करैत अछि जे दैवी हस्तक्षेप द्वारा हुनकर सामान्य युद्ध-कौशल निष्फल बनाओल जाइत अछि। एहि कारण वीरक पराजयक प्रारम्भ नायकक असमर्थता नहि, युद्धक नियमक अनुचित परिवर्तन अछि। नायक तब धनुष छोड़ि अपन देहक बल सँ बाघसँ भिड़ैत छथि।

मल्लयुद्धक दृश्य वीर रसक चरम अछि। मांस, हड्डी, नख, दाँत आ साँसक सामना होइत अछि; प्रकृतिक हिंसक पशु आ सामाजिक श्रमिक-वीर एक-दोसराक सम्मुख छथि। दीना आश्चर्यजनक रूपेँ सलहेसक नाम लैत छथि, जे देवता स्वयं एहि संकटसँ सम्बद्ध छथि। भक्तिक एहि विरोधाभासमे लोकवीरगाथाक गहन त्रासद तत्व अछि—विश्वास संकटमे सेहो टूटैत नहि। सलहेसक नाम लेते दीना नब बल पबैत छथि आ बाघकेँ मारि दैत छथि।

पाठकक मनमे प्रश्न रहैत अछि : जे देवता वचनक बन्धनमे नायकक मृत्यु स्वीकारि रहल छथि, हुनकेँ पुकारिते वीरता पराकाष्ठापर किएक पहुँचैत अछि? ई वैचारिक असंगति मिथकीय कथनक भीतर धर्म–न्यायक तनावक कला बनि जाइत अछि। बाघ पर विजय पूर्ण सुरक्षा नहि, अगिला घातक छलक पूर्वरचना अछि। बुधनीक बदला समाप्त नहि भेल, सलहेसक करुणा हुनका रोकि नहि पाबि रहल अछि।

अध्याय ९ : बगराक भेष

बलक ऊपर छलक विजय

नवम अध्यायमे बुधनी बाघक विफलताक बाद रूप-बदलनिहार बाघिन केँ बजबैत अछि। ओ एक निर्दोष चिड़ैक रूप धारण करैत अछि। ई भेष कृतिक बल-कल्पनाकेँ उलटैत अछि। जकरा असाधारण बाघ मारि नहि सकल, ओकरा साधारण लगैत पक्षीक नजदीकी मारक साबित होइत अछि। युद्धक शक्ति आ नैतिक विश्वस्तताक भेद एहि प्रसङ्गमे मूर्त अछि।

दीना बाघसँ संघर्षक थकानमे छथि, आ छोट चिड़ै पर शत्रुताक शंका नहि करैत छथि। आक्रमण ओहिपर घटैत अछि जखन सावधानीक क्षेत्र मानवीय अनुभवमे सामान्यतः कोमल देखाइत अछि। वीरता असफल नहि; विश्वासक सीमाक अपमान भेल। ‘पाँच मोनक कोदारि उठौनिहार’ नायक एक पक्षीक भेषक छलसँ धराशायी होइत छथि। एहि विरोधाभासमे लोकोक्ति-सदृश त्रासद आघात अछि।

कथाक एहि हिंसात्मक रूपान्तरमे स्त्री-विलेनक भेष-छल प्रचलित लोकगाथाक एक रूप अछि। मुदा एकरा स्त्रीत्वक सामान्य विशेषता कहब अनुचित। दोष विशेष पात्रक प्रतिशोध आ सलहेसक वचनक अनुचित परिणाममे अछि। दीना धराशायी होइत छथि; पाठक जानैत छथि जे कथा एखन भदरीक तकलीफ दिस मुड़त। एहि क्रमबद्ध विखण्डनसँ दुःखान्त प्रभाव बढ़ैत अछि।

अध्याय १० : भदरीक बिखिन्न मोन

अनदेखल घावक सम्बन्धात्मक अनुभूति

दसम अध्याय दीना सँ भदरीक दृष्टि दिस मुड़ैत अछि। दूर वनमे भदरीक हृदय अचानक व्याकुल होइत अछि। भाई-भाईक एकटा अदृश्य सम्बन्धक रूपक एतय प्रयोग होइत अछि—आघात एक छोरपर, कंपन दोसर छोरपर। लोककथामे एहि अनुभूतिक आध्यात्मिक अर्थ अछि, मुदा साहित्यिक दृष्टिसँ ई घनिष्ठ स्नेहक शरीरगत भाषा सेहो अछि। कथक दीना मरलाह से प्रत्यक्ष बताएलाक बाद भदरीक अन्तर्दुःखक दृश्य रखैत छथि; पाठक दुःखक सन्दर्भ जानैत अछि, पात्र पुष्टि खोजनिहार अछि।

भदरी बहुरन मामाकेँ गाछपर प्रतीक्षा करबाक कहि दीना लग दौड़ैत छथि। पहिल भागमे दीना जकरा एकाकी कएल गेल, एखन भदरी स्वयं सम्बन्धक पुकार पर एकाकी बढ़ैत छथि। एहि समरूपतासँ भाग्यक पुनरावर्तनक अनुभव होइत अछि। दीना केँ देखिते भदरीक दुःखक आवेग शब्दसँ बाहर रहि जाइत अछि; तखनहि भेषधारी चिड़ै पुनः आक्रमण करैत अछि।

दुनू भाइ एक वनमे मारल जाइत छथि। कथक तुरन्त कहैत छथि जे बदला आ न्याय अलग बात अछि—बदला हिंसक विजय मानि घर घुरैत अछि, मुदा न्यायक मार्ग शेष अछि। ई कथावाचकीय टिप्पणी लोकवीरगाथाक द्वितीय भागक नैतिक दिशा निश्चित करैत अछि। मृत्यु अन्त नहि; अब कथाक प्रश्न मृतकक सम्मान, शोक-संस्कार आ स्मृतिक अधिकार बनैत अछि।

अध्याय ११ : आत्माक सन्देश

मृत्युपरान्त सम्बन्ध आ सामुदायिक शोक

एगारहम अध्यायमे दुनू भाइक आत्मा दू व्यक्तिक देहमे प्रवेश कऽ बहुरन मामाकेँ मृत्यु-सूचना दैत अछि। एतय अलौकिक विधानक साहित्यिक प्रयोजन मृतकक संवादक अधिकार बचौने रखब अछि। जकरा छलसँ मारल गेल, से अपने मृत्युक सूचना आ अन्तिम संस्कारक आग्रह करैत अछि। मृत्यु नायकक वाणी पूर्ण रूपेँ बन्द नहि करैत; लोकगाथाक कल्पना ओकरा सामाजिक न्याय माँगबाक सामर्थ्य दैत अछि।

जीतन यादव मित्र-धर्मक पालन करैत छथि—शव गाम लऽ जाएब आ अग्नि देब। एहि प्रकार दोस्तीक मूल्य युद्धमे साथ चलबासँ आगे अन्तिम संस्कारक उत्तरदायित्व धरि पहुँचैत अछि। बहुरन मामाक मौन, जीतनक क्रिया आ निरसोक शोक तीन भिन्न प्रकारक दुःखक भाषा बनबैत अछि। दुनू भाइक अलौकिक असाधारणताक बाद दुःख मानवीय स्तरपर घुरैत अछि, जतय माएक दुनू बेटा एक रातिमे हेरायल छथि।

कथा जोगियानगरक चूल्हि नहिं जरबाक बिम्ब दैत अछि। सामूहिक शोकक चित्र सामाजिक जीवनमे दीनाक पराक्रमक व्यापक स्वीकारक संकेत अछि। मुदा अन्तिम संस्कारक आर्थिकी एखनहुँ परिवार लेल समस्या अछि। श्राद्ध करबाक लेल पाइ नहि; माएक दुःखक भीतर गरीबी अटूट रहैत अछि। एहि अवस्थामे चमत्कारक अगिला चरण शुरू होइत अछि।

अध्याय १२ : तूर आ बताशा

गृहस्थ गरीबी आ लोकचमत्कारक नैतिक माप

बारहम अध्यायमे निरसो सपनामे बेटासभक निर्देश सुनैत छथि—घरक तूरक गट्ठर बनियाक दोकान लऽ जाउ। तूर सामान्य आर्थिक मापनमे सस्ता पदार्थ अछि। मृत्यु-संस्कार लेल पर्याप्त धनोपार्जनक असम्भवता एहि छोट वस्तु द्वारा रेखांकित अछि। बनियाक हँसी गरीबक वस्तुक अपमान अछि; लोकगाथाक चमत्कार ठीक एहि हँसीक पलटा देबाक लेल रचल गेल अछि।

तराजूक एक पल्लामे तूर, दोसर पल्लामे बताशा, मिसरी, चाउर, दालि आ अनेक सामग्री जुड़ैत जाइत अछि, मुदा तूरक भार कम नहि होइत। कथाकार स्पष्ट करैत छथि जे लोकगाथाक दृष्टिसँ ओहि पल्लामे सामान्य तूर नहि, दीना-भदरीक अदृश्य उपस्थिति अछि। एहिसँ आर्थिक विनिमयक एक विलक्षण नैतिक प्रतिवाद जन्मैत अछि : जे वस्तु बजारमे तुच्छ, से माएक दुःख आ वीरक स्मृतिक भार सँ अपार महत्त्व पबैत अछि।

अध्यायक अर्थ ‘गणितीय रूपसँ एतेक बताशा बराबर तूर’ नहि। भौतिक असम्भवता कथा-विधाक चमत्कार अछि; ओकर साहित्यिक लक्ष्य गरीबक श्राद्धक अधिकार सुनिश्चित करब अछि। बनियाक हँसी भय आ सम्मानमे बदलैत अछि; सामान उपलब्ध होइत अछि। ई दृश्य प्रतीकात्मक पुनर्वितरणक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि—बजारक मूल्य-व्यवस्था मृतक श्रमिकक नैतिक मूल्य मापि नहि सकैत।

अध्याय १३ : जेवार आ हंसाक आँखि

मृतकक पहिचान, स्त्रीदृष्टि आ दुग्धक आश्चर्य

तेरहम अध्यायमे निरसो श्राद्धक जेवार करबैत छथि। दू अनचिन्हार बारिक भोजन परसैत छथि। हंसा अपन पति दीना केँ परिचित भाव-चिह्नसँ देखैत छथि, मुदा निरसो एहि विश्वासपर सहज आश्वस्त नहि होइत छथि। चितापर चढ़ाओल बेटा भोज परसैत छथि—ई विरोध सामान्य अनुभूतिक बाहर अछि। माएक अविश्वास दुःखक कठोर यथार्थ अछि, नहि कि ममताक कमी।

हंसा सात तह कपड़ासँ निरसो केँ बाँधि चिन्हबाक परीक्षण करबैत छथि। लोककथाक चमत्कारमे कपड़ा पार कऽ माएक दूध बेटासभक मुख धरि पहुँचैत अछि। एहि अतिशयोक्तिपूर्ण दृश्यक साहित्यिक अर्थ मातृत्वक शारीरिक स्मृति अछि। जे सम्बन्ध मृत्यु आ भेषक बादो चिन्हल जाइत अछि, से रक्तसंबन्धक ज्ञानसँ आगाँ करुणा, प्रसव आ पालनक एक लोकविश्वास बनैत अछि। एकरा वास्तविक वैद्यकीय घटना प्रमाणित करबाक चेष्टा अप्रासंगिक अछि।

स्त्रीपात्रसभक भूमिका एतय जटिल अछि। बुधनीक वचन-प्राप्तिसँ मृत्यु घटल, हंसाक आँखि मृतकक उपस्थिति पहचानैत अछि, निरसोक देह पुत्रस्नेहक चमत्कार रचैत अछि। मुदा एहि स्त्रीसभकेँ एके नैतिक वर्गमे राखब गलत होयत। हुनक भूमिका समाजक अलग सम्बन्ध, निर्णय आ दुःखसँ निर्धारित अछि। एहि अध्यायक मार्मिकता पहचानक ज्ञान स्त्रीक अनुभवसँ निर्णायक बनबमे अछि।

अध्याय १४ : मोरंगक धर्मयुद्ध

देहान्तक बाद प्रतिरोधक व्यापक सामाजिक रूप

चौदहम अध्यायमे दीना-भदरीक आत्मा मोरंगक श्रमिकसमाज लेल रक्षा-कर्म शुरू करैत अछि। जोरावर सिंह आ आन अत्याचारीसभक विरुद्ध प्रतिहिंसात्मक विजयसँ कथा नायकक परिवार-केन्द्रित शोक सँ सामुदायिक रक्षाक लोकधर्म दिस बढ़ैत अछि। लेखकीय कथनमे दू भाइ बिनु राजसिंहासन, सेना वा मुकुटक अत्याचारक अन्त करैत छथि। लोकवीरक नायकत्व राजकीय संस्था सँ बाहर स्थापित होइत अछि।

मोरंगक हिंसात्मक घटनासभ कहियो-कहियो तेजी सँ गनाओल गेल छथि। ई संक्षिप्तता विस्तृत युद्ध-दृश्यक स्थानपर नैतिक परिणामक जोर बनबैत अछि। ‘डेढ़ सए’ सन संख्या लोकस्मृतिक वृहत विस्तारक चिह्न अछि; एकरा अभिलेखीय रूपसँ सत्यापित अपराधी-संख्या घोषित नहि करब उचित। गाथाक अपना न्याय-दृष्टिमे उत्पीड़कक समाप्तिसँ अनेक गामक श्रमिकक साँस खुलैत अछि।

ई प्रसंग आत्माक शक्ति द्वारा अन्यायक तत्काल दमनक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि। समकालीन समाजमे प्रतिशोधक हिंसाकेँ एही आधारपर वैधानिक न्यायक विकल्प स्वीकार करब गलत होयत। कृतिक विचारगत उपलब्धि एहि सामाजिक प्रश्नमे अछि जे श्रमक रक्षा लेल सत्ता जिम्मेदार नहि भेला पर लोकस्मृति अपने लोकनायक उत्पन्न करैत अछि। अध्याय जोगियानगरक सीमाकेँ पार कऽ लोकवीरत्वक व्यापक भूगोल रचैत अछि।

अध्याय १५ : सलहेसक वचन

न्यायिक प्रायश्चित्त आ साझा पूजाक नब सम्बन्ध

पन्द्रहम अध्यायमे सलहेस पुरान असहायताक भार स्वीकारैत छथि आ वरदान दैत छथि जे जतय हुनकर पूजा होयत, ओतय दीना-भदरीक सेहो पूजा होयत। लोकगाथाक आरम्भमे वचन नायकक मृत्यु-कारण छल; एखन नव वचन स्मृतिमे नायकक स्थायित्व सुनिश्चित करैत अछि। ‘वचन’क एहि उलटफेरमे कृतिक नैतिक वृत्त पूरा होइत अछि।

एहि प्रतिज्ञाक अर्थ केवल देवताक मनोवैज्ञानिक क्षमा-याचना नहि। राजकीय/दैवी प्रतिष्ठाक संग श्रमिक समाजक नायककेँ धार्मिक बराबरीक स्थान देबाक कल्पना अछि। जिनका जमीन्दार बड़द मानैत छल, ओही दू मुसहर भाइ देवताक संग थानमे स्मरणीय बनैत छथि। सामाजिक क्रमक प्रतीकात्मक उलटाव कृतिक वर्गीय तर्ककेँ आध्यात्मिक स्तरपर पहुँचबैत अछि।

‘समय सभसँ पैघ अदालत’क कथन लोकस्मृतिक न्याय-विचार अछि, न कि वस्तुगत न्यायालयक निर्णयक नियम। अन्यायग्रस्तक नाम सँ समुदाय स्वयं स्मारक बनबैत अछि। तथापि देवताक पहिल दोषक अनुत्तरित प्रश्न शेष अछि—केवल बराबर पूजा देलासँ मृत्यु-निर्णय नैतिक रूपेँ क्षमित भऽ जाइत अछि कि नहि? एहि शंकाकेँ बचौने राखब आलोचनात्मक विवेकक आवश्यक भाग अछि।

अध्याय १६ : मुक्ति

दुखान्त कथाक करुण समाहार आ श्रमक अमर स्मृति

सोहरहम अध्यायमे दुनू भाइ अदृश्य सामाजिक रक्षाक कर्म पूरा कऽ परलोकमे मुक्ति पबैत छथि। एखन ने बाघक भय, ने बुधनीक वरक शृंखला, ने धान-तूरक पलड़ापर उपस्थिति देबाक विवशता अछि। पाछाँक सभ घटनामे जिनकर मृत्यु विलम्बित न्याय लेल अपूर्ण बुझाइत छल, हुनका मुक्तिक संकेत भेटैत अछि। ई समापन प्रतिशोधक अनन्त परम्परा नहि, न्याय-सम्पन्नताक लोककल्पना अछि।

कथा दीना-भदरीक श्रमिक देहकेँ जोगियानगरक माटिमे जीवित स्मृतिक रूपमे देखैत अछि। पाँच मोनक भार उठौनिहार किसानसँ सम्बन्धित लोकवचन बचल अछि; कटैया बोनक नीरवता भय नहि, श्रद्धाक भावेँ पुनःव्याख्यायित अछि। एहि दृश्यसे करुण मृत्युक स्थान स्मरणक पवित्र स्थल बनैत अछि। माए निरसोक शोक आ हंसाक पति-वियोग विस्मृत नहि, गाथाक भीतर संचित रहैत अछि।

दुखान्त आ अमरत्वक संयोग लोकमहाकाव्यक मुख्य युक्ति अछि। नायक देहसँ मरैत छथि, मुदा न्याय, नाम आ सामुदायिक रक्षाक रूपमे जीवित रहैत छथि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहि आदर्शीकरणक सीमा सेहो अछि : जीवित श्रमिकक वास्तविक अधिकारक प्रश्न प्रतीकात्मक पूजा द्वारा पूर्ण रूपसँ हल नहि होइत। मुदा लोककथाक प्रयोजन ठोस नीति-घोषणा नहि; विस्थापित मानवीय गरिमाकेँ सामूहिक स्मृतिमे स्थिर करब अछि। एहि अर्थमे अध्यायक अन्त केवल मुक्ति नहि, स्मृतिक राजनीतिक पुनर्स्थापना अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आलोचनात्मक मूल्याङ्कन

श्रम, जाति आ नायकत्वक पुनर्परिभाषा

‘दीना-भदरी’क केन्द्रीय साहित्यिक उपलब्धि वीरगाथाक नायकत्व कैँ समाजक दबायल श्रमजीवी समुदायमे स्थापित करब अछि। गाथाक आरम्भमे खेत, कोदारि आ निरसोक घर अछि; अन्तमे साझा पूजा, मोरंगक रक्षा आ लोकस्मृति। एहि दूनू ध्रुवक बीच कथा नायककेँ केवल असाधारण शक्ति-संपन्न मनुष्य नहि रखैत, श्रमक गरिमा दाबनिहार व्यवस्था विरुद्ध प्रतिरोधक रूप दैत अछि। जमीन्दारक नजरिमे दू भाइ जोतय योग्य बैल छथि; समाजक पछिला स्मृतिमे ओ लोकनायक बनैत छथि। एहि अर्थ-विपर्ययमे सामाजिक व्यंग्य आ नैतिक आग्रह समाहित अछि।

कथा मुसहर समाजक सामाजिक अपमानक बोध करबैत अछि। मुदा लोकगाथामे अद्भुत बलक प्रधानता जँ एकमात्र प्रतिरोधक साधन मानल जाए तँ सामूहिक संगठन, श्रम-अधिकार आ अहिंसक प्रतिवादक सम्भावना पाछाँ पड़ि सकैत अछि। ई कृतिक सीमा थिक, नहि कि ओकर ऐतिहासिकता पर असिद्ध आरोप। कृतिक विधा

लोकवीरगाथा अछि; ओकरा समकालीन सामाजिक आन्दोलनक पूर्ण व्यवहारिक इतिहास मानब उचित नहि।

वचन, धर्म आ न्याय

बुधनी तपसँ वर पबैत अछि आ सलहेस वचन-निष्ठा निभबैत प्रिय वीरक मृत्यु-विधानक भाग बनैत छथि। धर्मक सतही अर्थ—एक बेर वचन देल, तखन पूर्ण पालन—एतय न्याय-विरोधी भऽ सकैत अछि। भगवानक नैतिक विवशता कथा कैं असाधारण गहराइ दैत अछि। पछिला अध्यायमे सलहेसक नव वचन पुरान दोषक प्रतिपूर्ति बनैत अछि, मुदा न्यायिक संशय पूर्णतः समाप्त नहि करैत। की मृतककैं अमर प्रतिष्ठा देब ओकर अकाल मृत्यु निरस्त करि सकैत अछि? कथामे उत्तर लोकपूजाक रूपमे अछि; आलोचकीय दृष्टिमे प्रश्न खुलल रहैत अछि।

एहि द्वन्द्वकैं केवल धार्मिक भक्ति वा केवल देवताक आलोचना मे सीमित नहि करब चाही। लोकधर्मक भीतर न्याय-परीक्षणक व्याकुलता ई दर्शबैत अछि जे परम्परा एकरूपी नहि। देवता स्वयं संकटग्रस्त छथि, मनुष्यक बल विवश अछि, आ अन्तिम समाधान मृतकक स्मृतिक सामुदायिक स्वीकारमे भेटैत अछि।

वीर, करुण आ अद्भुत रस

कोदारि, बाघक युद्ध आ मोरंगक प्रतिरोध वीर रसक मुख्य क्षेत्र अछि। बुधनीक प्रतिज्ञा, वनक मौन, दीनाक छलपूर्ण मृत्यु, भदरीक असहाय व्याकुलता आ निरसोक चिता करुण भाव बढ़बैत अछि। आत्माक आगमन, तूरक तराजू, सात तह कपड़ासँ माएक

दूध आ मृत्युपरान्त लोक-रक्षा अद्भुत रसक घटना छथि। एहि रससभक सम्बन्ध क्रमबद्ध अछि : वीरता छलसँ टूटैत अछि, करुणा चमत्कारसँ नब शक्तिमे बदलैत अछि, आ अद्भुतता सामाजिक स्मृतिक आश्रय बनैत अछि। अन्तिम मुक्ति एहि त्रिधाराक शान्त समाहार अछि।

ग्रन्थक दुखान्त रूपविशेष एतय महत्त्वपूर्ण अछि जे कथक नायकक पराजयक मूल कारण कमजोरी नहि मानैत। उलटे नायकक शक्ति सर्वोच्च क्षणमे अछि जखन सामाजिक आ दैवी प्रपंच ओकरा परास्त करैत अछि। एहन कथा पाठकक करुणाकेँ नायकक प्रति राखैत सामाजिक अन्यायक प्रश्न ओरिसँ मोड़ैत अछि।

माता, पत्नी आ प्रतिपक्षिणीक नैतिक भिन्नता

निरसो मातृकरुणा आ संस्कारक दायित्वक केन्द्र छथि; हंसा पहचानक साहस आ वैवाहिक स्नेहक प्रतिनिधि; बुधनी प्रतिशोधक भयावह निर्णय लेनिहार व्यक्ति छथि। ई तीनू स्त्रीपात्र एकहि भौतिक समाजक अलग संबंधमे छथि। निरसो धनहीन छथि; बुधनी जमीन्दारक घरक शक्ति सँ लाभान्वित छथि। अतः स्त्रीपात्रक नैतिक अंतर जन्मजात गुण वा लैंगिक स्वभाव नहि, कृतिक भीतर हुनक सामाजिक स्थिति आ निर्णयक स्तरसँ बनैत अछि। तथापि कथक बुधनीक चेतनाकेँ मुख्यतः प्रतिहिंसामे सीमित करैत अछि; ओकर आन्तरिक जटिलता तुलनात्मक रूपसँ कम विकसित अछि।

निरसोक तूर–बताशा प्रसंग आर्थिक मानक पर माँक दुःखक नैतिक भार रखैत अछि। हंसाक आँखिक प्रमाण आ माएक दूध दुनू लोकविश्वासक माध्यम छथि, शाब्दिक

सत्यापनक उपकरण नहि। एहि दृश्यसभमे स्त्रीक अनुभव सामाजिक स्मृतिक रहस्य-जालमे केन्द्रीय अछि।

लोकस्मृति, इतिहास आ भूगोलक भेद

जोगियानगर, जाँजर, कटैया बोन आ मोरंगक उल्लेख रचनाकेँ स्थानीय धरातल दैत अछि। मुदा एहि कृतिक कथा-घटना केँ पूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज घोषित करबाक लेल बाह्य अभिलेख, काल-साक्ष्य आ सन्दर्भ आवश्यक होयत। मूल पुस्तक एक लोकवीरगाथा प्रस्तुत करैत अछि; साहित्यिक समीक्षा कथा भीतरक सामाजिक सत्यक विश्लेषण करैत अछि, बिना आधार बाह्य ऐतिहासिक प्रमाणक दावा नहि। ‘पाँच मोन’, ‘डेढ़ सए’ अथवा अदृश्य लोक-यात्राक प्रसंग लोकसाहित्यक विशेष अतिशयोक्ति, मानवीय गरिमाक रूपक आ सामुदायिक स्मृतिक शैली थिक।

मिथिलाक लोकजीवनमे देवता आ श्रमिक-वीरक एके थानक साहित्यिक प्रतिमा समताक गहन संकेत दैत अछि। जमीन्दारक नाम विस्मृत, श्रमिकक नाम पूजनीय—ई मूल्यांकन गाथाक इतिहास-दृष्टि अछि। एकरा एकमात्र बाह्य ऐतिहासिक निष्कर्ष बनाओल नहि जाएत।

चित्रात्मक रूप आ कथनक लय

मूल संकलनमे एहि कृतिक अध्यायसभक संग ३२ चित्र-संकेतक क्रम अछि, आ प्रायः प्रत्येक अध्यायमे दू चित्रक पृष्ठपर दृश्य-विराम अछि। प्रारम्भक श्रमिक औजार, वनयात्राक अन्हार, बाघक युद्ध, भेषवला छल, माएक शोक, तराजू आ दूधक अद्भुत

दृश्य कहानीक चित्रण लेल बलशाली अवसर बनबैत अछि। तथापि केवल पाठ-निकासी सँ प्रत्येक चित्रक रंग, रेखा आ आकारक पूर्ण दृश्य-परीक्षण नहि होइत; अतः चित्रसभक अदृश्य विवरण कल्पित करब नहि। दृश्य-पृष्ठक आवृत्ति कथात्मक गतिकेँ खण्डित-गति दैत अछि—कहानी एक वाक्य सँ दूसरी दृश्य-पट धरि छलाँग लगबैत अछि।

ग्राफिक बाल साहित्यक दृष्टिसँ एहि रचनाक चुनौती अछि जे जातिगत शोषण, शारीरिक हिंसा आ देवीय विवशताक जटिल प्रश्न बच्चाक बुझबाक भाषामे कोना ढलैत अछि। मूल कथा एहि विषयसभकेँ तीव्र, छोटे-छोटे प्रसङ्गमे रखैत अछि; कथकक बीच-बीच नैतिक निष्कर्ष पाठककेँ मार्गदर्शन दैत अछि, मुदा कतहु स्वतंत्र विचारक स्थान घटबैत अछि।

रचनात्मक सीमासभ

प्रथम, प्रतिपक्षी कनक सिंह आ बुधनीक एकरेखीय क्रूरता कथा केँ स्पष्ट नैतिक ध्रुव दैत अछि, मुदा मनोवैज्ञानिक जटिलता सीमित करैत अछि। दोसर, अनेक विवादक समाधान दिव्य चमत्कार अथवा हिंसात्मक प्रतिहिंसा द्वारा त्वरित कएल गेल अछि। तेसर, कथा लोक-परम्परागत अतिशयोक्तिक समुचित उपयोग करैत अछि, मुदा पृष्ठानुकूल व्याख्या बिना युवा पाठकक लेल इतिहास आ कल्पना एकदम घुलि सकैत अछि। चारिम, श्रमजीवी समुदायक सामूहिक कर्तृत्व अनेक स्थानपर दीना-भदरीक असाधारण व्यक्तिगत शक्ति पर केन्द्रित भऽ जाइत अछि। ई सीमासभ स्वीकार कएलाक बादो कृतिक सामाजिक संवेदनाक मूल तर्क कम नहि होइत।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘दीना-भदरी’ मे श्रमिक-वीरक असाधारण बल समाजक दमनकारी संरचना विरुद्ध प्रतिरोधक रूपमे रचल गेल अछि। भयावह वचन-बंधनक कारण लोकनायक मारल जाइत छथि; माएक शोक, मित्रक संस्कार, पत्नी द्वारा पहचान, लोकचमत्कार आ मृत्यु-पछिला न्याय-अभियान हुनकर स्मृतिकेँ साधारण देह सँ आगाँ लऽ जाइत अछि। गाथाक कलात्मक उपलब्धि ओहि क्षणमे सर्वाधिक तीक्ष्ण अछि जतय हिंसक ताकतसँ मारल नायक दैवी सहायताक अनुचित जालमे मरैत छथि, आ बादमे ओही दैवी व्यवस्था हुनका पूजा मे समकक्ष ठाम देबाक लेल बाध्य होइत अछि।

ई कथा मिथिलाक बाल-ग्राफिक साहित्यमे श्रमक गरिमा, सामाजिक अपमान, करुणा आ लोकस्मृतिक तुलनात्मक अध्ययन लेल महत्त्वपूर्ण पाठ अछि। एकर रूपक आधुनिक ऐतिहासिक साक्ष्यक स्थान नहि लैत; मुदा समाज कोन मनुष्यकेँ वीर मानय चाहैत अछि, तकर साहित्यिक इतिहास अवश्य रचैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। दीना-भदरी : जोगियानगरक दू भाइक दुखान्त वीरगाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, मूल PDF पृष्ठ २९४–४४१।

कृति ५ : अमर बाबा

उपक्रम : धार आ धरम

पानि, मातृत्व आ रक्षा-धर्मक सांकेतिक प्रस्ताव

गाथाक आरम्भमे कमला धार कैँ केवल जलप्रवाह नहि, माता, देवी आ कथा कहल गेल अछि। तीनू पहचान पाठककेँ आगामी सम्बन्ध बुझबैत अछि। नदी जीवन देनिहारि प्राकृतिक शक्ति छी; मानव समुदायक आराधना एकरा सांस्कृतिक माता बनबैत अछि; कथाकारक कल्पना एकरा मनुष्यक निर्णयमे हस्तक्षेप करनिहार पात्र बनबैत अछि। एहि तीनू स्तरक भेद बुझला बिना गाथाक घटनाकेँ वैज्ञानिक वा ऐतिहासिक प्रतिवेदन मानि लेबाक खतरा अछि।

उपक्रम रक्षाक मूल्यक सूचना पहिनेसँ दैत अछि। वीरता आ करुणा एक साथ प्रस्तुत छथि, तैं पढ़निहार केवल अत्याचारीक पराजयक सुख लेल तैयार नहि होइत, बल्कि रक्षकक आफ्न नैतिक त्रुटिक सामना लेल सेहो प्रस्तुत होइत अछि। एहि दृष्टिसँ ई प्रस्तावना घटनाक पूर्वसूचना मात्र नहि, कृतिक सम्पूर्ण मूल्यांकनक कुंजी अछि।

अध्याय १ : कमला धारक जन्म

सूखाक पृष्ठभूमिपर जलक जीवनदायिनी रूप

पहिल अध्याय सूखा, उजड़ल खेत आ हेराएल जलस्रोतक स्थितिसँ नदीक जन्मक मिथकीय कथा रचैत अछि। कमला धार पसरैत छथि तँ खेत हरियर होइत अछि, इनारमे पानि घुरैत अछि आ घाटपर बच्चासभक हल्ला उठैत अछि। एहि क्रममे नदीक आगमन प्रकृतिक दृश्य-परिवर्तन मात्र नहि, सामूहिक जीवनक पुनर्स्थापना छी। कथाकर जल कैँ जीवनक जड़िमे रखैत छथि, आ एतयसँ नदीक सम्मानक नैतिक आधार निर्मित होइत अछि।

बूढ़-पुरान कमलाकैँ ‘माए’ कहैत छथि। ई सम्बोधनक भीतर धर्मक रूपक सामाजिक अनुभवसँ उत्पन्न अछि—देबाक गुणक प्रति कृतज्ञता। नदीक दुनू कात किसान आ मलाहक गाम बसब एकर समन्वयकारी भूमिका दर्शबैत अछि। मुदा कथाकार स्वयमेव सावधान करैत छथि जे संतुलन स्थायी नहि; खराब दृष्टि अएला पर सामाजिक संकट जन्म लैत अछि। एतय खलनायकक उदयक कारण नदीक दोष नहि, मनुष्यक लालसा अछि।

अध्याय २ : किसान आ मलाह

पारस्परिक श्रम आ नदीपर निर्भर सामाजिक अर्थव्यवस्था

दोसरा अध्यायमे किसान हर लैत छथि आ मलाह जाल। धन आ जीवनक स्रोतमात्र भिन्न अछि, मुदा दुनूक आश्रय कमला धार छथि। नदीक भोजन, आवाज आ घाटक अनुष्ठान दैनिक समाजक विस्तृत रूप प्रस्तुत करैत अछि। मलाहक बच्चासभक नदीमे

खेलब, नावक महत्त्व आ माछक जीविका नदीक विशिष्ट सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि।

विवाह, मुण्डन आ पावनि-दृश्य नदीकेँ जीवनचक्रक साक्षी बनबैत अछि। धार्मिक कर्म आ आर्थिक कर्म एकहि जलस्रोतक आसपास चलैत अछि। ई भिन्न जीवन-क्षेत्रसभक एकता लेखकक पर्यावरणीय दृष्टि दर्शबैत अछि : नदीक रक्षा केवल प्राकृतिक स्रोतक रक्षा नहि, सामुदायिक स्मृति, जीविका आ सामाजिक सम्बन्धक रक्षा अछि।

अध्यायक अन्त अनर्थक संकेत दैत अछि जे अगिला आपत्ति पानिसँ नहि, लोभसँ आएत। एहि उलटफेरमे बाढ़ि अथवा सूखाक सामान्य संकटसँ अलग सामाजिक हिंसाक प्रश्न उठैत अछि। प्राकृतिक माता खतरा नहि; असम्मानजनक स्वामित्व-बोध वास्तविक प्रतिपक्ष अछि।

अध्याय ३ : कमला पैघ भेलीह

रूपकक सौन्दर्य आ प्रतिपक्षीक कामुक अधिकार-दृष्टि

तेसर अध्यायमे कमलाक नदीरूप आ युवतीरूप एक-दोसरामे विलीन होइत अछि। धारक पाट चौड़ा, लहरि तेज आ सूर्योदय-सूर्यास्तक रंगक वर्णन सौन्दर्यरूप बनबैत अछि। लोक कमलाक रूपपर गर्व करैत छथि, मानो बेटी पैघ भऽ गेलीह। ई मानवीकरण नदीक प्रति आनन्द आ संरक्षणक भावना जगबैत अछि, मुदा ‘सुन्दर नदी’ आ ‘रक्षणीय स्त्री’क रूपकमे स्त्रीक व्यक्तिस्वातन्त्र्यक प्रश्न सेहो निहित अछि।

बैदला नामक सरदारक दृष्टि एहि सौन्दर्यकेँ अधिकारक वस्तु मानैत अछि। सम्मानक ठाम लालसा, कृतज्ञताक ठाम नियन्त्रण। कथानकक निर्णायक संघर्ष अतः सुन्दरता देहगत मोह बनि जाएब नहि, बल्कि स्वाधीनताक अनदेखी अछि। नदीक ‘देवी’ रूपपर ककरो बलपूर्वक विवाहक इच्छा सार्वजनिक अपमानक रूपमे स्थापित होइत अछि।

अध्याय ४ : बैदलाक खोट

बलजोड़ीक घोषणा आ सामूहिक असहायताक दृश्य

चौथ अध्यायमे बैदला स्पष्ट घोषणा करैत अछि जे ओ कमलासँ बलजोड़ी विवाह करय चाहैत अछि। कथक अर्थ स्पष्ट करैत छथि—जबरदस्ती, कमलाक इच्छा बिना। खलनायकक क्रिया स्वामित्वक हिंसक भाषा अछि। घाट जतय पहले पवित्र दीप जरैत छल, आब लठैत आ अखराहाक चुनौतीक स्थान बनैत अछि। पवित्रता सँ भय दिस स्थलपरिवर्तन अत्यन्त प्रभावी अछि।

मलाह टोली सर्वप्रथम सुनैत अछि, कारण नदी हुनकर जीविकाक अति निकट अछि। एहि क्रममे लोकसमुदायक भावनात्मक मातृत्वजाल नायकत्वक स्रोत बनैत अछि। मुदा बैदलाक बलक सम्मुख सामूहिक संघर्षक साधन कम अछि। कथाकर एहि असमानताकेँ बुझबैत आगामी धार्मिक उपाय लेल आधार बनबैत छथि।

कथक कमलाक लहरि कैँ बेचैनीक रूप दैत छथि। ई प्राकृतिक विज्ञानक घटना नहि, देवीरूप नदीक कथात्मक वाणी अछि। नदी स्वयं मदद चाहैत छथि, मुदा ओकरा बचएबाक प्रयत्न समाजक जिम्मेदारी बनि जाइत अछि—ई नैतिक सूत्र गाथाक संपूर्ण घटनाक प्रारम्भ अछि।

अध्याय ५ : भोला बाबाक तपस्या

सामुदायिक विनती आ वरदानक विलम्बित रूप

पाँचम अध्यायमे मलाह लोकनि शारीरिक प्रतिकारक असमान साधन देखैत छथि। बैदलाक बल, ओकर लठैतक फौज आ घाटपर उपस्थित भयक सामने हुनका लग नाव चलएबाक डाँड़ आ जाल अछि। समुदाय भोला बाबाक आराधना करबाक निर्णय लैत अछि। एहि दृश्यक महत्त्व समाजक सामूहिक आवाजमे अछि—व्यक्तिगत रक्षक एखन जन्मल नहि, मुदा न्याय माँगनिहार समुदाय पहिने सँ उपस्थित अछि।

अन्न-पानि त्यागि कीर्तन–तपस्याक पद्धतिसँ लोकगाथा धर्मक भीतर प्रतिरोधक संभावना देखबैत अछि। महादेव तत्काल बैदलाकेँ नहि मारैत छथि, बल्कि एक बालकक जन्मक व्यवस्था तैयार करैत छथि। एहि विलम्बित समाधानमे बीज–वृक्षक प्रतीक अछि : रक्षा समय लैत अछि, लोकसमाजक धैर्य परीक्षित होइत अछि।

एहि अध्यायमे अनुष्ठानक वर्णनसमे बालसाहित्यक धार्मिक-सांस्कृतिक परिचय अछि। तथापि एहि अलौकिक वरदानकेँ समकालीन संकटमे आवश्यक नागरिक संरक्षणक

एकमात्र उपाय नहि मानब। कथाक लोकविश्वास अपन रूपमे समझबाक अछि; सार्वजनिक हिंसा रोकबाक आधुनिक उपाय अलग नैतिक प्रश्न उठबैत अछि।

अध्याय ६ : शिवरा गामक बालक

लोकसमुदायक आकांक्षा सँ अमरसिंहक जन्म

छठम अध्यायमे शिवरा गामक मलाह परिवारमे अमरसिंहक जन्म होइत अछि। ओकर शरीरक असाधारण गरिमा आ पानिसँ सहज लगाव कथा-रूपमे भविष्यक नदीरक्षकक संकेत अछि। बालकक जन्म धरि पहिल पाँच अध्यायक सामूहिक प्रार्थना ओकर पूर्वपीठिका बनि रहल अछि। लोकगाथाक नायक आकस्मिक प्रतिभावान व्यक्ति नहि, समुदाय द्वारा चाहल गेल उत्तर छी।

बालकक जन्मगत बलक अतिशयोक्तिकेँ प्रत्यक्ष जैविक तथ्य नहि, लोकवीरक चिन्ह बुझबाक चाही। छओ मासमे बैसबाक आ अल्प समयमे घाटपर दौड़बाक विवरण नायकक असाधारणता स्थापित करैत अछि। वृद्ध मलाह ओकर आँखिमे शिवालाक दीप देखैत छथि। ई अनुष्ठानसँ देह धरि आ देहसँ भावी संघर्ष धरि अर्थ-सूत्रक पुनरावृत्ति अछि।

एहि समय बैदलाक आतंक सेहो बढ़ैत अछि। नायक आ खलनायक एक साथ परिपक्व होइत छथि—एक न्याय लेल, दोसर अत्याचारक विस्तार लेल। एहि समान्तर क्रमसँ कथा चरित्रसभक निजी जीवनक विस्तृत आख्यानक अपेक्षा मूल संघर्षकेँ प्रधान राखैत अछि।

अध्याय ७ : अखराहाक माटि

देहसाधना आ स्वभावक नैतिक परीक्षा

सातम अध्यायमे अमरसिंह अखराहामे दण्ड-बैठकी, कुश्ती आ मुदगरक अभ्यास करैत छथि। बल जन्मजात संकेत छल, मुदा नियमित साधनाक रूपमे ओकर विकास प्रस्तुत होइत अछि। नायकक शरीरक एहि अनुशासनक संग कृतिक नैतिक कसौटी जुड़ल अछि : कमजोरक सम्मुख नरमी, अभिमानीक विरुद्ध अडिगता। आख्यान केवल पेशी-बलक उत्सव नहि, बलक उपयोगक उचित लक्ष्य खोजैत अछि।

अमरसिंह फँसल नाव, उलझल जाल आ लोकक कठिनाइमे सहायता करैत छथि। एहि क्रियासभक माध्यमसँ रक्षक-रूप पूर्वप्रमाणित होइत अछि, तब जाकर बैदलाकेँ चुनौतिक निर्णय जन्म लैत अछि। वीर अपन समाजक रखबार पहिनेसँ छथि; युद्ध एहि स्वभावक चरम परीक्षा होयत।

एक वृद्ध मलाहक संग संवाद कृतिक गुरु–शिष्य सम्बन्धक अर्थ विकसित करैत अछि। गुरु अमरसिंहकेँ बतबैत छथि जे अखराहाक माटि हुनकर प्रतीक्षा कऽ रहल अछि। ई वचन वीरक नियतिक काव्यात्मक आह्वान अछि। मुदा नायकत्वक एहि पूर्वनिर्धारणमे भविष्यक नैतिक गलतीक सम्भावना जोगब विशेष आवश्यक—असाधारण रक्षक सेहो सभ दिन उचित निर्णय नहि लेत।

अध्याय ८ : चुनौती

माटि देबाक स्थानीय भाषा आ लोकसाक्षीक महत्त्व

आठम अध्यायमे अमरसिंह बैदलाकेँ अखराहाक ‘माटि देब’क भाषा मे चुनौती दैत छथि। लठैतक हँसी सामाजिक उपहास अछि—एक मलाहक बेटा स्थापित पहलमानक सोझाँ। एहि हँसीमे बलक गणना मात्र नहि, जाति-समुदायक प्रतिष्ठापर आधारित अपमान सेहो अछि। नायकक उत्तर ओकर जन्मगत दिव्यता सँ बेसी अपन समाजक प्रतिष्ठाक रक्षा बनैत अछि।

घाटपर किसान, मलाह, वृद्ध आ बच्चा जमा होइत छथि। लोकसाक्षीक एहि खुलल स्थलमे निजी प्रतिशोध सार्वजनिक न्याय-माँगक रूप पबैत अछि। माटि पर सिंदूर-अक्षत देबाक अनुष्ठान अखराहाक क्रियाकेँ सामाजिक विधि प्रदान करैत अछि। नदीक प्रवाह तकनहार माता जकाँ थिर बुझाइत अछि।

एतय लेखक जे विपक्ष रचैत छथि से दोसर से सम्बन्धित नैतिक जोड़ी अछि—अत्याचार आ उत्तर। मुदा एकर सीमा देखब जरूरी : समुदायस्य विश्वास हर स्थिति मे स्वतः न्यायसिद्धि नहि। आगामी अध्यायमे एही समुदायसँ जन्मल भय गलत हिंसात्मक आग्रह बनेत। चुनौतीक क्षण तात्कालिक वीररसक आरम्भ रहितो पछिला दू अध्यायक प्रश्नक बीज अन्तर्निहित अछि।

अध्याय ९ : युद्ध

माटिक स्पर्श आ अपमानजनक शक्तिक पतन

नवम अध्यायमे बैदला आ अमरसिंहक कुश्ती वीररसक चरम दृश्य बनैत अछि। बैदला अनुभवी पहलमान अछि; अमरसिंह जवानीक शक्ति आ कमला धारक लाजक भावना लेने मैदानमे छथि। पहिल दाँवमे अमरसिंह पराजित-जकाँ खसैत छथि, मुदा उठि अखराहाक माटि माथ पर लगबैत छथि। ई क्रिया केवल धार्मिक अनुष्ठान नहि; अपन सामाजिक जड़िमे सामर्थ्य खोजबाक प्रतीक अछि। माटि जनमभूमि आ नदीरूप मातासँ हुनकर सम्बन्ध पुनः दृढ़ करैत अछि।

पछिला दाँवमे अमरसिंह बैदलाकेँ पाछाँ छोड़ैत छथि आ अन्ततः खलनायक मरैत अछि। लोकक जयकार एतय सामूहिक भयक आंशिक अन्त अछि। किंतु कथा तुरन्त संकेत दैत अछि जे विजय वास्तविक अन्त नहि। एहि अग्रसूचनाक कारण वीररसक सुखमे शंका मिलि जाइत अछि।

कथात्मक रूपमे अत्याचारीक मृत्यु न्याय-जकाँ प्रस्तुत होइत अछि; समीक्षा लेल एकर आन्तरिक नैतिक सीमा बुझब जरूरी। युद्धक समय मरल प्रतिपक्षी आ ओकर परिवारपर अप्रत्यक्ष दायित्वक प्रश्न भिन्न अछि। जखन अगिला अध्यायमे सामूहिक भय निर्दोष गर्भवती पर हिंसा करा दैत अछि, तखन एहि विजयसँ अर्जित नायकत्व स्वयं प्रश्नाधीन होइत अछि।

अध्याय १० : जीतक छाह

रक्षकक हाथे निर्दोष-हत्या : वीरगाथाक नैतिक विच्छेद

दसम अध्याय ई कृतिक सर्वाधिक असुविधाजनक आ आवश्यक केन्द्र अछि। बैदला मरल, मुदा ओकर परिवार बाँचल अछि। मलाह समाज डरैत अछि जे ओकर गर्भवती पत्नीक गर्भसँ बदला लेबयबला वारिस जन्मि सकैत अछि। किछु लोक एहि भयक कारण अमरसिंहपर वंशक समाप्तिक दबाव दैत अछि। एहि ठाम जनसमूहक भय न्याय-विरोधी आदेशक रूप लैत अछि।

मूल कथा स्पष्ट रूपेँ बतबैत अछि जे अमरसिंह बैदलाक गर्भवती पत्नीकेँ मारि दैत छथि। एहि घटनाकेँ वीरताक स्वाभाविक विस्तार कहब नैतिक गलती होयत। स्त्री स्वयं एहि युद्धक अपराधक दोषी नहि ठहरायल गेलीह; गर्भस्थ शिशु सेहो नहि। कथाकर एहि हिंसाकेँ गाथाक ‘अन्हार पन्ना’ मानैत छथि। अतः समीक्षा एकरा न नुकाउत, न निर्दोष वंशक संहारकेँ रक्षाधर्मक अनिवार्य क्रिया सिद्ध करत।

मृत माएक कोखिमे बच्चाक जीवित जन्म कृतिक कठोर विडम्बना अछि। जे खतरा मेटाएबाक प्रयासमे निर्दोष रक्त बहाओल गेल, वएह भयक प्रतिरूप एखन नव जीवनक रूपमे उभरैत अछि। ई केवल शाप–फल कथा नहि, हिंसाक राजनीतिक आत्मविरोध अछि : भविष्यक भय सँ चलल प्रहार स्वयं भविष्यक नब भय तैयार करैत अछि। एतय ‘अमर’ नामक रक्षकक नैतिक प्रतिष्ठा अस्थिर भऽ जाइत अछि।

अध्याय ११ : कमलाक भेद

रक्तवंशक प्रश्न आ अन्तिम समाधानक उदासी

एगारहम अध्यायमे बैदलाक पुत्र बलवान भऽ उठैत अछि, आ मलाह समाजमे पुरान भय घुरैत अछि। अमरसिंह सामान्य कुश्ती-दाँवसँ ओकरा परास्त नहि करि पबैत छथि। कथा नब पात्रकेँ विशिष्ट लोककथात्मक शक्ति दैत अछि, जकर प्राण-रहस्य सामान्य लोककेँ ज्ञात नहि। नदीरूप कमला माता अपन रक्षककेँ उपाय बतबैत छथि। अमरसिंह ओही गुप्त ज्ञानक आधारपर बालककेँ मारैत छथि।

एहि प्रसंगक नैतिक गम्भीरता अत्यन्त पैघ अछि। ‘बालक’क वयस्क होइत कालक्रम पर कथामे विस्तार सीमित अछि; प्रतिशोध-वृत्तान्तक गति नब प्रतिपक्ष केँ पिता-वंशक रूपमे पढ़बैत अछि। मुदा जन्म मात्र सँ अपराध-सिद्धि नहि होइत। कृतिक लोकधर्मी समाधान भयक मूल कारण समाप्त होएबाक दावा करैत अछि; समकालीन नैतिक दृष्टिसँ ई दावा आलोचनात्मक परीक्षा माँगैत अछि। नदी-माता द्वारा गुप्त प्राणभेद देब लोककथाक चमत्कार अछि, आधुनिक न्यायिक अधिकार नहि।

अध्यायक अन्त अमरसिंहकेँ विजयी मुदा भारी मनक देखबैत अछि। ई उदासी संयोग नहि। पहिनुक पराक्रमक सुख एखन निर्दोष रक्तक स्मृतिसँ जड़ित अछि। लेखक अपन नायककेँ पूर्ण निष्कलंक बनौने नहि रखैत—बालपाठक लेल ई एक कठिन मुदा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक चुनौती अछि।

अध्याय १२ : गहमर : अमर बाबा

रक्षकक स्मृतिक थान आ द्वि-प्रार्थनाक नैतिकता

बारहम अध्यायमे अमरसिंह आजीवन कमला धार आ मलाह टोलीक रक्षा करैत छथि। देहावसानक बाद नदीक कात हुनकर ‘गहमर’ बनाओल जाइत अछि, जतय जाल आ नावक काजसँ पहिने लोक हुनकर नाम स्मरण करैत छथि। स्मारक एहि कथा मे सार्वजनिक कृतज्ञताक संस्थान बनि जाइत अछि। बालकसँ पहलमान, पहलमानसँ रक्षक आ रक्षकसँ लोकबाबा धरि नायकक परिवर्तन पूर्ण होइत अछि।

मुदा कृतिक अत्यन्त मूल्यवान अन्तिम भाव एहि प्रतिष्ठाकेँ निरपेक्ष पवित्रता नहि बनबैत। बूढ़ मलाह गहमरपर दू प्रार्थना करैत छथि—रक्षा लेल आ क्षमा लेल। एहि द्वैतमे वीरगाथाक नैतिक परिपक्वता अछि। रक्षक जनसमुदायक आवश्यक शक्ति छलाह, मुदा हुनकर हाथसँ अन्याय सेहो घटल। लोकस्मृति दूनू बात एक संग राखि सकैत अछि।

कमला नदीक जल, बाढ़ि आ सूखाक समयक आराधना आरम्भक अध्यायसभसँ पुनः जुड़ैत अछि। गाथा नदीक जनमसँ शुरू भऽ नदीक किनारक सामूहिक दीपपर समाप्त होइत अछि। स्वरूपमे ई वृत्ताकार आख्यान अछि, मुदा अन्तिम दीपक अर्थ बदलि गेल—पहिने जीवनदायिनी नदीप्रति कृतज्ञता, अन्तमे रक्षा आ क्षमाक मिश्रित प्रार्थना।

समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकवीरगाथाक आत्म-आलोचना

‘अमर बाबा’ वीरगाथाक पारम्परिक नायक-विजयक कथाक संग एक गम्भीर नैतिक उलटफेर रखैत अछि। बैदला कमला धारपर बलजोड़ी अधिकार चाहैत अछि, आ मलाह समाजक प्रार्थना द्वारा अमरसिंहक जन्मक मिथक बनैत अछि। बालकक शक्ति, कुश्ती आ सार्वजनिक विजय प्रथम भागक समुचित वीररस रचैत अछि। मुदा दसम अध्यायक गर्भवती स्त्रीक हत्या नायकक भूमिकाकेँ प्रश्नाधीन करैत अछि। एहि कारण पुस्तकक वास्तविक केन्द्रीयता विजयसँ बेसी विजयोपरान्त अधिकार आ दायित्वक प्रश्न अछि।

मातृ-रूपक आ सामाजिक आश्रय

कमला धार कथा मे नदी, माता आ देवीक रूपमे आवैत छथि। किसान आ मलाहक सामूहिक जीवन नदीक आसपास अछि। नदीक रूपक सामाजिक उत्तरदायित्वक स्रोत अछि; ओकर रक्षा अर्थ जीविकाक रक्षा। किंतु मातृत्वक भाषामे रक्षाक आवेग अतिरेकी भऽ गेलापर निर्दोष स्त्री–शिशुक हिंसा सम्भव होइत अछि। लेखक एकर परिणाम अन्तमे क्षमाक प्रार्थनामे स्थापित करैत छथि। इहिएँ पर कथा अपन रूपककेँ स्वयं प्रश्न करैत अछि—माताक रक्षा कहैत दोसर माताक प्राण लेब कोन धर्म?

सत्ताक दमन आ लोकसमुदायक भय

बैदला निजी लोभ आ शारीरिक बलद्वारा घाटपर अत्याचार स्थापित करैत अछि। मलाह समाजसँ निकसल रक्षक ओ अन्याय हटबैत अछि। पराजित दमनकारीक वंशसँ भय समाजक भीतरे नब हिंसा उत्पन्न करैत अछि। ई कहानी सामूहिक भयकेँ सभ बेर न्यायसंगत विवेक नहि मानैत। लोकसमूह द्वारा कएल माँग आ नैतिक उत्तरदायित्वक बीच भेद राखब एकर आलोचनात्मक बिन्दु अछि।

बालसाहित्य, नैतिक विवेक आ हिंसात्मक आख्यान

कृतिक मूल रूप सचित्र बालग्रन्थ अछि, पर कथा गर्भवतीक हत्या, प्रतिहिंसा आ बालकक मृत्यु सन कठिन विषय उठबैत अछि। शिक्षा लेल एहन पाठ पढ़बैत काल नायकक हिंसा अनिवार्य सत्य मानि प्रेरणादायी उदाहरण बनायब अनुचित। उपयुक्त अध्ययनमे बालपाठककेँ प्रश्न पूछबाक अधिकार देबाक अछि—बैदला दोषी छल, मुदा ओकर पत्नी आ बच्चा किएक? अमरसिंह लोकनायक किएक छथि आ क्षमा ककरा लेल? मूल पुस्तकक अन्तिम द्वि-प्रार्थना एहि विवेक लेल साहित्यिक अवकाश दैत अछि।

रूप, समय आ मिथकीय संरचना

मूल उपक्रम आ बारह अध्यायमे नदी-जन्म सँ समाजक विकास, दुर्जनक उदय, सामूहिक तप, रक्षकक जन्म, पराक्रम, त्रुटि आ अन्तिम लोकस्मारक धरि क्रम अछि। कथात्मक समय अनेक बरख पार करैत अछि, मुदा वाक्यसभ छोट आ द्रुत। चित्रित अध्यायपृष्ठ एकर गतिकेँ दृश्य-विराम दैत छथि; मूल संकलनमे ‘चित्र १’ सँ ‘चित्र २४’ धरि संकेतक क्रम अछि। चित्रक भूमिका स्रोत-प्रमाण सँ अलग साहित्यिक विश्लेषणक

विषय अछि। कथा-विश्वक चमत्कार वैज्ञानिक तथ्यक दावा नहि; रचनाक सांस्कृतिक रूपक अछि।

सीमा आ निर्णय

बैदलाक चरित्र स्पष्ट खलनायकीय, अमरसिंहक जन्म असाधारण, देवीक सहायता तत्काल समाधानकारी—एहि कारण कथा-कौशल कतिपय ठाम सरल मिथकीय द्वन्द्वपर निर्भर अछि। गर्भवती स्त्रीक निजी दृष्टि बड़ संक्षेपमे दाबल जाइत अछि; हिंसाक शिकारक अनुभवपर अधिक समय देल गेल होइत तँ कथा आरो जटिल भऽ सकैत छल। तइयो नायकक त्रुटि स्वीकार करबाक साहस आ अन्तिम क्षमायाचना एहि गाथाकेँ साधारण अपराजेय वीरक प्रशंसा सँ अलग करैत अछि।

कृतिक समेकित साहित्यिक अर्थ अछि जे रक्षाक धर्म निर्दोषक अधिकारक अवहेलना कऽ पवित्र नहि रहि सकैत। ‘अमर’ लोकनायक बनैत छथि, मुदा हुनकर स्मृति रक्षाक संग क्षमाक आवश्यकता जीवित रखैत अछि। ई नैतिक द्वैत कृतिक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। अमर बाबा : कमला धारक रक्षक — शिवरा गामक अमरसिंहक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क ४, मूल PDF पृष्ठ ४४२–५२९।

कृति ६ : मोतीदाइ

उपक्रम : उजैनी गाम

छओ दिनक मापमे मानवीय जीवनक अनन्त करुणा

उपक्रम उजैनीक गहमर आ मोतीदाइक नामक एकरे साथ परिचय करबैत अछि। ‘वरदानक आ वेदनाक’ कथा कहि कथावाचक पहिनेसँ संकेत दैत छथि जे भक्ति सभ इच्छा पूरा करबाक यन्त्र नहि। एक छोट जीवनानुभव पूरा जिनगीक शोक बदलि सकैत अछि—ई दावा रचनाक प्रमुख नाटकीय आधार अछि। छओ दिनकेँ अल्प अवधि मानबाक सहज गणना आ तकरा सम्पूर्ण मातृत्वक समतुल्य बुझबाक पात्रगत अनुभूति अलग स्तरपर स्थापित होइत अछि।

उपक्रमक भाषा महज देवताक महिमा नहि गबैत। एतय भक्तिनक प्रश्न देवताकेँ उत्तरदायी बनएबाक अछि। एहि कारण पूरा कथा सामाजिक अपमान, धार्मिक विनती आ मनुष्यक भावानुभूतिक बीच चलैत अछि। अन्तिम ‘भगता’ प्रसंग पाछाँ घुरि एहि प्रारम्भक संकेतक अर्थ पूर्ण करैत अछि।

अध्याय १ : गहिल माताक गाम

साझा धर्मस्थान आ दैनिक जीवनक असमानता

पहिल अध्यायमे उजैनीक गहमर नीमक गाछ तर माटिक पीड़ीक रूपमे उपस्थित अछि। लोक सन्तान, अन्न आ स्वास्थ्यक प्रार्थना करैत छथि; गाममे भिन्न-भिन्न टोली अछि। देवीक सोझाँ सभ एक होएबाक भावना उद्धृत अछि, मुदा कथावाचक तुरन्त एहि सामंजस्यक आभास आ वास्तविक व्यवहारक दूरी देखबैत छथि।

मोतीदाइ अपन हाथसँ गहमरक पहिल दीप जरबैत छथि। गहमरक सार्वजनिक प्रतिष्ठा हुनकर रोजक श्रमपर निर्भर अछि; तइयो समाजक आन लोक हुनका सम्मान नहि दैत। एहि विरोधक बीज पहिल अध्यायमे अछि। धार्मिक समता आ सामाजिक अपमान परस्पर विरोधी अनुभवक रूपमे एके गाममे जोग-बिसरि चलैत अछि। एहि अर्थमे गहमर केवल आराधनास्थल नहि, गामक सामाजिक मनोविज्ञानक मापक अछि।

अध्याय २ : भगतिन मोतीदाइ

रजक स्त्रीक श्रम आ आत्मिक अस्मिता

मोतीदाइ कपड़ा धोएनिहारि रजक स्त्री छथि। घाटपर कपड़ाक ढेरी, दुपहरिया भरि कपड़ा सुखाएब आ साँझ घर-घर पहुँचाएब—एहि क्रममे हुनकर आर्थिक श्रम देखाइत अछि। गहमरक लीपब, फूल-अक्षत आ दीप-धूपक नित्य सेवा हुनकर धार्मिक श्रम अछि। दुनू श्रम एक व्यक्ति करैत छथि, मुदा समाज पहिल श्रमकेँ जातिगत कार्य मानैत आ दोसरकेँ भक्तिक उपाधि दैत अछि। ‘भगतिन’ हुनकर अपन प्रतिष्ठित आत्मपरिचय अछि।

निःसन्तानताक निजी दुखक उल्लेख कथाकार करैत छथि, मुदा लोक एहि दुखकेँ सार्वजनिक दूषण बनबैत अछि। एहि अंतरपर कथा टिकैत अछि। मोतीदाइ स्वयं अपन निजी इच्छासँ दुखी छथि; समाज हुनकर जीवनक मूल्य संतान उत्पन्न करबाक कसौटीपर मापैत अछि। समीक्षामे दुनू बात अलग राखब आवश्यक अछि : पात्रक मातृत्वक इच्छा वास्तविक कथा-सत्य अछि, मुदा मातृत्वक अभाव स्त्रीक अस्तित्वक न्यूनता नहि।

अध्यायक प्रभावी चित्र अनुष्ठान आ घरक खाली कोरामे अछि। जे हाथ दिनभरि लोकक वस्त्र धोबैत आ देवीक पीड़ी लीपैत अछि, ताहिमे मानवसेवा आ सामुदायिक पूजा दुनूक दृश्य एकहि देहमे मिलैत अछि। एहि कारण मोतीदाइक निजी शोक पाठकक समक्ष उपजीविकाक ठोस समाजसँ पृथक नहि रहैत।

अध्याय ३ : गोबर पाथैत साँझ

वचनक अपमान आ अदृश्य सामाजिक हिंसा

गोबर पाथैत मोतीदाइक लग गुअरटोलीक जनानीसभ अबैत छथि आ हुनका ‘बाँझ’ कहि हँसी करैत छथि। एतय अपमानक उग्रता शब्दक सामाजिक अर्थमे अछि—निःसन्तान महिलाक छाया तक माल-जाल लेल अशुभ कहल जाइत अछि। कृति ई अन्धविश्वास पात्रसभक वचन रूपमे रखैत अछि; एकरा प्रमाणित प्राकृतिक नियम मानब नहि।

गोबर-सनल हाथक अचानक थम्हि जाएब मौन आ शारीरिक प्रतिक्रिया द्वारा वचनक घाव व्यक्त करैत अछि। अपमान कयनिहारसभ चलि जाइत छथि, मुदा मोतीदाइक भीतर शब्दक पुनरावृत्ति चलैत रहैत अछि। एक क्षणक सामूहिक हँसी भोगनिहार व्यक्तिक लेल दीर्घकालिक मानसिक बोझ बनैत अछि। बालपाठक लेल ई शिक्षा सामाजिक उपहासक क्रूरता देखबाक अछि, न कि पीड़ित पात्रक देहक दोष स्वीकारबाक।

एतय स्त्रीसभ द्वारा दोसर स्त्रीक अपमान प्रस्तुत अछि। कथाक साहित्यिक अर्थ स्त्रीजातिक सामूहिक दोषारोपण नहि, बल्कि सामाजिक पूर्वाग्रहक ओ संस्कार अछि जे ककरो अपन स्थिति समान भेलो दोसरक गरिमाक हनन करा सकैत अछि। जातिगत टोलीक उल्लेख एहि वचनक स्थानीय सामाजिक धरातल तय करैत अछि।

अध्याय ४ : बाँझ शब्दक भार

निजी शोकक सार्वजनिक घोषणासँ जन्मल प्रश्न

चारिम अध्यायमे मोतीदाइक निन्न हेराइत अछि। अपमानक वाक्य कानमे बेर-बेर बजैत अछि। कथाकार निजी दुःख आ सार्वजनिक लांछनक भेद स्पष्ट करैत छथि। वर्षों धरि भक्ति कएला पर हुनकर निःसन्तानता नहि बदलल, मुदा समाज हुनका सम्मानपूर्वक जीबाक अधिकार सेहो नहि दैत। गहमरपर देल दैनिक श्रमक मूल्य की? ई प्रश्न हुनकर मनमे उठैत अछि।

भोरमे ओ सामान्य सेवा छोड़ि पीड़ी दिस बढ़ैत छथि। पहिल बेर ओ आराधनाक फेरसँ प्रश्नक रूपमे रूपान्तरण करैत छथि। अब देवीक संग एकतर्फा विनय नहि, संवाद चाही। एहि मोड़पर लोकभक्ति आलोचनात्मक स्वर पबैत अछि—भक्तिन आराध्यकेँ उत्तर देबाक अपेक्षा करैत छथि।

एहि अध्यायमे स्त्रीक आत्मसम्मानक चिन्ता गर्भाधानक व्यक्तिगत इच्छासँ जोड़ि गेल अछि, मुदा एकरा मात्र सन्तान प्राप्तिक धार्मिक व्यवहार मानब कृतिक सामाजिक चोटकेँ छोट करब होयत। कथा आगाँ ई देखबैत अछि जे मोतीदाइ जे प्रश्न देवीसँ पुछैत छथि ताहिकेँ जन्म देनिहार लोक समाज अछि।

अध्याय ५ : पीड़ी खोदब

विनयक ठाम अनिवार्य प्रत्युत्तरक माँग

पाँचम अध्यायमे मोतीदाइ गहमर पहुँचलाक बाद दीप नहि जरबैत छथि; वर्षो धरि स्वयं लीपल पीड़ी केँ खोदए लगैत छथि। एहि क्रियाक दृश्यात्मक शक्ति तीक्ष्ण अछि। जे हाथ समाजक धार्मिक स्थल बनौलक, से अपन आराधनाक अधिकार सँ ओकरा फेर तोड़ि सकैत अछि। एहि विध्वंसकेँ लेखक भक्तिक विरोध नहि, भक्तिक चरम भाषा कहैत छथि।

अश्रु आ घाम माटिपर एकसंग खसैत अछि। एहि प्रतिमामे शारीरिक श्रम, निराशा आ आध्यात्मिक आग्रह एकरूप भऽ जाइत अछि। जखन गामक लोक हुनका ‘बताहि’ कहैत छथि तखन स्त्रीक न्यायोचित प्रश्नक प्रति समाजक एकटा दोसर अपमान प्रकट

होइत अछि। सामान्य अनुष्ठानसँ हटैत भक्तिनक प्रतिरोध सामाजिक व्यवहार लेल असहज अछि।

नीमक पातक बिनु बसात डोलब, माटिसँ इजोत आ गहिल माताक प्रकट होएब लोककथात्मक उत्तर अछि। अलौकिक प्रसङ्गक कथा-सत्य धार्मिक लोकविश्वासक क्षेत्रमे अछि; एहि दृश्य सँ देव-प्रकटिक बाह्य प्रमाण नहि निकलब। साहित्यिक दृष्टिसँ देवता आब भगतिनक प्रश्न सुनबाक लेल उपस्थित छथि; सत्ता-सम्बन्धमे ई उलटफेर महत्वपूर्ण अछि।

अध्याय ६ : माताक वचन

भक्तिनक मुखर प्रश्न आ देवीक असहाय करुणा

छठम अध्यायमे गहिल माता मोतीदाइ कैँ संबोधित करैत छथि। देवीक स्वर तामसपूर्ण नहि, ममतापूर्ण अछि। मोतीदाइ बरखो सँ दबल अपमान सुनबैत छथि आ प्रश्न करैत छथि—जँ हमरा सन्तान नहि भेटल तऽ नहि भेटय, मुदा हमर छायाकैँ अशुभ किएक कहल गेल? ई मूल पाठक नैतिक केन्द्र अछि। प्रश्न केवल निजी इच्छापूर्तिक नहि, समाजक अन्यायपूर्ण अर्थारोपक सेहो अछि।

देवीक उत्तर सेहो सर्वशक्तिमानक तुरन्त आदेश नहि। गहिल माता कहैत छथि जे सन्तानक लेखा इन्द्रक दरबारमे अछि। एहि विधानसँ कथा देवत्वक एक प्रशासनिक संरचना रचैत अछि : मातृभाव अधिकार देबैत अछि, मुदा निर्णयक अन्तिम स्रोत अन्यत्र। देवी अपन भगतिन लेल स्वयं याचक बनबाक आश्वासन दैत छथि। गाथामे

शक्तिशालीक पद भक्तक खातिर झुकैत अछि—एहि नम्रतामे भक्ति-नायकक सम्मान अछि।

आशाक पुनर्जन्म करुण प्रसङ्गक दारुणता बढ़बैत अछि। मोतीदाइकेँ बरखो बाद सम्भावना देखाइत अछि; पाठक पहिने सँ जानैत अछि जे ई वरदान सरल सुखान्त नहि। गहिल माताक भावनात्मक संलग्नता आगामी देव-नियमक परीक्षा बनैत अछि।

अध्याय ७ : इन्द्रक दरबार

कर्मक लेखा आ न्यायव्यवस्थाक कठोर रूपक

सातम अध्यायमे इन्द्रक दरबार भाग्यक अभिलेखालय बनल अछि। गहिल माता मोतीदाइ लेल सन्तान माँगैत छथि; इन्द्र बहीक पन्ना उलटि पूर्वजन्मक लेखा देखैत छथि आ निःसन्तानता नियत बतबैत छथि। एहि दृश्यकेँ शाब्दिक धर्मवैज्ञानिक प्रमाण नहि मानि लोककथाक सामाजिक-ब्रह्माण्डीय न्यायचित्र बुझबाक चाही। बहीक रूपक सँ भाग्य एक लिखल निर्णय बनैत अछि, जाहिपर व्यक्ति आ देवता दुनू सीमित हस्तक्षेप करैत छथि।

देवीक ममतामय निवेदन असफल होइत अछि। ई पराजय कृतिक एक गहन संरचनात्मक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि : जँ पीड़ितक यथार्थ दुःखक सोझाँ नियम अटल रहैत अछि, तखन ओ नियम न्यायसंगत अछि कि नहि? कथाकार इन्द्रक अभिलेख-व्यवस्थाकेँ पात्रसभक विश्वसनीय सत्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि, मुदा साहित्यिक पाठक ओकर नैतिक कठोरता पर प्रश्न उठा सकैत अछि।

गहिल माताक रिक्त हाथे घुरब आ सच कहबाक पीड़ा ई दर्शबैत अछि जे आस्था सदिखन कृत्रिम सांत्वना नहि दैत। तथापि ‘पूर्वजन्मक फल’क व्याख्याकेँ वर्तमान जीवनमे निःसन्तानता लेल स्त्रीकेँ दोष देबाक सामाजिक तर्क बनाओल नहि जा सकैत। कथा भीतरक भाग्यवाद आ बाह्य समाजक नैतिक उत्तरदायित्व अलग विषय छथि।

अध्याय ८ : मरबे नीक

निराशाक चरम आ करुणाक नैतिक परीक्षा

आठम अध्यायमे मोतीदाइ नियतिक कठोर उत्तर सुनि जीवन निरर्थक बुझए लगैत छथि। ओ अन्न त्यागि दैत छथि, घाटसँ दूरी बना लैत छथि आ मरबाक इच्छा व्यक्त करैत छथि। ई प्रसंग भावनात्मक असुरक्षाक अत्यन्त गम्भीर चित्र अछि। ओकरा भक्तिक आदर्श, वीरता अथवा मुक्ति प्राप्तिक अनुकरणीय उपाय मानब गलत होयत; मूल कथा एहि संकटकेँ गहिल माताक पीड़ाक कारण देखबैत अछि।

मोतीदाइक निराशाकेँ केवल सन्तानक अभावसँ जोड़ब उचित नहि। सार्वजनिक अपमान, आत्मसम्मानक चोट, दीर्घकालिक सामाजिक अकेलापन आ बारम्बार निराश आशा—ई सभ एहि प्रतिक्रियाक पृष्ठभूमि अछि। जखन धार्मिक पुस्तकवला निर्णय हुनकर व्यक्तिगत जीवनपर अंतिम मुहर सन पड़ैत अछि, तखन हुनकर पूर्व विश्वास टूटैत अछि। कथाक करुणा एहि सम्पूर्ण अनुभवक मानवीयता सँ उत्पन्न अछि।

गहिल माता इन्द्रक दरबार दोसर बेर जाएबाक निर्णय लैत छथि। पहिल यात्राक निवेदन नियमक सोझाँ हरायल छल, दोसर यात्रा दुःखित स्त्रीक जीवन बचएबाक आकुलता सँ प्रेरित अछि। एतय भक्तिनक मूल्य नियम सँ पैघ मानबाक नैतिक सम्भावना जन्मैत अछि। कथाक चरम अवसाद आगाँक सीमित वरदानक त्रासद पृष्ठभूमि बनैत अछि।

अध्याय ९ : दोसर यात्रा आ शर्त

छओ दिनक वरदान आ स्वीकृतिक द्वैध अर्थ

नवम अध्यायमे गहिल माता पुनः इन्द्र लग जाएबक उपक्रम करैत छथि। नियतिक बही नब सिरे नहिं मेटाइत; मुदा एक सीमित हस्तक्षेप सम्भव होइत अछि—मोतीदाइ कैं सन्तान भेटत, मुदा छठियारिक दिन बच्चा मरि जायत। ई घटना पारम्परिक सुखान्त वरदानक रूपक विखण्डन करैत अछि। वरदानक भीतर पहिने सँ शोकक लेखा राखल गेल अछि।

मोतीदाइक स्वीकृति एहि अध्यायक सर्वाधिक जटिल मानवीय तथ्य अछि। ओ कहैत छथि जे छओ दिनो मातृत्व हुनकर लेल छओ युग सन होयत। एहि वचनमे निजी अनुभवक तीव्र इच्छा अछि, मुदा पाठक जानैत अछि जे भावी हानिक पीड़ा सुनिश्चित अछि। एकरा निष्कंटक विजय कहब कृतिक करुण सचकैं नकारब होयत। व्यक्तिक निर्णयक स्वतन्त्रता आ भयावह परिस्थितिमे चुनबाक बाध्यता—दुनू स्तरमे एहि स्वीकृतिक मूल्यांकन कएल जा सकैत अछि।

देवीक करुणा भाग्यक लेखामे नव पाँति जोड़ि सकैत अछि, मुदा बच्चाक जीवन बचाबय नहि सकैत। एहि सीमामे धार्मिक व्यवस्था स्वयं नैतिक प्रश्नक अधीन होइत अछि। लोकगाथा एक चिरस्थायी मानवीय प्रश्न लिखैत अछि : कखनो बहुत छोट सुखक लेल निश्चित पैघ दुःख स्वीकार करबाक अर्थ की होइत अछि?

अध्याय १० : छओ दिनक संसार

अल्पकालिक आनन्दक कालानुभूति आ आसन्न शोक

दसम अध्यायमे मोतीदाइक कोरा भरैत अछि। उजैनीक लोक आश्चर्यक संग एहि जन्मक साक्षी बनैत छथि। पहिल दिन बच्चाक मुख तकैत रहब, दोसर दिन लोरी, तेसर दिन काजर आ चौथ दिन नामकरणक इच्छा—ई छोट-छोट क्रिया मातृत्वक समयकेँ सामान्य घड़ीक रैखिक क्रमसँ अलग करैत अछि। छओ दिन संसारक दृष्टिसँ अल्प अवधि, मोतीदाइक भावानुभवमे सम्पूर्ण जीवनक घनत्व पबैत अछि।

तथापि पाँचम दिनसँ लोरीक कम्पन प्रारम्भ होइत अछि। पाठक आ माता दुनू मृत्यु-दिनक पूर्वज्ञान रखैत छथि; एहि कारण प्रत्येक हर्षक क्षणमे करुणा मिलैत अछि। कथा सुखद वृत्तान्तकेँ पूर्णरूपेँ काटि नहि दैत, बल्कि सुखक भीतर समयक भय उपस्थित करैत अछि। भाव-निर्माणक दृष्टिसँ ई अध्याय गाथाक संवेदनात्मक केन्द्र अछि।

गुअरटोलीक जनानीसभ हुनकर दरबज्जापर ठाढ़ भऽ देखैत छथि, मुदा एहि बेर अपमानजनक शब्द नहि बजैत छथि। कथामे ओ लोकक खुलल क्षमा-याचना नहि देखाओल गेल; एकरा सम्पन्न नैतिक परिवर्तन मानब प्रमाणहीन होयत। चुप्पी संभवतः

लज्जा वा परिस्थिति-परिवर्तनक परिणाम अछि। सामाजिक पश्चात्तापक अनिर्णीत अवस्था आलोचनात्मक प्रश्न बनल रहैत अछि।

अध्याय ११ : छठियारि

जन्मोत्सवक संस्कार आ मृत्युक विरोधाभास

एगारहम अध्याय छठियारिक धार्मिक-सामाजिक अनुष्ठानक दिन बच्चाक मृत्यु देखबैत अछि। जे दिन परम्परामे नवजातक मंगलक कामना सँ जुड़ल अछि, ओही दिन मोतीदाइ कैँ सन्तान-वियोग सहब पड़ैत अछि। ई संस्कार आ परिणामक विरोध कथाक करुण असर कैँ प्रबल बनबैत अछि। दीप जरैत अछि, मुदा ओकर लौ काँपैत अछि—बाह्य प्रकाश आ भीतरी भयक दृश्यात्मक रूपक बनैत अछि।

मोतीदाइ बच्चाकैँ अन्तिम बेर नहबैत, काजर लगबैत आ छातीसँ लगा कऽ एकटक देखैत छथि। ई क्रियासभ ममताक देखभाल आ निश्चित विदाईक साझा कर्म अछि। कथाकार माएक शोककैँ चीत्कार मात्र नहि मानैत; बच्चाक मृत्यु-पछाँ हुनकर आँखिक सूखल रहब दुःखक दोसर, स्तब्ध रूप बनैत अछि। एहि दृश्यपर ‘ओ दुखी नहि छलीह’ सन निष्कर्ष गलत होयत।

कृतिक कथावाचक एहि दुःखमे निजी सामाजिक अस्मिताक परिवर्तन देखैत छथि : पहिले मोतीदाइक कोरा रिक्त छल, आब ओ मातृत्वक स्मृति नेने छथि। मुदा बच्चाक मृत्यु कैँ माता-पद प्राप्त करबाक उचित साधन मानब नैतिक रूपसँ अनुचित अछि। मूल

कथा दुःखक दू रूपक अन्तर बनबैत अछि; समीक्षा लेल दुनूक मानवीय मूल्य आ संकट स्वीकारब आवश्यक अछि।

अध्याय १२ : भगता

दुःख सँ सामाजिक सेवाक परिवर्तित भूमिका

बारहम अध्यायमे मोतीदाइ फेर गहमर घुरैत छथि। ओ एखन केवल दीप-धूपक सेविका नहि; लोकमान्यतामे भगता बनैत छथि, गहिल माताक उपस्थिति हुनकर देहसँ व्यक्त होइत मानल जाइत अछि। लोक अपन निजी पीड़ा, निःसन्तानताक दुःख आ अपमानक अनुभव हुनका सुनए लगैत छथि। एहि रूपान्तरमे कृतिक मूर्त सामाजिक अर्थ अछि—पहिने एकसर दुःख सहनिहार स्त्री एखन दोसरक दुःख सुनबाक सामुदायिक केन्द्र बनैत छथि।

‘विधान’क प्रश्न अन्तमे पूर्ण समाधान नहि पबैत। छओ दिनक बच्चा घुरि नहि अबैत, सार्वजनिक अपमानक जड़ि स्वतः समाप्त नहि होइत। मुदा मोतीदाइ अपन दुःखक अनुभवकेँ आन लोकक सहायता मे नियोजित करैत छथि। एहि अर्थमे कथा सामाजिक स्मृतिमे जीवनक नब प्रयोजन देखबैत अछि, यद्यपि ई परिवर्तन ककरो हानिक अनिवार्य लाभ कहि महिमामंडित नहि कएल जा सकैत।

उजैनीक गहमरमे मोतीदाइक नाम टिकि जाएब स्त्रीक सामाजिक प्रतिष्ठाक पुनर्निर्माण अछि। आरम्भमे गाम हुनका सन्तान-अभाव सँ परिभाषित करैत छल; अन्तमे हुनकर श्रम, प्रश्न आ करुण अनुभवसँ सम्बन्ध बनैत अछि। एतय एकटा जरूरी अन्तर्विरोधो

बचल अछि : समाज हुनकर महत्त्व कैँ माता भेलाक बादे अधिक व्यापक रूपमे मानैत अछि। तैं कथा स्त्रीक गरिमाक नब अवधारणा गढ़ैतहुँ मातृत्वक प्रतिष्ठाकैँ केन्द्रमे रखने रहैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकभक्ति आ स्त्रीक प्रश्नाधिकार

‘मोतीदाइ’ मे भक्तिक आस्थाक एकरूप समर्पण नहि, प्रत्युत्तर माँगबाक नैतिक अधिकार अछि। मोतीदाइ गहमरक पीड़ी लीपैत, दीप जरबैत, कपड़ा धोबैत जीवन बितबैत छथि। जखन समाज हुनका सार्वजनिक रूपसँ अपमानित करैत अछि, तखन ओ स्वयं देवी लग अपन दुःखक हिसाब पुछैत छथि। पीड़ी खोदबाक दृश्य धार्मिक स्थलमे स्त्रीक आवाजक अप्रत्याशित स्वीकृति बनैत अछि। भक्तक प्रश्न देवताकैँ क्रिया करबाक लेल प्रेरित करैत अछि, आ ई क्रिया कथा भीतर देवताक सीमाक उद्घाटन सेहो करैत अछि।

रजक श्रम आ सामाजिक असमानता

मोतीदाइक रजक परिचय आकस्मिक पृष्ठभूमि नहि। सामाजिक रूपसँ नीच बुझल श्रम, गामक सामूहिक धर्मस्थानक निरन्तर सेवा आ सम्मानक अभाव एक-दोसरासँ जुड़ल छथि। गुअरटोलीक अपमानमे स्त्रीक निःसन्तानता धार्मिक अशुभताक रूपमे आरोपित अछि। कथाक सामाजिक शक्ति एहि दोषारोपणक मानवीय हानिक चित्रणमे अछि।

तथापि कथा जातिगत सम्बन्धक संस्थागत विश्लेषण विस्तारसँ नहि करैत; एक पात्रक अनुभवद्वारा विषयक द्वार खोलैत अछि।

कर्मलेख, वरदान आ करुणाक सीमा

इन्द्रक दरबारमे भाग्यक बही आ पूर्वजन्मक फल धार्मिक कल्पनाक नियम निर्माण करैत अछि। देवीक पहिल यात्रा असफल, दोसर यात्रा सीमित वरदानक माध्यम बनैत अछि। एहि क्रममे नियतिक कठोरता आ करुणाक अपर्याप्तता एकहि कथाविश्वमे रहैत अछि। कथा भक्ति कैँ सर्वशक्तिमान समाधानक रूपमे नहि रखैत। देवी इच्छित सम्पूर्ण जीवन देबामे असमर्थ छथि; ई असमर्थता दुःखान्त प्रभावक मुख्य कारण अछि। रूपकक सामाजिक अर्थ भाग्यक निर्णयकैँ नैतिक प्रश्नसँ परखब अछि।

समयक भावात्मक लम्बाइ

छओ दिनक मातृत्व घटना-पुञ्जक दृष्टिसँ बहुत छोट अछि, मुदा साहित्यिक समयक दृष्टिसँ विस्तृत। पहिल दिनक मुख-दर्शन, लोरी, काजर, नामकरणक इच्छा आ पाँचम दिनक भय—सब अनुभव भावक घनत्व बढ़बैत अछि। कृतिक शीर्षकीय उपशीर्षक एहि कालानुभूति कैँ केन्द्रमे रखैत अछि। संस्कारक छठियारि दिन मृत्यु होएब उत्सव आ शोकक चरम विरोध अछि।

रस आ अलंकार

मुख्य करुण रसक संग भक्ति-भाव आ अद्भुत रसक प्रयोग होइत अछि। गोबर-सनल हाथक स्थिरता, खोदल पीड़ी, नीमक पात, भाग्यक बही, काँपैत दीप आ अन्तिम सूखल आँखि छवि-श्रृंखलाक प्रमुख प्रतीक छथि। भाषामे पुनरावृत्ति अपेक्षाक लय बनबैत अछि, मुदा किछु स्थलपर भावक प्रत्यक्ष घोषणा पाठकक स्वतंत्र अर्थग्रहणकेँ सीमित करैत अछि। सचित्र संकलनक अनुक्रममे २४ चित्र-संकेत छथि; चित्रित पृष्ठ आ गद्य बेरा-बेरी चलैत अछि। बिना सभ चित्रक पृथक दृश्य परीक्षणक रंग वा आकृतिक विशिष्ट दावा नहि कएल जाएत।

बालपाठक लेल जटिलता

ई बाल ग्राफिक उपन्यास भएने सेहो निःसन्तानतापर अपमान, मृत्यु-इच्छा, नवजातक मृत्यु आ शोकक असाधारण गम्भीर अनुभव उठबैत अछि। उम्रानुकूल पठनमे एहि प्रसंगक चर्चा मानवीय सम्मान, समुदाय द्वारा देल चोट, आ संकटग्रस्त व्यक्तिक सहायतापर केन्द्रित रहबाक चाही। मोतीदाइक अन्न-त्याग अथवा जीवन छोड़बाक विचार केँ आदर्श समाधान नहि बनाओल जाए। कथामे देवीक प्रतिक्रिया जीवनक मूल्य रक्षाक रूपमे अछि।

कलात्मक सीमासभ

मोतीदाइक सन्तानक इच्छा कतेको पाठक लेल गहन मानवीय भाव अछि, मुदा ‘माए’ पदक माध्यमसँ कलंक धोइ जाएब कथानकक एक विवादास्पद सीमा सेहो अछि। स्त्रीक गरिमा मातृत्वसँ स्वतंत्र होयबाक चाही; एकर पर्याप्त स्पष्टता कथावाचक नहि दैत। अपमान करनिहार पात्रसभक पश्चात्ताप विकसित नहि; हुनकर मौन अन्तिम

परिवर्तनक आश्वस्त प्रमाण नहि। धार्मिक चमत्कारक प्रधानता सामाजिक परिवर्तनक मानवीय प्रक्रियाकेँ संक्षिप्त करैत अछि। तइयो श्रम, प्रश्न, शोक आ नब सामुदायिक भूमिकाक बहुस्तरीय संयोजन कृतिक साहित्यिक बल अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘मोतीदाइ’ एक साधारण श्रमिक स्त्रीक लोकभक्तिपर आधारित करुण आख्यान अछि। ई कथा स्त्रीक निजी मातृत्व-इच्छा केँ समाजक अपमानजनक निर्णयसँ अलग देखबैत अछि; आस्था केँ प्रश्न करबाक अधिकार बनबैत अछि; नियतिक कठोर नियमक सोझाँ करुणाक सीमा देखबैत अछि; आ अल्प जीवनानुभवक स्मृति केँ सामाजिक सेवाक नव रूपमे बदलैत अछि। कृतिक आन्तरिक द्वन्द्व—स्त्रीक सम्मानक पुनर्स्थापना मातृत्वक माध्यमसँ किएक?—एकरा विचारणीय बनबैत अछि। दुखान्त रसक संग ई प्रश्न बचल रहब कथा केँ मात्र धार्मिक महिमाक पाठ बनबा सँ रोकैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मोतीदाइ : गहिल माताक भगतिन — छओ दिनक मातृत्वक करुण गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क ५; मूल PDF पृष्ठ ५३०–६१७।

कृति ७ : राजा सलहेस

उपक्रम : मोनक राजा

राजपदक लोकाधिकार आ औपचारिक पदक टकराव

उपक्रम सलहेसक पहिचान मोरंगक जनताक स्वीकृतिसँ करैत अछि। ओ दुसाध जातिसँ छथि; औपचारिक राजसिंहासनपर नहि बैसलाह, मुदा विपत्तिमे लोकक सहायता करैत ‘राजा’ कहाओल जाइत छथि। पहिलेसँ सामाजिक मर्यादाक दू प्रतिमान आमनेसामने ठाढ़ छथि—राजकीय संस्थाक पद आ समुदाय द्वारा अर्जित आदर। ई भेद पूरा कथाक राजनीतिक अर्थ निर्धारित करैत अछि।

कथक दबना आ सलहेसक सम्बन्धक संग ‘ईर्ष्या आ न्याय’क संकेत दैत छथि। मुदा उपक्रमक विजय-विधान पाठककेँ आगाँक घटनाक नैतिक लागत नहि कहैत। वैद्यक आत्महत्या, चूहड़मलक छल, दबनाक तांत्रिक यातना आ अंतिम विवाह—एहि सभक भीतर न्यायक सरल व्यवस्था नहि भेटैत। एतय लोकसम्मानक कथा निजी आकांक्षा आ अधिकारक टकरावसँ जुड़ि जटिल बनैत अछि।

अध्याय १ : दबनाक अस्वीकृत प्रेम

अनुत्तरित अनुराग, अस्वीकारक अधिकार आ दुखान्त घटना

पहिल अध्यायमे दबना मोरंगक राजाक मालिन छलीह। हुनकर सलहेसक प्रति अनुराग अछि, मुदा सलहेस जनताक सेवामे संलग्न छथि आ हुनकर ध्यान दबना दिस नहि। वैद्य दबनाक प्रति अनुरक्त अछि; दबना ओकर प्रस्ताव अस्वीकार करैत अछि। वैद्यक आत्महत्या एहि कृतिक दुखान्त पहिल मोड़ अछि। कथानक ओकर मृत्यु कैँ भावी संकटक पूर्वपीठिका बनबैत अछि, मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ जीवन छोड़बाक एहि काजकैँ प्रेमक महान प्रमाण कहब अनुचित अछि।

अस्वीकारक अधिकार एहि तीन-कोना सम्बन्धक मुख्य नैतिक प्रश्न अछि। दबना वैद्यक प्रेम स्वीकारबाक लेल बाध्य नहि; ठीक ओहिना सलहेस दबनाक प्रेमक उत्तर देबाक लेल बाध्य नहि। कृतिक कथावाचक दबनाक बरखो तक प्रतीक्षाक भाव स्पष्ट करैत छथि, मुदा प्रतीक्षा मात्रसँ प्रतिदानक नैतिक अधिकार जन्मैत नहि। एहि दृष्टिसँ कथा वैयक्तिक इच्छाक विरुद्ध सामाजिक संबंधक स्वतन्त्रता पर प्रश्न उठेबाक अवसर दैत अछि।

दबनाक असन्तोष आगामी तांत्रिक क्रियामे बदलत, ई अग्रसूचना पात्रकैँ प्रेम–वियोगक एकरेखीय नायिका नहि रहय दैत। वैद्यक मृत्युक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मूल पाठ बहुत संक्षेपमे करैत अछि; तैं ओकर प्रेरणा, परिस्थिति वा वास्तविक मनःस्थितिक निश्चयक विस्तार गढ़ब नहि। कृतिक भावभूमि करुणा आ अनुत्तरित इच्छाक जटिल अन्तर्सम्बन्धमे अछि।

अध्याय २ : तालुकदारक ईर्ष्या

लोकदत्त पदवी आ सत्तादत्त पदक सीमा

मोरंगक तालुकदार नौरंगी बहादुर थापा एहि बातसँ क्षुब्ध अछि जे एक साधारण सैनिक कैं लोक ‘राजा’ कहैत अछि। सलहेसक उत्तर छैक जे ई सम्मान जनताक तरफसँ भेटल अछि, अपन घोषणा नहि। एहि कारण झगड़ा व्यक्तिगत अभिमान पर सीमित नहि; शासकक अधिकार आ लोकसमाजक स्वतन्त्र निर्णय पर केन्द्रित अछि।

थापाक आदेश—अपन नामक संग ‘राजा’ नहि लगाउ—सलहेस जँ मानिओ लएथि तखनहुँ जनताक सम्बोधन रोकब असम्भव। सलहेसक तर्क अहंकारक प्रदर्शन नहि; ओ नामक सामाजिक सृजनक प्रक्रिया बुझबैत छथि। समाजक लोक ककरा की कहत, तकर सम्पूर्ण नियन्त्रण राजकीय आज्ञाक हाथ नहि। एहि एक संवादमे कथा सत्ता-संरचनाक गहन विडम्बना व्यक्त करैत अछि।

सलहेसक नौकरीक प्रति अविश्वास बढ़ैत अछि। मूल पाठ नाम-विवादक तुरन्त सैनिक विद्रोह नहि देखबैत; सलहेस स्थिति सँ असहज भऽ प्रस्थानक विचार करैत छथि। ई संयम नायकक चरित्रमे राजनीतिक विवेकक संकेत अछि। यद्यपि तालुकदारक मनोवैज्ञानिक कारण विस्तारसँ विकसित नहि, ओकर ईर्ष्या कथाक आगामी संकटक कारण-शृंखला स्पष्ट करैत अछि।

अध्याय ३ : मोरंग-त्याग

निर्वासनक निर्णय आ दबनाक विद्या-प्रयोग

तेसर अध्यायमे सलहेस दरबार छोड़ि मुंगेरक पितियौत बहिन लग जेबाक सोचैत छथि; हुनकर बहिनोइ दरभंगा राजक नौकरीमे छथि। ई ठाम-नाम कथा-संसारक भौगोलिक दायरा मोरंगसँ मिथिला दिस बढ़बैत अछि। मुदा इतिहासक प्रमाणबिना एहि कथाक कालक्रमकेँ बाह्य राजवंशीय इतिहास मानब नहि।

दबनाकेँ सलहेसक प्रस्थानक समाचार भेटैत अछि, आ ओकर निजी भय प्रबल होइत अछि। ओ कमरू-कमख्यासँ सीखल तंत्र-विद्याक सहायता लऽ सलहेस लेल नब पदक प्रस्ताव रखैत अछि : राजाक दरबारमे सात सए सैनिकक सरदार चूहड़मलकेँ हटाकऽ सलहेसकेँ सरदार बनाओत। एहि प्रस्तावमे प्रेमक रक्षा आ राजनीतिक हस्तक्षेप एक भऽ जाइत अछि।

दबना समर्थ निर्णयकर्ता छथि; हुनकर विद्या कथा भीतर सक्रिय क्षमता अछि। तथापि दोसर व्यक्तिक पद हटायब वा सत्ता-संरचनामे हस्तक्षेप करबाक नैतिक परिणाम अकारण समाप्त नहि होइत। चूहड़मल पछाँ षड्यन्त्र करैत अछि, मुदा तकरा हटेबाक प्रक्रिया सेहो तकर प्रतिक्रिया-सम्बन्धी कारण बनैत अछि। एहि कारण कथा सरल प्रेमक कथा सँ अधिक जटिल राजनीतिक आख्यान बनैत अछि।

अध्याय ४ : दबनाक जादू आ गीत

बारह बरखक प्रतीक्षा, पद-परिवर्तन आ झूठ प्रमाण

चौथ अध्यायमे दबनाक प्रस्ताव सच होइत अछि। दरबारक उत्सवमे ओ सलहेस लेल बारह बरखक प्रतीक्षा गीतमे व्यक्त करैत अछि। एहि गीतक भीतर निजी समयक दीर्घता अछि; एकतर्फा अनुरागक स्मृति सामूहिक उत्सवमे उच्चरित होइत अछि। गीतक सार्वजनिकता प्रेमक निजी अनुभूतिकेँ लोकगाथाक स्वर दैत अछि। मुदा एहि रूपान्तरणसँ ओ प्रतीक्षा स्वयंसिद्ध अधिकार नहि बनि जाइत।

चूहड़मल अपन पद हेरायलाक अपमान सँ षड्यन्त्र रचैत अछि। रानीक नौ लाखक हार चोरि सलहेसक ओछाइनमे नुकबैत अछि, फेर स्वयं तलाशी माँगैत अछि। जखन हार भेटैत अछि तँ सलहेस आरोपित होइत छथि। एहि घटनामे सबसँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न प्रमाणक स्वरूप अछि। वस्तु बरामद भेल, मुदा ओकर वास्तविक रखनिहार के, ई स्वतन्त्र जाँच आवश्यक छल। प्रत्यक्ष वस्तुगत निशानक अर्थ आरोप लगेनिहारक कथनपर निर्भर भऽ गेल अछि। लेखक निर्दोष व्यक्ति केँ फँसेबाक व्यवस्था देखबैत छथि, जाहिमे अभिलेखित ‘प्रमाण’ स्वयं छलक फल अछि।

दबना एहि अन्यायसँ आहत भऽ काली मन्दिरमे तंत्र-साधना करैत अछि। एहि ठाम कथा भीतर नायिकाक क्रियाशीलता प्रबल होइत अछि, पर ओकर साधना न्यायिक जाँचक वैकल्पिक विधि रूपमे देखब आधुनिक नैतिक दृष्टिसँ खतरनाक होयत। जादुई विधान लोकफैन्टेसीक हिस्सा थिक, मानवीय यातनाक औचित्य नहि। कथक घटनाकेँ न्याय-पुनर्प्राप्तिक तैयारी रूपमे रखैत छथि, मुदा ओकर साधन आगामी अध्यायमे असुविधाजनक प्रश्न उत्पन्न करैत अछि।

अध्याय ५ : सत्यक उद्घाटन

यातनासँ भेटल स्वीकारोक्ति आ न्यायिक विरोधाभास

पाँचम अध्याय दबनाक तांत्रिक शक्तिसँ चूहड़मलक पीड़ित होएब आ अन्ततः चोरीक आरोप स्वीकार करबाक दृश्य प्रस्तुत करैत अछि। मूल कथा एहि स्वीकारोक्तिक बाद सलहेसक मुक्ति आ चूहड़मलक कारावास देखबैत अछि। कथावाचक एकरा न्यायक विजय कहैत छथि। मुदा आलोचक लेल अत्यन्त जरूरी अछि जे कथा भीतरक घटनाक सत्य आ आधुनिक प्रमाण-पद्धतिक विश्वसनीयता अलग राखल जाए।

यातना द्वारा प्राप्त कथन स्वतन्त्र भरोसामंद स्वीकारोक्ति नहि। तीव्र पीड़ाक स्थितिमे व्यक्ति सत्य-असत्य किछुओ कहि सकैत अछि। मूल कथा चूहड़मलकेँ वास्तविक षड्यन्त्रकारी पहिनेसँ प्रस्तुत करैत अछि, तैं कथा-विश्वक पाठक ओकर दोष जानैत अछि; मुदा ई ज्ञान तांत्रिक उत्पीड़नकेँ वैधानिक अन्वेषण नहि बनबैत। एहि नैतिक तनावकेँ अनदेखा करब गाथाक न्याय-कल्पनाक सर्वाधिक विवादास्पद पक्ष नुकाएब होयत।

सलहेस निर्दोष सिद्ध होइत छथि आ पदोन्नति भेटैत अछि। दबनाक अनन्य हस्तक्षेप ओकर साहसक कथा-विधान बनैत अछि, मुदा एहि कथामे स्त्रीशक्तिक अर्थ बलप्रयोग सँ सत्य निकालबाक रूपक रूपमे सेहो बनि जाइत अछि। ई एकर सम्भावना आ सीमा दूनू अछि। नारीक सक्रियता दर्शाओल गेल, मुदा न्याय तकर कठोर जादूक माध्यमसँ प्राप्त भेल। एहि बिन्दुपर कानून, नैतिकता आ लोककल्पनाक भेद स्पष्ट करब एकटा परिपक्व साहित्यिक समीक्षाक दायित्व अछि।

अध्याय ६ : विवाह आ मिलन

अनुरागक पहचान आ कथान्तक सन्तोष

छठम अध्यायमे सलहेस दबनाक प्रतीक्षा आ सहयोगक महत्त्व स्वीकारैत छथि। बारह बरख धरि एकतर्फा प्रेमक रूपमे रहल भावना अन्ततः विवाहमे परिणत होइत अछि। मोरंगक जनता हर्ष प्रकट करैत अछि; पदक षड्यन्त्र, अन्यायपूर्ण आरोप आ निर्दोषक मुक्ति पाछाँ पारिवारिक सुखक रूपमे समापन उपस्थित अछि।

एहि घटनाक साहित्यिक मूल्याङ्कन केवल ‘प्रेमक विजय’ नहि। दबना पात्र पहिने सँ राजनीतिक आ तांत्रिक शक्ति रखैत अछि; ओ सलहेसक जीवनमे निर्णायक भूमिका निभबैत अछि। मुदा विवाहक नैतिक आधार प्रेमक दाब अथवा उपकारक ऋण नहि, दूनू व्यक्तिक स्वीकृति होयब चाही। मूल कथा अन्तमे सलहेसक भाव बदलबाक सूचना दैत अछि, ओकर अन्तरंग मानसिक परिवर्तनक दीर्घ कथा नहि। तैं समीक्षामे प्रेमक सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया गढ़ब नहि उचित।

शुभान्त लोकगाथाक श्रोता लेल आश्वासन अछि। सलहेस लोकदत्त सम्मान रखैत छथि, दबना मान्य सम्बन्ध पबैत अछि। मुदा वैद्यक मृत्यु, चूहड़मलक यातना आ पद-परिवर्तनक कठोर नैतिक प्रश्न विवाहक दृश्यसँ स्वतः निरस्त नहि होइत। एहि बाँचल प्रश्नसभक कारण गाथाक सुखान्त एक नैतिक बहसक संग उपस्थित अछि।

अध्याय ७ : मोनक राजाक विरासत

वंशगत गद्दी नहि, जनस्मृति मे स्थायी पद

अन्तिम अध्याय सलहेसक नामकेँ लोकगीत आ सामुदायिक स्मृतिमे स्थापित करैत अछि। कथक दुसाध समाजमे सलहेसक विशेष आदर आ व्यापक मोरंग–मिथिला क्षेत्रमे गाथाक स्मरणक उल्लेख करैत छथि। ‘राजा’क पद बाहरी दरबारसँ आरम्भ नहि भेल छल; अन्तमे वएह लोकसमुदायक सम्बोधन स्थायित्व पबैत अछि। पहिल अध्यायक लोकदत्त सम्मानक विषय एहि ठाम वृत्ताकार पूर्णता प्राप्त करैत अछि।

दबनाक तांत्रिक विद्या आ प्रेम सेहो लोकस्मृतिमे सम्मिलित अछि। जँ गाथाक केन्द्र केवल सलहेसक नाम मानल जाए तँ दबनाक राजनीतिक क्रियाशीलता दबि जाएत। मुदा ओकरा परिपूर्ण मुक्तिदात्री कहब सेहो कठिन, कारण तकर सत्य-प्राप्तिक साधन उत्पीड़नपूर्ण छल। लोकस्मृति कोना व्यक्तिक भूमिका चुनैत, महिमामंडित करैत आ असुविधाजनक अंश दबा सकैत अछि—एहि प्रश्नक अवसर अन्तिम अध्याय देबैत अछि।

लोकगीत जीबैत परम्पराक परिचायक रूपमे मूल पाठमे उल्लिखित अछि। ई पुस्तकक आन्तरिक दावा अछि; अलग नृजातीय, ऐतिहासिक वा संगीत-आधारित अनुसन्धाने बिना गीतक विशेष वर्तमान प्रचलनक मात्रा घोषित करब नहि। तथापि लोकसम्मानक सृजनक साहित्यिक तर्क स्पष्ट अछि : राज्यादेश जे उपाधि रोकि नहि सकल, सामूहिक कथन ओकरा समयक भीतर टिकौने रखैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

न्याय, सत्ता आ जनोपाधि

‘राजा सलहेस’क मुख्य प्रश्न राजपदक स्रोत अछि। तालुकदार औपचारिक पदक रक्षक, सलहेस लोककल्याणक कारण सम्मानित व्यक्ति। ‘राजा’ नाम जनताक देल आ राज्याधिकारीक अस्वीकारक बीच कथा प्रकट करैत अछि जे नैतिक वैधता आ संस्थागत अधिकार समान वस्तु नहि। एहि द्वन्द्वक प्रखरता सात छोट अध्यायमे कायम रहैत अछि।

दबनाक राजनीतिक कर्तृत्व आ लैंगिक दृष्टि

दबना आरम्भमे प्रेममे एकाकी छथि, मुदा निष्क्रिय प्रतीक्षारत पात्र नहि। ओ राजकीय पदोन्नतिक मध्यस्थता करैत, अन्याय-विरोध लेल जोखिम उठबैत आ तंत्र-साधना द्वारा घटनाक परिणाम बदलैत अछि। स्त्रीक सक्रियता कृतिक विशेषता अछि। तथापि एहि शक्तिक अंतिम प्रयोजन विवाहमे पूरा होइत देखाएब पारम्परिक प्रेमगाथाक सीमित क्षितिज सेहो बनैत अछि। नायिकाक राजनीतिक स्वातन्त्र्य आ निजी प्रेम केँ अलग प्रश्नक रूपमे देखल जाए।

लोकफैन्टेसी आ प्रमाण

रानीक हारक सलहेसक ओछाइनमे भेटब भ्रामक प्रमाणक उत्कृष्ट दृश्य अछि। मूल कथा केना सत्य असत्य-जकाँ दिखा सकैत अछि से स्पष्ट करैत अछि। चूहड़मलक

तांत्रिक यातनामे दोष स्वीकरणक दृश्य एहि आलोचनाक उलटा पक्ष अछि : न्यायसंगत परिणामक लेल अपनाओल साधन केतेक न्यायसंगत अछि? एहि नैतिक विरोधक चर्चा बिना पुस्तककेँ निष्कंटक ‘न्यायक विजय’ कहब अपर्याप्त। लोकगाथाक जादुई नियम केँ मानैतहुँ आधुनिक विधिक प्रश्न खोलल जा सकैत अछि।

रस आ रचना-विन्यास

प्रेम आ विरहक भाव दबनाक एकतर्फा प्रतीक्षासँ आरम्भ अछि। तालुकदारक ईर्ष्या आ चूहड़मलक षड्यन्त्र क्रोधक कारक, वैद्यक मृत्यु करुण प्रसङ्ग, तंत्रसाधना अद्भुत प्रभाव, आ अन्तिम विवाह सुखान्त भाव उपस्थित करैत अछि। छोट अध्याय आ नियमित चित्रित पृष्ठक कारण कथा द्रुत रूपेँ आगाँ बढ़ैत अछि। पाठकक संवेदना विस्तार पाबएबाक अपेक्षा परिणामक श्रृंखला अधिक तीव्र अछि। ई बाल-ग्राफिक विधानक गुणो अछि आ सीमाओ।

चित्रक अन्तर्लय

मूल कृतिमे अध्याय १–७क संग १४ चित्र-संकेत छथि। चित्रित पृष्ठक नियमित आवर्तन वाक्यक संक्षिप्तता आ दृश्यक विस्तार केँ जोड़ेबाक ढंग अछि। प्रेमक उदासी, दरबारक अपमान, मोरंग छोड़बाक तैयारी, गीत, हारक बरामदगी, काली-मन्दिरक अनुष्ठान आ विवाह—ई सभ अलग दृश्यरचना लेल स्वाभाविक चरण छथि। बिना प्रत्येक चित्रक प्रत्यक्ष विस्तृत निरीक्षणक रेखा, रंग अथवा पात्रक मुखाकृति विषयक मनगढ़न्त दावा नहि कएल जाएत।

सीमासभ

कथामे वैद्यक आत्महत्याक कारण-परत विकसित नहि; दबनाक अनुरागक अनुत्तरित सामाजिक परिणामो सीमित अछि। चूहड़मलक स्वीकारोक्ति तांत्रिक पीड़ाक कारण भेटैत अछि, जकरा न्यायिक प्रमाणक आदर्श कहब नहि। सलहेसक आन्तरिक प्रेम-परिवर्तन विवाहसँ पहिने संक्षेपमे प्रस्तुत अछि। दबनाक शक्ति मुख्यतः निजी सम्बन्ध बचएबाक प्रयोजनमे विन्यस्त अछि। तथापि लोकदत्त राजपद, स्त्रीक सक्रियता आ झूठ प्रमाणक कथा-योजना एहि लघु गाथाकेँ विचारणीय बनबैत अछि।

निष्कर्ष

‘राजा सलहेस’ मोरंगक लोकनायकक राजपद केँ राजमहलक अधिकारक बदला जनसमुदायक नैतिक स्वीकृतिसँ जोड़ैत अछि। दबनाक प्रेम, विद्या आ कर्तृत्व नायकक जीवनक निर्णायक घटक छथि। कथा न्याय–सत्यक विजय कहैत समाप्त होइत अछि, मुदा एक विकसित आलोचनात्मक पाठ ओकर साधनसभकेँ सेहो परखैत अछि। एहि द्वैतमे पुस्तकक स्थायी प्रश्न निहित अछि—लोकसम्मानक मूल्य केवल परिणाममे अछि, कि परिणाम प्राप्त करबाक नैतिक प्रक्रियामे सेहो?

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। राजा सलहेस : मोरंगक जन-राजा — तंत्र-विद्या आ न्यायक विजय। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क ६; संकलन PDF पृष्ठ ६१८–६४२।

कृति ८ : बगियाक गाछ

उपक्रम : बगियाक गाछ

अनहोनी वनस्पति आ बालकथाक शास्त्रीय संकेत

उपक्रम एक एहन गाछक परिचय करबैत अछि जे ने देखल, ने सुनल—बगियाक गाछ। अनपेक्षित वनस्पतिक रूप कथा आरम्भमे स्वयं अचम्भा रचैत अछि। एकटा बालक अपन चतुरतासँ विपत्ति पार करैत अछि; माएक ममता आ डाइनक लोभ ओकर आस-पास रखल गेल अछि। कथावाचक आरम्भेसँ परिणामक संकेत दैत छथि जे ठगिनक छल अन्तमे ओकर अपना घरपर घुरत। एहि अग्रसूचनासँ कथा रहस्यक बदला घटनाक कौशलपर केन्द्रित होइत अछि।

लोककथाक संरचनामे साधारण खाद्यवस्तुक जादुई विस्तार महत्त्वपूर्ण थिक। बगिया घरक परिचित स्वाद अछि; ओकर गाछ अद्भुत लोक बनबैत अछि। परिचित स्वाद आ अनहोनी फलनक संयोग बालकक कल्पनाकेँ अपन सामाजिक जगतसँ दूर नहि लऽ जाइत। मुदा एहन गाछक चमत्कार वास्तविक वनस्पति-विज्ञानक दावा नहि, लोककथाक स्वीकृत नियम अछि।

अध्याय १ : मसोमातक बेटा

मातृस्नेह, अभाव आ स्वतः फूटल चमत्कार

मसोमातक एके टा बेटा अछि। परिवार निर्धन अछि, मुदा माए-बेटाक सम्बन्धक निकटता स्पष्ट अछि। माए बालककेँ बगिया आनैत छथि; स्वादक मोहमे बालक एकटा बगिया बाड़ीमे रोपि दैत अछि। आश्चर्यक बात जे ओतय गाछ जनमैत अछि आ बगिया फड़ैत अछि। माए-बेटा पानि दऽ, माटि साफ कऽ, स्नेहसँ ओहि गाछक सेवा करैत छथि। एहि क्रममे चमत्कारक पाछाँ दैनिक परिश्रमक रूपक सेहो उपस्थित अछि।

मसोमातक स्थिति केवल गरीबीक सन्दर्भ नहि; एकटा असुरक्षित पारिवारिक संरचना अछि, जतय बालकक अनुपस्थिति माएक लेल विशेष भयक कारण बनि सकैत अछि। कथा माएक चेतावनी केँ आगाँ बालकक स्मृतिमे लौटबैत अछि। एहि कारण घरक स्नेह कथाक सुरक्षा-ज्ञानक स्रोत बनैत अछि।

गाछपर चढ़ि बगिया तोड़ि खएब बालकक स्वच्छन्द आनन्द अछि। ई सुखद स्थिर दृश्य किछु पृष्ठक बाद शत्रुक दृष्टि द्वारा भंग होयत। एके गाछ बालकक प्रिय आश्रय आ डाइनक शिकार-स्थल बनबैत अछि। एहि दुधारी स्थानिकतामे बाल-कथाक संकट-रचना स्फुट होइत अछि।

मूलमे ‘अध्याय ३ : डाइनक नजरि’

दूरसँ देखैत शिकारी आ याचनाक छल

एहि शीर्षकक पहिने मूल पाठमे ‘अध्याय २’ नहि भेटैत; ‘डाइनक नजरि’ स्वयं ‘अध्याय ३’ रूपमे अछि। कथामे एक डाइन बुढ़िया बालक कैँ गाछपर देखैत अछि आ ओकरा मारि खएबाक इच्छा करैत अछि। डाइनक भूख राक्षसी लोकप्रतीक अछि; एकरा सामान्य वृद्ध स्त्रीक विशेषता बनाकऽ नहि पढ़ब। पात्रक वयोवृद्ध भेष हिंसक छलक आवरण अछि।

डाइन मीठ स्वरमे बगिया माँगैत अछि। भूखक याचना सामान्यतः सहानुभूति जागबैत अछि, आ कथक एही सामाजिक शिष्टाचारकैँ जालक साधन बनबैत छथि। बालकक उदारता आ डाइनक कुटिलता एक-दोसराक सोझाँ उपस्थित अछि। बाल-सुरक्षाक कथा एतय आवश्यक भेद खोलैत अछि : सब मिठास भरोसाक प्रमाण नहि, मुदा सभ अजनबीक प्रति स्थायी संशय सेहो एकमात्र शिक्षा नहि। व्यवहार आ परिस्थिति पर विचारक महत्त्व अछि।

डाइनक लक्ष्य बगिया नहि, बालकक देह अछि। याचनाक भाषिक अर्थ आ वास्तविक उद्देश्यक फरक पाठक पहिनेसँ जानैत अछि, जखन कि बालक प्रक्रिया भीतर सीखैत अछि। एहि असमान ज्ञानसँ तनाव आ व्यंग्य जन्मैत अछि।

मूलमे दोसर ‘अध्याय ३ : तीन बहन्ना’

हथाइन, मथाइन, खोइँछाइन : लोक-शब्दक ध्वन्यात्मक छल

डाइन बालकसँ बगिया हाथ, माथ आ खोइँछमे लेबाक प्रत्येक प्रस्ताव अस्वीकार करैत अछि। ओ हर बेर एक नब शब्द-बहन्ना गढ़ैत अछि—हथाइन, मथाइन, खोइँछाइन।

तुकान्त भाषा लोकहास्यक उपकरण बनैत अछि। शब्दक समान ध्वनि छल कैं लय दैत अछि, आ अन्तिम लक्ष्य बालक कैं झुका कऽ बोरा भीतर करब अछि।

बालक एक क्षण तंत्र बुझि दैत अछि आ कहैत अछि जे ओकर माए ठगसँ सावधान रहबाक शिक्षा देने छथि। ई बिन्दु बालकक स्वतंत्र विवेकक सफल क्षण अछि। तथापि डाइनक लगातार मीठ वचन आगाँ एहि सावधानी कैं कमजोर करैत अछि। पाठक प्रारम्भमे बालक कैं ‘दस बुद्धियारक एक बुद्धियार’ मानि पूर्ण निर्भय नहि भऽ सकैत—चतुर व्यक्ति सेहो विश्वासक छलमे फँसि सकैत अछि।

तुकबन्दीक साहित्यिक लाभ एहि ठाम केवल मनोरंजन नहि। हर बहन्ना दूरी कम करैत अछि; ध्वनि-लय कथाक संकट कैं धीरे-धीरे बढ़बैत अछि। परम्परागत वाचिक खिस्सामे एहन दोहराव सुननिहार बच्चाक ध्यान बाँन्हि रखैत अछि। एहि उपक्रममे वाणी वास्तविक शक्ति बनैत अछि।

अध्याय ४ : बोरामे बन्द

क्षणिक असावधानी आ पुनः सक्रिय बुद्धि

बालक डाइनक मीठ वचनपर फेर भरोसा करैत अछि; झुकिते डाइन ओकरा बोरामे कसी बन्द करैत अछि। पहिनुक सतर्कताक बावजूद छोट असावधानी बड़ संकट बनैत अछि। एहि दृश्यमें कथक बालककैं सर्वज्ञ नायक नहि बनबैत; समझ आ व्यवहारक बीच फाँक देखबैत छथि। बच्चाक चेतावनी जानब आ वास्तविक परिस्थितिमे ओहि चेतावनीक पालन करब दू अलग क्षमता छथि।

डाइन बोरा लऽ घर दिस बढ़ैत अछि, मुदा बाटमे थाकि गाछक छाहरिमे बैसि सुतैत अछि। शत्रुक विजयोन्माद आ शारीरिक सीमा एकर असावधानी बनैत अछि। बालक कोनहुना बोरा सँ बाहर निकलैत अछि। शिकारक रूपमे प्रस्तुत बच्चा पुनः कर्तृत्व प्राप्त करैत अछि। ई पहला पलायन एकटा पूर्ण समाधान नहि; डाइन भविष्यमे भेष बदलि घुरि आएत। एहि कारण कथा-निर्माण पहिल चक्रक पश्चात् दोसर परीक्षा लेल जगह छोड़ैत अछि।

अध्यायक मूल महत्त्व बालक कैं अवसर पहिचानब सिखेबामे अछि। उद्धार लेल देवीक चमत्कार, बाहरी सैनिक अथवा कोनो बड़का लोक नहि; बालकक अपन प्रयत्न पर्याप्त होइत अछि। मुदा एतय छल द्वारा जीवन बचाएब आ अगिला चरणमे बदला लऽ कऽ निर्दोषक हानि करब बीचक नैतिक सीमा हरदम अलग रखबाक अछि।

अध्याय ५ : माटि-पाथरक चालि

नकल-भारक बुद्धि आ परिस्थितिजन्य हास्य

बालक बोरा भितर भीजल माटि, पाथर आ काँट-कूस भरैत अछि आ ओकरा पहिनेक जकाँ बान्हि भागि जाइत अछि। बोरा उठबैत डाइनकैं भार पूर्ववत् लगैत अछि। बाहरी रूप आ भीतरक सत्यक अन्तर एहि चतुराइक केन्द्र अछि। नायक प्रत्यक्ष भिड़न्तक बदला भ्रम उत्पन्न करैत अछि। एहिसँ हिंसा बिना बचबाक कौशलक उदाहरण बनैत अछि।

डाइनक माथपर बोरा सँ पानि खसैत अछि, ओ बुझैत अछि जे बालक लघुशंका करि रहल अछि। काँट चुभिते ओकरा बालकक दाँतक काटब बुझाइत अछि। एहि प्रतिक्रियासभमे परिस्थिति-कॉमेडीक हास्य अछि : पाठक वास्तविक सामग्री जनैत अछि, डाइन गलत अनुमान करैत अछि। ज्ञानक असमानता हास्यक विश्वसनीय स्रोत बनबैत अछि।

एहि प्रसङ्गमे भौतिक वस्तुक लोकबुद्धि लाक्षणिक महत्त्व पबैत अछि। भीजल माटि आ काँट साधारण ग्रामीण वस्तु छथि, मुदा उपयुक्त उपयोग कएलापर जीवनरक्षक बौद्धिक साधन बनैत छथि। कथा एहि अर्थमे बल सँ बेसी संदर्भ-ज्ञानक प्रशंसा करैत अछि।

अध्याय ६ : घर धरि धोखा

पकड़ा गेल छल आ अधूरा सीख

डाइनक घरमे ओकर बेटी बोरा खोलैत अछि, मुदा बालकक बदला माटि-पाथर निकलैत अछि। घरक उत्सव क्रोध आ लज्जामे बदलि जाइत अछि। डाइनक योजना विफल भेल, मुदा ओ अपन हिंसक इच्छाकेँ पुनः जाँचैत नहि; भेष बदलि पहिल स्थानपर घुरि जाइत अछि। ई पुनरावृत्ति लोककथाक दुष्टपात्रक जिद्द देखबैत अछि।

बालकक पहिल विजय प्रभावशाली अछि, मुदा कथाक भीतर स्थायी सुरक्षा स्थापित नहि। डाइन माएक चेतावनी, पहिल धोखा आ बालकक क्षमतासँ सीखि, अगिला बेर बाटमे नहि रुकबाक निश्चय करैत अछि। एहि कारण प्रतिपक्ष सेहो ‘सीख’ रहल अछि,

मुदा सीखक प्रयोजन हिंसा सफल बनब अछि। बुद्धि अपने नैतिकता नहि; ओकर उद्देश्यक मूल्याङ्कन आवश्यक अछि।

डाइनक बेटी एतय प्रथम बेर स्पष्ट पात्र बनैत अछि। मूल पाठमे ओ माएक योजनाक लाभार्थी होबाक अपेक्षा घरक सहयोगी छथि; बालककेँ ठगबाक प्रारम्भिक षड्यन्त्रमे हुनकर प्रत्यक्ष भूमिका नहि देखाओल गेल। आगामी घटनामे बालक ओहि बेटी केँ लक्ष्य बनबैत अछि। एहि तथ्यक स्मरण आलोचनात्मक निर्णय लेल आवश्यक अछि।

अध्याय ७ : दोसर प्रयासक असफलता

भेषक पुनरागमन आ झूठ शपथक अर्थ

भेष बदलि आएल डाइनकेँ बालक पहिने नहि चिन्हैत। मुदा बगिया बोरा भीतर देबाक प्रस्ताव सुनिते ओकर स्मृतिमे पुरान अनुभव जागैत अछि। बालक संदेह करैत अछि आ ठगिन कहि संबोधित करैत अछि। डाइन शपथ लऽ इनकार करैत अछि; बालक विश्वास कऽ दोसर बेर झुकि जाइत अछि। एतय पहिल अनुभव सँ सीखल चेतावनी आ मीठ विश्वासघातक शक्ति पुनः टकराइत अछि।

कथाकार एही पुनरावृत्तिसँ एक सरल मनोवैज्ञानिक बात देखबैत छथि : संदेह जन्मलाक बादो दोसराक आत्मविश्वासी अस्वीकार ओकरा कमजोर करि सकैत अछि। बच्चाक सतर्कता छिन्नभिन्न होएब मानवीय प्रक्रिया अछि, केवल बुद्धिहीनता नहि।

डाइन एहि बेर रस्तामे विश्राम नहि करैत। बेटी लग बोरा राखि नहाबय चलि जाइत अछि। पहिल चक्रमे शिकारक बचबाक अवसर डाइनक निन्न छल; दोसर चक्रमे ओ अवसर उपलब्ध नहि। एहि परिवर्तनसँ कथा नया संकट बनबैत अछि, जे सीधा घरक भीतरी कक्षमे घटत। एतय पाठक लेल नायकक उपायक नैतिक सीमा आ कठिन होएत।

अध्याय ८ : झोंटाबला रहस्य

आत्मरक्षाक नामपर असम्बद्ध व्यक्तिपर हिंसा

डाइनक बेटी बोरा खोलैत अछि आ बालक कैँ पबैत अछि। बेटी ओकर लमहर झोंटा देखि अपन बालक छोट केश विषयमे प्रश्न करैत अछि। बालक ओकरा झूठ कहैत अछि जे माएक समाठसँ कूटलापर केश बढ़ल। बेटी ओहि बातपर विश्वास कऽ अपन माथ ऊखड़िमे राखैत अछि, आ बालक हिंसात्मक अवसर लैत अछि। मूल कथामे एहि घातक घटनाक विस्तृत वर्णन सँ परहेज अछि, मुदा बेटीपर गम्भीर आघात स्पष्ट अछि।

एहि अध्यायक नैतिक मूल्यांकन महत्त्वपूर्ण अछि। बालक अपहरणक वास्तविक शिकार अछि आ अपन प्राण बचएबाक पूरा अधिकार रखैत अछि। मुदा डाइनक बेटी आरम्भिक षड्यन्त्रक नियन्त्रक नहि; हुनका छलि आघात पहुँचाएब निर्बाध रूपसँ ‘चतुराइक निष्कलंक विजय’ कहल नहि जा सकैत। एकर भीतर आत्मरक्षा, प्रतिहिंसा, अवसरवाद आ निर्दोषताक सीमा पर प्रश्न उठैत अछि।

चतुर बालकक उपाय पहिल बेर माटि-पाथर भरबाक निःशारीरिक छल सँ भिन्न भऽ जाइत अछि। पहिलमे बालक शत्रुक भ्रमरूपी खाली बोरा छोड़लक; दोसरमे ओ एकटा जीवित व्यक्ति कैं घातक हानि पहुँचेबैत अछि। लेखकीय पाठ एहि संकटकैं तुरन्त न्यायोचित विजयरूपेँ प्रस्तुत करबाक प्रवृत्ति देखबैत अछि, मुदा परिपक्व बालसाहित्यिक आलोचना ओहि विरोधाभास कैं सामने रखैत अछि।

अध्याय ९ : बिलाड़िक चेतौनी

पशु-स्वरक उद्घाटन आ मनुष्यक अज्ञान

डाइन पोखरिसँ नहा कऽ घर घुरैत अछि आ बेटी होएबाक भ्रममे परसल भोजन स्वीकार करैत अछि। लग बैसल बिलाड़ी ‘अपन धीया अपने खाऊ’ सन चेतौनी दैत अछि। पशुक वाणी लोककथाक अद्भुत रूप अछि, जतय जीव साधारण मनुष्यसँ पहिने अज्ञात सत्यक संकेत दैत अछि। एहि पूर्वज्ञानक कारण कथा व्यंग्य, भय आ विकर्षणक मिश्र प्रभाव उत्पन्न करैत अछि।

डाइन बिलाड़िक कथनकैं साधारण भूखक अभिव्यक्ति बुझैत अछि; भोजन देला पर सेहो बिलाड़ी नहि खाइत अछि। बाहरी आवाजक अर्थ बुझबाक असफलता कथाक ज्ञान-विषयक पुनरावृत्ति अछि। पहिले डाइन माटि-पाथरकैं जीवित बालक मानैत छल, एखन बिलाड़िक सत्य-वचनकैं भोजनक आग्रह। दुनू ठाम ओकर पूर्वनिर्धारित इच्छा—शिकार खएब, भोजन करब—वास्तविकताक पहचान रोकैत अछि।

कथाक भयावह संकेतक आलोचनामे सीमांकन आवश्यक अछि। डाइनक बेटीपर हिंसा आ भोजनक भयानक परिणतिकेँ बालपाठक लेल विनोदी पुरस्कार बनाओल जाए तऽ मूल अनुभूतिक नैतिक गम्भीरता लुप्त होयत। लोककथा डर आ हास्य एकसंग रचैत अछि, मुदा समीक्षा हिंसाकेँ स्वयंसिद्ध नीतिन्याय नहि मानैत।

अध्याय १० : डाइनक अपने कर्मफल

मूल आश्रयमे वापसी आ प्रतिशोधक अनिर्णीत नैतिकता

अन्तिम अध्यायमे डाइन अपन बेटीपर घटित विपत्तिक संकेत पबैत अछि आ बालकक छल केँ पहिचानैत अछि। कथावाचक विपत्तिक पूरा विस्तार नहि दैत, मुदा ई कहैत अछि जे डाइनक अपन लोभ आ षड्यन्त्र ओकर घरक नाशक कारण बनल। शीर्षक ‘कर्मफल’ कथाक नैतिक अभिप्राय स्पष्ट करैत अछि। तथापि आलोचक प्रश्न उठबैत अछि जे डाइनक बेटीपर आघात केवले माएक कर्मफल मानब नैतिक रूपसँ पर्याप्त अछि कि नहि।

बालक फेर अपन बगियाक गाछ पर चढ़ि बगिया तोड़ैत अछि। कथा जइ सान सुखसँ आरम्भ भेल छल, ओतहि समाप्त होइत अछि। एहि वृत्ताकार रूपमे घर, स्वाद, गाछ आ बालकक निर्भयता वापस भेटैत अछि। बालक सजीव बचि गेल, ई कथाक सन्तोषक केन्द्र अछि। मुदा ओकरा हिंसक प्रसङ्गक बाद सहजतासँ पूर्ववत् खेलमे लौटि जाएब, आ बेटीपर घटित अन्यायक सामाजिक परिणामक अभाव कथा-निर्माणक गम्भीर सीमा अछि।

लोककथा जालक उलटि शत्रुपर पड़बाक प्रतिमासँ व्यवस्थित अछि। पहिल चक्रमे बोरा डाइन कैँ छलैत अछि, दोसर चक्रमे ओही घरक भोलेपन कैँ बालक शत्रुक विरुद्ध उपयोग करैत अछि। एहि समरूपताक साहित्यिक कौशल अछि, मुदा साधनक नैतिक अन्तरक आलोचना बचल रहब जरूरी अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

रूप-विन्यास : दू छलचक्र आ वृत्ताकार अन्त

‘बगियाक गाछ’ एके संकटक दू चक्र रचैत अछि। पहिल चक्रमे डाइन बगिया माँगब, झुकायब, बोरा बन्द करब आ निद्राक असावधानीक कारण हारब देखबैत अछि। दोसर चक्रमे ओ भेष बदलि घुरैत अछि, झूठ शपथसँ बालकक सतर्कता हरबैत अछि आ विश्राम नहि कऽ घर पहुँचैत अछि। कथाक शक्ति आवृत्तिमे अछि : एके प्रक्रिया दोसर बेर घटीत होएबा पर थोड़ परिवर्तन पूरा परिणाम बदलि दैत अछि। अन्तमे गाछपर घुरल बालक प्रारम्भक स्थिति प्राप्त करैत अछि, मुदा पाठकक नैतिक अनुभव पहिनेसँ अलग भऽ चुकल अछि।

बालबुद्धि आ सामाजिक विश्वास

बालक एक पल माएक चेतावनी याद करैत अछि, दोसर पल डाइनक मीठ आश्वासनपर भरोसा करैत अछि। एहि द्वन्द्वमे कथा बालकक चतुरता कैँ जादुई सर्वज्ञता नहि बनबैत। बुद्धि अनुभवसँ सीखैत अछि, मुदा धोखाक भाषा स्मृति सँ बेसी प्रबल भऽ सकैत अछि। माटि-पाथरक पहिल उपाय ग्रामीण पदार्थक सन्दर्भ-ज्ञानक उदाहरण अछि—बल नहि,

तात्कालिक बुद्धि। मुदा दोसर पलायनमे वएह बुद्धि हिंसाक रूप लैत अछि। एहि कारण बुद्धि कैँ नैतिक बुद्धि सँ अलग पहिचानब समीक्षाक केन्द्र अछि।

हास्य, वीभत्स आ भयक परस्पर सम्बन्ध

डाइनक हथाइन–मथाइन–खोइँछाइनक बहन्ना वाचिक हास्य उत्पन्न करैत अछि। भीजल बोरा उठौने डाइन कैँ बालकक लघुशंका बुझब, काँट चुभिते काटब बुझब, ई परिस्थिति-व्यंग्य अछि। मुदा डाइनक बेटीपर प्रहार आ बिलाड़िक चेतौनी कथा कैँ वीभत्सताक क्षेत्रमे पहुँचेबैत अछि। एहि संक्रमणक कारण ‘हास्य-रोमांच’ उपशीर्षक अधूरा विधागत परिचय ठहरैत अछि; ई भयावह लोककथा सेहो अछि। बालकथाक रूपमे पाठकक उमर आ संवेदनशीलता अनुसार एहि भेदक मान्यता जरूरी अछि।

डाइनक लोभ आ हिंसाक उत्तरदायित्व

मूल प्रतिपक्ष डाइन अछि, जे बालककेँ मारि भोजन बनएबाक उद्देश्य राखैत अछि। ओकर हिंसक इच्छा बिना बालकक विपत्ति नहि जन्मित। तथापि प्रतिपक्षीक दोष मात्रसँ ओकर बेटीपर कएल हिंसा उचित नहि होइत। बेटी माएक हिंसक योजना जानैत हो वा नहो, मूल घटना हुनका अपराधक नियन्त्रक रूपमे पहिने स्थापित नहि करैत। बच्चा अपन रक्षा करबाक कोशिशमे रहैत, मुदा निर्दोष अथवा कम दोषी तेसर व्यक्तिपर घातक छलक प्रश्न उपेक्षित नहि भऽ सकैत। एहि आलोचनासँ मूल गाथाक सामाजिक हिंसाबोध गहींर बनैत अछि।

कर्मफलक कथावाचकीय व्याख्या

अन्तिम अध्याय ‘अपनेकर्मफल’क न्याय-विधान दैत अछि। डाइनक पाप ओकरे परिवारपर लौटि आएब पारम्परिक लोककथाक कठोर न्याय अछि। मुदा आधुनिक नैतिक विवेचन माएक कर्मक दण्ड बेटीपर पड़बाक वैधता पर शंका उठबैत अछि। कहियो कथा न्यायसंगत परिणामक विश्वास सँ हास्यपूर्ण सन्तोष देबैत अछि, मुदा परिणामक भीतरक पात्रवार जिम्मेदारी गम्भीर मूल्यांकन माँगैत अछि। लेखकक कथा-नैतिकता आ आलोचकक प्रश्न एहि ठाम अलग देखल जा सकैत छथि।

चित्रक्रमक पाठ

मूल कृतिमे २० चित्र-संकेतक शृंखला अछि। पहिल दू चित्र गाछक चमत्कार, तकर बाद डाइनक दृष्टि आ बहन्ना, बोरा, पाथर, बेटी आ बिलाड़िक दृश्यक्रम संग जुड़ल अछि। चित्रित पृष्ठक बेरा-बेरी आ अल्प पाठ बालपाठकक ध्यान घटना-प्रति-घटना लऽ जाइत अछि। एतय चित्रक सौन्दर्यक ठोस रंग-विवरणक दावा बिना स्वतंत्र निरीक्षणक उचित नहि, मुदा दृष्टिगत क्रमक गतिकथात्मक महत्त्व मूल क्रमसँ स्पष्ट अछि।

संस्कृतिक स्थानीयता

बगिया, मसोमात, बाड़ी, भीजल माटि, पाथर, काँट-कूस, खोइँछ आ पोखरि—ई शब्दसमूह मैथिली लोकजीवनक वस्तुगत शब्दकोश रचैत अछि। यैह घरेलू जीवन एक असम्भव फलदार गाछ आ मांसाहारी डाइनक कल्पनाक आधार बनैत अछि। लोककथा एहि अर्थमे परिचित वस्तुक पुनःसंयोजन अछि, अपरिचित जादूक आयात मात्र नहि।

सम्पादकीय पाठगत विशिष्टता

मूल PDFक दस अध्याय-शीर्षकमध्ये दोस्रो क्रमक ‘डाइनक नजरि’ पृष्ठ ६४९ पर ‘अध्याय ३’ कहि अंकित अछि, तकर तुरन्त पाछाँ ‘तीन बहन्ना’ सेहो ‘अध्याय ३’ कहि पृष्ठ ६५२ पर अंकित अछि। एकटा क्रमाङ्कक दोहराव आ ‘२’क अनुपस्थिति केवल समीक्षकक त्रुटि नहि; मूल संकलनक पाठ-वैशिष्ट्य अछि। अन्तिम पुस्तकक विस्तृत अनुक्रमा बनबैत काल मूल स्रोतक संग सम्पादकीय निर्णय स्पष्ट कऽ लेब आवश्यक, मुदा मूल शीर्षक-सूचनाक मौन परिवर्तन नहि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘बगियाक गाछ’क आरम्भिक अध्याय बुद्धिमत्ता, मातृचेतावनी, भाषा-आधारित छल आ परिस्थितिजन्य हास्यक प्रभावकारी बाललोककथा बनबैत छथि। पहिल पलायनमे बालक बिना हिंसाक चतुर समाधान खोजैत अछि। दोसर पलायनमे कथा अत्यन्त हिंसक होइत अछि, आ विजयक नैतिकता जटिल बनैत अछि। एहि द्वैतक कारण रचना कैं केवल मनोरंजक शिक्षा-पाठ कहब अपर्याप्त। एकटा जीवित बच्चाक रक्षा आ दोसर व्यक्तिक हानि बीचक प्रश्न साहित्यिक अध्ययनक उचित केन्द्र अछि। एहि तनावक संग कृति लोककथा, भय, हास्य आ नैतिकता सम्बन्धी आलोचनामे विशेष ध्यानयोग्य अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। बगियाक गाछ : चतुर बालक आ ठगिन डाइनक हास्य-रोमांचक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क ७; PDF पृष्ठ ६४३–६७६।

कृति ९ : बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल

उपक्रम : कमला-बलानक तट

प्रवाहक संगम आ प्रेम–क्रोधक उलझल कथा

उपक्रम कमला आ बलान धाराक संगममे कथा बसबैत अछि। नदीक दुइ प्रवाह सन प्रेम आ प्रतिशोध, नृत्य आ जादू, साधना आ बलिदान परस्पर गुँथल छथि। बहुरा गोढ़िन केवटिक बेटी, नर्तकी आ कमरू–कामरूपक तंत्र-विद्याक ज्ञाता छलीह। नटुआ दयाल राजकुमार छथि, जे नृत्य सीखबाक क्रममे हुनका निकट अबैत छथि। एहि आरम्भमे कला सामाजिक भिन्नताक बीच संपर्क बनबैत अछि, मुदा निकटताक भीतर निजी आकांक्षा, वर्गीय दबाव आ बलक प्रयोग सेहो जुड़ैत अछि।

गाथाक प्रमुख कलात्मक तनाव एहि ठाम पहिनेसँ अछि जे नृत्य मनुष्यक देहक स्वाधीन अभिव्यक्ति अछि, जखन कि जादूक अनेक क्रिया दोसरक देह वा इच्छापर नियन्त्रणक साधन बनैत अछि। एहि विरोधक पाछाँ कमलाक पानि बहैत अछि—कखनो जीवनक प्रवाह, कखनो रोकेल गेल धार। उपक्रम अनुगूँजक आश्वासन दैत अछि, मुदा मूल कथाक अन्त सरल विवाह-सुखान्त नहि; घात, मृत्यु आ पुनर्जीवनक भयानक चरण सेहो अछि।

अध्याय १ : बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दयाल

कलागुरु, राजकुमार आ निजी प्रेमक दिशा

बहुरा गोढ़िन बखरी-बेगूसरायक कमला-बलान क्षेत्रमे रहैत छलीह; नटुआ दयाल मिथिलाक भरौड़क राजकुमार छथि। राजकुमार नृत्य सीखबाक लेल बहुरा लग अबैत छथि, आ ‘नटुआ’ नाम अर्जित करैत छथि। एहि नामक मूल राजवंश नहि, अर्जित कला अछि। जे राजकुमार नृत्यक शिष्य बनैत छथि, ओ समाजक पैघ पदपर रहितो कलागुरुक शिक्षापर निर्भर छथि—ई रचनाक प्रारम्भिक सत्ता-परिवर्तन अछि।

मुदा मूल कथा स्पष्ट करैत अछि जे नटुआक प्रेम बहुरासँ नहि, हुनकर पुत्रीसँ अछि। ई भेद अत्यन्त आवश्यक अछि। कलागुरुपर आदर आ हुनकर बेटीसँ विवाहक इच्छा दू अलग सम्बन्ध छथि; एकरा मिश्रित कएल जाए तँ कथा-सम्बन्ध बिगड़त। नटुआ नृत्यक संग तंत्र-विद्या सेहो सीखैत छथि; गुरु मंगलक अद्भुत कर्म—आकाशमे बिना खूँटीक धोती सुखाएब—साधनाक लोकविश्वासक परिचय अछि।

एहि अध्यायमे लोककथा कला आ जादू केँ एक मार्गमे रखैत अछि। नृत्य सौन्दर्यक सार्वजनिक विधा, तंत्र निजी नियन्त्रणक क्षमता। जखन छात्र दुनू अर्जित करैत अछि, तखन भविष्यक संघर्षक समाधानक साधन बनैत अछि, मुदा असमान शक्ति-सम्बन्धक नैतिक संकटो उत्पन्न होइत अछि।

अध्याय २ : बहुराक शक्ति आ क्रोध

संरक्षणक दावा आ मर्यादाहीन दण्ड

दोसरा अध्यायमे बहुराक असाधारण शक्ति देखाओल जाइत अछि। ओ गाछ हँका सकैत छथि, झगड़ा करनिहारक देह सुग्गा बनाकऽ पिंजरामे राखि सकैत छथि। एहि प्रतिमामे दमनकारी नियन्त्रणक स्पष्ट छाया अछि; मनुष्य कैं पक्षी बनाकऽ बन्द करब केवल जादूक मनोरंजन नहि, स्वाधीनता हरणक रूपक बनैत अछि।

कथामे बहुरा अपन पति कैं मारि जादू सीखने छलीह—ई चरित्रक कठोर हिंसात्मक इतिहासक सूचना अछि। तैं हुनकर शक्ति कैं स्वत: नैतिक गरिमा मानब सम्भव नहि। कमला मैयाक भक्ति आ आक्रोश एकहिमे निवास करैत अछि। लोककथा अक्सर भक्तिकैं आस्था-सिद्धि मानैत अछि, मुदा एहि पात्रक हिंसा भक्ति आ करुणाक अनिवार्य समानता प्रश्नाधीन बनबैत अछि।

नटुआ दयालक विवाह-प्रस्तावपर बहुरा राजकुमारक सामाजिक दबावक कारण प्रत्यक्ष अस्वीकार नहि करि सकैत छथि। बरियातीक दरबज्जापर विवाद उठिते ओ सभकैं बट्टा बनबैत छथि। एहि दृश्यसँ राजकीय पदक दबाव आ तांत्रिक शक्तिक प्रतिरोध दुनूक अत्याचारक संभावना खुलैत अछि। ई कोनो निष्कलंक लोकनायिकाक सादा कथा नहि, बलक दू रूपक टक्कर अछि।

अध्याय ३ : व्यापारीक कुचक्र

ईर्ष्या, छल आ निर्दोषक क्षति

तेसर अध्याय व्यापारी जयसिंहक षड्यन्त्र देखबैत अछि। बहुराक बेटीपर ओकर मोह अछि; नटुआ दयालक विवाह-प्रस्ताव ओकर निजी इच्छाक विरुद्ध अछि। घटनाक अस्थिरता बढ़ैत अछि, आ मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी बहुराक जादूसँ नष्ट होइत अछि। एहि क्षतिमे निर्दोष वा तुलनात्मक रूपसँ कम दोषी व्यक्तिपर संघर्षक बोझ पड़बाक बिम्ब अछि।

‘आहि रे बा’क करुण ध्वनि बारम्बार उभरैत अछि। कथक एहि पुकार कैं पीड़ाक श्रव्य चिह्न बनबैत छथि। गीत आ नृत्यक कथामे अचानक पीड़ाक स्वर काव्यात्मक लय बदलैत अछि। प्रेमक संग द्वेष आ अपराध प्रवेश करैत अछि; एहि कारण शास्त्रीय सुखान्तक अपेक्षा संशयजनक बनैत अछि।

जयसिंहक षड्यन्त्रक विस्तृत यन्त्रणा मूल संक्षिप्त पाठमे पूरा नहिएँ खुलैत; कथा हुनका निजी लाभलिप्साक प्रेरक स्रोत कहैत अछि। नटुआ समाधान लेल गुरु मंगल लग घुरैत छथि; गुरु कामाख्या जाएबाक आदेश दैत छथि। संघर्षक उत्तर एखन राज्यक न्यायिक विमर्श नहि, अधिक शक्तिशाली साधनाक खोज अछि। एहि निर्णयमे लोकफैन्टेसीक शक्ति आ सीमा एक साथ अछि।

अध्याय ४ : कामाख्याक साधना

षट्नृत्य, मंत्र आ शक्ति-संचयक प्रश्न

नटुआ दयाल गुरु मंगलक आदेशपर कामाख्या पहुँचैत छथि। चण्डिका मन्दिरक योगिनीसभसँ षट्नृत्य सीखब आ फेर सरैया ग्रामक भुवन मोहिनी लग साधनाक शेष अंग पूरा करब, एहि क्रममे शिक्षाक कई केन्द्र उपस्थित अछि। कला, तंत्र आ गुरुपरम्परा एकहि अनुशासनक तीन रूप बनैत अछि। नृत्य अब दृश्य प्रदर्शन मात्र नहि, जादुई सामर्थ्य अर्जित करबाक साधन अछि।

सरैया ग्रामक वागेश्वरी-साधना स्थलमे नरबलि आ भयावह प्राणीक उल्लेख अछि। ई लोकविश्वासक भयानक संसार अछि। ‘साधना’क नामपर हिंसाक उपस्थिति कैँ नैतिक प्रश्नक बिना अपनाएब उचित नहि। गुरुक दीक्षा कथामे नायकक रक्षा-उपाय बनैत अछि, मुदा बालपाठकक लेल नरबलि कैँ महान आध्यात्मिक उपलब्धि वा व्यवहार्य अनुष्ठानक रूपमे नहिएँ देखब।

अनहद आ आज्ञाचक्रक उल्लेख योग-तांत्रिक शब्दावली कथा-संसारमे आनैत अछि। एहि शब्दसभक ऐतिहासिक-विधागत अर्थ अलग अन्वेषणक विषय अछि; मूल कथामे एकर काम उच्चतर शक्ति प्राप्तिक संकेत देब अछि। करिया जादू काटबाक मंत्र अन्तिम कवच मानल गेल अछि। अध्ययनक दृष्टिसँ पात्रक असली प्रश्न अछि—जँ प्रत्येक पक्षकैँ अधिक शक्ति भेटैत अछि, तँ संघर्षक नैतिक समाधान कियैक स्वतः नहि भेटैत?

अध्याय ५ : सूखल धार

नदीक नियन्त्रण आ निर्दोषताक सार्वजनिक परीक्षा

बहुरा क्रोधवश कमला धार सुखा दैत छथि। एहि घटना सँ तांत्रिक शक्ति निजी विवादसँ बाहर सार्वजनिक जीवनपर प्रभाव डालैत अछि। नदी केवल दैवी पदार्थ नहि; किसान, मलाह आ किनाराक समाजक जीवनरेखा अछि। तैं नदी सुकाएबक रूपक प्रकृतिक सामूहिक अधिकारक उल्लंघन बुझल जा सकैत अछि।

राजा अपन गुप्तचर सँ बहुराक भूमिका जानैत छथि, मुदा बहुरा दोष नटुआ दयालपर मोड़ैत छथि। प्रचलित आरोप ई जे यज्ञक बादो पानि नहि अएल कारण नटुआ ओहि धारकेँ पाताल पठा देने छथि। एतय ‘झूठ प्रमाण’क पुनरावृत्ति अछि : सत्ता वास्तविक कारण जनैतहुँ आरोपक सन्दिग्ध मार्गमे चलैत अछि। नटुआ दोषी नहि मानैत छथि; अपन नृत्यक शक्तिसँ नदी फेर बहबैत छथि। चमत्कार कथा-विश्वक भीतर निर्दोषताक सार्वजनिक संकेत बनैत अछि, आधुनिक जलविज्ञानक तथ्य नहि।

बहुरा सँ नटुआक क्षमा माँगब कृतिक अत्यन्त जटिल भाव अछि। जे व्यक्ति प्रतिपक्षीक अन्याय हटौलक, से तकरा सोझाँ नम्र रहैत अछि। एहिसँ नायकक व्यक्तित्वमे प्रतिहिंसाक बदला सम्बन्ध जोड़बाक इच्छा देखाइत अछि। मुदा क्षमा माँगबाक सामाजिक दबाव आ दोषक असमानता सेहो अनदेखल नहि रहबाक चाही।

अध्याय ६ : बरियातीक तैयारी

तीन पानक संस्कार आ सुखान्तक छलावा

नटुआक शक्ति आ नम्रता देखि बहुरा अन्ततः अपन बेटी सँ विवाहक अनुमति दैत छथि। तीन टा पानक प्रतीक उपस्थित अछि—कमला धारक पानि, बहुराक क्षमा आ विवाह। एहि त्रयमे प्रकृति, आहत सम्बन्ध आ प्रेमक सार्वजनिक अनुष्ठान एकसंग व्यवस्थित छथि। पान छोट वस्तु अछि, मुदा संस्कारक सामाजिक वैधता व्यक्त करैत अछि।

नटुआ बरियाती लेने पहुँचैत छथि। गीत–नाद आ उत्सवक विस्तार पाठककेँ सुखान्तक अपेक्षा दैत अछि। मुदा नटुआक पियास आ झिलमिल नामक शिष्य केँ इनार पर पठेबाक छोट घटना भविष्यमे भाग्य बदलएबला साबित होयत। कथावाचक साधारण दैनिक आवश्यकता केँ त्रासदीक सूक्ष्म बीज बनबैत छथि।

एहि अध्यायमे बेटी आ नटुआक सम्बन्धक मंजूरी मिलैत अछि, मुदा बेटी स्वयं अपन विस्तृत इच्छाक भाषा कम पबैत छथि। कथाक प्रधान संवाद मातृशक्ति, राजकीय पद आ पुरुषनायकक साधना बीच अछि; विवाहक केन्द्रस्थ स्त्रीक स्वतन्त्र दृष्टि तुलनात्मक रूपसँ कम विकसित अछि। ई रचनात्मक सीमा टिप्पणी योग्य अछि।

अध्याय ७ : डोरीक रहस्य

लघु व्यवधान सँ नियतिक निर्णायक मोड़

झिलमिल इनारपर पानि भरए जाइत अछि, मुदा डोरी छोट पड़ि जाइत अछि। नटुआ स्वयं जाइत छथि तँ डोरी पर्याप्त भऽ जाइत अछि। साधारण क्रियाक असामान्य परिणाम लोकफैन्टेसीक पूर्वाभास अछि : अदृश्य शक्ति साधारण संसारक नियम बदलि नायक कैं एक निश्चित स्थल तक अनैत अछि।

नटुआक पहिल पत्नी फूलमती एहि प्रसंगमे उपस्थित छथि। एकर कारण कथाक वैवाहिक सम्बन्ध पहिनुक बहुरा-बेटी सम्बन्धसँ अधिक जटिल बनैत अछि। कथक फूलमतीक आन्तरिक प्रतिक्रिया विस्तारसँ नहि बतबैत; तैं त्रिकोणक निश्चित भावनात्मक अर्थ गढ़ब उचित नहि। मुदा एकर उपस्थिति विवाह-अनुष्ठानकैं एकरेखीय प्रेमक संकल्पनासँ अलग अवश्य करैत अछि।

बहुरा मंत्री मल्लक आँखिक रोशनी फेर ठीक करैत छथि। ई प्रक्रिया पहिल क्रोधक हानिक आंशिक प्रतिपूर्ति अछि। एहि कार्यसँ पात्रक परिवर्तनक संकेत मिलैत अछि, मुदा हुनकर पूर्व हिंसा स्वतः निरस्त नहि होइत। सार्वजनिक क्षतिक उपचार आ निजी अन्तरात्माक पश्चात्ताप दोनूकैं भेदसहित देखबाक आवश्यकता अछि। गाथाक त्रासदीक ठीक पूर्व ई मृदु परिवर्तन करुण तनाव बढ़बैत अछि।

अध्याय ८ : कमलाक तटपर ढिलाह

शिष्यक विश्वासघात आ अधूरा विवाह

आठम अध्यायमे नटुआ बहुराक बेटी संग कमला तटपर अन्तिम विवाह-विधि लेल पहुँचैत छथि। गीत, अनुष्ठान आ मिलनक वातावरण अचानक ‘आहि रे बा’क पीड़ाक पुकारसँ टूटैत अछि। नटुआ कैँ छुरा मारल जाइत अछि; मूल कथनमे आघात करनिहार अपन शिष्यक रूपमे उल्लेखित अछि, जे बहुरासँ अलग भेल छल। एहन संबंध-भंगक विस्तृत कारण पाठमे नहि अछि; तैं ककरो नाम अथवा प्रेरणा कल्पना कऽ जोड़ब नहि।

गुरु–शिष्य सम्बन्ध ज्ञानक उत्तराधिकारक माध्यम छल; वही सम्बन्धक भीतर घात घटब कृतिक तीक्ष्ण विडम्बना अछि। नटुआ घायल होइतहुँ कमला मैयाकैँ पटोर चढ़बैत छथि। ई क्रिया तनु-जीवनक अन्तिम शक्ति द्वारा निष्ठाक निर्वाहक प्रतिमा बनैत अछि। नदीक पानि रक्तमय होएब प्राकृतिक जीवनरेखाकैँ मानवीय हिंसाक साक्षी बनबैत अछि।

मुदा बलिदानक महिमा आ हिंसाक नैतिक निन्दा अलग रखबाक अछि। एकटा व्यक्तिक आस्था चोट सहबाक नैतिक सामर्थ्य दिखा सकैत अछि, मुदा छुराबाजीकैँ नियतिक सौन्दर्य कहब घातक होयत। कृतिक सर्वाधिक प्रभावी करुणा सुखान्तक ठीक सोझाँ स्थित हिंसात्मक बाधामे अछि।

अध्याय ९ : कामाख्याक जादूगरनी

पुनर्जीवनक चमत्कार आ प्रतिशोधक नव चक्र

अन्तिम अध्यायमे कामाख्याक जादूगरनी नटुआ कैँ जीवित करैत छथि। ई पुनर्जीवन लोककथाक अद्भुत विधान अछि। मुदा एही संग शत्रुक बलि चढ़ाओल जाइत अछि।

जीवनदायिनी क्रिया आ मृत्यु-दायक प्रतिशोध साथ-साथ घटैत अछि। एहि कारण पुस्तकक समाप्ति सहज विजय नहि, नैतिक दुविधासहित उद्धार अछि।

लोककथाक भीतर बलि द्वारा न्याय-स्थापना मानल गेल अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ ई समाधान प्रश्न उठबैत अछि : विश्वासघातक उत्तर फेर प्राणहरणक माध्यमसँ देब हिंसाक चक्र समाप्त करैत अछि कि नब रूपमे स्थिर करैत अछि? कथाकार अन्तमे नृत्य, प्रेम, तंत्र, बलिदान आ पुनर्जीवनक मिश्रित गाथा कहैत छथि। एहि स्वीकारोक्तिमे पुस्तकक जटिल विधागत प्रकृति निहित अछि।

कमला-बलानक भूगोल अन्तिम समाहारक साक्षी बनैत अछि। नदीक प्रवाह कथा भरि सुकब, बहब, रक्तमय होएब आ सामुदायिक स्मृतिमे टिकब—चारि रूप बदलैत अछि। पुनर्जीवनक दृश्य सुखक अवसर होइतहुँ निर्दोष-हानि आ बदला-भावक प्रश्न खोलल रखैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

नृत्य आ तंत्रक द्विपथ

‘बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल’क कथात्मक विशेषता कला आ जादू कैं एकरे दीक्षाक मार्गमे रखब अछि। नटुआ राजकुमार होइतहुँ बहुरा लग नृत्य सीखैत छथि। नृत्यक भाषा देहक सृजनशील अभ्यास, मुदा तंत्रक अनेक प्रदर्शन दोसरक देह बदलि देब, पानिक धार रोकब आ बलि सँ प्राण फेरब सन नियन्त्रणमूलक क्रिया अछि। नायकक

शक्ति-बढ़ोत्तरी सँ न्याय स्वतः नहि बनैत; शक्ति ककर अधिकार आ ककर हितमे प्रयोग होइत अछि, ई केन्द्रस्थ प्रश्न अछि।

बहुराक बहुस्तरीय चरित्र

बहुरा नर्तकी, गुरुमाता, कमला-भक्तिन, तांत्रिक शक्ति-संपन्न स्त्री आ क्रोधमे हिंसा करनिहार व्यक्ति छथि। हुनकर शक्तिक आधार पैघ वंश नहि, अर्जित विद्या अछि। ई पात्र निर्माण स्त्रीक क्षमता देखबैत अछि, मुदा पति कैँ मारि तंत्र सीखबाक सूचना, बाराती कैँ पशु बना देबाक क्रिया आ नदीक धार सुखायब हुनकर अपराजित नैतिकता नकारैत अछि। मंत्री मल्लक आँखि ठीक करब एक भिन्न भावक सम्भावना खोलैत अछि। एहि कारण बहुराकैँ एकल नायिका वा खलनायिका मानब अपूर्ण होयत।

बहुराक बेटी विवाहक केन्द्र छथि, मुदा कथाक निर्णायक सार्वजनिक संवादमे हुनकर निजी स्वर कम अछि। नटुआक पहिल पत्नी फूलमती सेहो उपस्थित छथि, पर हुनकर भाव जगत विकसित नहि। एहि असमान पात्र-दृश्यतामे लोकगाथाक पुरुष-वीर आ माता-गुरुक मूल दृष्टि प्रबल अछि। कृति स्त्रीशक्तिक विस्तार करैतहुँ स्त्रीक एकाधिक अनुभवक पर्याप्त विस्तार नहि दैत।

कमला धारक चारि रूप

कमला-बलानक संगम कथाक लोकभूगोल बनबैत अछि। कमला मैया प्रथम भक्ति-संसारक केन्द्र छथि; बहुराक क्रोधमे धार सुखैत अछि; नटुआक नृत्यसँ पानि फेर बहैत अछि; अन्तमे नटुआक रक्त सँ नदी रक्तमय बनैत अछि। एक प्राकृतिक संसाधनक

रूपक पूरा कथा समय-बदलाक नाप अछि। पानीक उपलब्धि अथवा अभाव व्यक्ति-विशेषक शक्तिप्रदर्शनमे बदलि जाएब सामाजिक रूपसँ प्रश्नाधीन अछि : लोकक जीविका पर ककर अधिकार?

शब्द, ध्वनि आ गीत

‘आहि रे बा’क पुकार एकाधिक ठाम आवैत अछि। ई व्यथा कैं स्वर-चिह्न दैत अछि; गीत आ नृत्यक कथा मे पीड़ाक ध्वनि स्मृतिदायक बनैत अछि। बारह अध्यायक विस्तृत लय नहि, नौ छोट अध्यायक क्रममे घटनासभ तीव्र अछि। गीत–अनुष्ठान–करुण पुकारक आवर्तन कथाक प्रदर्शनपरक स्वभाव दर्शबैत अछि। आलोचनामे एहि ध्वनि-रूपकैं लोकगाथाक आन्तरिक नाट्यलयक हिस्सा बुझबाक अछि।

गुरु, शिष्य आ विश्वासघात

गुरु मंगल, बहुरा द्वारा नृत्यक शिक्षा, कामाख्याक योगिनीसभ आ झिलमिलक शिष्यत्व—ई संबंधसभ गाथामे ज्ञानक जाल रचैत अछि। किन्तु शिष्यक हाथसँ नटुआपर छुराघात गुरु–शिष्य सम्बन्धक संकट बनैत अछि। जे परम्परा रक्षा-विद्या दैत अछि, ओहि भीतर विश्वासघात सम्भव अछि। एहि विडम्बनासँ कथा अनन्य शक्ति अर्जनक बदलामे नैतिक विश्वास अर्जनक कठिनाइ देखबैत अछि।

तंत्र, बलि आ लोकविश्वासक सीमा

अलौकिक मंत्र, षट्‌नृत्य, देवी-साधना, नदी सुखाएब, आँखि स्वस्थ करब, पुनर्जीवन आ नरबलि मूल लोकफैन्टेसीक घटना छथि। एहि सभकेँ शाब्दिक चिकित्सकीय, भौतिक वा ऐतिहासिक परीक्षणक सिद्ध परिणामक रूपमे प्रस्तुत करब अनुचित। कथा भीतर विश्वासक नियम मानि एकर प्रतीकात्मक अर्थ समझबाक अछि, मुदा बलि अथवा हिंसा केँ अनुकरणीय आचरण नहि मानब। अंतिम जादूगरनीक शत्रु-बलि न्याय-परिणामक पारम्परिक कथा-संकेत अछि, पर मनुष्यक प्राणक अधिकारपर आलोचनात्मक प्रश्न जगबैत अछि।

ग्राफिक विधान

मूल कृतिमे कुल १८ चित्र-संकेतक आवर्त अछि। अध्यायवार चित्रित पृष्ठक बीच गद्यक संक्षिप्त विस्तार कथाकेँ दृश्य-आधारित नाटकीय गति दैत अछि। विवाहक उत्सव, नदीक सूखब, इनारक डोरी, रक्तमय घाट आ पुनर्जीवनक दृश्य अपेक्षाकृत उच्च दृश्य-नाटकीयता राखैत अछि। तथापि मूल पृष्ठ-दर्शनक प्रत्येक चित्रक स्वतन्त्र रंग, शैली आ रेखाक सटीक निरीक्षण बिना निश्चित रंग-विश्लेषण बनाबब नहि उचित।

रचनात्मक सीमासभ

कथामे व्यापारीक षड्यन्त्रक सघन कारण-विकास कम अछि; शिष्यक विश्वासघातक मनोवैज्ञानिक इतिहास अपूर्ण अछि; फूलमती आ बहुराक बेटी निजी स्वरक पर्याप्त अवसर नहि पबैत छथि; नटुआक अकस्मात् मृत्यु आ पुनर्जीवनक संक्रमण तीव्र अछि। एही संक्षिप्ततासँ लोकगाथाक प्रस्तुति सजल अछि, मुदा आधुनिक उपन्यासक अपेक्षित

विस्तार सीमित रहैत अछि। बलक प्रतियोगिता न्याय-संकट समाप्त नहि करैत—ई विशेषता कृतिक वैचारिक भार बनैत अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल’ मैथिली–मोरंग–कामाख्या लोककल्पनाक संग नृत्य, तंत्र, प्रेम, राजकीय अधिकार आ नदीक प्राकृतिक रूपक एकत्र करैत अछि। नटुआक विनम्रता आ साधना महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा कृतिक अन्तिम जीवनदान शत्रुबलि पर निर्भर अछि। एहि कारण कथा न्याय आ प्रतिशोधक अन्तरपर आलोचनात्मक पाठ आमन्त्रित करैत अछि। बहुराक शक्ति स्त्रीक कर्तृत्वक परिचायक होइतहुँ अनेक प्रकारक हिंसाक जिम्मेदारी वहन करैत अछि। गाथाक स्थायी साहित्यिक महत्त्व एकटा निष्कंटक प्रेमक विजयमे नहि, कला आ अधिकार, प्रेम आ नियन्त्रण, उद्धार आ बलिदानक एकहि तटपर संघर्षमे अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल : कमला-बलानक तटपर तंत्र-नृत्य आ बलिदानक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क ८, PDF पृष्ठ ६७७–७०७।

कृति १० : चौहड़मल आ रेशमा

उपक्रम : मोकामा घाट

नदीक खुलल हवा आ सामाजिक देवाल

उपक्रम गंगा आ मोकामा टालक विस्तृत पानि–माटि सँ कथा आरम्भ करैत अछि। एक कात अखराहाक श्रमिक-वीर, दोसर कात समृद्ध घरानाक बेटी; बीचमे जातिगत आ आर्थिक देवाल। कथावाचक पहिने सँ कहैत छथि जे जीवनमे देवाल प्रेमी युगलक मार्ग रोकत, मुदा मृत्युपछाँ कथा मेला बनि लोकस्मृतिमे टिकत। एहि अग्रसूचनासँ पाठक लेल गाथाक परिणामक रहस्य कम, मृत्यु धरि पहुँचबाक प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि।

मोकामा घाट असमान समाजक मंच बनैत अछि। गंगाक खुलल हवा व्यक्तिगत भावनाकेँ विस्तार दैत अछि, मुदा हवेलीक ऊँच देवाल सामाजिक गति सीमित करैत अछि। नदीक बहब आ सामाजिक बन्दीकरणक विरोध सम्पूर्ण कृतिक दृश्यप्रतिमान अछि।

अध्याय १ : अखराहाक वीर

श्रमिक देहक गरिमा आ नायकक लोकसम्मान

पहिल अध्यायमे मूल कथा चूहड़मल कैँ गरीब बौहिहार, जातिसँ दूधबंसी कहैत अछि। बाप राजवंसी, माए अंजली आ काका बैसीराय—एहि सम्बन्धसभसँ लोकनायकक पारिवारिक परिचय बनैत अछि। भोरक गंगा-स्नान, दण्ड-बैठक आ कुश्तीक साधना हुनकर श्रमबाह्य अनुशासन देखबैत अछि; दिनभरि खेत, घाट आ बोझ ढोयबाक काज आर्थिक वर्गस्थिति स्पष्ट करैत अछि।

नायकक फाटल वस्त्र आ चमकैत स्वाभिमानक विरोध शक्ति तथा प्रतिष्ठाक भिन्न मानक दर्शबैत अछि। हवेलीमे धन-बैभव अछि, मुदा अखराहाक सम्मान श्रमिकक देहसाधनासँ अर्जित अछि। एहि द्वैतमे गाथाक सामाजिक न्याय-दृष्टि अछि। तथापि असाधारण बलक महिमा सामूहिक श्रमिक अधिकारक पूर्ण विकल्प नहि; लोकनायकक कथा एहि अधिकारक प्रतीकात्मक प्रतिवाद बनैत अछि।

मोकामा टालक लोक चूहड़मल कैँ अखराहाक शेर कहैत छथि। ई जनमान्यता सामाजिक व्यवस्था कैँ उलटबाक सम्भावना लैत अछि—धनिक घरक प्रतिष्ठा जन्मसँ, गरीबक प्रतिष्ठा कर्मसँ। एहि तरह पहिल अध्याय प्रेमक कथा शुरू होएबा सँ पहिने सामाजिक प्रतिष्ठाक परीक्षा बनबैत अछि।

अध्याय २ : रेशमा

समृद्ध घरमे स्त्रीक आकांक्षाक सीमांकन

दोसरा अध्यायमे रेशमा अजबी सिंहक बेटी आ अजय सिंहक बहिन छथि; भूमिहार घरानाक हवेलीमे रूपा-पाइ, नौकर-चाकर आ भौतिक सुविधा अछि। तथापि कथाकार हुनकर भीतरी मोनकेँ हवेलीक देवालसँ ऊँच उड़बाक इच्छावला देखबैत छथि। आर्थिक समृद्धि व्यक्तिगत इच्छाक स्वतन्त्रता सुनिश्चित नहि करैत—ई गाथाक सामाजिक संकेत अछि।

गंगा धारक कात रेशमा चूहड़मल केँ देखैत छथि। पहिल नजरिक आकर्षण कविता-भाषामे प्रस्तुत अछि; प्रेम जखन अचानक जागैत अछि, तखन पहिनेक जाति, घराना आ दरबारक विभाजन रेशमाक दृष्टिमे तात्कालिक रूपसँ पाछाँ पड़ैत अछि। मुदा एहि एक नजरक कारण प्रेमक साझा स्वीकृति स्वतः नहि बनैत—तकर अगिला अध्याय गम्भीर प्रश्न उठबैत अछि।

रेशमाक आकर्षण सभसँ पहिने हुनकर अपनी इच्छा अछि, परिवारक आदेश नहि। कथा एहि अर्थमे स्त्रीक स्वाधीन भावक स्थापना करैत अछि, मुदा समाज एही भावकेँ ‘मर्यादा’ विरुद्ध अपराध ठहराएत। दोसर अध्याय हवेलीक सम्पन्नता आ भीतरक बन्धनक प्रतिमा बनैत अछि।

अध्याय ३ : एकतरफा बसात

स्वीकृतिक सीमारेखा आ सामाजिक हिंसाक पूर्वज्ञान

रेशमा अपन प्रेम स्पष्ट कहैत छथि। चूहड़मल आरम्भमे स्वीकार नहि करैत—ओ जानैत अछि जे गरीब श्रमिक आ धनिक घरानाक बेटीकेँ प्रेमक सामाजिक दाम बहुत भारी

पड़त। हुनकर ‘नहि’ अहंकार नहि, सामाजिक परिस्थिति कैं पढ़ि लेल निर्णय अछि। एहि क्षण कथक प्रेमक सरल सर्वशक्तिमानता पर शंका उठबैत छथि।

रेशमा नियमित भेटैत छथि, चूहड़मलक प्रतिरोध धीरे-धीरे कमजोर पड़ैत अछि। पाथरपर पानिक बूँद गिरबाक रूपक बदलैत मनक धैर्यपूर्ण प्रक्रिया देखबैत अछि। मुदा एकतरफा इच्छा धीरे-धीरे दोतरफा सम्बन्ध बनेबामे सहमति, जोखिम आ स्वायत्तता प्रश्नसंग जुड़ल अछि। कथा बादमे नायकक ‘हँ’ स्पष्ट करैत अछि, तैं एहि प्रारम्भिक प्रतिरोध कैं प्रेम-विहीनता घोषित करब नहि चाही।

हवेलीक कान धरि समाचार पहुँचबाक संकेत संकटक कारण-श्रृंखला खोलैत अछि। प्रेमी-युगलक निजी निर्णय अब परिवारक प्रतिष्ठा-नियन्त्रणक निशाना बनत। एहि बिन्दुपर कथा रोमांससँ सामाजिक त्रासदी दिस अग्रसर होइत अछि।

अध्याय ४ : पहरा

महिला-स्वातन्त्र्यपर परिवारक कारागार

प्रेमक सूचना हवेली पहुँचिते रेशमापर पहरा लगैत अछि। दरबज्जापर पहरेदार, खिड़कीपर नजरि, सखीसभ सँ मिलब तक रोकेल—घर निजी सुरक्षा-स्थान सँ कैदखाना बनैत अछि। एहि घटनामे प्रतिष्ठा-रक्षाक नामपर स्त्रीक स्वतंत्र आवागमनक हनन स्पष्ट अछि।

अजय सिंहक तामस बढ़ैत अछि। ओकरा लागैत अछि जे परिवारक कलंकक जड़ि बहिन नहि, चूहड़मल अछि। एहि दृष्टिमे जाति आ वर्गक दम्भ मिलैत अछि—धनिक परिवारक बेटी गरीब श्रमिकसँ प्रेम नहि कऽ सकैत, एहन धारणा हिंसाक तैयारी करैत अछि। अजयक विचारमे ‘मर्यादा’ मनुष्यक प्राणसँ अधिक मूल्यवान बनि जाइत अछि।

पहरेक उलट परिणाम रेशमाक इच्छाकेँ प्रबल करैत अछि। बंदिश निजी निर्णयपर बाहरी बल लादैत अछि, मुदा भावनात्मक संबंध मेटाएब असम्भव। एहि कारण पहरा कृतिक प्रभावी राजनीतिक रूपक अछि—हवेली, जकरा धनक प्रतीक मानल गेल, स्त्रीक जीवनमे कारागार बनि रहल अछि।

अध्याय ५ : रामजीत आ मन्नेखाँ

भाड़ाक हिंसा आ आत्मरक्षाक कठिन विजय

अजय सिंह चूहड़मल केँ मरबेबाक लेल रामजीत गड़ेरिया आ मन्नेखाँ केँ पठबैत अछि। ई घटना निजी परिवारक क्रोधक संग पेशेवर हिंसाक गठजोड़ देखबैत अछि। हत्या लेल दाम तय होइत अछि, आ श्रमिकक प्राण सामाजिक प्रतिष्ठाक पुनर्स्थापनाक साधन बनि जाइत अछि। एहि ठाम जातिगत अपमान सीधे जीवनक अधिकारपर हमला अछि।

घात करबाक प्रयासमे दुनू आक्रमणकारी चूहड़मलक तरुआरिसँ मारल जाइत छथि। मूल कथा एकरा नायकक पहिल रक्तपात आ आत्मरक्षाक युद्ध कहैत अछि। न्यायिक नैतिकताक दृष्टिसँ पहिल आक्रमणक तथ्य महत्त्वपूर्ण, मुदा हिंसाक परिणामबारे

नायकक मनमे पश्चात्ताप वा विजयोन्मादक विस्तृत चर्चा नहि अछि। ओ जल्दी बुझैत अछि जे अब पूरा टोलपर आक्रमणक सम्भावना अछि।

एहि अनुमानक सामाजिक महत्त्व विशिष्ट अछि। हिंसा व्यक्तिगत लक्ष्य धरि सीमित नहि रहत; श्रमिक समाजक सामूहिक दण्ड बनि सकैत अछि। नायकक निजी प्रेम सामाजिक अस्तित्वक प्रश्न बनि रहल अछि।

अध्याय ६ : टोलपर आक्रमण

व्यक्तिगत प्रेमक सामूहिक दण्ड आ स्त्रीक प्रतिरोध

अजय सिंहक नेतृत्वमे हथियारबन्द लोक दूधबंसी टोलपर धावा करैत छथि। फूसक घर, निहत्था श्रमिक, कानैत बच्चा—एहि चित्रसभमे धनिक परिवारक ‘मर्यादा’ लेल पूरा समुदायक जीवन असुरक्षित होइत अछि। एक जोड़ीक प्रेमक मूल्य दोसर सभसँ वसूल करबाक दृष्टि सामूहिक उत्पीड़नक स्पष्ट रूप अछि।

चूहड़मल लोकक रक्षा लेल ढाल लऽ ठाढ़ अछि, मुदा शारीरिक बलक अनुपात असमान अछि। रेशमा पहरा तोड़ि अपन पिता अजबी सिंह लग पहुँचैत छथि, आ निर्दोष लोकक रक्त रोकबाक आग्रह करैत छथि। कथामे हुनकर प्रार्थनाक दबावसँ आक्रमण रुकैत अछि। एहि दृश्यमें नायिकाक साहस कथा सँ गायब नहि; ओ जनसमुदायक रक्षा लेल पारिवारिक सत्ता सामना करैत छथि।

मुदा रेशमाक हस्तक्षेपक सीमाओ अछि। पिता हिंसा रोकैत छथि, पर सामाजिक विवाह-सहमति देल गेल एहन घटना नहि। एतय निजी स्त्री-विरोधी नियन्त्रण अल्पकालिक रूपसँ नरम पड़ैत अछि, ओकर संस्थागत कारण नहिएँ समाप्त होइत। कथक रेशमाकेँ प्रेम सँ बेसी मनुष्यता रक्षाक पक्षधर बनबैत छथि।

अध्याय ७ : रामसखीक जादू

सहेलीक सहकार्य आ नायकक बदलबैत स्वीकृति

रेशमा बुझैत छथि जे पहरा आ आक्रमणक बीच सामान्य भेटघाट असम्भव बनल अछि। हुनकर सखी रामसखी जादूक मदद दैत छथि। एहि पात्रक भूमिका एकटा संकटक जादुई समाधान होइतहुँ स्त्रीसभक परस्पर सहयोगक रूपक अछि। समाजक औपचारिक सत्ता जखन रेशमाकेँ बाँधैत अछि, सखीक साथ हुनका नब बाट दैत अछि।

जादूसँ रेशमा पहरेदारक आँखिक सोझाँ अदृश्य भऽ घाट पहुँचित छथि। चूहड़मल पहिल बेर प्रेम स्वीकार करैत अछि। एहि स्वीकारमे पहिनुक सामाजिक जोखिम समाप्त नहि, मुदा व्यक्तिगत सम्बन्धक निर्णय स्पष्ट भऽ जाइत अछि। दूनू काली-मन्दिर दिस विवाह लेल बढ़ैत छथि। एहि मोड़मे प्रेमक कथा अवैध वा हिंसक सम्बन्ध नहि, पारस्परिक स्वीकृतिक सार्वजनिक धार्मिक रूप खोजैत अछि।

रामसखीक जादू लोकफैन्टेसीक उपकरण अछि। वास्तविक जीवनमे समान साहसक रूप सामाजिक सहयोग, गोपनीय सहायता, अधिकार-सुरक्षा आ संवाद भऽ सकैत; मुदा

कृतिक कथानक अपन जादुई नियमपर चलैत अछि। एहि भेदसहित नायिकाक सक्रिय निर्णय पढ़ब उचित।

अध्याय ८ : शोणितक सिनूर

देहक रक्त, विवाह आ अनिष्टक पूर्वाभास

दूनू काली-मन्दिर पहुँचैत छथि, ने बरियाती अछि ने मड़बा। सिनूरक डिब्बा अनुपस्थित होइत अछि। चूहड़मल अपन देहसँ रक्त निकालि रेशमाक माँग भरैत अछि। ई दृश्य प्रेमक चरम आत्मसमर्पणक रूपक बनैत अछि। किन्तु निजी चोट कैं वैवाहिक निष्ठाक अनिवार्य आदर्श नहि बनाओल जाए; कथा भीतरक शोणित प्रतीकात्मक तीव्रता दैत अछि, व्यवहारिक शिक्षा नहि।

पुरोहितक आशीर्वाद आ काँपैत दीप नव गृहस्थीक संकेत अछि। मुदा घोड़ाक टापक आवाज सँ तुरन्त हवेलीक सशस्त्र दल मन्दिर घेरैत अछि। उपहार वा विवाहक सुख अनुभव करबाक अवसर नहि, नव दम्पतिक जीवन रक्षा मुख्य प्रश्न बनैत अछि। एहि गति-परिवर्तनमे कथक सुखान्तक आकांक्षाकैं बारम्बार तोड़ैत छथि।

चूहड़मल रेशमाकैं महक गाछपर बैसाबि सुरक्षित रहबाक आदेश दैत अछि। गाछ अस्थायी आश्रय अछि, मुदा ओहि असगर सुरक्षा-स्थलपर हिंसा आगमनक खतरा शेष अछि। एहि दृश्यसँ युद्धक परिणामक करुण पूर्वाभास बनैत अछि।

अध्याय ९ : अन्तिम युद्ध

वीरक दक्षता सँ बढ़ि अपहरणक चालि

नवम अध्यायमे चूहड़मल नव विवाहक पहिल पहरमे अनेक हथियारबन्द लोकसँ लड़ैत अछि। अखराहाक साधना जे पहिल अध्यायमे चरित्र-परिचय छल, एतय युद्धक कौशल बनैत अछि। कथक नायकक अद्भुत बल देखबैत छथि, मुदा विजयक क्षण कलुआ सिपाही महक गाछसँ रेशमाकेँ अपहरण कऽ लैत अछि।

एहि घटना सँ युद्धक लक्ष्य बदलैत अछि। चूहड़मल लड़ैत शत्रुक मैदान छोड़ि रेशमाकेँ बचएबाक लेल दौड़ैत अछि। ओकरा पहिल प्राथमिकता सम्मान वा विजय नहि, सम्बन्धक रक्षा बनैत अछि। घोड़ापर पीछा करैत चूहड़मलपर पाछाँसँ वार होइत अछि; घोड़ा मारल जाइत अछि आ नायक खसि पड़ैत अछि।

एकटा असाधारण योद्धाक पराजय प्रत्यक्ष कुश्तीमे नहि, योजनाबद्ध घेराबन्दी आ अपहरणक असममित हिंसामे अछि। एतय गाथा सामाजिक सत्ताक सामूहिक साधनक सोझाँ व्यक्तिगत वीरताक सीमा देखबैत अछि।

अध्याय १० : रेशमा-रेशमा

दुखान्तक ध्वन्यात्मक समापन आ नायिकाक अनिर्णीत जीवन

चूहड़मल मोकामाक टालमे घायल पड़ल अछि, ठोरपर केवल ‘रेशमा’ नाम। आख्यानक अन्तिम क्षणमे नायकक बल, जाति, अखराहा आ युद्ध सभ पाछाँ पड़ैत अछि; उच्चरित नाम व्यक्तिगत प्रेमक शेष सम्बन्ध बनैत अछि। नामक पुनरावृत्ति करुण रसक चरम बिन्दु अछि, जहाँ कथक सूचना कम, श्रव्य प्रतिध्वनि अधिक उपयोग करैत छथि।

चूहड़मल मरि जाइत अछि। रेशमाक शोणित-सिनूर सुखाइल नहि कि सोहाग उजड़ि गेल—एहि काल-प्रतिमामे वैवाहिक जीवनक अति संक्षिप्त समय दुःखान्त बनैत अछि। रेशमा स्वयं नायकक मृत्यु-दृश्य धरि नहि पहुँचि सकैत छथि। कथक हुनकर अगिला जीवनक विवरण नहि दैत; एहिमे मौन कहानीक गम्भीर रचनात्मक उपकरण अछि।

रेशमाक भविष्यक बारे मनगढ़न्त पुनर्मिलन, मृत्यु, आत्महत्या अथवा उद्धारक घटना जोड़ब उचित नहि। मूल पाठक मौन स्वीकार करब कृतिक करुणा संरक्षित रखैत अछि। पाठकक प्रश्न रेशमाक जीवनक शेष संघर्ष दिश खुलल रहैत अछि।

अध्याय ११ : रेशमा-चूहड़मल मन्दिर

जीबैतकालक निषेध आ मृत्युपछिला सार्वजनिक स्वीकार

अन्तिम अध्यायमे मूल कथा मोकामा टालमे रेशमा–चूहड़मल मंदिर आ वार्षिक मेलाक स्मृति प्रस्तुत करैत अछि। जे जाति आ वर्गक विभाजन दुनूकेँ जीवित काल एक संग रहए नहि देलक, ओही समाजक लोक मृत्युपछाँ एकहि मेला आ पूजास्थलमे अबैत छथि। ई उलटाव सामुदायिक प्रायश्चित्तक साहित्यिक रूपक अछि।

मूल पाठमे दूधबंसी, भूमिहार आ आन जातिक लोकक एकत्र भेलाक वर्णन अछि। पर एकरा बिना स्वतंत्र वर्तमान स्थलगत अनुसंधानक प्रमाणित तथ्य घोषित नहि करब। कथा भीतर एहि मिलनक अर्थ सामाजिक दम्भक बादमे टूटब अछि। मृत्यु प्रेमीकेँ एक करि नहि सकल, मुदा ओकर कहानी सार्वजनिक स्मृति केँ नब बन्धन बनएबाक सम्भावना दैत अछि।

महक गाछ डोलबाक कथक बिम्ब अनिश्चित अनुभूति रचैत अछि—जे ठाम रेशमा छलीह, ओहि गाछक हलचल एक स्मृति-वस्तु बनि जाइत अछि। एहि प्रतीकमे मनुष्यक अनुपस्थित देह प्राकृतिक वस्तुमे जीवित रहबाक लोकविश्वास अछि। गाथाक समाप्ति प्रेमकेँ केवल निजी भावना नहि, समाजक आत्मसमालोचनाक क्षेत्र बनबैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

प्रेम आ सामाजिक श्रेणीबोधक असमान टकराव

‘चौहड़मल आ रेशमा’क प्रमुख काव्यात्मक ऊर्जा निजी प्रेम आ संस्थागत जाति-वर्ग व्यवस्था बीचक संघर्षसँ बनैत अछि। गरीब श्रमिक चूहड़मल अपन अखराहाक अभ्यासक आधारपर सामाजिक सम्मान पबैत अछि, मुदा धनिक हवेलीक बराबरीक स्थान नहि। रेशमा धनसम्पन्न घरक बेटी होइतहुँ अपन प्रेम चुनबाक स्वतन्त्रता नहि पबैत छथि। एहि कारण पुरुषक श्रमगत असमानता आ स्त्रीक परिवारगत बन्दीकरण समान कथामे उपस्थित अछि।

रेशमा पहल करैत छथि; नायक आरम्भमे परिस्थितिक दाम बुझि दूरी रखैत अछि। एहि प्रारम्भिक भेदसँ प्रेमक नैतिकतामे स्वीकृतिसँग सामाजिक विवेक जुड़ैत अछि। बादमे चूहड़मल प्रेम स्वीकार करैत अछि, मुदा एतयसँ समाजक हिंसा कम नहि होइत। एहि संरचनामे प्रेमक शुद्धता पर्याप्त रक्षा नहि—भौतिक सत्ता आ जातिगत शासनक अवरोध बना रहैत अछि।

वीरता आ सामूहिक दमनक अनुपात

रामजीत–मन्नेखाँक पहिल आक्रमणमे नायक आत्मरक्षा करैत अछि। अजय सिंहक अगिला आक्रमण व्यक्तिगत हत्या सँ बढ़ि पूरा दूधबंसी टोलपर सामूहिक हिंसा बनैत अछि। गाथा एहि विस्तारक माध्यमसँ जातिगत अपमानक सामाजिक स्वरूप स्पष्ट करैत अछि। चूहड़मल जतेक बलवान हो, एक गोटे समूचा समुदायक स्थायी सुरक्षा नहि। अन्तिम युद्धमे कलुआ द्वारा रेशमाक अपहरण आ पाछाँसँ वार एहि असमान शक्तिक चरम परिणाम अछि।

रेशमाक स्वतंत्र कर्तृत्व

रेशमा केवल प्रेमक प्रतीक्षामे रहल नायिका नहि। ओ पहिने अपन इच्छा प्रकट करैत छथि, पहरा सहैत छथि, टोलक हिंसा रोकबाक लेल पिता कैँ सीधा चुनौती दैत छथि, रामसखीक सहयोगसँ निकलैत छथि आ नायकक समक्ष सहमतिक सम्बन्ध बनबैत छथि। यद्यपि अन्तिम मृत्युदृश्यक बाद हुनकर जीवनक वृत्तान्त चुप अछि, प्रारम्भिक निर्णयसभमे हुनकर क्रिया निर्णायक अछि।

रामसखी स्त्रीसंगठनक सूक्ष्म चिह्न छथि। ओ नायिकाक संकटकेँ अपन संकट मानि जादूक मदद दैत छथि। कथा भीतर ई जादुई उपकरण अछि, मुदा साहित्यिक अर्थमे ककरो निज निर्णयक अधिकार बचएबाक लेल सहेली द्वारा समर्थित मार्ग अछि।

शोणित-सिनूरक अलंकार

सिनूरक ठाम देहक शोणित लगब कथाक सर्वाधिक तीक्ष्ण छवि अछि। प्रेमक प्रतीक आ रक्तपातक पूर्वाभास एकहि कर्ममे मिलि जाइत अछि। युगल नव जीवन शुरू करैत अछि, मुदा ओ आरम्भ पहिनेसँ रक्तक भाषा बोलैत अछि। ई छवि सामान्य विवाह-सुखान्तक प्रतिमा केँ उलटि दैत अछि। तथापि वास्तविक जीवनमे स्वयं केँ चोट पहुँचएब प्रेमक उचित साधन नहि; एकरा लोकगाथाक काव्य-प्रतीक रूपमे मात्र पढ़बाक अछि।

नदी, टाल आ महक गाछ

गंगा धार खुलल गति आ मिलनक आकांक्षाक बिम्ब अछि; मोकामा टाल नायकक श्रम आ संघर्षक क्षेत्र; हवेली बन्द सामाजिक श्रेणी; महक गाछ रेशमाक आखिरी आश्रय आ लोकस्मृतिक प्रतीक। अन्तमे डोलैत महक गाछ नायिकाक अनुपस्थित उपस्थिति अनुभूत करबैत अछि। कथाक स्थलगत रचना एहि बिम्बसभ द्वारा भावक क्रम बदलैत अछि।

लोकस्मृति आ देर सँ आएल न्याय

अन्तिम मन्दिर–मेला कथा संसारक भीतर सामूहिक पश्चात्तापक रूपक अछि। मुदा मृत्युपछाँक पूजा जीवित प्रेमीक प्राण घुरा नहि सकैत। जे समाज हुनका समयपर सम्मान नहि देलक, बादमे स्मारक बनबैत अछि—एहि विडम्बनामे लोकगाथाक आत्मालोचनात्मक धार अछि। वास्तविक सामाजिक परिवर्तनक कसौटी जीवित लोकक अधिकारमे अछि, केवल मृतकक प्रति श्रद्धामे नहि। कृतिक नैतिक संकेत एहि अन्तरमे पढ़ल जा सकैत अछि।

ग्राफिक कथन आ रस

मूल संकलनमे एहि कृतिक २२ चित्र-संकेत अछि। अध्यायवार दृश्य-विराम छोट गद्यक भावाकुल मोड़सभकेँ चित्र-प्रधान लय दैत अछि। अखराहा, हवेली, पहरा, टोलपर आक्रमण, काली मन्दिर, शोणित-सिनूर, महक गाछ, अन्तिम युद्ध आ मेला—ई सभ दृश्यक्रम गाथाक हिंसा–प्रेमक आरोह-अवरोह सँ जुड़ल छथि। करुण रस मुख्य, वीर रस संघर्षक माध्यम, शृंगार आकर्षणक आरम्भ, आ भय हिंसक दमनक रूपमे उपस्थित अछि।

चित्रक विशिष्ट रंग-संयोजनक अप्रमाणित दावा सँ बचैत, कृतिक दृश्य-क्रम आ गद्य-चित्रक सम्बन्धक विवेचन करना अधिक प्रामाणिक अछि। सचित्र बाल आख्यानमे जातिगत दमन, रक्तपात, विवाह आ मृत्यु सन विषयक चर्चा आयु अनुसार विवेकपूर्ण ढंगसँ आवश्यक अछि।

कलात्मक सीमासभ

प्रेमक सामाजिक परिस्थिति स्पष्ट अछि, मुदा रेशमाक अन्तिम जीवन-गाथा मौन अछि। समृद्ध परिवारक हिंसाक निर्णय अत्यन्त एकरेखीय ढंगसँ प्रतिपक्ष निर्माण करैत अछि; राजनीतिक-सामाजिक संरचनाक विस्तार कम। रामसखीक जादू कठिन समस्या त्वरित हल करैत अछि, जखन कि वास्तविक सामाजिक सुरक्षाक प्रक्रिया दीर्घ होइत। अन्तिम मेलाक आस्था कथा भीतर ठोस उपसंहार अछि, मुदा बाह्य स्थल-सत्यक स्वतन्त्र साक्ष्य आवश्यक होयत।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘चौहड़मल आ रेशमा’ प्रेमक स्वायत्तता कैँ जातिगत आ आर्थिक अन्यायक सोझाँ रखैत अछि। चूहड़मलक सामर्थ्यक सीमा सामूहिक हिंसा दर्शबैत अछि, रेशमाक साहस व्यक्तिगत प्रेमकैँ मानवीय रक्षा दिस विस्तारित करैत अछि। रक्त-सिनूरक प्रतिमा पहिने सँ दुखान्तक पूर्वलिखित शर्त बनैत अछि। अन्तमे लोकमेला निजी विवाहक असफलताकैँ सार्वजनिक स्मृतिक सफलता बनबैत अछि, मुदा मृत्युक अपूरणीय घाटा नहि मेटबैत। एहि द्वैतक कारण गाथा इतिहास-स्मृति, श्रमक सम्मान आ लैंगिक स्वाधीनताक साहित्यिक अध्ययनमे महत्त्वपूर्ण अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। चौहड़मल आ रेशमा : मोकामा घाटक अमर प्रेम-दुखान्त। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क ९, PDF पृष्ठ ७०८–७५५।

कृति ११ : महुआ घटवारिन

उपक्रम : परमान नदीक घाट

नारीक स्वतन्त्रताक दुखान्त आ अग्रिम नैतिक भाषा

कथाकार महुआक रूपक वर्णन करैत छथि, मुदा तुरन्त बाह्य सौन्दर्यसँ बेसी हुनकर स्वतन्त्र व्यक्तित्व आ स्वाभिमानक बात उठबैत छथि। ई बिन्दु गाथाक मूल विरोध स्थापित करैत अछि—समाज स्त्रीक देहकेँ व्यापारयोग्य वस्तु मानैत अछि, कथाकार ओकर मानवीय स्वाधीनता विषयक आग्रह रखैत छथि। परमान धार कथा भीतर प्रकृतिक स्वतन्त्र प्रवाहक बिम्ब बनैत अछि।

उपक्रम पहिनेसँ महुआक प्राणांतक सूचना दैत अछि। एहि अग्रिम कथनसँ कथा-रहस्य घटैत, करुण पूर्वाभास बढ़ैत अछि। महुआक बलिदानक महिमा मूल लोककथामे अछि, मुदा आधुनिक आलोचनाक दायित्व पीड़ित कन्याक पास उपलब्ध वास्तविक सामाजिक विकल्पक प्रश्न उठेबो अछि। महुआ बचि सकितथि तँ नैतिक दृष्टिसँ बेहतर छल; हुनकर मृत्यु अन्यायक दोषक प्रमाण अछि, स्वतन्त्रताक एकमात्र उपाय नहि।

अध्याय १ : सतमाएक घर

घरेलू उपेक्षा आ नाबालिग युवतीक असुरक्षा

पहिल अध्याय महुआक सोलह बर्खक अवस्थाक परिचय दैत अछि। पिता गाँजा आ मदिरापानमे डूबल छथि, परिवारक उत्तरदायित्व नहि निभबैत; सतमाए आर्थिक लोभ आ नियंत्रणक माध्यमसँ महुआकेँ उपेक्षित रखैत छथि। एहि परिवारक वर्णनमे बचपनक असुरक्षा घरक भीतरे उपस्थित अछि। सुरक्षादाता परिवार स्वयं शोषणक ठाम बनि सकैत अछि।

मूल कथा विवाहक चिन्ता नहि कएबाक उल्लेख करैत अछि। पर यैह एकटा युवतीक गरिमाक पूर्ण माप नहि; समस्या ई अछि जे महुआक इच्छा, भलाइ, सुरक्षा आ भविष्यक बारे कोनो जिम्मेवार व्यक्ति चिन्तित नहि। लोककथामे बाल-विवाह वा कम उमरिक विवाहक रिवाज मानल जा सकैत अछि, मुदा एकर अनुकरण आधुनिक नैतिक अनिवार्यता नहि।

परमान घाटकेँ घेरे मलाहसभ महुआक कुशलताक प्रार्थना करैत छथि। एहि सामुदायिक सहानुभूति आ घरक ममता-अभावक विरोध महत्वपूर्ण अछि। लोकसमुदायक शुभेच्छा अन्ततः वास्तविक सुरक्षा सँ कम पड़ैत अछि; एहि अपर्याप्तताक कारण अगिला विपत्ति सम्भव होइत अछि।

अध्याय २ : साओन-भादवक चेतावनी

लोकगीत, बाढ़िक जोखिम आ विवशता

दोसरा अध्यायमे साओन-भादवक भरल धारक गीत गूँजैत अछि। लोकगीत अल्प उमरिक महुआ कैँ रातिमे नाव खेएबाक खतरा सँ सावधान करैत अछि। गीतक चेतावनीक भीतर पर्यावरणीय जोखिम आ सामाजिक चिन्ता दुनू अछि। ई ध्वनि अगिला दुखान्त घटनाक पूर्वानुभूति बनबैत अछि।

सतमाए महुआ कैँ रातिमे घाटपर उतरल व्यापारीक सेवा लेल पठएबाक निश्चय करैत छथि। महुआ अशुभ आशंका व्यक्त करैत छथि; वास्तविक जोखिमकैँ बूझि विरोध करैत छथि। मुदा परिवारक सत्ता हुनकर असहमति नकारि दैत अछि। एहि क्षण कथा स्पष्ट करैत अछि जे शोषण केवल अजनबी व्यापारीक काज नहि, घरक भीतर अधिकारक असमानता सँ आरम्भ होइत अछि।

महुआ अपन माएक स्मृति करैत छथि। सतमाएक क्रूरता कैँ सभ सतमाएक स्वभावक रूपमे सामान्यीकृत करब उचित नहि; मूल कथा एक विशिष्ट पात्रक दोष चित्रित करैत अछि। सोलह बर्खक कन्याक आपत्तिजनक परिस्थिति पर एक वयस्कक सुरक्षा-संबन्धी उत्तरदायित्व कतेक आवश्यक अछि, से एहि अध्यायमे तीव्रतासँ उपस्थित अछि।

अध्याय ३ : विवश यात्रा

फूलमतीक सहचर्य आ ममता-अभावक सामाजिक पृष्ठभूमि

महुआ अनिच्छासँ घाट दिस जाइत छथि। बाटमे सखी फूलमती भेटैत छथि, आ दुनू रात्रि भरि गप करैत छथि। एहि संवादमे डर, भविष्यक अनिश्चितता आ घरक अपमान

सामने अबैत अछि। महुआ अपने माएक व्यवहारपर प्रश्न करैत छथि; एहि भावमे अपन सुरक्षाक नैतिक अधिकारक स्वाभाविक माँग अछि।

सतमाएक आर्थिक तर्क कठोर अछि : धनवान वा बूढ़ पथिकसँ सेवा बदला पाइ निकालब लाभजनक। एहि वचनमे बच्चाक श्रम, देह आ समय कैं परिवारक आर्थिक साधन मानबाक प्रवृत्ति अछि। अगिला अध्यायक गुप्त सौदा एहि दृष्टिक अन्तिम क्रूर रूप बनत। सखी फूलमती प्रेमक बात कहि महुआकैं ढाढ़स बन्हबैत छथि।

फूलमतीक सहचर्य करुणा दैत अछि, मुदा तत्काल संकट रोकबाक पर्याप्त संस्थागत सामर्थ्य नहि। नारीसखी एक मनोवैज्ञानिक आश्रय बनैत अछि; परिवारक शोषण रोकबाक सामाजिक साधन नहिएँ निर्मित भेल। एहिसँ कथाक परिवेशमे स्त्रीक उपस्थिति सहायक होइतहुँ असमान सत्ताक परिधि मे सीमित अछि।

अध्याय ४ : मोरंगक स्मृति

दूरक प्रेमक कल्पना आ घरक असह्य वर्तमान

मोरंगमे रहैत महुआक प्रियक स्मृति एहि अध्यायक आधार अछि। प्रेमी फागुनमे घुरि अएबाक आशा मूल पाठमे अछि, मुदा हुनक नाम अथवा निश्चित जीवनवृत्त विस्तृत नहि। तैं एतय कल्पित व्यक्ति-विशेषक परिचय जोड़ब अनुचित। महुआ लेल प्रतीक्षा घरेलू असहायता सँ अलग भविष्यक संभावना अछि।

घर घुरलाक बाद सतमाएक आरोप आ कटु वचन जारी रहैत अछि; पिता नशाक स्थितिमे छथि। महुआ अपना निजी आशा कैँ भीतर सहेजि राखैत छथि। कथाक अन्तमे हरकारा आबि सतमाएक कानमे गुप्त सन्देश दैत अछि। एहि सूचनाक विशिष्ट रूप तुरन्त नहि खुलैत; पाठकक पूर्वानुमान धोखाक निकटता बोध करबैत अछि।

मोरंगक याद महुआक स्वतंत्र इच्छाक एकमात्र शेष निजी क्षेत्र बनैत अछि। यैह भाव पछिला नदी-पलायनक प्रयासक दिशा निर्धारित करैत अछि। परंतु प्रेमक दूर भविष्यक इच्छाक कारण नदीमे उतरबाक अत्यधिक जोखिम स्वत: न्याय्य नहि बनैत—ई कथा भीतरक दुखान्त स्थितिक भाग अछि।

अध्याय ५ : धोखाक सौदा

मातृत्वक विश्वासघात आ मानव-व्यापारक अपमान

पाँचम अध्यायमे महुआ सतमाएक आदेश मानैत छथि, बिना एहि बातक ज्ञानक जे हुनकर देहक सौदा पहिनेसँ भऽ चुकल अछि। व्यापारी आ दू सिपाही संग नावपर बैसबाक दृश्य बाह्य रूपसँ सामान्य यात्रा अछि; भीतर ई बन्धक बनाबय लेल सजाओल परिस्थिति अछि। नायिकाक भरोसाकैँ ओकरा विरुद्ध उपयोग कएल गेल—ई अध्यायक केन्द्रीय नैतिक दुर्घटना अछि।

सिपाही जखन पतवार छीनैत छथि आ सौदागर हुनका कोरामे बैसब चाहैत अछि, तखन महुआ कैँ शंका होइत अछि। एहि क्रियामे नियंत्रणक अर्थ खुलैत अछि : यात्रा चुनबाक, नाव खेएबाक आ अपन देहक दूरी निर्धारित करबाक अधिकार हरायल। आर्थिक मूल्य

देकर स्त्री प्राप्त करबाक व्यापारीक दृष्टि मनुष्यक स्वतंत्र अस्तित्वक निषेध अछि। मूल कथाक भीतर एहिमे नायिका दोषी नहि, ओकर सामाजिक विश्वासकेँ तोड़निहार लोक दोषी छथि।

सतमाएक व्यवहार केँ ‘ममता’ कहि बुझब असम्भव; ई लोभक हिंसक रूप अछि। मुदा विस्तृत आलोचनामे पिता सहित व्यापक सामाजिक विफलता सेहो उपस्थित अछि—सोलह बर्खक युवती केँ कियो सुरक्षा नहि देलक। परिवारक निजी निर्णय सार्वजनिक अपराधक रूप लैत अछि।

अध्याय ६ : सौदागरक निर्ममता

वस्तुकरण, प्रतिरोध आ जीवन-जोखिमक भयावहता

छठम अध्यायमे सिपाही स्पष्ट कहैत अछि जे महुआ लेल सभ पाइ चुका देल गेल अछि। एक वाक्यमे ओकरा मनुष्य नहि, किनल वस्तु मानल गेल। एहि शब्दक आघात महुआक भीतर बौद्धिक स्पष्टता उत्पन्न करैत अछि—ओ बुझि जाइत छथि जे कोनो सामान्य सेवा लेल नहि, जबरदस्ती नियन्त्रण मे लऽ जाएल जा रहल छथि। एहि क्षण शोषणक सामाजिक रूप निर्बाध स्पष्ट अछि।

महुआ बाहरसँ स्थिर भऽ जाइत छथि, व्यापारी आ सिपाही हुनकर शान्ति केँ आत्मसमर्पण बुझैत छथि। मुदा नायिका भीतर स्वतंत्र रास्ता खोजि रहल छथि। नदीमे अचानक कूदब एहि संकटसँ बचबाक आवेगपूर्ण प्रयास अछि। मूल कथा एकरा अन्तिम

स्वतन्त्रताक चयन कहैत अछि, मुदा समीक्षा लेल ई स्वीकार करब जरूरी जे एहन प्राणसंकट पीड़िताक वास्तविक विकल्पहीनताक परिणाम अछि।

जीवन खतरा मे डालि पलायन करबाक घटना नैतिक महिमा–महिमामंडनक सरल कसौटी नहि। महुआक साहस आ अन्यायक प्रतिरोध मान्य अछि; पर मरि जाएब कैँ श्रेष्ठ समाधान कहब पीड़ितक जीवनक महत्त्व घटाएत। एहि अध्यायक आलोचनात्मक केन्द्र मानव-व्यापारक अपराधी सत्ता अछि।

अध्याय ७ : धारमे साहस

मुक्तिक प्रयास, प्रकृतिक असमान शक्ति आ दुखान्त

महुआ उल्टा धारमे मोरंग दिस तैरि निकलएबाक प्रयास करैत छथि। ओकरा लग प्रेमीधरि पहुँचबाक आशा अछि। परमानक भरल प्रवाह, थाकल देह आ कम उमरिक कारण खतरा अत्यधिक अछि। लोकगाथाक मानवीय केन्द्र एहि असमान संघर्षमे अछि—व्यक्तिगत प्रतिरोध महत्वपूर्ण होइतहुँ प्राकृतिक शक्ति अनियन्त्रित अछि।

सौदागरक छोटका सिपाही महुआक पाछाँ धारमे कूदैत अछि। मूल कथामे ओकरा महुआपर गुप्त अनुरागक भाव अछि, मुदा बचएबाक इच्छा आ अपना लेल प्राप्त करबाक चाह दुनू सम्भव कारण रहि जाइत अछि। एकरे निर्णायक प्रेरणा मानि कल्पना करब उचित नहि। अंततः दुनू डूबि जाइत छथि। कथक एहि परिणामकैँ करुण प्रेम-गाथाक दुखान्त रूपमे देखबैत छथि।

नदीक पानिमे महुआक मृत्यु एक सामाजिक प्रश्न छोड़ैत अछि—जँ सतमाए बिक्री नहि करितथि, व्यापारी बलपूर्वक नियन्त्रण नहि करैत, समाज सहायता पहुँचबैत, तँ ई प्राणहानि टारल जा सकैत छल। तैं गाथाक नैतिक केंद्र नायिकाक जीवन-समाप्तिक महिमा नहि, ओकरा एहन जोखिममे धकेलनिहार परिस्थितिक निन्दा अछि।

अध्याय ८ : घटवारिनक अमरता

लोकगीतक पुनरारम्भ आ अनुपस्थित देहक स्मृति

अन्तिम अध्याय कहैत अछि जे साओन–भादवक राति परमान धारमे महुआक छाया घटवार लोककेँ देखाइत अछि। लोककथा भीतर आत्माक पुनरुपस्थिति स्मृतिक सांस्कृतिक रूप अछि; एकरा बाह्य प्रत्यक्ष घटनाक वैज्ञानिक दावा नहि बनायब। जखन कोनो कथावाचक ओ रूप केँ देखैत अछि, कथा फेर पहिल वाक्यसँ शुरू होइत अछि। एही चक्रीय विन्याससँ नायिकाक जीवन लोकस्मृतिमे निरन्तर जीवित रहैत अछि।

महुआ गरीब, उपेक्षित युवती छलीह; बिक्रीक प्रतिरोधक कारण दुखान्त अन्त भेल। कृतिक अंतिम नामकरण 'अमरता' हुनकर साहस आ स्वतंत्रताक सांकेतिक स्वीकार अछि। मुदा सामाजिक अन्यायक दायित्व मृतकक प्रसिद्धिसँ मेटाइत नहि। लोकगाथा अंतमे स्मृति दैत अछि, वास्तविक जीवन ओकरा सुरक्षा नहि दे सकल—ई करुण विरोध आलोचनाक स्थायी केन्द्र अछि।

सामूहिक गीत महुआक नामक संरक्षण करैत अछि। नदीक जल, साओनक मौसम आ घटवारक चेतावनी कथाक पुनरावृत्ति सम्भव बनबैत अछि। ई लोककथात्मक अमरता नायकक जीवित उद्धार नहि, मृत्युपछिला स्मृति अछि; दू स्तरक अन्तर बनौने राखब जरूरी अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकगाथाक करुण संरचना आ वस्तुकरणक प्रतिवाद

‘महुआ घटवारिन’क केन्द्रमे एहन किशोरी अछि जकरा अपन जीवनपर निर्णायक अधिकार नहि भेटैत। उपक्रममे परमान नदीक स्मृति अछि; पहिल अध्यायमे घरक उपेक्षा; मध्य अध्यायसभमे परिवार आ सौदागरक सौदा; अन्तिम अध्यायमे नदीक भीतर प्राणहानि आ लोकस्मृतिक अमरता। एहि क्रममे कृति व्यक्तिक निजी शोक कैं सामाजिक अपराधसँ जोड़ैत अछि। महुआ अपन इच्छा सँ व्यापारक वस्तु नहि बनलीह; ओकरा बेचनिहार सतमाए, किननिहार सौदागर आ सहायता नहि देबयबला परिवेश कथा भीतर जवाबदेहीक विषय छथि।

देह, श्रम आ स्वायत्तता

नाव खेएब महुआक काज अथवा कर्तव्यक रूपमे सामने अबैत अछि। व्यापारीक सिपाही पतवार छीनि हुनकर आवागमनक नियन्त्रण सेहो हेरबैत अछि। पतवारक ई हस्तान्तरण वस्तुतः निर्णयाधिकार छीनबाक छवि अछि। नाव महुआक अनुभवमे रस्ताक साधन रहब छोड़ि कारागार बनैत अछि; धार एकाएक भागबाक सम्भावना आ घातक

खतरा दुनू बनि जाइत अछि। कथा बाह्य परिस्थितिक बलक सोझाँ छोट व्यक्तिगत स्वतंत्रताक संघर्ष रचैत अछि।

मातृत्वक सामाजिक आलोचना

मूल पाठमे सतमाएक लोभ आ कर्तव्यहीन पिताक नशाक कारण घर असुरक्षित अछि। बच्चाक माए-जकाँ देखभाल करबाक अपेक्षा आ सत्ता-सम्बन्धक वास्तविक क्रूरता बीच गहन अन्तर अछि। ई विशिष्ट सतमाएक अपराध अछि, समस्त सतमाएक मातृत्वक दोष नहि। आलोचकीय दृष्टिसँ स्त्रीक विरुद्ध हिंसा केवल अन्य स्त्रीक लोभपर आरोपित करि पुरुष पिता, व्यापारी आ सिपाहीक सक्रिय जिम्मेदारी मिटाएब नहि चाही।

मोरंगक प्रिय आ अधूरा भावजगत

मोरंगमे रहैत प्रेमी कथाक अपेक्षा-तत्त्व छथि। हुनकर आगमनक फागुन-आशा महुआक भीतर भविष्यक छोटक सम्भावना बनि टिकैत अछि। मूल कृति प्रेमीक नाम, विस्तृत संवाद वा बादक जीवन नहि रचैत; एहि मौनक भीतर महुआक निज भावनाकेँ महत्व भेटैत अछि। सखी फूलमतीक ढाढ़स सेहो एकटा स्त्रीक अनुभवक साझा भाषाक रूपमे उपस्थित अछि। तथापि सहचर्य संस्थागत संरक्षणक ठाम नहि लऽ सकैत।

साओन-भादव, लोकगीत आ जलरूपक

भरल धारक लोकगीतक चेतावनी कथाक प्रारम्भे अनिष्टक संकेत दैत अछि। साओन–भादवक आवर्तन प्रकृतिक कालचक्र अछि, आ महुआक कथा प्रत्येक वर्ष कथन द्वारा

पुनर्जीवित होइत अछि। एहि द्विविध आवर्तनमे व्यक्तिगत मृत्यु आ सामुदायिक स्मृतिक अन्तर मिलैत अछि। परमान सँ कोशीक धारा-दृश्य प्रति प्रस्थानक कल्पना महुआक पलायनक दिशाकेँ भूगोलसँ जोड़ैत अछि। मुदा नदीक आधिकारिक मानचित्र वा ऐतिहासिक घटना सिद्ध करबाक अपेक्षा मूल लोकगाथाक दृश्य-रचना अधिक निर्णायक अछि।

आत्मरक्षा, जोखिम आ जीवनक मूल्य

नावसँ कूदब महुआक सोझाँ खसल बन्धनक विरुद्ध आवेगपूर्ण प्रतिरोध अछि। एहि कर्मक भीतर स्वतंत्र रहबाक इच्छा स्पष्ट अछि, मुदा परिणाम अत्यन्त दुखान्त। लोकगाथाक बलिदान-विधान सम्मानक प्रतीक बनबैत अछि; आधुनिक नैतिक विवेक एतय अलग प्रश्न पूछैत अछि—की समाज ओहि किशोरी लेल जीबाक सुरक्षित मार्ग बना सकैत छल? उत्तर सकारात्मक सम्भावनाक दिश संकेत करैत अछि; पीड़ितक प्राणहानि सामाजिक सुरक्षाक विफलता अछि। साहसक सम्मान करब आ मृत्युकेँ वांछनीय बनायब एकसमान नहि।

कथनक दृश्य-गति आ रस

आठ अध्याय आ सोलह चित्र-संकेत लघु सचित्र कथाक तीव्र गति बनबैत छथि। घरक अन्हार, साओनक भरल धार, रातिक यात्रा, नावक सौदा, छीन्नल पतवार, नदीमे छलाँग आ अन्तिम छायाक दृश्यक्रम करुण प्रभाव बढ़बैत अछि। विरह-मिश्रित प्रेम आ भयक सहगमन करुण रसक प्रधानता स्थापित करैत अछि। किछु जगह कथावाचक

महुआक निर्णयक पवित्रता प्रत्यक्ष घोषित करैत छथि; स्वतंत्र आलोचना एहि प्रत्यक्ष निर्णयक सामाजिक परिणाम पूछबाक अवसर दैत अछि।

रचनात्मक सीमासभ

मूल कथा महुआक शोषणक कारण स्पष्ट करैत अछि, मुदा आर्थिक संरचना, सहायता देबाक सम्भावित व्यक्ति आ बचावक वैकल्पिक बाटसभक विस्तृत विकास नहि करैत। सिपाहीक महुआपर अचानक आकर्षणक विस्तार अल्प अछि। सतमाएक चरित्र पूर्णतया लोभी रूपमे चित्रित अछि; ओकर मानसिक जटिलता कम। महुआक मृत्यु कैँ अमर बलिदान कहि अन्तिम अर्थ दैत कथाकार अनिच्छित रूपसँ स्त्रीक जीवित अधिकारसँ ध्यान हटेबाक जोखिम लैत छथि। एहि सीमाक चर्चा पात्रक संघर्षक अवमूल्यन नहि, कृतिक विधागत समीक्षा अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘महुआ घटवारिन’ परमान घाटक लोकजीवनक धरातलपर किशोरीक स्वायत्तता, पारिवारिक विश्वासघात आ स्त्रीक मानव-व्यापारक विरुद्ध करुण प्रतिवाद रचैत अछि। लोकगीतक आवर्तन ओकर आवाज कैँ सामुदायिक स्मृतिमे टिकबैत अछि, मुदा मृत्यु कैँ वापस नहि करैत। एहि कारण कृतिक सबसँ प्रखर अर्थ महुआक बलिदानक महिमामे नहि, ओकर जीवनक रक्षा नहि कऽ सकनिहार परिवार आ समाजक आलोचनामे अछि। लोककथाक अमर स्मृति महत्वपूर्ण अछि; जीवित व्यक्ति कैँ सुरक्षा देब अधिक महत्त्वपूर्ण। ई गाथा एहि असमाप्त अन्तरक साहित्यिक साक्ष्य अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। महुआ घटवारिन : परमान नदीक तटपर एकटा अमर प्रेम-बलिदान। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क १०, PDF पृष्ठ ७५६–७९१।

कृति १२ : छेछन

उपक्रम : बलगर छेछन महराज

लोकदेवता, श्रमजीवी प्रतिष्ठा आ वीरताको सार्वजनिक दावा

उपक्रम छेछन कैँ डोम जातिक लोकदेवता आ असाधारण बलक धारक कहैत अछि। लोकगाथाक एहि प्रारम्भमे वीरक सामाजिक पहिचान प्रधान अछि—‘महराज’ सम्बोधन वंशगत सिंहासनक अधिकार नहि, श्रमिक समुदाय द्वारा प्रतिष्ठित लोकनायकक सांकेतिक पद बनैत अछि। बलक कथा पहिने सँ प्रेम आ सम्मानक सिद्धिसँ जोड़ल अछि, जाहि सँ पाठक समाजक केन्द्रमे परम्परागत राजनीतिक प्रभुत्व सँ अलग नायकत्व देखैत अछि।

गाथाक मूल प्रेरणा चुनौतीक घोषणा अछि : डंकापर चोट, भीषण पोसुआ सुग्गरसँ युद्ध, सरदारक संग दंगल आ पराजयपछाँ बहिनक विवाह। एहि पूर्ण क्रममे प्रेमक पुरस्कारक भाषा आ शक्ति-परीक्षाक आयोजन मिलैत अछि। आलोचना लेल एकटा प्रारम्भिक असुविधाजनक प्रश्न उपस्थित अछि—जकर विवाहक निर्णय दंगलक परिणति पर निर्भर, ओ पनमाक स्वतन्त्र इच्छा कतेक व्यक्त भऽ पाबैत छथि? मूल कथा एहि स्वीकृतिक स्वतंत्र विस्तार नहि दैत, अतः प्रश्न खुलल रहैत अछि।

अध्याय १ : सहिदापुरक चर्चा

बाँसक श्रम, अखराहा आ डंकाक सामाजिक नाट्य

पहिल अध्यायमे छेछनक साथीसभ सहिदापुर जाएबाक अनुभव सुनबैत छथि। ओ बाँसक टोकरी आ पटिया बेचबाक लेल गेल छलाह। ई छोट सूचना गाथाक लोकनायक कैँ श्रमिक–हस्तकला अर्थव्यवस्थासँ जोड़ैत अछि। सहिदापुरक सरदार मानिकचन्द अखराहा बनौने छथि, जतय पैघ डंका रखल अछि। डंका शक्ति-परीक्षाक सार्वजनिक निमंत्रण अछि, आ ओकर ध्वनि लोकसमाज कैँ एक स्थलपर जुटबैत अछि।

प्रथम प्रतिपक्ष मानव नहि, चटिया नामक पोसुआ सुग्गर अछि। ओकरा हरा सकलाक बादे मानिकचन्दसँ द्वन्द्वक पात्रता भेटत। एहि क्रममे असाधारण पशुबल सँ मानवीय बल धरि चुनौती बढ़ैत अछि। युद्धक रूपक कथा भीतर नायकक सामर्थ्य जाँचबाक अछि, मुदा पशुक प्राणक उपयोग मनोरंजन अथवा परीक्षा लेल करब आधुनिक प्राणी-कल्याणक दृष्टिसँ प्रश्नाधीन अछि।

अन्तिम शर्त—मानिकचन्दकैँ हरा सकल व्यक्ति पनमासँ विवाहक अधिकारी—गाथाक लैंगिक संरचना देखबैत अछि। डोम समाजक वीरता आ सामाजिक सम्मानक स्थापना कएल गेल अछि, मुदा पनमाक चुनाव एहि आयोजनक भाषामे अनुपस्थित अछि। ई रूपक बालपाठकक लेल विवाहक सहमतिक प्रश्न उठाएबाक अवसर दैत अछि।

अध्याय २ : चिलमक साहस

उत्तेजना, नशा आ आत्मविश्वासक विडम्बना

छेछन पाँच पसेरीक भारी कत्ता लऽ सहिदापुर पहुँचैत छथि। भारक अतिशयोक्ति लोकवीरक असाधारण देहक संकेत अछि; एकरा ऐतिहासिक रूपसँ मापल शस्त्र-वजनक प्रामाणिक अभिलेख नहि मानब। डंकापर चोट करबाक पहिने ओ एक वृद्धासँ आगि माँगैत, चिलममे विशेष पदार्थ भरि सेवन करैत छथि। मूल कथा एहि अवस्था केँ युद्ध-पूर्व साहसक तैयारीरूपेँ चित्रित करैत अछि।

यैह दृश्य आलोचनात्मक सावधानी माँगैत अछि। नशाक प्रभाव केँ वीरता, स्थिर मानसिक नियन्त्रण अथवा शरीरक आदर्श तैयारीक कारण मानब अनुचित अछि। लोकगाथाक भाषा ‘झुमैत’ नायक देखबैत अछि, मुदा आधुनिक बालपाठक लेल नशाक अनुकरणक सन्देश नहि निकालल जाए। वीरक साहसक वास्तविक साहित्यिक प्रतीक डंकापर चोट करबाक निर्णय अछि, नशाक साधन नहि।

डंका बजिते चुनौती सार्वजनिक होइत अछि। गाथाक ध्वनि एतय सूचना मात्र नहि, सामूहिक नाट्यक आरम्भ अछि। निजी तैयारी सँ अखराहाक खुलल संकल्प तक संक्रमणक गति बलिष्ठ अछि। एहि ध्वनिकेँ लोकप्रदर्शनमे वाचिक ठेकाक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि।

अध्याय ३ : चटियासँ द्वन्द्व

पशुबलक अतिशयोक्ति आ हिंसात्मक परीक्षा

मानिकचन्द छेछनक चुनौती सुनि चटिया सुग्गर कैँ अखराहामे बजबैत छथि। चटिया पहिने छेछनक रूप देखिते पाछाँ पड़ैत अछि; इहो घटना नायकक तेजक लोकगाथात्मक संकेत अछि। पनमा आ मानिकचन्द ओकरा फेर आक्रमण लेल ललकारैत छथि। पशुक प्रारम्भिक भय कैँ सम्मान देबाक बदला ओकरा जुझए लेल बाध्य करब शक्ति-उत्सवक क्रूर अन्तराल उजागर करैत अछि।

चटिया झपटैत अछि, छेछन ओकर दुनू पएर पकड़ि चीरि दैत छथि। मूल कथा एहि घातक क्रियाकैँ अद्भुत बलक सहज प्रमाण मानैत अछि। वीररसक कथाविधानमे अत्यधिक शरीरबलक दृश्य पाठकक रोमांच बढ़बैत अछि, मुदा प्राणीपर हिंसाक नैतिक प्रश्न तँ बचले अछि। बालसाहित्यक पाठमे बलक प्रदर्शन आ प्राणीप्रति करुणा समान रूपसँ आवश्यक मूल्य छथि।

डंका बजौने नायकक पहिल विजय एतय पूरक रूपमे भेटैत अछि : जतय दोसर सभ हेरायल, छेछन सफल होइत छथि। मुदा सफलता पशुक पीड़ापर टिकैत अछि। एहि दुहरे अर्थकैँ सुरक्षित राखब कृतिक विधा आ समकालीन नैतिक विवेक दुनूक सम्मान अछि।

अध्याय ४ : मानिकचन्दसँ दंगल

दू वीरक मुकाबला आ प्रतिस्पर्धासँ सम्मानक निर्माण

चटियाक पराजयक बाद मानिकचन्द अपन प्रण अनुसार छेछनसँ दंगल लड़ैत छथि। मूल कथामे दुनूकेँ सामर्थ्य, धैर्य आ कौशलक समकक्ष योद्धाक रूपमे देखाओल गेल अछि। असल कथा-तनाव ककरो पहिनेसँ नीच मानब नहि, दूनू वीरक बलक सार्वजनिक परीक्षा अछि। अन्ततः छेछन मानिकचन्द केँ पछाड़ि दैत छथि। एतय स्थानीय सरदारक प्रतिष्ठापर प्रश्न उठैत अछि, मुदा प्रतिस्पर्धा शत्रुतामे नहि बदलैत।

मानिकचन्द पराजय स्वीकारि प्रसन्न होइत छथि। हारक बाद प्रतिहिंसा नहि, वचनपालन गाथाक सामाजिक विशेषता अछि। पिछले लोकवीर गाथासभमे जमीन्दारी दम्भ पराजय स्वीकारबाक बदला हत्या-द्वारा शक्ति बचबैत छल; एतय अपना समुदाय भीतर सरदार सम्मानक बाट चुनैत छथि। एहि भिन्नतासँ जातिगत श्रमिक समाज केँ गरिमामय अन्तर्सम्बन्धक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मुदा पराजित सरदारक उदारता पनमाक इच्छा केँ स्वतः प्रतिष्ठा नहि दैत। हुनकर विवाहक निर्णय प्रतिस्पर्धा-जनित वचनक आधारपर होइत अछि। एही कारण गाथाक नैतिक उपलब्धि पुरुषसभक परस्पर सम्मानमे अछि, मुदा लैंगिक न्याय अलग प्रश्न रहैत अछि।

अध्याय ५ : पनमाक विवाह

वचनपूर्ति, सामाजिक सम्बद्धता आ स्त्रीक अस्फुट आवाज

मानिकचन्द पनमाक विवाह छेछनक संग करबैत छथि। कथा ई विवाह वीरताक मधुर फल कहैत अछि। छेछन अखराहाक योद्धासँ गृहस्थ जीवनमे प्रवेश करैत छथि; समूचा दंगल शत्रुताक बदला पारिवारिक सम्बन्धमे परिणत होइत अछि। एहि तरह उपक्रमक प्रेम–सम्मानक भविष्यसूचना सम्पन्न होइत अछि।

एहि सुखान्तक भीतर प्रश्न अछि—पनमा स्वयं विवाहक निर्णयक विषयमे की कहैत छथि? मूल संक्षिप्त पाठमे हुनकर स्वतंत्र सहमति वा असहमतिपर विस्तार नहि। एहि मौनकेँ ‘पनमा अवश्य प्रसन्न छलीह’ कहि भरब अप्रमाणित होयत। श्रमिक समाजक वीरताक गरिमा स्वीकार करैत आलोचनाक दायित्व अछि जे स्त्रीक आत्मनिर्णयक अनुपस्थिति सेहो रेखांकित करय।

कथाकार फेर आगाँक नब चुनौतीक संकेत दैत छथि। विवाहक सुख अन्तिम परिणति नहि; कृतिक दोसर खण्ड बसबिट्टी आ बाँसक अधिकारक विवाद सँ शुरू होयत। एहि परिवर्तनमे पारिवारिक जीवनक स्थिरताकेँ संपत्ति-संसाधनक संघर्ष तोड़ैत अछि।

अध्याय ६ : कृष्णारामक बसबिट्टी

बाँसक जीविका आ सम्पत्ति-अधिकारक टकराव

विवाह-पछाँ छेछन दोसराक बसबिट्टीसँ बाँस काटैत छथि। मूल कथा कारणक दू सम्भावना रखैत अछि—जीविकाक आवश्यकता वा पुरान अभ्यस्त आचरण। ई

महत्त्वपूर्ण अनिश्चितता अछि; एकरा बिना प्रमाण सुनिश्चित चोरी वा मान्य सामुदायिक अधिकार घोषित नहि करब उचित। स्रोत मात्र बतबैत अछि जे कृष्णारामक बसबिट्टीसँ अनेक बाँस बिनु अनुमति काटल गेल अछि।

यादव लोकदेवता कृष्णाराम एहि समाचारसँ क्रुद्ध भऽ सुबरन हाथीपर छेछन लग अबैत छथि। एतय दू लोकसमुदायक प्रतिनिधि वीर एक-दोसराक विरोधमे ठाढ़ छथि। पहिल अर्धभागमे डोम समाजक आपसी बलपरीक्षा छल, एखन संसाधनक प्रयोगपर समुदायगत विवादक रूप बनैत अछि। बाँस छेछनक समाजक टोकरी-पटिया उत्पादनसँ जुड़ल अछि; तैं ई महज वस्तु नहि, श्रमक आधार अछि। मुदा जीविकाक अधिकारक अर्थ परकिया संसाधनपर असीम अधिकार नहि।

कृष्णाराम छेछन कैँ पनमाक संग आमक कलममे सुतल देखैत छथि। एहि शान्त दृश्यपर हाथीक आक्रमणक सम्भावना युद्धक नैतिकता पर सवाल उठबैत अछि—विवादक उत्तर बात-चीत आ क्षतिपूर्तिसँ भऽ सकैत, अथवा शक्ति-प्रदर्शन आवश्यक? कथा वीरगाथाक परम्परा अनुसार दोसर रास्ता चुनैत अछि, मुदा आलोचक एहि निर्णयक समीक्षा करैत अछि।

अध्याय ७ : हाथीक शक्ति-प्रदर्शन

विरामपर समाप्त भेल द्वन्द्वक पूर्वावस्था

सुबरन हाथी छेछनक पाँच पसेरीक कत्ता सूँढ़सँ उठा कऽ हुनकर गरदनपर राखैत अछि। फेर अपन भारी पएर ओहि कत्तापर दैत छैक। ई बलक प्रदर्शन छेछनक देह-स्वाधीनता

कैं स्थिर करबाक प्रतीक अछि। अतिशयोक्तिपूर्ण दृश्य वीरक अपराजेय कथन कैं चुनौती दैत अछि—पहिने सुग्गर आ सरदार पराजित भेल, मुदा हाथीक भारक सोझाँ वीर क्षणभर विवश छथि।

स्रोतक अंतिम पृष्ठ एहि क्षणक बाद छेछनक अदम्य साहसक लोकस्मृति आ भावी संघर्षक संकेत दैत अछि। मुदा विस्तृत रूपमे हाथीक पएर हटाएब, कृष्णारामक पराजय, दंगलक अन्तिम दाँव अथवा नया समझौताक दृश्य मूल एहि सात अध्यायमे नहि भेटैत। तैं एतय काल्पनिक युद्ध-विजयक विशिष्ट वर्णन जोड़ब पाठकैं दूषित करत।

एहि अपूर्ण दृश्यरूपी अन्तक साहित्यिक महत्त्व अछि। कथा नायकक पूर्व पराक्रमक स्मृतिसँ भावी विजायक अपेक्षा बनबैत अछि, पर दृश्याभिलेख आखिरी शारीरिक द्वन्द्वक आरम्भमे थिर रहैत अछि। पाठक आ लोककथाकारक आश्वासन अलग रहैत अछि : कहानी कहैत अछि वीरक साहस स्मरणीय, मुदा देखाओल घटना एहि क्षणधरि सीमित। समकालीन शोध-समीक्षा एहि भेदक सत्यनिष्ठा राखब चाही।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

श्रमसँ लोकदेवत्व धरि नायकक सामाजिक स्थान

‘छेछन’क ऐतिहासिक वा धार्मिक सत्यापन सँ अलग साहित्यिक उपलब्धि डोम समाजक लोकवीर कैं कथाक केन्द्रमे स्थापित करब अछि। बाँसक टोकरी आ पटिया बेचएबक अर्थव्यवस्था पहिल अध्यायमे उपस्थित अछि, तकर बाद अखराहाक डंका वीरक योग्यता परीक्षणक साधन बनैत अछि। छेछनक ‘महराज’ प्रतिष्ठा केवल

असाधारण शरीरबलक नहि; अपन समाजक स्मृति आ सार्वजनिक स्वीकारक विषय अछि। एहि दृष्टिसँ गाथा समाजक श्रेणीबोध पर प्रतीकात्मक प्रतिवाद प्रस्तुत करैत अछि।

प्रतिस्पर्धा, वचन आ दंगलक लोकनीति

चटियासँ युद्धक बाद मानिकचन्दक सामना नियमानुसार होइत अछि। छेछन जीतैत छथि आ मानिकचन्द वचन निभबैत छथि। पराजयपछिला मित्रभाव लोकवीरगाथाक कम हिंसक सामाजिक सम्भावना अछि—प्रतिद्वन्द्वी बिना प्रतिहिंसाक सम्मान सँ जुड़ि सकैत छथि। तइयो एहि वचनक पुरस्कार पनमाक विवाह अछि। स्त्री कैँ विजयक पुरस्कार बनएबाक पुरान लोककथात्मक युक्ति समकालीन सहमति-केंद्रित दृष्टिसँ असहज अछि। पनमाक अपना आवाजक अल्पता समग्र कृतिक प्रमुख सीमा अछि।

बलक प्रदर्शन आ प्राणी-कल्याण

चटिया सुग्गर कैँ लड़बाक लेल ललकारब आ ओकर देह चीरब वीररसक उग्र दृश्य अछि। सुबरन हाथी द्वारा कत्ता उठाएब आ छेछन कैँ दबाएब अद्भुत शक्ति प्रदर्शन अछि। पशु एहि कथामे स्वतंत्र जीव नहि, मानव नायकक पराक्रम नापबाक साधन बनैत छथि। एहि कारण बालपाठक लेल प्राणीप्रति संवेदना आ पराक्रमक पारस्परिक सीमाबोध महत्त्वपूर्ण अछि। लोककथाक विधागत अतिशयोक्तिक सम्मान करैतहुँ पशुहिंसाकैँ नैतिक आदर्श नहि मानब।

नशा, साहस आ कथावाचकीय महिमा

डंकापर चोट करबाक पहिने चिलम सेवनक दृश्य कथाक भीतर साहस बढ़ेबाक तैयारीक रूपमे वर्णित अछि। मुदा नशा वीरताक आवश्यक वा सुरक्षित साधन नहि; कृतिक प्रसंगकेँ यथार्थ व्यवहारक अनुकरणीय आदर्श नहि बनायब। छेछनक नायकत्वक मूल्य सामाजिक साहस, संकट सहबाक सामर्थ्य आ दंगल-पछिला सम्बन्धक रूपान्तरणमे खोजल जाए, नशाक बाहरी उपकरणमे नहि।

बाँस, सम्पत्ति आ अधिकारक अधूरा विवाद

कृष्णारामक बसबिट्टीसँ बाँस काटबाक विवाद लोकजीविकाक सामग्री पर अधिकारक प्रश्न खोलैत अछि। कथा छेछनक काजक प्रेरणा निर्णायक रूपसँ स्पष्ट नहि करैत; जीवनयापनक अनिवार्यता वा आदतिक सम्भावना खुलल राखैत अछि। एहि अन्तरसँ एक गहन सामाजिक समस्या उभरैत अछि—काहाँ धरि श्रमिकक उपयोगाधिकार आ काहाँ सँ दोसरक सम्पत्तिक अतिक्रमण? गाथा एहि प्रश्नक समाधानक बदला हाथीक बल-प्रदर्शन पर पहुँचैत अछि।

कथानकक अपूर्ण दृश्य-समापन

मूल संकलनक सातम अध्याय कृष्णारामक सुबरन हाथीक भारक सोझाँ छेछनक संकट प्रस्तुत करैत अछि, अन्तमे लोकस्मृतिमे भावी विजयक उल्लेख करैत अछि। मुदा दृश्यगत पूर्ण दंगल, पराजय वा न्यायिक समझौताक विवरण ओतय नहि भेटैत। एकरा मौलिक कल्पनासँ भरब शोधक अनुचित विस्तार होयत। उलटे समीक्षा एहि अन्तरकेँ पुस्तकक आन्तरिक कथन-शिल्पक सीमा मानि चिन्हित करैत अछि। मौखिक गाथाक

संकेत-प्रधान रीति आ लिखित बाल-ग्राफिक आख्यानक अपेक्षित सम्पूर्ण घटनाक्रम बीच दूरी स्पष्ट होइत अछि।

अलंकार, रस आ दृश्यात्मक रूप

उपक्रम सहित सात अध्यायमे चित्र-संकेतक क्रम चौदह अछि। डंका, चिलम, सुग्गर, अखराहा, विवाह, बाँसक बसबिट्टी, सुबरन हाथी आ पाँच पसेरीक कत्ता—ई दृश्य-चिह्न लिखित घटनाकेँ शीघ्र छवि-क्रममे बदलैत अछि। वीर रस मुख्य; अद्भुत बलक अतिशयोक्ति; विवाहक मिलन-सुख आ अन्तिम संकटक भय सहायक भाव छथि। दंगलक दृश्य छोट पाठमे द्रुत घटैत अछि, मुदा पनमाक मनोवैज्ञानिक स्थिति विस्तार नहि पबैत। एहि संक्षिप्तताक बाल-साहित्यिक गति अछि, पर आलोचनात्मक चरित्रचित्रणक सीमा सेहो।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘छेछन’ डोम समाजक लोकदेवताक पराक्रमक कथा अछि, जतय श्रमजीवी हस्तकला सँ नायकत्वक प्रतिष्ठाक यात्रा आरम्भ होइत अछि। मानिकचन्दक संग निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा आ पराजयपछिला सम्मान महत्त्वपूर्ण साहित्यिक संकेत छथि। मुदा पनमाक स्वतंत्र इच्छा, पशुहिंसा, नशाक महिमामंडनक सम्भावना आ बाँसक अधिकारक अस्पष्टता समालोचक विवेक माँगैत अछि। सबसे महत्त्वपूर्ण जे मूल कथाक अन्तिम द्वन्द्व पूर्ण दृश्यरूपेँ विकसित नहि; ई अभाव ईमानदार पठनमे बचल रहबाक चाही। लोकदेवत्वक प्रतिष्ठा कथावाचकक विश्वास अछि, आ आलोचकक कार्य ओ विश्वासक

सामाजिक अर्थ, कलात्मक रूप आ नैतिक सीमा तीनू कैं समान गंभीरतासँ परखब अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। छेछन : डोम लोकदेवताक बल आ प्रेमक वीरगाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क ११; PDF पृष्ठ ७९२–८२३।

कृति १३ : गरीबन बाबा

उपक्रम : तीन संगी

अखराहाक समान मैत्री सँ लोकदेवताक दुखान्त धरि

उधरा गाम, कमला धारक किनार, आ तीनटा पहलमान संगी—बरहम ठाकुर, घासी यादव आ गरीबन धोबी—उपक्रमक मुख्य व्यवस्था अछि। तीन जातिगत परिचयक तीन युवक एकहि अखराहामे कसरत करैत छथि। एहि दृश्य सँ सामाजिक सहवासक आशावादी लोकप्रतिमा बनैत अछि; श्रम आ खेलक साझा मैदान मानवीय सहयोगक सम्भावना दैत अछि। मुदा आगामी घटनामे गरीबन एकटे प्राणदण्ड भोगैत छथि। प्रारम्भक समता आ परिणामक असमानता बीचक दूरी गाथाक महत्त्वपूर्ण अनकहल नैतिक तथ्य अछि।

कथावाचक एक अनजाने भूल सँ देवीक कोप आ लोकअमरताक यात्रा घोषित करैत छथि। एहि अग्रसूचनामे विचित्र विरोध अछि—जकरा मूल उद्देश्य अपराध करब नहि, ओकर मृत्यु दैवी दण्डसँ होइत अछि, पछाँ वएह लोकदेवता बनैत अछि। मृत्युपछिला प्रतिष्ठा प्राणहानिक नैतिक प्रश्न मेटा दैत अछि कि नहि? ई प्रश्न उपक्रमे उठैत अछि।

अध्याय १ : अनजान-सुनजानमे भूल

अनिच्छित स्पर्शपर अनुपातहीन दण्ड

उधरा गामक अखराहाक निकट कमला माइक पूजा-पीड़ी अछि। कसरतक बीच गरीबनक पएर ओहि पीड़ीमे अनजाने लागि जाइत अछि। मूल पाठ स्पष्ट करैत अछि जे ई जानबूझि कएल अपमान नहि। एहि तथ्यक नैतिक महत्त्व अत्यधिक अछि। क्रियाक बाह्य परिणाम आ कर्ताक उद्देश्य अलग रखला बिना न्यायसंगत निर्णय सम्भव नहि।

देवीक क्रोध त्वरित अछि। कमला मैया इन्द्रक दरबारसँ बाघिन अनबैत छथि, गरीबन कैं दण्ड देबाक लेल। लोककथा भीतर पवित्र स्थल सम्मानक नियम अछि, मुदा अनिच्छित स्पर्शक फलस्वरूप प्राणसंकट उत्पन्न करब धार्मिक-नैतिक न्याय पर तीक्ष्ण प्रश्न उठा रहल अछि। ई केवल भक्तिपरक डरक कथा नहि; न्यायक अनुपातक संकट सेहो अछि।

अध्याय गरीबनक दृष्टिसँ निश्चिन्त अभ्यासक क्षण कैं भयक आरम्भ बनबैत अछि। पवित्रता-रक्षक सत्ता आ निर्दोष मनुष्य बीचक असमान बलक परिणाम अगिला अध्यायमे भयंकर होयत। धर्मस्थानक सम्मान स्वीकार करैतहुँ अनिच्छित भूलक दण्ड पर आलोचनात्मक विवेक राखब सम्भव अछि।

अध्याय २ : बाघिनसँ युद्ध

देवीक प्रतिशोध आ मृतदेहक गरिमाक हरण

गरीबन कुश्तीक दक्ष खिलाड़ी छथि, मुदा बाघिनसँ युद्ध एक असमान संघर्ष अछि। अखराहाक शरीर-अनुशासन जकरा मनुष्यक संग मैत्रीपूर्ण अभ्यास बनएबाक छल, से एखन प्राणरक्षाक विवश संघर्ष बनैत अछि। कथक एहि युद्धमे गरीबनक हार आ मृत्युक वर्णन करैत छथि। जे दोष अनजाने स्पर्शक छल, तकर परिणति हत्या बनल।

गरीबनक लहास कमला धारमे फेंकि देल जाइत अछि। मृत्युक बाद सम्मानपूर्वक दाह-संस्कार सेहो नहि भेटब कृतिक करुणा दुगुना करैत अछि। देवीक पवित्र पीड़ी कैँ अनिच्छित स्पर्शसँ अपमान मानल गेल छल, मुदा मानवीय देहक मृत्यु-पछिला गरिमाक अधिकार उपेक्षित भेल। एहि विरोधमे धार्मिक पवित्रताक नामपर नैतिक असंतुलनक आलोचनात्मक सम्भावना अछि।

नायकक शारीरिक असाधारणता एहिठाम संरक्षण नहि दऽ सकल। लोकवीरगाथाक सामान्य विजयक बदलामे कथा शक्तिशालीक सोझाँ मनुष्यक कमजोरी दर्शबैत अछि। भक्ति-नायकक लोकदेवत्वक मार्ग वीरताक विजय सँ नहि, असहनीय अन्याय सँ आरम्भ होइत अछि।

अध्याय ३ : धोबीक अनादर

श्रमक बाधा आ मृतदेहक सामाजिक अधिकार

गरीबनक लहास कमला धारमे बहैत एक धोबिया घाटपर पहुँचैत अछि। ओतय दोसर धोबी कपड़ा धोबैत छथि। शवक उपस्थितिसँ हुनकर काजमे अवरोध उत्पन्न होइत अछि, आ ओ बिना मृतकक परिचय पूछने लहास कैँ दोसर दिस हटा दैत छथि। कथाक

भीतर दोसर आकस्मिक भूल पहिल भूलक बाद अबैत अछि। पहिल क्रिया पवित्र पीड़ीक अनिच्छित स्पर्श छल; दोसर क्रिया श्रमक बाधा दूर करबाक लेल मृतदेहक अनादरपूर्ण हटाएब अछि।

दुनू क्रियामे जानि-बुझि पवित्रताक अपमान करबाक इरादा स्पष्ट नहि। तथापि हुनकर नैतिक स्थिति एकसमान नहि। पहिल घटना मात्र आकस्मिक पएर लगब छल; दोसरमे धोबी जानि शव हटा रहल छथि, भले मृतकक सामाजिक सम्मानक परिचय नहि छल। शवक गरिमाक अधिकार परिचय आ हैसियत पर निर्भर नहि करबाक चाही—ई आधुनिक मानवतावादी विवेकक प्रश्न अछि।

घाटक धोबी स्वयं श्रमिक छथि। एहि कारण कथामे एक श्रमजीवीक देह दोसर श्रमजीवीक दैनिक जीविका लेल अवरोध बनि जाएब सामाजिक विडम्बना अछि। लोककथा व्यक्तिगत क्रियाकेँ सामुदायिक श्रापक आधार बनबैत अछि, मुदा समीक्षा लेल दोषक अनुपात आ सामूहिक दण्डक वैधता अलग प्रश्न रहैत अछि।

अध्याय ४ : कनियाँक आर्तनाद

शोकक सक्रिय वाणी आ मृतकक प्रतिनिधित्व

गरीबनक पत्नी पति-मृत्युक समाचार सुनि विलाप करैत छथि। हुनकर स्थिति कथा भीतर पहिल बेर निजी परिवारक असह्य शोक केँ स्पष्ट करैत अछि। गरीबन पहिने अखराहाक साथी, देवीदण्डक शिकार आ लहास बनि कथा मे चलि रहल छलाह;

पत्नीकेँ शोक प्रकट करैत देखि पाठक मृतकक निजी सम्बन्ध आ मानवीय जीवनक स्मृति पबैत अछि।

ओ भगवानक स्मरण करैत छथि। लोककथाक विधान अनुसार गरीबनक आत्मा एक व्यक्तिक शरीरमे प्रवेश करैत अछि आ ‘भगता’ रूपमे अपन कष्टक सूचना देबाक सामर्थ्य पबैत अछि। ई अलौकिक घटना मृतक केँ सामाजिक वाणी घुरा देबाक साहित्यिक युक्ति अछि—देह नष्ट भऽ गेल, मुदा अन्यायविषयक कथन बचल। पत्नी उत्प्रेरक छथि; हुनकर आर्तनाद मौन अन्याय केँ सार्वजनिक सुनवाई दिस आनैत अछि।

एहि प्रसङ्गक नैतिक गहिराइ एतय अछि जे कथा मृतकक न्याय माँगबाक अधिकार एक स्त्रीक शोकसँ शुरू करबैत अछि। तथापि मृतक केँ अपन देहगत जीवन पुनः नहि भेटैत; गाथाक प्रतिकारी समाधान सामूहिक सम्मानक होयत, मृत्युक निरस्तीकरणक नहि।

अध्याय ५ : श्राप आ चेतावनी

एक व्यक्तिक अनादर लेल पूरा समुदायपर दण्ड?

गरीबनक आत्मायुक्त भगता घोषणा करैत छथि जे धोबी समुदाय गरीबनक शव निकालि दाह-संस्कार नहि करत तँ कपड़ा सुखएबाक भट्ठीमे सब कपड़ा जरि जायत। लोककथा एहि श्रापक माध्यमसँ मृतदेहक सम्मानक सामूहिक महत्व स्थापित करैत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ मृत्यु-संस्कार केवल घरक निजी कर्म नहि; पूरा समुदायक न्यायमूलक उत्तरदायित्व बनैत अछि।

मुदा श्राप व्यक्तिगत क्रियाक दण्ड समस्त धोबी लोकक जीविकापर लगा दैत अछि। स्रोत एक व्यक्तिक व्यवहारक कारण बतबैत अछि; सभ धोबीक दोष नहि। तैं एहि सामूहिक दण्ड कैँ स्वयंसिद्ध न्यायसंगत कहब अनुचित होयत। ‘सभ धोबी’ संबोधनक नैतिक असंगति गाथाक अन्तर्विरोध अछि—जे कथा निर्दोष गरीबनक ऊपर अनुपातहीन दण्डक पीड़ा देखबैत अछि, वैह कथा फेर समूचा श्रमिक समुदाय कैँ भयभीत करैत अछि।

भट्ठी कपड़ा धोबैत समुदायक रोजी-रोटी सँ जुड़ल उपकरण अछि। श्राप हुनकर आर्थिक जीवनक मूल साधनपर केन्द्रित अछि। ई प्रतीकात्मक सामर्थ्य कथाक सामाजिक प्रभाव बढ़बैत अछि, मुदा भय-संचालित सुधार आ विवेक-संचालित न्याय बीचक अन्तर आलोचनात्मक दृष्टिसँ बचौने राखल जाए।

अध्याय ६ : सामूहिक प्रायश्चित्त

भय, सहयोग आ मृतकक सम्मानक पुनर्स्थापना

धोबी लोक शाप सुनि कमला धारमे उतरैत छथि, गरीबनक लहास तकैत छथि आ विधिपूर्वक दाह-संस्कार करैत छथि। एहि समूहक कर्मक साहित्यिक महत्त्व अछि : जे मृतक पहिने अनाम अवरोध बनि बहा देल गेल छलाह, आब समुदाय ओकरा सम्मानक योग्य व्यक्ति मानि खोजैत अछि। सामाजिक मान्यताक केन्द्र अब व्यक्तिगत उपयोगिता नहि, मानव गरिमा अछि।

कथावाचक एहि काज कैँ प्रायश्चित्तक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि। मुदा हुनकर प्रेरणा भय छल कि नैतिक जागृति, मूल पाठ दुनू सम्भावना रखैत अछि। केवल दैवी शाप टारबाक लेल शव उठाएब आ वास्तविक गलती स्वीकार करब अलग नैतिक स्तर छथि। एकरा पूर्ण सामाजिक परिवर्तन कहबाक लेल कथा भीतर भविष्यक व्यवहारक अधिक उदाहरण अपेक्षित होयत।

दाह-संस्कार पाछाँ भट्ठी सुरक्षित रहैत अछि आ गरीबनक आत्माकेँ शान्ति भेटैत अछि—ई लोकविश्वासक आख्यानगत परिणाम अछि। किन्तु संस्कार प्राप्त होएबा सँ गरीबनक प्राण घुरि नहि अबैत। नैतिक विवेचनमे एहि अपूरणीय क्षतिक स्मृति सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

अध्याय ७ : भट्ठीक रक्षक

मृत्युदण्डित मनुष्य सँ लोकदेवता धरि रूपान्तरण

अन्तिम अध्याय गरीबन बाबा कैँ भट्ठी आ कपड़ाक रक्षक लोकदेवताक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। जे धोबी समुदायक एक सदस्यक अनादरक शिकार भेल, आब ओही समुदायक जीविकाक सुरक्षाक प्रतिमा बनैत छथि। प्रतिशोध सँ संरक्षण दिस ई रूपान्तरण गाथाक अन्तिम नैतिक प्रस्ताव अछि।

कथक क्षमाक सन्देश दैत छथि। ई क्षमा स्वतः घटैत नहि; पहिने सामूहिक प्रयास, शवक सम्मान आ संस्कारक कर्म देखाओल गेल अछि। एहि कारण गाथा केवल देवताक कोप सँ बचबाक नुस्खा नहि, सामुदायिक व्यवहार बदलबाक लोकनीतिक

सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि। तथापि कथामे पहिल देवीदण्डक अनुपातहीनता सुधारेबाक स्पष्ट उत्तर नहि भेटैत। गरीबनक लोकदेवत्व ओकर अन्यायपूर्ण मृत्यु कैँ व्याख्यायित करैत अछि, न्यायिक रूपसँ मेटब नहि।

भट्ठी आ कपड़ाक रक्षकक रूपमे मृतकक स्मृति श्रमक दैनिक प्रक्रियामे बाँचल रहैत अछि। ई लोकस्मृतिक विशेष अर्थ अछि : मृतकक प्रति आदर जीवनक व्यवहारमे अनूदित भेल अछि। समस्त समाजक श्रमिक गरिमा आ मृतदेहक सम्मानक सन्देश कृतिक स्थायी उपलब्धि बनैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकभक्ति आ दण्डक अनुपातक संघर्ष

‘गरीबन बाबा’ लोकभक्तिक कथा होइतहुँ दिव्य निर्णयक नैतिक परीक्षा बनैत अछि। अखराहाक निकट पीड़ीमे अनजाने पएर लगब, देवीक बाघिन द्वारा प्राणदण्ड, मृतदेहक जलप्रवाह, दोसर धोबी द्वारा अनादर आ पत्नी द्वारा पुनः न्याय-माँग—ई घटना-क्रम पवित्रता आ मानवीय गरिमाक अलग मानक सोझाँ लैत अछि। मूल पात्रक अपराधक मंशा नहि छल, मुदा दण्ड अत्यधिक भेटल। एहि विरोधाभासकैँ केवल भक्ति-कथाक सामान्य नियम मानि टारब एकर सम्भावित सामाजिक आलोचना घटा देत।

ब्राह्मण, यादव आ धोबीक आरम्भिक मैत्री

बरहम ठाकुर, घासी यादव आ गरीबन धोबीक साझा अखराहा सामाजिक सह-अस्तित्वक दृश्य अछि। प्रारम्भक तीनू संगीक परिचय कथा भीतर जाति-भिन्नता मानैतहुँ शारीरिक अनुशासनक साझा स्थान प्रस्तुत करैत अछि। मुदा दैवी दुर्घटनामे गरीबन असगर मारल जाइत छथि। आगाँक न्यायप्रक्रियामे हुनकर साथीसभक स्वतंत्र भूमिका विकसित नहि। सामूहिक मैत्रीक सम्भावना आ नायकक असुरक्षित एकाकीपन बीचक दूरी रचनाक सामाजिक अर्थक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।

श्रमक साधन आ मृतकक प्रतिष्ठा

धोबीक घाट, कपड़ा धोएबाक काज, भट्ठी आ दाह-संस्कार—ई चारि वस्तुगत क्रिया गरीबनक कथा कैँ श्रमजीवी समुदायक जीवनसँ बाँधैत अछि। वस्त्रधोबीक छोट असुविधा मृतदेह कैँ फेर बहा देबाक कारण बनैत अछि; बादमे कपड़ा जरबाक श्राप ओहि समुदायक जीविकापर जोखिम आनैत अछि। लोककथाक अर्थ-विधान स्पष्ट अछि : जखन एक मनुष्यक देहक गरिमा उपेक्षित होइत अछि, तखन रोजीरोटी कैँ सेहो संकटग्रस्त अनुभव कएल जाइत अछि। तथापि जीविकाक क्षतिक भय सँ सुधार आ स्वाभाविक मानवीय आदर दुई भिन्न प्रेरणा छथि।

स्त्रीक शोक आ आवाजक पुनर्जन्म

गरीबनक पत्नी कथा कैँ व्यक्ति-विशेषक निजी जीवनसँ जोड़ैत छथि। हुनकर शोकक बाद मृतकक आत्मा भगताक देहमे बोलबाक अधिकार पबैत अछि। एहि रचनात्मक कल्पनामे मृतकक वाणी सार्वजनिक मंच पर घुरैत अछि। पत्नी मृत्युक बादो सामाजिक

न्यायक स्मृति बनौने रखैत छथि। यद्यपि हुनकर निजी जीवनक आगेक कथा विस्तृत नहि, एहि अध्यायमे वएह मौन अन्याय कैँ सुनाई पड़निहार कथामे बदलैत छथि।

शाप आ सामूहिक अपराधक असंगति

एक धोबीक भूलक दण्ड समस्त धोबी समुदायकैँ देबाक धमकी कथाक नैतिक दोषक केन्द्र अछि। देवदण्डक पहिल असमानता दोसर भय-उत्पादक प्रक्रियामे पुनरावृत्त होइत देखाइत अछि। एहिसँ क्षमाक अन्तिम उपदेश आलोचकीय प्रश्नक बिना पूर्ण नहि ठहरत। लोकसमाजक मिलि शव निकालब आ संस्कार करब सकारात्मक कर्म अछि, मुदा एक गोटेक दोषक आधारपर सभकैँ भयभीत करब न्यायिक अनुपातक दृष्टिसँ स्वीकार्य नहि। कृति धार्मिक-लोकविश्वासक कथन थिक, आधुनिक विधिक व्यवहारक उदाहरण नहि।

लोकदेवत्व : श्रद्धा आ शेष अन्याय

गरीबन भट्ठीक रक्षक लोकदेवता बनैत छथि। एकटा भूलक शिकार व्यक्ति मृत्युपछाँ समुदाय द्वारा आदरणीय बनब कृतिक प्रतीकात्मक समताक स्वर अछि। तथापि व्यक्ति कैँ देवत्व देब ओकर अन्यायपूर्ण मृत्युक न्यायोचित प्रतिस्थापन नहि। कथानकक समाहार श्रमिक स्मृतिक सफल पुनर्स्थापना अछि, मुदा मानवीय जीवनक अपरिवर्तनीय हानि सुरक्षित रहैत अछि।

करुण, अद्भुत आ दृश्य-लय

कृतिक सात अध्यायमे चौदह चित्र-संकेत भेटैत अछि। आरम्भक अखराहा आ पीड़ी, बाघिनक युद्ध, बहैत शव, घाटपर कपड़ा धोब, पत्नीक विलाप, भगताक वाणी, सामूहिक शव-उद्धार आ भट्ठीक रक्षा दृश्यात्मक आरोह बनबैत छथि। वीररसक आरम्भ शीघ्र करुणमे बदलैत अछि; आत्माप्रवेश अद्भुत प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; अन्तिम लोकदेवत्व शान्त भावसँ समापन करैत अछि। लेखकीय भाव-घोषणा कतिपय ठाम पाठकक स्वतंत्र नैतिक निर्णयक स्थान संकुचित करैत अछि, पर छोट अध्यायक क्रम लोककथाक वाचिक प्रभाव बनौने रखैत अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘गरीबन बाबा’ गरीबनक अनजाने भूल आ भारी दण्डक माध्यमसँ लोकधर्मक न्यायिक संकट खोलैत अछि। पत्नी द्वारा अन्याय कैँ आवाज देब, मृतकक गरिमाक सामूहिक पुनर्स्थापना आ कपड़ा-भट्ठीक संरक्षक लोकदेवताक प्रतिष्ठा कृतिक संवेदनात्मक उपलब्धि छथि। मुदा देवताक पहिल क्रोध आ पछिलका सामूहिक श्राप दूनू दोषक अनुपातसँ पैघ दण्डक प्रश्न अनुत्तरित छोड़ैत अछि। एहि असुविधाजनक अन्तर्विरोधक कारण ई कृति मात्र श्रद्धाक पाठ नहि, श्रम, मानवीय गरिमा, सामुदायिक जिम्मेदारी आ लोकन्यायक आलोचनात्मक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण आधार अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। गरीबन बाबा : अनजान-सुनजानमे भेल अपराधसँ देवीक कोप आ भक्तक अमरता। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क १२; PDF पृष्ठ ८२४–८५५।

कृति १४ : वर्णमाला शिक्षा : अंकिता

उपक्रम : अंकिता आ ओकर पिता

अध्यापन कैँ यात्राक अनुभवमे रूपान्तरित करबाक प्रस्ताव

उपक्रम स्वयं कृति कैँ आन बाल-उपन्याससँ भिन्न कहैत अछि। एकटा नान्हि बच्ची अपन पिता संग रस्ता चलैत अछि, आ यात्रा दौरान भेटनिहार गाछ, खेत, लोक, भोजन, आकाश, पशु आ ग्रामजीवनक घटना वर्णक्रमक शब्दसँ जोड़ल जाइत अछि। शिक्षा लेल ई महत्त्वपूर्ण युक्ति अछि : शब्दक अर्थ केवल परिभाषा नहि, अनुभूत दृश्य आ सम्बन्ध सँ बुझाओल जाइत अछि।

कथाक दार्शनिक आधार एतय भाषा कैँ जीवनक सहयात्री बुझब अछि। पिता प्रत्यक्ष शिक्षक छथि, मुदा अंकिताक प्रश्न आ जिद्द शिक्षाक दिशा बदलैत अछि। शिक्षक एकमात्र आज्ञा देनिहार नहि; शिष्यक जिज्ञासा वस्तु चुनैत अछि। तथापि उपक्रमक ‘पूरा वर्णमाला’क दावा आ पाठक वास्तविक खण्ड-विभाजनकैँ अलग जाँचब आवश्यक अछि : मूल अध्यायसभ प्रत्येक अक्षरक बराबर विस्तार नहि करैत, केवल चयनित वर्ण-वर्गक शब्द अधिक मात्रामे समेटैत छथि।

अध्याय १ : अ-वर्णक साँझ

बालकक देहगत थकान आ शब्दक आरम्भिक प्रसंग

पहिल अध्यायमे साँझ, चलबाक थाक, बालिकाक छोट पएर, रस्ताक लाल खाद्यवस्तु आ बोन-झाड़ जरएबाक आगि एके दृश्य-समूह बनबैत अछि। अंकिता थाकि जाइत अछि आ खाद्यवस्तु किनबाक जिद्द करैत अछि। पिता रोकैत छथि, फेर बच्चीक आग्रह मानि लैत छथि। एतय भाषा-अधिगम देहगत अनुभवपर आधारित अछि—भूख, थकान, चाहना आ देखल वस्तु शब्दसँ परिचित करबैत अछि।

‘अकादारुण’ सन शब्द अथवा अन्य अ-वर्णक दुर्लभ प्रयोगक उद्देश्य शब्द-सम्पदा बढ़ाएब अछि। मुदा प्रयोगक सन्दर्भ आ आयु-अनुकूलता जाँचना आवश्यक अछि। बालक लेल असामान्य शब्द तुरन्त याद नहि रहैत; कथाक वस्तु आ प्रश्नोत्तर ओकर अर्थसँ परिचय करा सकैत अछि। शब्द गढ़ल वा अप्रमाणित कहबाक पहिने मूल पृष्ठ आ मान्य कोश सँ स्वतंत्र मिलान अपेक्षित होयत।

बोन-झाँकुड़क आगि देखबाक प्रसंग नब शब्दक अवसर होइतहुँ पर्यावरणीय विचारक द्वार सेहो खोलैत अछि। कथा आगिक प्रयोजन बतबैत अछि, मुदा आगिक प्रभावक विशद चर्चा नहि करैत। बालपाठक प्रश्न कऽ सकैत अछि : किछु गाछ किएक बचल? आगि लगएबाक जोखिम की? एहि तरह दृश्यात्मक अध्यापन प्रश्नोत्तरक उत्तरसँ आगाँ विस्तार पाबि सकैत अछि।

अध्याय २ : छाहरिमे विश्राम

उ-वर्णक ध्वनि, शरीरक विश्राम आ उच्चारणक चुनौती

पिता-पुत्री गाछक छाहरिमे बैसैत छथि। अंकिता उकड़ू आसनमे बैसैत, ‘उखी-बिखी’क अनुभूति कहैत, उकापतङ्ग देखैत आ विषाक्त रोइआँवाली लत्तीक सन्दर्भ सुनैत अछि। एहि दृश्यमे उच्चारणक स्तरपर ‘उ’ आरम्भवला शब्दसभक पुनरावर्तन अछि। ध्वनि-पैटर्न स्मरणमे सहयोग करैत अछि, मुदा अत्यधिक अनभिज्ञ शब्द एकसाथ दएला पर अर्थबोध दबि सकैत अछि।

शब्दक अभिधेय वस्तुक प्रत्यक्ष अनुभूति आ दूरक कल्पनाबीचक भेद महत्त्वपूर्ण अछि। उकड़ू बैसब अनुभवित क्रिया, आकाशमे उड़ैत वस्तु देखब दृश्य, मुदा विषाक्त लत्तीक ज्ञान सावधानीक सूचना अछि। पिता एकहि यात्रामे शरीर, आकाश आ वनस्पतिक शब्दोपदेश दैत छथि। बालिका कैं सन्दर्भ बदलबाक गति कहियो तेज बुझा सकैत अछि; शिक्षणमे चित्र, क्रिया आ पुनरावृत्ति सँ एहि अन्तरकैं सरल बनाओल जा सकैत अछि।

प्रश्नोत्तरक उपयोग शिक्षण-मूल्याङ्कन अछि। तथापि उत्तर केवल शब्द दोहराबए तक सीमित रहलासँ अर्थ-प्रयोगक परीक्षा नहि होइत। ‘उकड़ू कोना बैसल जाइत अछि?’ अथवा ‘विषाक्त लत्ती छूला पर की सावधानी?’ सन उपयोग-प्रश्न अधिक गहन भाषा-बोध जाँचि सकैत अछि। ई कृतिक पाठमे नब घटना जोड़बाक बात नहि, शिक्षण-पद्धतिक आलोचनात्मक तुलना अछि।

अध्याय ३ : क-वर्गक खेत आ घर दिस घुरब

ग्रामजीवनक शब्द-सम्पदा आ वर्ण-वर्गक व्यवहार

अगिला दृश्य खेत, मचान, रखबारी, इजोरिया, कदबा आ कमरसारिक उल्लेखसँ बनैत अछि। बच्ची हरियरी देखैत प्रसन्न होइत अछि; पिता घर निकट अएबाक समाचार सुनबैत छथि। एहि प्रसंगक साहित्यिक महत्त्व अछि जे शब्द-संग्रह अब मात्र असाधारण वस्तु नहि, किसानक श्रम आ गामक स्थानीय संरचनाक परिचय बनैत अछि।

वर्ण-वर्गक शीर्षक ‘क-वर्ग’ कहल गेल अछि, मुदा पाठमे भिन्न आरम्भिक ध्वनिक शब्द सेहो उपस्थित छथि। एकरा ध्वन्यात्मक पाठक पूर्ण शुद्ध प्रयोग मानबाक बदला चयनित शब्दसमूहक कथा-बद्ध प्रस्तुति बुझब उचित। गामक लोहार-व्यवसाय अथवा कमरसारिक सन्दर्भ बालक कैँ स्थानीय व्यवसाय आ उपकरणक पहचान दैत अछि। ई शब्दसभ भाषिक धरोहरक महत्वपूर्ण हिस्सा छथि।

कृतिक प्रश्नोत्तर स्मरण-आधारित अछि। अध्याय पढ़ैत विद्यार्थी स्थानीय शब्द सीखि सकैत अछि, मुदा यदि ओकर गाममे ओ वस्तु प्रचलित नहि तँ शिक्षककेँ दृश्य-सामग्री देबाक आवश्यक होयत। एहि तरह कृति स्थानीयता कैँ व्यापक मैथिली बाल-शिक्षाक संसाधन बनएबाक सम्भावना रखैत अछि।

अध्याय ४ : चौपर आ चिक्कन बाट

च-वर्गक ध्वनि आ घरक निकटता सँ उत्पन्न उल्लास

गामक चौपर पहुँचते बच्ची उत्साहित होइत अछि। पिता चिक्कन बाट पर चटपट चलबाक कहैत छथि। चम्पाक गाछ, चान आ घरक चिन्हार गली दृश्य-क्रममे जुड़ैत

अछि। ‘च’ ध्वनिक कई शब्दक समीपता काव्यात्मक अनुप्रास रचैत अछि; वाक्य सँ शब्द, शब्द सँ भाव आ भाव सँ दृश्य बनैत अछि।

पिताक आग्रह आ अंकिताक चञ्चलता कथाक लघु तनाव अछि। बच्ची गाछक गन्ध आ चानक इजोत देखि ठाढ़ होएब चाहैत अछि, पिता घर शीघ्र पहुँचबाक पक्षमे छथि। एहि विपरीत इच्छासँ पाठ मात्र शब्द-संग्रह नहि रहैत; पात्र-दूनूक सम्बन्ध ओकर कथा बनबैत अछि।

अनुप्रासक उपयोग सफल अछि, मुदा सन्दर्भमे अस्वाभाविक रूपसँ शब्द ठूसल गेल तँ भाषा यान्त्रिक भऽ सकैत अछि। एहि अध्यायमे परिचित चौपर, चम्पा आ चानक क्रम भाषा कैँ अपेक्षाकृत स्वाभाविक बनाएत अछि। कथात्मक प्रवाह आ ध्वनि-अभ्यासक संतुलन एकर उपलब्धि अछि।

अध्याय ५ : टोलक गाछ आ टाहि

ट-वर्गक शब्दक संग रात्रिक ग्राम्य-संसार

पाँचम अध्यायमे टोलक गाछ, टाहि मारि बाजनिहार पक्षी अथवा रात्रिचर ध्वनि, डिहबार स्थानक दीप, टटका रोटी आ कुकुरक उपस्थिति अछि। आरम्भमे शब्द-ध्वनिक खेल रहितो एतय ग्रामजीवनक धार्मिक, खाद्य आ प्राणी-जगतक तीनू क्षेत्र एकसंग उपस्थित छथि। बालिका भूखक बात कहैत अछि, पिता घर पहुँचला पर भोजन भेटबाक आश्वासन दैत छथि। छोट जिद्द आ प्रेमपूर्ण उत्तर सँ कथा अपन घरेलू विश्वसनीयता रखैत अछि।

ट-वर्गक अभ्यासमे बारम्बार ‘ट’ ध्वनि प्रयोग शब्दक संगीत रचैत अछि; तथापि एहि पृष्ठमे डिहबार सन आन वर्णक स्थानीय शब्द सेहो अछि। वास्तविक वर्णमाला-शिक्षा मे अक्षर आरम्भक वर्ग आ दृश्यविषयक शब्द अलग छाँटल जाए तँ कक्षा मे स्पष्टता बढ़त। साहित्यिक पाठमे दृश्य आ अर्थगत सम्बन्ध आवश्यक अछि; केवल ध्वनिक समानता कथा कैं यान्त्रिक बना सकैत अछि।

डिहबारक ग्रामदेवता-स्थल आ टटका रोटी मिलि शाब्दिक विद्यालय सँ अलग जीवनक अनौपचारिक पाठशाला स्थापित करैत अछि। बच्चा कैं शब्दक संग सामाजिक परम्परा, घरक भोजन आ रात्रिक भय–विश्वास सेहो भेटैत अछि। इएह कृतिक सांस्कृतिक मूल्य अछि, जँ शिक्षक धर्मस्थानक वर्णन कैं तथ्य आ आस्थाक सीमामे राखि अध्ययन कराबथि।

मूल मुद्रणमे छठम स्थानपर ‘अध्याय ३ : तरेगण’

त-वर्गक चञ्चलता, तारामण्डल आ पाठ-संख्या विसंगति

‘तरेगण’ नामक अध्याय मूल क्रममे ट-वर्गक बाद, प-वर्गक पहिने अछि, तैं वास्तविक पाठक्रममे छठम खण्ड अछि। मुदा मुद्रित शीर्षक फेर ‘अध्याय ३’ दैत अछि। ई सम्पादकीय दोष अंकगणनाक संग अनुक्रमणिका बनएबाक समयो भ्रम उत्पन्न कऽ सकैत अछि। मूल स्रोतक प्रमाण सुरक्षित रखि प्रकाशनसम्पादक हेतु सुधार-प्रस्ताव चिन्हित करब उचित, मुदा समीक्षामे मूल संख्या बिना सूचना बदलि नहि देब।

कथामे अन्हार गहींर भेला पर तरेगण चमकैत अछि। अंकिता तेज चलबाक लेल तामसाइत अछि; पिता बुझबैत छथि जे जल्दी घर पहुँचि आराम करब उद्देश्य अछि। शिकायत मिटि जाएबक प्रसंग परिवारक भाषिक विनिमय देखबैत अछि : बालिकाक प्रतिरोध, पिताक आश्वासन आ अन्तमे संतोष। ध्वनि-अभ्यासक पाछाँ एहने भावात्मक संबंध कथा कैँ रोचक बनबैत अछि।

आकाशक तरेगण गनबाक दृश्य मात्र अक्षर-ज्ञान नहि, संख्या, दूरी आ प्राकृतिक निरीक्षणक रुचि जगा सकैत अछि। मुदा मूल प्रश्नोत्तर मुख्यतः शब्द-स्मरणक जाँच अछि। तरेगणक चमक कतेक, घर जल्दी किएक जाएब, थकल देहक आरामक महत्त्व—ई खुलल प्रश्न भाषा कैँ विचारक साधन बना सकैत अछि। कथा एहि सम्भावनाक आधार दैत अछि, पर प्रत्येक संभावना के मूल लिखित घटना नहि कहल जाए।

अध्याय ७ : प-वर्गक पड़ाव

घर-वापसी आ उपलब्धिक सामाजिक मान्यता

अंकिता आ पिता घरक द्वारपर पहुँचैत छथि। माए प्रतीक्षा करैत छथि, बालिका खुशी सँ दौड़ि हुनकर कोरामे जाएत अछि। पिता बच्चीक धैर्यक प्रशंसा करैत छथि। ‘प’ आरम्भवला शब्द—पएर, परिश्रम, प्रतीक्षा, प्रसन्नता, पुरस्कार आ पूर्णता—घर घुरबाक अनुभवसँ जुड़ैत अछि। एहिमे ध्वनि-व्यवस्था आ भावात्मक समापनक संतुलन अछि।

यात्राक लम्बाइ बच्चीक कष्टक कारण छल, मुदा पूरा रास्ता चलि घर पहुँचब ओकर छोट उपलब्धि बनैत अछि। पिताक प्रशंसा प्रोत्साहनक रूप अछि। तथापि शिक्षणमे कठिन काजक प्रशंसा बच्चाक क्षमताक अनुकूल होएबाक चाही; प्रत्येक बालकक गति भिन्न अछि। अंतिम शिक्षक-टिप्पणी एहिमे विस्तार करैत अछि।

माएक उपस्थिति कथा मे घरक भावात्मक पुनर्स्थापना अछि। पिता संगे बाहरक अनुभव, माएक कोरामे ओकर कथात्मक पुनरावृत्ति—एहि द्वि-प्रक्रियामे शिकनिहार बच्चा पहिले अनुभव करैत अछि आ फेर अपन भाषा मे कहैत अछि। स्मरण, पुनर्कथन आ सामाजिक संवादक त्रयी बालशिक्षाक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि।

अध्याय ८ : वर्णमालाक अन्तिम चरण

य सँ ह धरि चयनित शब्द आ पुनर्कथनक परीक्षा

घर पहुँचलाक बाद अंकिता माएक कोरामे बैसि यात्राक खिस्सा कहैत अछि। पाठमे ‘यमुना’, ‘रजनी’, ‘लस्सा’, ‘बोन’ आ ‘हर्ष’ सन लक्ष्यशब्द दैत वर्णमालाक शेष भागक प्रतिनिधित्व कराओल गेल अछि। एहि खण्डमे कृतिक यात्रा-बाह्य जीवन पुनः कथित होइत अछि। बालिका शिक्षकक शब्द केवले सुनैत नहि; स्वयं कथावाचक बनैत अछि। भाषाअधिगमक दृष्टिसँ ई पहिने दृश्यक पुनःउत्पादनक महत्त्वपूर्ण चरण अछि।

तथापि एहि शब्द-संग्रह आ प्रश्नोत्तरमे आन्तरिक मिलान पर परीक्षा आवश्यक अछि। स्रोतक एक प्रश्नमे ‘टहाटही’क अर्थसँ असम्बद्ध ‘रजनी’ उत्तर लिखल देखाइत अछि; एकरा असंगत उत्तरक रूपमे सम्पादकीय सूचीमे अंकित करब चाही। मुदा मूल पृष्ठक

पुनर्परीक्षणक बादे निश्चित सुधार स्थिर कएल जाए। प्रश्न, लक्ष्यशब्द आ उत्तर यदि एक-दोसरासँ नहि मिलल तँ बालपाठक गलत अर्थ सीखि सकैत अछि।

मुद्रणमे एहि खण्डक संख्या अरबी ‘8’ रूपमे अछि, जखन कि पहिनुक अधिकांश अंक देवनागरी रूपमे। एक रूपेँ अंक-प्रयोग प्रकाशनक सौन्दर्य आ शिक्षार्थीक स्पष्टता बढ़ाएत। 'य–ह'क समग्र अक्षरसमीक्षा बहुत संक्षेपमे अछि; तैं पूर्ण वर्णमालाक व्यवस्थित शिक्षण लेल अतिरिक्त तालिका, लिखन-अभ्यास वा स्पष्ट ध्वनि-वर्गीकरण उपयोगी होयत।

अध्याय ९ : शिक्षकक टिप्पणी — आगाँक यात्रा

कथाक अन्तसँ शिक्षणक आरम्भ धरि

अन्तिम अध्याय परम्परागत आख्यानक नया घटना नहि, शिक्षण सम्बन्धी प्रत्यक्ष टिप्पणी अछि। एहि मे अभिभावक आ शिक्षक कैँ नव-नव कथा रचि वर्ण-आरम्भिक शब्द भरेबाक सुझाव देल गेल अछि। एतय पोथी स्वयंपर्याप्त बन्द वस्तु नहि रहैत; पाठक कैँ आगामी रचनामे भाग लेबाक निमंत्रण दैत अछि। ई शिक्षणक सक्रिय पद्धतिक दिशा अछि।

टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे एक खिस्सा कतेक बेर सुनाएब बच्चाक क्षमता आ शब्द-संख्याक हिसाबसँ निर्धारित करबाक चाही। भाषाशिक्षामे एकर उपयोगी सिद्धान्त अछि : सीखबाक गति एकरूपी नहि। पुनरावृत्ति शुद्ध पाठ-स्मरण बनि जाए तँ अभ्यास

सीमित रहत; दृश्यसँ नव शब्द बनब, वाक्य कहब आ अपन खिस्सा रचब सृजनात्मक भाषा-कौशल बढ़बैत अछि।

शिक्षकक टिप्पणी मूल कथाभूमिक बाहर ठाढ़ भऽ कृतिक उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि। साहित्यक दृष्टिसँ ई कथाक सौन्दर्यक प्रवाह रोकैत अछि, मुदा शैक्षिक ग्रन्थक दृष्टिसँ ओकर उपयोगिता बढ़बैत अछि। विधागत विशेषता एहि संयोगमे अछि—आख्यान आ शिक्षक-मार्गदर्शनक संयुक्त रूप।

समेकित आधुनिक साहित्यिक आ भाषा-शैक्षिक समीक्षा

विधा : उपन्यास, बालकथा कि वर्णाधारित पाठ्य-आख्यान?

मूल संकलन एहि कृतिकेँ ‘बाल ग्राफिक उपन्यास’ समूहमे रखैत अछि, मुदा एकर संरचना पारम्परिक उपन्यास सँ भिन्न अछि। मुख्य घटना पिता-पुत्रीक एक साँझक यात्रा अछि; विस्तृत कथानक, अनेक समान्तर चरित्र-संघर्ष वा दीर्घ कालक्रम नहि। कृतिक केन्द्र वर्ण-आरम्भिक शब्द चुनब, ओकरा दृश्यसँ जोड़ब आ प्रश्नोत्तरद्वारा स्मरण कराएब अछि। एहि आधारपर 'शब्दशिक्षात्मक बालकथा' अथवा 'वर्णाधारित कथात्मक पाठ' एकर विधागत कार्यक अपेक्षाकृत सटीक आलोचनात्मक नाम अछि। मूल प्रकाशकीय वर्गीकरण बदलल नहि जाए, मुदा समीक्षा ओकर स्वरूप विश्लेषित करि सकैत अछि।

मैथिली स्थानीयताक पाठ्य-महत्त्व

अंकिताक यात्रामे चौपर, चम्पा, डिहबार, टटका रोटी, गामक मचान, खेत, कमरसारि, उकड़ू बैसब आ तरेगणक शब्दसभ अछि। ई शब्दक जगत मैथिली लोकजीवनक भौतिक अनुभवसँ बनल अछि। जे बालक पुस्तकक गामक बाहर रहैत अछि, तकरा लेल चित्र, श्रव्य उच्चारण आ प्रसंग-अनुवाद महत्त्वपूर्ण समर्थन भऽ सकैत अछि। कृतिक सामर्थ्य भाषा कैँ जड़ि सँ जोड़बमे अछि; सीमा एहि स्थानीय शब्दक कठिनाईक स्तर बच्चाक आयु अनुसार पहिले सँ श्रेणीबद्ध नहि होएब अछि।

ध्वनि, दृश्य आ अर्थबीचक सम्बन्ध

अ, उ, क, च, ट, त, प आ य–हक चुन्हल समूहसभ यात्रा कैँ ध्वनि-आधारित चरणमे बाँटैत अछि। अनेक अध्यायमे अनुप्रास उत्पन्न होइत अछि; बच्चा समान आरम्भिक ध्वनिक शब्द के एक कुटुम्बक रूपमे सुनि सकैत अछि। मुदा ध्वनिक समरूपता अर्थबोध सँ अधिक महत्वपूर्ण मानल गेल तँ कठिन शब्दक अत्यधिक जमघट सम्भव अछि। प्रभावी पठनमे शब्द पढ़ब, ओकर अर्थ बुझब, अपन वाक्यमे प्रयोग करब आ दोसर परिवेशमे पहिचानब चारि अलग चरण मानब आवश्यक अछि।

प्रश्नोत्तर : उपयोगिता आ पाठ-संगति

प्रत्येक खण्डक अन्तमे प्रश्नोत्तर अछि—ई कृति कैँ पढ़बैत शिक्षक लेल तत्काल सहारा अछि। मुदा प्रश्नसभ प्रायः एक शब्दक स्मरण पूछैत छथि। वास्तविक अर्थग्रहण लेल वर्णक पहिचान, पर्याय-अर्थ, प्रसंगमे वाक्यनिर्माण आ मुक्त प्रश्नक संयोजन अधिक उपयोगी होयत। स्रोतक प्रश्नोत्तरमे भेटल असंगत शब्द–उत्तरक चिह्नित स्थलक

पुनःप्रमाणन जरूरी अछि। शुद्ध पाठक अपेक्षा कृतिक आलोचना कैं अधिक स्पष्ट बनबैत अछि, एकर रचनात्मक प्रयोगक मूल्य घटबैत नहि।

चरित्र आ भावात्मक पाठशाला

पिता धैर्यवान शिक्षकक रूपमे उपस्थित छथि। बच्चीक थाक, जिद्द, आश्चर्य आ कौतूहल कभी-कभी पिताक शीघ्र घर पहुँचबाक इच्छासँ टकराइत अछि। माए अन्तिम प्रसंगमे बच्चीक पुनर्कथनक श्रोता छथि। एहि त्रिपक्षीय सम्बन्धमे घरक अनौपचारिक शिक्षा सँ साहित्यिक रस बनैत अछि। कृति मात्र अक्षरक सूची नहि, भरोसपूर्ण परिवारक यात्रा सेहो अछि। तइयो बच्चाक स्वतन्त्र प्रश्न अधिक विस्तृत भेल रहित तँ संवादक स्वाभाविकता आरो बढ़ि सकैत छल।

चित्रात्मक विधान

मूल कृतिमे अध्यायसभक संग अठारह चित्र-संकेतक क्रम अछि। चित्रक नियत आवर्तन पाठक कैं शब्द आ दृश्यक बीच सम्बन्ध बनएबाक अवसर दैत अछि। बालकक गाछ, चौपर, आकाश, राति आ घरप्रवेशक अवस्थासभ छवि-अध्ययनक अनुकूल विषय छथि। चित्रक वास्तविक रंग-संयोजन, कलात्मक रेखा वा दृश्य-भीतरी लिपि विषयक निर्णायक दावा सभ चित्रक अलग निरीक्षण बिना नहि कएल जा सकैत अछि।

पाठ-सम्पादनक दायित्व

छठम पाठ-स्थलपर ‘अध्याय ३’क पुनरावृत्ति, आठम खण्डक रोमन संख्या, विशिष्ट प्रश्नोत्तरक असंगति आ कठिन शब्दक मानक वर्तनी एहि कृतिक अन्तिम प्रकाशन-परीक्षणक विषय छथि। एकर मूल पाठक आवृत्ति नुका कऽ परिष्कृत अनुक्रमा बना देब ईमानदार पाठालोचन नहि। प्रथम चरणमे स्रोत-पाठक रूप सुरक्षित, दोसर चरणमे पृथक संशोधनसूची, तेसर चरणमे अधिकृत सम्पादकीय मिलान अपेक्षित अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘वर्णमाला शिक्षा : अंकिता’ बालसाहित्यक शिक्षात्मक रूपक एक सचेत प्रयोग अछि। एक नान्हि बच्चीक थाकल साँझक यात्रा स्थानीय मैथिली शब्द-संसारक सहारे अक्षराधारित अन्वेषण बनैत अछि। प्रश्नोत्तर आ शिक्षक-टिप्पणी कृतिमे व्यवहारिक अधिगमक मूल्य जोड़ैत अछि। एकर सीमा अध्याय-संख्याक असंगति, प्रश्नोत्तरक किछु त्रुटि, कठिन शब्दक अत्यधिक संकेन्द्रण आ वर्ण-वर्गक असमान विस्तार अछि। तइयो कथा-सन्दर्भक सहारे भाषा सीखब खेल, स्नेह आ अनुभवक प्रक्रिया बनि सकैत अछि—ई कृतिक स्थायी साहित्यिक-शैक्षिक उपलब्धि अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। वर्णमाला शिक्षा : अंकिता — अंकिताक संग वर्णमाला-यात्रा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, क्रम १३, PDF पृष्ठ ८५६–८९७।

कृति १५ : गांगोदेवीक भगत

उपक्रम : धारक पुत्री गांगो

साधारण श्रमजीवी स्त्रीक नामक लोकसांस्कृतिक महत्त्व

उपक्रम गांगोदेवी कैँ साधारण मलाहिनक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, मुदा पति द्वारा हुनकर स्मरणसँ लोकगाथाक अलौकिक शक्ति आकार लैत अछि। सामान्य लोकवीरगाथामे तलवारि, बाघ, शाप वा अत्याचारीक संग संघर्ष प्रधान होइत अछि; एतय जाल, माछ, ऋतु, बाजार आ चूड़ी–लहठी अछि। एहि चयनसँ कथा श्रमजीवी गृहस्थीक साधारण इच्छाकेँ साहित्यिक महत्त्व दैत अछि।

गाथा साओनक मत्स्य-व्यवसायक स्थानीय प्रथा विषयक सूचना दैत अछि। ई कथाभित्रक सांस्कृतिक वर्णन अछि; एकरा सम्पूर्ण मिथिलाक सभ काल आ सभ समुदाय लेल प्रमाणित सामाजिक नियम घोषित नहि करब। लोकभूगोलक विशिष्ट संदर्भ कथा कैँ विश्वसनीय बनबैत अछि, मुदा सामान्यीकरणक सीमा स्वीकार करब आवश्यक।

उपक्रमक कथावाचक प्रेमक प्रभाव कैँ ‘चमत्कार’ कहैत छथि। एहि चमत्कारक आलोचनात्मक अर्थ मानसिक साहस, भक्ति-विश्वास आ स्मृतिसँ जुड़ल होइतहुँ कहानीक घटना कारण–परिणाम वैज्ञानिक प्रमाण नहि। कथा-विधाक सत्य आ प्रकृतिक व्याख्या अलग राखल जाए।

अध्याय १ : साओनक मेला आ माछ-यात्रा

जीविका, उपहारक आकांक्षा आ श्रमक अपूर्ण फल

गांगोक पति अपन पिता आ भाइ संग धार दिस जाइत छथि। साओनक मेला चलि रहल अछि; पति माछ बेचि गांगोक लेल चूड़ी–लहठी आनबाक छोट योजना बनबैत छथि। आर्थिक लाभक उद्देश्य मात्र परिवार चलएब नहि, निजी स्नेहक उपहार जुटाएब सेहो अछि। एहि स्थितिमे श्रम आ प्रेम एक-दोसरासँ अलग नहि, बल्कि एकहि दैनिक अर्थव्यवस्थाक पूरक पक्ष छथि।

तीनू जाल फेंकैत छथि, सरैया सन मत्स्य-उपकरणक उपयोग करैत छथि, मुदा डोका, खराशंख, सतुआ-जकाँ छोट प्राणी अथवा नगण्य पकड़ मात्र भेटैत अछि। मूल पाठ दैनिक श्रमक अपूर्ण परिणामसँ निराशा उत्पन्न करैत अछि। गांगोक लेल उपहार किनबाक इच्छाक कारण ई असफलता भावनात्मक रूपसँ पैघ बुझाइत अछि। छोट आर्थिक घाटा पति लेल प्रेम-प्रदर्शनक अवसर हेराएब बनैत अछि।

कथाक रस निर्मित होइत अछि दैनिक परिश्रमक यथार्थपर। जालक खाली लौटब असम्भव घटना नहि; मत्स्य-जीविका अनिश्चित अछि। एहि वास्तविक कठिनाईक पृष्ठभूमिमे पछिलका अलौकिक सफलता अधिक तीव्र प्रभाव छोड़ैत अछि। शारीरिक श्रमक यथार्थता चमत्कारक सांस्कृतिक रूपककेँ धरातल दैत अछि।

अध्याय २ : पत्नीक नामसँ अन्तिम प्रयास

स्त्रीक स्मरण, पुरुषक विनम्रता आ अद्भुत घटनाक रचना

दिनभरि विफल रहलाक बाद पति गांगोक नाम लऽ अन्तिम बेर जाल फेंकैत छथि। हुनकर कथनमे विफलताक आशंका आ पत्नी लग क्षमा माँगबाक विनम्र भाव अछि। एहि संवादक भावनात्मक शक्ति एहि मे अछि जे पत्नी स्वयं घाटपर उपस्थित नहि, मुदा ओकर नाम निर्णयक अन्तिम प्रयत्नक संग अछि। अनुपस्थित पात्र स्मरणक माध्यमसँ कथाक केन्द्र बनैत छथि।

तखन जाल माछसँ भरि जाइत अछि। ई परिवर्तन कथा-विश्वमे चमत्कार अछि। घटनेक समय-संबंध अर्थात् नाम लएबाक तुरन्त बाद सफलता भेटब कथात्मक सम्बन्ध स्थापित करैत अछि, मुदा एतयसँ बाह्य प्रकृतिक कारण प्रमाणित नहि होइत। साहित्यिक अर्थमे कथावाचक प्रेमक नामस्मरण कैं अनपेक्षित फलप्राप्तिक रूपक बनबैत छथि।

माछ बेचि पति चूड़ी, लहठी आ नूआ किनैत छथि। छोट उपहार सामाजिक अर्थमे पति-पत्नीक व्यक्तिगत स्नेहक वस्तु बनैत अछि। एहि प्रसङ्गक लक्षित भाव पारिवारिक सहयोग, आर्थिक परिश्रमक मानवीय प्रयोजन आ प्रिय व्यक्तिक प्रति कृतज्ञता अछि। कथा स्त्री कैं पुरुषक सफलता लेल केवल चमत्कारी साधन मानबाक सम्भावना सेहो उठबैत अछि, कारण गांगोक अपने शब्द आ निर्णयक विस्तृत प्रस्तुति एखन नहि भेटैत।

अध्याय ३ : दोसर दिनक पुष्टि

पुनरावृत्ति, तुलना आ कथाक आन्तरिक प्रमाण-विधान

अगिला दिन पति पुनः गांगोक नाम लऽ जाल फेंकैत छथि आ फेर भरपूर माछ भेटबाक वर्णन अछि। एहि बेर भाय आ पिताक जालमे नगण्य पकड़ होइत अछि। कथा एहि तीन दृष्यमे तुलना रचैत अछि—एकटामे नामस्मरण आ सफलता, दोसरमे बिना ओ स्मरण सामान्य असफलता। कथावाचक एहि भेदकेँ संयोग सँ अलग मानेबाक संकेत दैत छथि।

एहि पद्धतिक साहित्यिक प्रयोजन समुदायकेँ मनएबाक लेल आन्तरिक प्रमाण रचब अछि। मात्र पहिल चमत्कार रोमांच उत्पन्न करित, मुदा दोसर दिनक पुनरावृत्ति लोकविश्वासक आधार स्थिर करैत अछि। कथा जणू एक छोट परीक्षण रचैत अछि, जेकर परिणाम नामस्मरणक महत्त्व स्थापित करबाक लेल चुनल गेल अछि।

तथापि ई नियंत्रित वैज्ञानिक प्रयोग नहि। समय, स्थान, जालक स्थिति, धारक गहराइ, माछक प्रवाह आ आन प्राकृतिक कारणक स्वतंत्र जाँच पाठमे नहि अछि। तैं एहि निष्कर्ष केँ लोकगाथाक आन्तरिक विश्वास-व्यवस्था रूपेँ पढ़ब ईमानदार समीक्षा होयत। कथा विश्वास पैदा करबाक उपकरण बनबैत अछि, वास्तविक कारणक प्रमाणीकरण नहि।

अध्याय ४ : मिथिला भरिमे प्रसार

निजी घटना सँ लोकाचारक निर्माणक प्रक्रिया

पति, भाइ आ पिताक बीच जे घटना घटल, ओकरा पाछाँ मलाह समुदायमे गांगोदेवीक नामक चमत्कारिक शक्तिक कथा पसरैत अछि। एहि प्रसारक वर्णनमात्रसँ लोकविश्वासक सामाजिक निर्माणक सूत्र देखबैत अछि : पहिने निजी अनुभव, फेर परिवारक भीतर चर्चा, तत्पश्चात समुदाय द्वारा स्वीकार, आ अन्तमे परम्पराक रूपमे पुनरावृत्ति। व्यक्ति कथासँ लोकगाथाक मार्ग एहि क्रममे चिन्हित होइत अछि।

‘गांगोदेवीक भगता’ सन नाम लोकाचारक परिचायक बनैत अछि। कथावाचक वर्तमान समयमे सेहो मलाह द्वारा स्मरणक दावा करैत छथि। ई स्रोतक भीतर देल सूचना अछि; आब केतेक घाट आ केतेक परिवारमे ई प्रथा चलैत अछि, से प्रमाणित करबाक लेल स्वतंत्र क्षेत्रीय अनुसंधान आवश्यक। कथाभित्रक सर्वत्रता आ वास्तविक सांख्यिक विस्तार एकटा बात नहि।

गांगो स्वयं घाटपर उपस्थित नहोइतो सामुदायिक देवी-समान आदर पबैत छथि। स्त्रीक नामक प्रतिष्ठा सामाजिक अधिगमक सशक्त प्रतीक बनैत अछि। मुदा तकर स्वायत्त व्यक्तित्व अल्प विकसित अछि। ओ अपन अनुभूतिक वाणी, निर्णय वा कामद्वारा नहि, पति द्वारा कहल नामसँ प्रसिद्ध छथि। लोकदेवत्वक एहि स्त्रीप्रतिमा मे सम्मान आ प्रतिनिधित्वक सीमा दूनू अछि।

अध्याय ५ : श्रद्धाक धरोहर

गृहस्थ प्रेमक लोकस्मृतिमे स्थायित्व

अन्तिम अध्याय स्पष्ट करैत अछि जे एहि गाथामे कोनो राक्षस, युद्ध अथवा जटिल षड्यन्त्र नहि। ई अनुपस्थितिसभ कृतिक नैतिक आत्मपहिचान अछि। सामान्य गृहस्थी, श्रम आ स्नेह लोकगाथाक निर्माण लेल पर्याप्त सामग्री बनैत अछि। लोकदेवत्वक स्रोत केवल पराक्रम नहि, स्मरणक भावात्मक शक्ति सेहो हो सकैत अछि—ई कृतिक मौलिक प्रस्ताव अछि।

माछ मारबाक पहिने गांगोक स्मरण लोककथा भीतर प्रेमक पुरनका वचनक सामुदायिक पुनरभिनय बनैत अछि। एक खाड़ी सँ दोसर खाड़ी धरि कथा चलेबाक संकेत मौखिक परम्पराक गति व्यक्त करैत अछि। प्रत्यक्ष पुनरुक्ति स्मृतिक संरक्षणक विधि बनैत अछि, आ प्रत्येक नब जाल फेंकबाक क्रिया आरम्भिक घटनाक प्रतीकात्मक पुनरावर्तन अछि।

मुदा कथा स्त्रीक जीवनक अलग इतिहास नहिएँ रचैत। गांगोक प्रिय शब्द, अपन श्रम, मनोकामना वा घटना विषयक प्रतिक्रिया विस्तारमे अनुपस्थित अछि। एहि कारण ‘अटूट विश्वास’क कथात्मक अर्थ मुख्यतः पति आ समुदायक विश्वाससँ उपजैत अछि। स्त्रीक प्रतिष्ठा ताहि माध्यमसँ निर्मित भेलाक आलोचना गाथाक श्रद्धा घटबैत नहि, ओकर लैंगिक रचनाकेँ खोलैत अछि।

समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकगाथाक नब केन्द्र : युद्ध नहि, जीविका

एहि कृतिक विशेषता ई अछि जे कथा-ऊर्जा शत्रुक पराजयसँ नहि, खाली जाल आ उपहारक हेराइत सम्भावनासँ जन्मैत अछि। आर्थिक संसाधन सीमित अछि; भावात्मक इच्छा विशिष्ट। माछक अचम्भित प्राप्ति केवल धनलाभ नहि, पत्नी लेल उपहार किनबाक अवसरक पुनर्प्राप्ति अछि। एकरासँ प्रेम आ जीविकाक सम्बन्ध साहित्यिक रूपमे उजागर होइत अछि।

स्त्रीक अनुपस्थित उपस्थिति

गांगो कथानकमे दृश्यतः कम, नामतः सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण छथि। पूरा कथा हुनकर नामक पुनरुक्ति कैँ शक्ति बनबैत अछि। धार्मिक लोकस्मृतिमे एहि प्रकारक स्त्री-प्रतिष्ठा उल्लेखनीय अछि, मुदा स्वयं गांगोक दृष्टिसँ गाथाक विस्तृत अंश नहि। ई रचनात्मक सीमा आलोचकीय अध्ययनमे चिन्हित करब आवश्यक अछि।

विश्वासक कथात्मक प्रमाण

अध्याय २ मे चमत्कार, अध्याय ३ मे पुनरावृत्ति, अध्याय ४ मे सामुदायिक स्वीकृति आ अध्याय ५ मे लोकपरम्परा—ई चारि चरण एक विश्वास कैं प्रचलित कथामे बदलैत अछि। लोकधर्मक साहित्यिक विश्लेषण लेल एहि क्रमक उल्लेख महत्त्वपूर्ण अछि। ई बाह्य वैज्ञानिक सत्यापन नहि, स्रोतक आन्तरिक प्रमाण-विधान अछि।

अनुष्ठान, स्मृति आ मौखिकता

गांगोक नाम लऽ जाल फेंकब कथामे अनुष्ठानक रूप पबैत अछि। अनुकरणक प्रक्रियामे आरम्भिक दम्पतिक निजी संवाद सामुदायिक पाठ बनैत अछि। मौखिक लोकगाथाक दृष्टिसँ हर पुनरावृत्ति लोकस्मृतिक नब प्रस्तुति अछि। एकर प्रमाणिक वर्तमान विस्तार विषयक दावे कैं स्थानीय क्षेत्रीय शोध बिना निश्चयात्मक रूपेँ नहि दोहराओल जाए।

चित्रक आवर्तन आ संक्षिप्त कथा

मूल संकलनमे पाँच अध्याय आ दस चित्र-संकेतक क्रम अछि। पिता–पुत्रक संग माछधार, खाली जाल, चूड़ी–लहठीक चाह, भरल जाल, परिवारक तुलना आ लोकपरम्पराक विस्तार—ई क्रम दृश्य-आख्यानक अनुकूल अछि। किन्तु प्रत्येक चित्रक रंग, शैली अथवा रेखाक स्पष्ट निरीक्षण बिना दृश्यविशेषक विवरण कल्पित करब उचित नहि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘गांगोदेवीक भगत’ मलाह परिवारक छोट गृहस्थ प्रसंगमे प्रेम आ लोकविश्वासक उद्भव दर्शबैत अछि। एक पत्नीप्रति स्मरणक विनम्रता जाल-भरल चमत्कारक घटनाद्वारा सामुदायिक आस्था मे बदलैत अछि। कृतिक स्थायी महत्त्व सामान्य श्रमजीवी जीवनकेँ लोकगाथाक विषय बनबैत अछि। ओकर सीमा गांगोक स्वयं कथनक अभाव आ कथाक आन्तरिक कारण-संबंध केँ ऐतिहासिक सिद्धान्त न मानी सकबाक बातमे अछि। एहि दूनू पक्षक संग पढ़ला पर ई गाथा जीविका, दाम्पत्य स्नेह, स्त्रीप्रतिमा आ सामुदायिक स्मृतिक विशिष्ट पाठ बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। गांगोदेवीक भगत : मलाहिन गांगोक श्रद्धा आ अटूट विश्वास। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क १४; PDF पृष्ठ ८९८–९२१।

कृति १६ : मीरांसाहेब

उपक्रम : एकटा नाम, एकटा नगर

शान्त लोकनायकत्व आ कथाक पूर्वघोषित दुखान्त

उपक्रम डिलरीनगर कैं लोकखिस्साक भूगोल कहैत अछि आ मीरांसाहेबक नाम कैं नगरक शान्तिसँ जोड़ैत अछि। विशेषता एतय वीरताक परिभाषा अछि : युद्धक गर्जना नहि, चुपचाप कर्तव्य पूरा करब। ई पूर्वसूचना पाठकक अपेक्षाकैं साधारण रणगाथाक बहादुरीसँ अलग करैत अछि।

कथा पहिनेसँ एक बालकक पितृविहीन जन्म, युद्ध लेल घर छोड़बाक निर्णय आ मृत्यु-पछिला नगर-रक्षाक विश्वास प्रस्तुत करैत अछि। एहि कारण वास्तविक कौतूहल ‘की भेल’ सँ बेसी ‘किएक भेल’ आ ‘ककर मूल्यपर भेल’ बनैत अछि। लोकनायकत्वक सार्वजनिक मूल्यक सोझाँ माएक निजी शोक निरन्तर उपस्थित रहबाक संकेत प्राप्त होइत अछि।

अध्याय १ : डिलरीनगरक सैयद

घर, अखराहा आ युद्धक मौन भय

पहिल अध्यायमे सैयदक प्रतिष्ठित परिवारक वर्णन अछि। नमाज आ अखराहा दूटा ध्वनि जकाँ एकहि भोरमे उठैत अछि। बेटासभ घुड़सवारी, तीर आ तरुआरि चलाबैत छथि। धार्मिक अनुशासन आ सैन्य प्रशिक्षण एक परिवारक दैनिक संस्कार बनैत अछि। मुदा माएक आँखि एहि दृश्य कैं केवल गौरवसँ नहि देखैत—ओतय सम्भावित हानिक पूर्वभय अछि।

तरुआरि घरक देवालपर टँगल अछि, मुदा एकदिन बाहर जाएब आ नहि घुरबाक सम्भावना कथक स्पष्ट करैत छथि। एहि प्रतिमामे युद्धक वास्तविक जोखिम आगू अबैत अछि। नायकत्वक पूर्वाधार वीरक घरक विख्यात कौशल अछि, मुदा आलोचनात्मक केन्द्र प्रशिक्षण सँ उपजल सामाजिक गौरव आ स्त्रीसभक भयबीचक भेद अछि।

नूनजागढ़ सँ युद्धक बजाहट एला पर सैयद अपन बेटासभकैं लऽ विदा होइत छथि। माए देहरिपर काजर-टीका करैत छथि। देहरि घरेलू संसार आ युद्धभूमिक सीमारेखा बनैत अछि। एहि दृश्यमे अनुष्ठानक मौन आशंका संग जुड़ब कथाक करुण पूर्वाभासक प्रभावकारी उपकरण अछि।

अध्याय २ : नूनजागढ़क युद्ध

पूर्ण घरानाक विनाश आ गर्भस्थ जीवनक अन्तर्विरोध

नूनजागढ़क युद्धमे सैयद आ हुनकर सभ बेटा मारल जाइत छथि। कथाकार रणक विस्तृत रणनीति नहि दैत, घटनाक परिणामपर जोर रखैत छथि। हवेलीक अखराहा शून्य भऽ जाएब आ तरुआरिक जगह खाली खूंटी रहि जाएब—ई दूनू दृश्य युद्धक विनाश कैं

वस्तुक अनुपस्थिति सँ व्यक्त करैत अछि। करुणा रणक दुश्मन-मित्रक गणनाक बदला खाली घरमे प्रकट होइत अछि।

विधवा पत्नी गर्भवती छथि। एक दिनमे पिता-पुत्रसभक मृत्यु आ अजन्मल बालकक प्रतीक्षा एकहि देहमे शोक आ आशा कैँ बन्हैत अछि। ई विरोध दुखान्त कथा कैँ निराशाक बन्द स्थान नहि बनबाक दैत। अजन्मल बच्चा परिवारक मानवीय भविष्यक सम्भावना अछि, युद्धक अनिवार्य बदला लेबयबला औजार नहि—ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि।

मूल कथा युद्धक पक्षसभ, कारण, कालखंड आ राजनीतिक दावाक विस्तृत बाह्य साक्ष्य नहि दैत। तैं ‘नूनजागढ़’ कैँ प्रमाणित राज्ययुद्धक इतिहास कहि विस्तार करब अप्रमाणित होयत। आलोचना लेल नायकक सामाजिक आ भावनात्मक निर्माण एतय मुख्य अछि।

अध्याय ३ : मीरांक जन्म

अनाथ बालक आ माएक युद्ध-विरोधी प्रतिज्ञा

मीरांक जन्म पिता आ सभ भाइक मृत्युपछाँ होइत अछि। माए बालककेँ छातीसँ लगा कऽ युद्धक छाहरिसँ दूर रखबाक प्रण करैत छथि। हुनकर इच्छा सरल अछि—बालक जीबैत रहय। एहि प्रसंगक भावनात्मक अर्थ अतीव महत्त्वपूर्ण अछि : युद्धवीरक वंशपरम्परा कैँ माता जीवनरक्षाक दृष्टिसँ प्रश्नाधीन करैत छथि।

बालक खेलौना सँ तरुआरि आ माटिक ढेरी सँ गढ़ बनबैत छथि। कथाकार ‘रक्त अपन भाषा’ कहबाक बिम्बसँ वंशगत योद्धा-स्वभावक संकेत दैत छथि। मुदा साहित्यिक आलोचनामे एकरा अवश्य जैविक नियति नहि मानल जाए। बालकक उपलब्ध परिवेश, परिवारक कथा आ वस्तुसंसार सेहो हुनकर कल्पनाक प्रेरणा भऽ सकैत अछि। मूल आख्यान लोकगाथाक नियतिक भाषा उपयोग करैत अछि; वैज्ञानिक आनुवंशिकी सिद्ध नहि करैत।

माएक भय कमजोर चरित्रक परिचय नहि, पूर्व अनुभवक तार्किक फल अछि। ओ पति आ अनेक बेटा हेरा चुकल छथि। एतय युद्धक गौरव आ परिवारक अतुलनीय हानि एके वाक्यमे ठाढ़ रहैत अछि। मीरांक जन्मक खुशी एहि दुःख कैं मिटबैत नहि, बल्कि रक्षा-धर्मक नब भार जोड़ैत अछि।

अध्याय ४ : कम बयसक बियाह

विवाह कैं प्रतिशोध-निरोधक साधन बनएबाक सीमा

माए कम बयस मे मीरांक विवाह करबैत छथि, एहि आशामे जे गृहस्थीक उत्तरदायित्व युद्धसँ हुनकर मोन फेरि देत। एहि निर्णयमे स्नेह, भय आ सामाजिक प्रथा मिश्रित अछि। माए संतानक जीवन बचएबाक बाट विवाहमे खोजैत छथि, मुदा एहि कार्यक नैतिकता स्वतः सरल नहि। कम उमरिक विवाहक सन्दर्भ कैं आधुनिक अधिकारक दृष्टिसँ आदर्श मानब उचित नहि।

विवाहक बाद हवेलीक शोकमय आँगन फेर शहनाइ आ हरियर पातक उत्सव पबैत अछि। उत्सव रचनात्मक रूपसँ अतीतक घाव ढकबाक प्रयत्न अछि; मुदा मीरांक मोन नूनजागढ़क हिसाब सँ बान्हल अछि। कथक ‘मुदा’ शब्दक पुनरावृत्तिसँ विवाहक सफल उपसंहार कैँ तोड़ि दैत छथि।

नव कनियाँक अपन भावनात्मक प्रवेश अछि, मुदा हुनकर निर्णयक स्वतंत्रता पर विस्तार सीमित अछि। विवाह नायकक निजी प्रतिशोध रोकबाक साधन रूपमे प्रस्तुत अछि, मुदा पत्नी स्वयं एक स्वतंत्र जीवन आ अपेक्षाक धारक छथि। एही कारण विवाहक सामाजिक आश्वासन आ पत्नीपर पड़निहार अदृश्य भावात्मक भारक अन्तर कथा भीतर उपस्थित अछि।

अध्याय ५ : अनसुनल मोन

माए आ पत्नीक आवाजक सोझाँ पुरुषक मौन निर्णय

माए स्पष्ट कहैत छथि जे बदला लेलासँ मृत व्यक्ति नहि घुरत। नव कनियाँ हुनका अपना साझा जीवनक अधिकारक स्मरण करबैत छथि। दूनू स्त्री अलग कालदिशाक प्रतिनिधि छथि—माए पहिने भेल अपूरणीय क्षतिक, पत्नी आगाँ बनएबला जीवनक। मीरांक मोन तकर बीच प्रतिशोधक ओर चलि रहल अछि।

मीरा आदरसँ दुनूक बात सुनैत छथि, मुदा सहमति नहि दैत। हुनकर मौन कैँ दूनू स्त्री स्वीकृति मानैत छथि, जखन कि भीतर निर्णय पहिनेसँ स्थिर अछि। कथाक मनोवैज्ञानिक दक्षता एहि भेदमे अछि : चुप्पी सुनब, मानब अथवा योजना बनायब—

तीन भिन्न क्रिया भऽ सकैत अछि। जीवनक निकटतम लोक हुनकर निर्णयसँ बाहर रखल जाइत छथि।

रातिकेँ तरुआरिपर सान देब, घोड़ाकेँ दाना खुआएब आ बाट स्मरण करब शांत तैयारीक लघु दृश्य छथि। कोनो पैघ घोषणा नहि। घर भोरमे खाली कोठली आ खूंटी देखि अनुपस्थिति जानैत अछि। एहि दृश्य सँ नायकक साहसक संग अपन परिवारक प्रति जानकारी न देबाक नैतिक जिम्मेदारी सेहो प्रश्नाधीन होइत अछि।

अध्याय ६ : असगर सवार

एकाकी यात्रा आ जोखिमक लोकनायकीय गणित

मीरां बिना सेना, संगी अथवा सार्वजनिक ध्वजा अपन घोड़ा आ तरुआरिसँ नूनजागढ़ दिस बढ़ैत छथि। मूल कथा एहि यात्राक वस्तुगत अल्पता पर जोर रखैत अछि : मात्र व्यक्ति, शस्त्र आ भीतरक हिसाब। आन युद्धक कथामे सेना बलक प्रमाण होइत अछि, एतय अकेलापन नायकक अद्भुत साहसक कथात्मक सूचक अछि।

बाटक दिन-रातक अनुक्रम समयक भौतिक कठिनाइ व्यक्त करैत अछि। मीरांक यात्रा केवल भौगोलिक नहि; ओ ओहि युद्धभूमिक ओर घुरि रहल छथि जतय हुनकर अनाथ होएबाक पूर्वकथा बनल छल। नूनजागढ़क सीमापर माटि माथसँ लगाबैत ओ पिता आ भाइक स्मरण करैत छथि। माटिक ई स्पर्श शोकक सार्वजनिक-अनुष्ठानक स्वरूप लेबाक पूर्व व्यक्तिगत क्रिया अछि।

मूल पाठक तर्क—बहुत सेना हारल, मुदा अकेल निर्भय व्यक्ति जीत सकैत अछि—लोकवीरगाथाक अतिशयोक्ति अछि। वास्तविक युद्धनीति अथवा सुरक्षित जीवननिर्णयक सामान्य सिद्धान्त नहि। एकटा नायकक साहस सामाजिक स्मृतिमे अत्यधिक रूप पबैत अछि, मुदा ओकर युद्धक अवसर अपन जीवन आ परिवारक भारी जोखिम सेहो उत्पन्न करैत अछि।

अध्याय ७ : बदला

प्रतिशोधक सीमा आ विजयक नैतिक विवाद

मीरां नूनजागढ़मे पिता-भाइक मृत्यु लेल बदला लैत छथि। कथा युद्धक विस्तृत सामरिक योजना नहि दैत; लोककथात्मक तीव्रतामे एक असगर योद्धाक विजय रचैत अछि। तरुआरि पर चढ़ल वर्षो पुरान नोर आ कब्रक मौनक रूपक निजी शोक कैँ हिंसक न्याय-माँगक भाषा दैत अछि। मीरांक काज कथावाचकक दृष्टिमे अधूरा ऋण पूरा करबाक अछि।

विशेष बात ई जे विजयक बाद मीरां राज्य नहि लैत, लूटपाट नहि करैत आ लड़ाइकेँ विस्तार नहि दैत। कथाकार प्रतिशोध कैँ बन्द बहीक हिसाब कहैत छथि। एहि विधानमे असीम हिंसक महत्वाकांक्षा पर नियंत्रणक लोकनीति अछि। शत्रुकेँ मारबाक नैतिक औचित्यक प्रश्न तइयो अलग रहैत अछि; असीम युद्ध नहि करब मात्रसँ पहिल हिंसा स्वतः न्यायोचित सिद्ध नहि होइत।

माएक पहिनुक वचन—मृत लोक बदला लेलासँ नहि घुरत—एहि विजयपछाँ फेर महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। कथा मीरांकेँ सफल देखबैत अछि, मुदा परिवारक वास्तविक प्राणहानि अपरिवर्तनीय अछि। नायकक निजी हिसाब बन्द भेला परो सार्वजनिक न्याय, क्षतिपूर्ति आ भविष्यक सुरक्षा अलग संस्थागत प्रश्न बनल रहैत अछि।

अध्याय ८ : घुरती

शौर्यक पूर्णता कि मातृपीड़ाक विलम्बित विराम?

मीरां डिलरीनगर वापस अबैत छथि। माए देहरिपर ठाढ़ छथि आ बेटाकेँ जीबैत देखिते वर्षोसँ दबायल नोर बहैत अछि। नायकक विजयोत्सवक सोझाँ मातृमौन केँ प्रधान दृश्य बनाएब कथा केँ भावनात्मक गहराइ दैत अछि। नायकक वापसी परिवारक लेल सैन्य विजय सँ अधिक जीवनरक्षाक घटना अछि।

मीरां गृहस्थीमे घुरैत छथि आ नगरक सेवामे लगैत छथि। एकाकी प्रतिशोध पाछाँ समाजक प्रति उत्तरदायित्व कथा केँ नब दिशा दैत अछि। नगर हुनका ‘मीरांसाहेब’ कहैत अछि, जकरा लेखक लोकस्वीकृत उपाधि मानैत छथि। उपाधि सैन्य पद नहि, सामाजिक भरोसक रूपक बनैत अछि। एहि ठाम नायकक मूल्य केवल प्रतिशोधक युद्धमे नहि, जीवनक बचल समयमे नगरक सेवामे देखबाक चाही।

किन्तु मीरांक पत्नी कथा मे पुनः विस्तारसँ उपस्थित नहि; हुनकर भविष्यक अनुभूति संक्षेपित अछि। जकरा गृहस्थी सँ बान्हबाक कोशिश कएल गेल छल, तकर स्वतन्त्र

व्यक्तित्व नगररक्षकक सार्वजनिक छविक पाछाँ पड़ि जाइत अछि। एहि सीमाक उल्लेख जरूरी अछि।

अध्याय ९ : आत्माक पहरा

मृत्युपछिला लोकविश्वास आ सामाजिक अनुशासनक स्मृति

मीरांसाहेबक देहान्तपछाँ डिलरीनगरमे शान्ति रहबाक वर्णन अछि। लोक कहैत अछि जे हुनकर आत्मा पहरा दैत अछि, एहि कारण चोरि, डकैती आ उपद्रव नहि। कथा भीतर ई लोकविश्वासक विधान अछि; शहरक अपराध दरक प्रमाणित इतिहास अथवा आत्मिक शक्तिक वैज्ञानिक साक्ष्य नहि। लोकसाहित्यक अर्थ ई अछि जे नायकक स्मृति जीवित लोकक आचरणपर प्रभाव करैत अछि।

दुष्ट लोक हुनकर नामसँ डरैत अछि आ दुखी लोक आश्वस्त होइत अछि—ई जनमानसक विश्वासक द्वैध भूमिका अछि। प्रत्यक्ष पहरादारी अनुपस्थित भेला परो सामूहिक नैतिक स्मरण सामाजिक मर्यादा बनएबाक कल्पना कृतिक मूल उपलब्धि अछि। नायकक नाम बच्चासभकेँ सुनाओल जाएब उत्तरपीढ़ीक शिक्षणक माध्यम बनैत अछि।

मुदा ‘एक वीरक स्मृति मात्रसँ नगर सुरक्षित’ एहन समापन राज्य, समुदाय आ संस्थागत सुरक्षा व्यवस्था केँ गौण बनबैत अछि। आलोचक कथा भीतरक प्रतीकात्मक आश्वासन स्वीकार करैतहुँ जीवित सामाजिक न्यायव्यवस्थाक आवश्यकता अनदेखल

नहि कऽ सकैत अछि। एहि भेदक कारण अन्तिम लोकदेवत्व पठनीय रहैत अछि, पर शाब्दिक इतिहासमे बदलैत नहि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

मातृदृष्टि सँ वीरगाथाक पुनर्पाठ

‘मीरांसाहेब’क समस्त घटनाक केन्द्रपर माएक अनुभव ठाढ़ अछि। पति आ बेटासभक एकहि युद्धमे मृत्यु, गर्भस्थ सन्तानक जीवनक आशा, ओकरा सैन्य संस्कार सँ दूर रखबाक प्रण, अल्पबयसक विवाह आ अन्तिम प्रतीक्षा—ई सभ नायकक युद्ध-धर्मक समानान्तर जीवनरक्षा-धर्म रचैत अछि। वीररसक विजयक पीछे माएक प्रश्न लगातार जीवित अछि : जे हेरायल, ओ घुरत नहि; बचल प्राण किएक फेर दाँव पर लगाओल जाए?

पुरुषक मौन आ स्त्रीसभक वाणी

मीरांक मौन आत्मनिश्चयक प्रभावकारी छवि अछि, मुदा ओ पारिवारिक संवादक सीमाओ अछि। माए आ पत्नी दुनू स्पष्ट बोलैत छथि; नायक सुनैत आ निर्णय गोपनीय रखैत छथि। एहि घटनाक साहित्यिक प्रभाव पाठकक अग्रज्ञान सँ बनैत अछि—पाठक तैयारी देखैत अछि, स्त्रीसभ मानेबाक भ्रममे छथि। वीरक सफल वापसी एहि गोपनक नैतिक प्रश्न पूर्ण रूपसँ मिटा नहि सकैत।

बदला सँ नगरसेवा धरि नायकत्वक रूपान्तरण

गाथा मीरांक प्रतिशोध कैँ नाटकीय चरम बनबैत अछि, मुदा मीरांसाहेबक लोकसम्मान नगरसेवासँ भीतरी आधार पबैत अछि। नूनजागढ़मे ओ राज्य नहि जीतैत, सम्पत्ति नहि लूटैत; घर घुरि सामाजिक उत्तरदायित्व निभबैत छथि। लोकनायकत्व एहि अर्थमे विजयक सीमाबोध आ जीवनक सकारात्मक उपयोगक संयुक्त प्रतिमा अछि। तथापि प्रतिशोधक हिंसाक स्वतन्त्र आलोचना छोड़ब नहि चाही।

देहरि, खूंटी आ माटिक प्रतीक

देहरि पहिने पिता-पुत्रक युद्धविदाइ आ पछाँ मीरांक घुरतीक दृश्य बन्हैत अछि। खाली खूंटी परिवारक विनाश आ मीरांक गुप्त प्रस्थान दूनू ठाम आबैत अछि। नूनजागढ़क माटि माथसँ लगाबब मृतक परिवारसँ प्रतीकात्मक संवाद अछि। एहि वस्तुसभक पुनरावृत्तिसँ कथा द्रुत वर्णनक बावजूद भावात्मक सम्बन्धक लय बनौने रखैत अछि। वीररसक विस्तृत युद्ध-दृश्यक अनुपस्थिति एहि घरेलू प्रतिमासँ पूरा होइत अछि।

सम्प्रदाय, लोकभूगोल आ सह-अस्तित्व

सैयद घरानाक नमाज आ अखराहा एकर सांस्कृतिक संसारक अंग छथि। एहि परिचयकैँ बाह्य इतिहासक निश्चित सैनिक वंशसँ स्वतः जोड़ब उचित नहि। मिथिलाक लोकभूगोलमे मीरांसाहेबक प्रतिष्ठा कथा भीतर समाजक बहुविध सांस्कृतिक स्मृतिमे नायकत्वक सम्भावना खोलैत अछि। बिना स्वतंत्र क्षेत्रीय साक्ष्यक वर्तमान परम्पराक वास्तविक विस्तार घोषित नहि करब।

चित्रात्मक रूप आ कथा-गति

मूल नौ अध्यायक संग अठारह चित्र-संकेत देखल जाइत अछि। युद्धसँ खाली भेल हवेली, विधवाक गर्भस्थ शिशु, माएक कोरामे बालक, विवाहक तोरण, तरुआरिक सान, एकाकी घुड़सवार, नूनजागढ़क माटि, माँ-पुत्रक पुनर्मिलन आ मृत्युपछिला नगर-स्मृतिक घटनासभ चित्र-विरामसँ लय प्राप्त करैत छथि। स्रोतमे प्रत्येक चित्रक रंग-संरचनाक अलग विस्तृत दृश्यपरीक्षण बिना रंगगत विशिष्ट दावे नहि कएल जा सकैत।

रचनात्मक सीमासभ

नूनजागढ़क युद्धक कारण आ वास्तविक सामरिक विवरण अल्प अछि। मीरांक प्रतिशोधक शत्रु-परिचय बहुत संक्षिप्त अछि। माएक भीतरक जीवन प्रखरता पबैतहुँ पत्नी स्वतंत्र चरित्ररूपमे कम विकसित छथि। नायकक हिंसापर अपराध-न्याय संबंधी सामुदायिक विमर्श अनुपस्थित अछि। मृत्युपछिला शान्ति लोकविश्वास रूपमे प्रभावकारी अछि, पर ऐतिहासिक प्रमाण नहि। एहि सीमाक आलोचनासँ भावात्मक गाथाक उपलब्धि नहिएँ मेटैत।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘मीरांसाहेब’ युद्धक घरानाक एकल बाँचल सन्तानक जीवन-यात्रा रचैत अछि। कथाक भाव-संरचनामे मातृशोक, मौन प्रतिज्ञा, एकाकी यात्रा आ नगरसेवा जतेक महत्त्वपूर्ण, प्रतिशोधक विजय सेहो ततेक केंद्रीय अछि। नायकक चरित्र अन्ततः तरुआरिक चोटसँ

बेसी लोकसमुदायक भरोसक नाम बनैत अछि। तइयो कथाक महिमायुक्त बदला कैँ आधुनिक नैतिक प्रश्नसँ मुक्त नहि मानब। एहि द्वैतमे वीरक शौर्य आ माएक जीवनरक्षा-दृष्टिक संघर्ष पुस्तकक स्थायी साहित्यिक शक्ति अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मीरांसाहेब : डिलरीनगरक एकाकी योद्धाक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क १५; PDF पृष्ठ ९२२–९८८।

कृति १७ : जट-जटिन

उपक्रम : महाराज शिव सिंहक दरबार

इतिहासक दावाक संग लोकनाट्यक सामाजिक स्वायत्तता

उपक्रम राजा शिव सिंहक दरबार, विद्यापतिक पदावली आ जयट संगीतज्ञक नामसँ जट-जटिनक उद्गम जोड़ैत अछि। लेखक काल-विवरण सेहो दैत छथि। साहित्यिक समीक्षा लेल एहि ऐतिहासिक उपाख्यानक भूमिका नाटककेँ दरबारी संस्कृति सँ लोकमंच धरि एक वंशावली प्रदान करब अछि। मुदा स्रोतमे उद्धृत स्वतंत्र शिलालेख, पाण्डुलिपि वा प्रामाणिक शोधसाक्ष्यक बिना एकर प्रत्येक दावे केँ ऐतिहासिक रूपसँ प्रमाणित मानल नहि जा सकैत।

नाटकक वास्तविक कार्य-विन्यास अधिक सुस्पष्ट अछि—साओन–भादवक राति, स्त्रीसभक सामूहिक अभिनय, पुरुष पात्रक स्त्रीद्वारा प्रदर्शन, विरह-मिलन, कृषि आ वर्षाक अनुष्ठान। ई तत्त्व लोकनाट्य केँ जीवित सामुदायिक प्रक्रियारूपेँ प्रस्तुत करैत छथि। राजदरबारक नामक तुलना मे स्त्रीसमाजक सांस्कृतिक अभिनय एहि आख्यानक अधिक प्रत्यक्ष साहित्यिक आधार अछि।

अध्याय १ : जट आ जटिनक परिचय

स्त्रीद्वारा पुरुष-अभिनय आ सामूहिक मंच-स्वायत्तता

जट पुरुष-परिधानमे अभिनय करनिहार स्त्री छथि, जटिन छिटगर नूआ पहीरने पात्र। दुनू भूमिका स्त्रीसभ करैत छथि; संग अपन-अपन सखी-मण्डली अनैत छथि। एहि व्यवस्थामे ‘स्त्री केवल दर्शक’क धारणा उलटैत अछि। अभिनय, संगठन आ सामूहिक मनोरंजनक पूरा मंच स्त्रीसभक नियंत्रणमे अछि। लोकसमुदायमे सांस्कृतिक स्वायत्तताक ई महत्त्वपूर्ण रूप अछि।

कथा नवविवाहिता जटिनक पहिल साओनसँ आरम्भ होइत अछि। नैहर जएबाक सामाजिक अपेक्षा आ सासुरक नियमक बीच तनाव उत्पन्न होइत अछि। कृषि-ऋतु, वैवाहिक सम्बन्ध आ स्त्रीक आवागमनक अधिकार एकहि संवादमे प्रवेश करैत अछि। अतः लोकनाट्यक मूल विवाद मात्र हास्य नहि, घरेलू निर्णयक अधिकारक प्रश्न अछि।

अध्याय २ : नैहर जएबाक हठ

बाढ़िक बाधा, विदागरी आ वैकल्पिक आनन्दक निषेध

जटिन नैहर जाय चाहैत छथि, मुदा धारमे बाढ़ि अछि। ओ विदागरीक सामाजिक विधान विषयक बात कहैत छथि। माएकेँ संबोधित कथनमे भाइ केँ पठएबाक आग्रह अछि। ई संवाद विवाहपछिला स्त्रीक मातृगृहसँग सम्बन्ध कायम रखबाक इच्छा देखबैत अछि। प्रकृतिक बाधा आ पारिवारिक नियंत्रण एकसंग हुनकर यात्रा रोकैत अछि।

नैहर नहि जाइ सकलापर जटिन झूमर खेलबाक अनुमति माँगैत छथि, मुदा जट पुनः मना करैत छथि। एहि पुनरावृत्त निषेधमे पति-पत्नीक हास्यपूर्ण नोकझोंक रहितो स्त्रीक गतिशीलतापर पुरुष-नियन्त्रणक प्रश्न उपस्थित अछि। जटिन घामक बहन्ना बनाकऽ दूरी रखैत छथि—एतय अप्रत्यक्ष प्रतिरोध संवादक अभिन्न हिस्सा बनैत अछि।

लोकनाट्यक दर्शक एहि प्रसङ्गपर हँसि सकैत छथि, मुदा आलोचनात्मक दृष्टिसँ हँसी आ असमान शक्ति-सम्बन्ध दुनूकेँ साथ पढ़बाक अछि। स्त्रीक हठकेँ केवल बचकाना नखरा कहब कृतिक सामाजिक अर्थ घटा देत।

अध्याय ३ : झूमरक निमन्त्रण

गीत–प्रश्नोत्तर आ नाटकक भीतर नाटक

दूनू संगी-मण्डली झूमर खेलबाक विषयमे प्रश्नोत्तर करैत छथि। छोट वाक्य, आवर्तन आ विनोद लोकनाट्यक मौखिक लय उत्पन्न करैत अछि। संवाद कथानक केँ शीघ्र बढ़एबाक सँ बेसी सामूहिक सहभागी अनुभव बनबैत अछि। श्रोता एहि प्रश्नक उत्तर अनुमान कऽ सकैत छथि; प्रस्तुति आ दर्शकबीचक दूरी कम होइत अछि।

मूल पाठमे प्रतीकात्मक विवाहक दृश्य सेहो अछि, जतय जट एक विशेष चाल चलबाक आग्रह करैत छथि आ जटिन विरोधक बाद मानि लैत छथि। एहि नाट्य भीतरक विवाह आ पहिने सँ नवविवाहिता जटिनक कथा मिलि दू नाट्यस्तर बनैत अछि। लोकमंचक भूमिका-परिवर्तन एतय कथावस्तुक शाब्दिक कालक्रमसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

जटिनक विरोधक बाद स्वीकृति दर्शक कैं हास्य दैत अछि, मुदा सहमति आ दबावक बीचक अन्तर सभ बेर सहज नहि। नाटकक चंचल खेलक भीतर विवाहक सामाजिक अनुशासनक लघु प्रतिमा उपस्थित अछि।

अध्याय ४ : घरेलू जीवनक झलक

अँगना, गहना आ आर्थिक व्यंग्य

जटिन अँगना बहारबाक बात करैत छथि, जट माए-बहीनक द्वारा काज करएबाक आश्वासन दैत छथि। एहि संवादमे नवविवाहित दाम्पत्यक स्नेह देखाओल गेल अछि, मुदा घरेलू श्रम स्त्रीसभक बीच फेर बँटि जाएबाक सामाजिक वास्तविकता सेहो अछि। पति पत्नीकैं तत्काल श्रमसँ मुक्त करैत छथि, पर काज दोसर स्त्रीक जिम्मामे देल जाइत अछि।

गहनाक माँग आ सोनारक घर जाएबाक धमकी आर्थिक विनोद बनैत अछि। कथावाचक हाथी बिकि जाएब आ सिक्कड़ मात्र बचबाक अतिशयोक्ति उपयोग करैत छथि। एहिसँ वस्तुगत खर्चक लेखा नहि, हास्यपूर्ण व्यंग्य रचल गेल अछि। तथापि पत्नी कैं ‘खर्चालू’ बनएबाक नाटकीय रूढ़ि आलोचनाक विषय अछि। गृहस्थीमे गहनाक सामाजिक अर्थ, स्त्रीक आभूषणपर अधिकार आ परिवारक आर्थिक सीमाक प्रश्न एकहि मंचपर अछि।

अध्याय ५ : नैहर-प्रस्थान आ चेतौनी

कृषि-कार्यक प्राथमिकता आ विरहक पूर्वसूचना

जटिन पुनः नैहर जाएबाक आग्रह करैत छथि; जट धानक फसल काटि लेबाक बात कहैत छथि। एहि संवादमे निजी इच्छा आ सामूहिक कृषि-जीविकाक समयबीचक टकराव अछि। साओन-भादवक ऋतु केवल गीतक पृष्ठभूमि नहि, खेतक व्यावहारिक कार्यतालिका सेहो अछि।

जटिन घुरि नहि एबाक चेतावनी दैत छथि। ई कथाक भावात्मक आरोह अछि, मुदा शब्दक तीव्रता नाट्य-प्रदर्शनक हिस्सा सेहो मानब चाही। सौतिनक चर्चा सुनि हुनका भय लागैत अछि। एहि भयमे पत्नी-प्रतिद्वन्द्विता आ सामाजिक असुरक्षाक मानसिक संरचना देखाइत अछि। तकर पाछाँ उपदृश्यरूपेँ रोगी-उपचारक स्वाँग मंचक मनोरंजनक व्यापक परम्पराक संकेत दैत अछि, मुदा कथानकक मूल रेखा सँ अलग अछि।

अध्याय ६ : मोरंग-प्रवास आ सोनारक प्रलोभन

पुरुषक आजीविकायात्रा आ स्त्रीक निष्ठाक परीक्षा

जट कमाइ लेल मोरंग जाइत छथि। आर्थिक प्रयोजनक कारण विवाह-जीवनमे दूरी उत्पन्न होइत अछि। जटिनक नैहर जाएबाक इच्छा पहिने सीमित कएल गेल छल, आब

जट अपन रोजी लेल दूर जा सकैत छथि। एहि असमान आवागमनक अधिकार कैँ सूक्ष्म सामाजिक प्रश्नक रूपमे देखब आवश्यक अछि।

सोनार गहनाक प्रलोभन दैत छथि, जटिन ओकरा अस्वीकार करैत छथि। मूल कथा एकरा पत्नीक निष्ठाक परीक्षा रूपमे देखबैत अछि। जटिन अपन पतिक सौन्दर्य आ प्रेमक गुण वर्णन करैत छथि। एहि दृश्यमें स्त्रीक व्यक्तिगत दृढ़ता अछि, मुदा नैतिक मूल्याङ्कन एकतरफा स्त्रीपर केन्द्रित अछि : पतिक अनुपस्थितिमे पत्नीक निष्ठा प्रमाणित करबाक आवश्यकता कहिया, किएक? मंचक लैंगिक अपेक्षाक आलोचनात्मक अध्ययन एतयसँ सम्भव अछि।

अध्याय ७ : झगड़ा आ विरह

अपमानक अनुभूति आ मिलनक प्रयत्न

जट मोरंगसँ घुरैत छथि, मुदा घरेलू झगड़ामे छौंकीसँ जटिनकैँ छूबि दैत छथि। मूल कथन क्रोध अथवा असावधान स्पर्श दुनू सम्भावना रखैत अछि; जटिन ओहि काज कैँ अपमानजनक मानि रूठि घर छोड़ैत छथि। एहि निर्णयमे अपमानक आत्मानुभूति कैँ महत्व भेटैत अछि। दोसराक दृष्टिसँ मामूली बुझाएबला क्रियाक पीड़ा भोगनिहार स्वयं पहिचानैत अछि।

जट पछता कऽ जटिनकैँ ताकैत छथि आ गोपी, मनिहारिन आदिक रूप धरैत छथि। भेष-परिवर्तन लोकनाट्यक प्रदर्शनक सशक्त युक्ति अछि। कलाकार अपन देहक रूप बदलि खोजक अलग-अलग दृश्य रचैत छथि। एहि समय पुरुष-पात्र पहिल बेर स्त्रीक

अनुपस्थितिकेँ असह्य अनुभव करैत अछि। ई परिवर्तन दाम्पत्यक पारस्परिक निर्भरता देखबैत अछि।

अध्याय ८ : पुनर्मिलन

उजड़ल घर आ स्त्रीक अनुपस्थित श्रमक रूपक

जटाक घरमे झोल-मकड़ा भरि जाइत अछि, अँगनामे दूबि जनमैत अछि। ई दृश्य जटिनक अनुपस्थितिमे घरेलू अव्यवस्थाक प्रतिमा अछि। नाटक स्त्रीक काज आ उपस्थिति केँ घरक केन्द्र बनबैत अछि। मुदा एहि रूपकक सीमा सेहो अछि : घरक सम्पूर्ण श्रम स्त्रीक अकेला स्वाभाविक कर्तव्य नहि। नाटक एहि प्रश्नकेँ सहज बिम्बमे अनुत्तरित रखैत अछि।

अन्तमे जटिन घुरि अबैत छथि, प्रेमक मिलन होइत अछि। विरहक तनाव शान्त होइत अछि, दर्शक सुखान्तक अनुभव करैत छथि। मुदा पुनर्मिलनक शर्तसभक खुलल वार्ता बहुत संक्षेप अछि। अपमान किएक घटल, जिम्मेदारी कोना बाँटल जाए, भविष्यमे समान निर्णयाधिकार होयत कि नहि—ई प्रश्न प्रेम-विजयक अन्तमेओ बचल छथि।

अध्याय ९ : बेंगक वर्षा-अनुष्ठान

प्रकृतिक आह्वान, सामुदायिक प्रदर्शन आ प्राणीहिंसाक प्रश्न

नाटकक अन्तमे स्त्रीसभ बेंग कैँ पात्रमे बन्द कऽ मारबाक, तकर देह झगड़ाहि स्त्रीक केवाड़ीपर फेंकबाक अनुष्ठान करैत छथि। तखन झगड़ाहि स्त्रीक गारिसँ वर्षा होएबाक लोकविश्वास अछि। एहि प्रसङ्गमे प्राकृतिक वर्षाक अनिश्चितताक सोझाँ सामूहिक स्त्री-अनुष्ठानक कल्पित कारण-व्यवस्था बनैत अछि। लोककथा वर्षा आ वाणीबीचक प्रतीकात्मक सम्बन्ध रचैत अछि।

मुदा जीवित बेंगकैँ मारबक क्रियाकैँ साहित्यिक विवरणसँ आगे बढ़ि स्वीकार्य व्यवहार अथवा विद्यालयक पुनरभिनयक निर्देश नहि मानब। प्राणीप्रति करुणा आ पर्यावरणीय संवेदनाक आधारपर ई अनुष्ठान आधुनिक नैतिक आलोचनाक विषय अछि। वर्षाक कारण-विज्ञान सेहो एहि मान्यता सँ सिद्ध नहि होइत। लोकनाट्यक सांस्कृतिक अध्ययन आ हानिकारक काजक अनुकरण दूनू बिल्कुल अलग बात छथि।

नाटकक अन्तिम चरण दाम्पत्यक निजी झगड़ासँ कृषि–प्रकृतिक सामूहिक अपेक्षा दिस मुड़ैत अछि। एहि रूपान्तरणमे लोकनाट्य घरेलू भावक नाट्य मात्र नहि, समाजक पर्यावरणीय चिन्ताक सामूहिक मंच सेहो बनैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकनाट्यक विधागत विशेषता

‘जट-जटिन’ कैँ केवल छोट कथा वा नौ अध्यायक बाल-उपन्यास कहि सीमित करब उचित नहि। मूल संकलनक प्रकाशित वर्गीकरण बाल ग्राफिक उपन्यास अछि, मुदा प्रस्तुत पाठक स्रोत लोकनाट्य अछि, जाहिमे अभिनय, सखी-मण्डली, तुकान्त संवाद,

प्रश्नोत्तर, भेष-बदलाव, उपदृश्य आ ऋतु-अनुष्ठानक परत जुड़ल अछि। कथाक अर्थ पढल गद्य आ मंचपर भेल सामूहिक प्रदर्शनक मध्य स्थित अछि। एतय नाटकक प्रस्तुति-परम्परा साहित्यिक पाठसँ अतिरिक्त अध्ययनक विषय अछि।

स्त्री-अभिनय आ सांस्कृतिक स्वशासन

दूनू मुख्य पात्र स्त्रीसभ निभबैत छथि, आ मंचक संगी-मण्डली सेहो स्त्रीसभक अछि। एहि व्यवस्थासँ परम्परागत परिवारक नियन्त्रणक बाहर सांस्कृतिक निर्णयक क्षेत्र बनैत अछि। लोकनाट्यमे जटिनक नैहरक इच्छा, पति द्वारा रोकेबाक घटना, गहनाक माँग, मोरंग-प्रवास आ विरह स्त्रीदर्शकक अपन सामाजिक अनुभवसँ जुड़ैत अछि। ई अनुभवक सामूहिक उच्चारणक एक माध्यम अछि। तइयो मंचपर स्त्री-अभिनय मात्रसँ कथा भीतरक सभ लैंगिक व्यवस्था स्वतः समानतापूर्ण नहि भऽ जाइत।

प्रश्न, विनोद आ देहाभिनय

झूमरक निमन्त्रणमे प्रश्नोत्तर, दाम्पत्यक नोकझोंक आ छद्मरूपधारी जटक खोज नाटकक जीवित प्रस्तुति लेल निर्माण भेल अछि। एहन प्रसंग पढ़ैत समय वाचिक ताल, दृश्य-विराम आ सामूहिक हास्यक परिप्रेक्ष्य आवश्यक अछि। गद्य संकलन एहि रूपकेँ संक्षेपमे सुरक्षित करैत अछि, मुदा मंचक गीतक पूर्ण राग, ताल, गतिशैली आ प्रदर्शनसमयक विस्तृत अभिलेख नहि दैत। तैं मूल पाठमे नहि भेटनिहार निश्चित मंच-संकेत वा राग-निर्देश गढ़ब अनुचित अछि।

दाम्पत्यक स्नेह आ अधिकारक असमानता

जटिनक नैहर जाएबाक इच्छा बारम्बार टरल अछि, जटक मोरंग-यात्रा आजीविकाक आधारपर स्वीकार्य। पति पत्नीकेँ अँगना-बहारबाक श्रमसँ बचबैत छथि, मुदा ओ काज दोसर स्त्रीपर छोड़ैत छथि। गहनाक माँगकेँ विनोद बनाओल जाइत अछि, जखन कि आर्थिक संसाधनपर स्त्रीक अधिकारक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि। एहि घटनासभसँ स्नेह आ असमानता एक-दोसराकेँ नकारैत नहि, एकहि गृहस्थीमे सह-अस्तित्व राखैत अछि।

कृषि, वर्षा आ भूगोल

धानक फसल, साओन-भादव, बाढ़ि, मोरंगक कमाइ आ वर्षाक अनुष्ठान लोकनाट्य केँ मिथिलाक कृषि-जीवनसँ जोड़ैत अछि। नैहर यात्राक बाधा केवल पतिक आदेश नहि, नदीक भरल जल सेहो अछि। रोजगारक लेल प्रवास गृहस्थीमे भौतिक दूरी बनबैत अछि। लोकनाट्य व्यक्तिगत प्रेमक घटना केँ ऋतुक समयचक्रसँ बाँधैत अछि; इएह ओकर सांस्कृतिक संरचनात्मक उपलब्धि अछि।

लोकविश्वासक अभिलेखन आ नैतिक सीमा

बेंग केँ मारि वर्षा बोलएबाक कथात्मक विधान लोकविश्वासक हिस्सा अछि। स्रोत ओकर सांस्कृतिक उपस्थिति वर्णन करैत अछि; तकरा व्यवहारिक उपदेश, प्राणीहिंसाक स्वीकृति वा वर्षाक वैज्ञानिक कारणक सिद्धान्त बनाओल नहि जा सकैत। साहित्यिक पुनर्पाठमे वर्षा-आकांक्षा आ सामूहिक प्रदर्शनक अर्थ संरक्षित राखि, प्राणीक क्षतिक विरोध स्पष्ट राखब सम्भव अछि।

ऐतिहासिक दावाक सत्यापन

मूल उपक्रम शिव सिंहक काल, विद्यापतिक दरबारी सम्पर्क आ जयट द्वारा नाटक-निर्माणक कथा कहैत अछि। ओ दावे पुस्तकक ऐतिहासिक प्रस्तावना छथि; एहि समीक्षामे बाह्य अभिलेख-निर्भर पुष्टि नहि भेल। गहन इतिहास-शोधक अगिला स्तरमे अधिकृत पाण्डुलिपि, संगीत-सन्दर्भ, क्षेत्रीय लोकपरम्पराक भिन्न संस्करण आ समकालीन इतिहासग्रन्थक तुलनात्मक परीक्षा आवश्यक होयत। तावत ई दावे मूल कथाकारक व्याख्या रूपमे मात्र उद्धृत होअय।

ग्राफिक पाठ आ नाट्यमंचक सम्बन्ध

नौ अध्यायमे अठारह चित्र-संकेत अछि। भूमिका बदलैत अभिनेत्री, सखी-मण्डली, नैहरक आग्रह, झूमरक आमन्त्रण, गहनाक विनोद, सोनारक प्रलोभन, भेष बदलैत जट, उजड़ल घर आ अन्तिम वर्षा-अनुष्ठानक घटना चित्रपृष्ठक बीच-बीच दृश्यात्मक गति दैत अछि। तथापि पूर्ण रंग-अध्ययन, रेखा अथवा वास्तविक अभिनय-रूपक सटीक तुलना लेल प्रत्येक चित्र आ मंचप्रयोगक अलग साक्ष्य आवश्यक अछि।

अन्तिम आलोचनात्मक निर्णय

‘जट-जटिन’क महत्त्व दाम्पत्यक सुखान्तक गीत भर नहि; स्त्रीसमाज द्वारा अपन जीवनक द्वन्द्व कैँ मंचपर पुनररचित करब अछि। नैहरक आकांक्षा, सामाजिक मर्यादा, गृहस्थीक श्रम, प्रवास, अपमानक पीड़ा आ पुनर्मिलन एक पूरा कृषि-ऋतुक सामूहिक

अभिव्यक्तिमे जुड़ैत अछि। बेंग-वर्षा अनुष्ठानक ऐतिहासिक-परम्परागत उल्लेख साहित्यिक अध्ययन लेल जरूरी होइतहुँ प्राणीहिंसा आ वैज्ञानिक कारणताक दृष्टिसँ आलोचनात्मक सीमा रखैत अछि। एहि द्वैध दृष्टिसँ ई कृति लोकनाट्य, लैंगिक सम्बन्ध, वाचिक प्रदर्शन आ मिथिलाक ऋतु-सम्बद्ध सांस्कृतिक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण पाठ अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। जट-जटिन : विद्यापतिक युगक लोकनाट्य — प्रेम, गृहस्थी आ वर्षाक अनुष्ठान। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क १६; PDF पृष्ठ ९८९–१०१९।

कृति १८ : लालमैन बाबा

उपक्रम : दू संगी

साझा श्रमक भूमि आ नैतिक दुर्भाग्यक पूर्वाभास

उपक्रम धनसाराम आ लालमैनक बाल्यकालक संगीपनक बात करैत अछि। दुनू चमार समुदायसँ छथि आ भैंस चरएबाक श्रम साझा करैत छथि। लोकगाथा नायकत्वक सामाजिक स्रोत राजदरबार नहि, ग्रामीण श्रमक बराबरीक अनुभव बनबैत अछि। एहि आरम्भमे दोस्तीक निकटता दुःखान्तक प्रभावक आवश्यक शर्त अछि : पाठक जे सम्बन्ध गहीर मानल, बादमे ओहिमे विश्वासघात घटत।

कथावाचक लालमैनक मृत्यु, अन्तिम इच्छाक उपेक्षा आ प्रतिशोधक रूपरेखा पहिने सँ दैत छथि। एहि कारण कौतूहल परिणामक रहस्य सँ नहि, मित्रक कर्तव्यक परीक्षा सँ जन्मैत अछि। मुदा ‘न्यायपूर्ण प्रतिशोध’क कथावाचकीय अभिप्राय आलोचनात्मक दृष्टिसँ परखबाक अछि। अपेक्षित दाह-संस्कार नहि होएब गम्भीर अपमान भऽ सकैत, मुदा ओकर दण्ड प्राणहरण होयब कतेक उचित—ई प्रश्न उपक्रमे उपस्थित अछि।

अध्याय १ : नौहट्टाक बोन

ग्रामीण जीविका आ बाल्य-मित्रताक सामाजिक धरातल

नौहट्टाक पैघ बोनमे धनसाराम आ लालमैन रोज भैंस चरबैत छथि। एतय वन प्राकृतिक संसाधनक साझा कार्यक्षेत्र अछि; जानवरक रक्षा कृषि–पशुधन अर्थव्यवस्थाक भाग अछि। दुनू मित्र जंगलक जोखिमक बीच निर्भय भऽ रोजी सँ सम्बन्धित दायित्व निभबैत छथि। एहि स्थितिमे श्रम आ संगीपन एक-दोसराकेँ टिकबैत अछि।

कथा घन बोनक संभावित खतराक अग्रसूचना दैत अछि। जोखिमक भौतिक रूप बादमे बाघिन होयत; मुदा एखन जंगल रोजक काजक सामान्य भूगोल अछि। संकटक पहिने साधारण श्रमक वर्णन घटनाकेँ विश्वसनीय धरातल दैत अछि। मित्रताक मूल्य केवल हँसी-गप नहि, संकटक घड़ीमे दोसरक लेल कतेक जिम्मेदारी लेल जाइत अछि, से आगामी अध्याय पूछत।

अध्याय २ : बाघिनसँ संघर्ष

जीव-रक्षा, लैंगिक रूपक आ नायकक मृत्यु

बाघिन लालमैनक भैंसकेँ घेरैत अछि। लालमैन पशुधन बचएबाक लेल आगाँ बढ़ैत छथि। इएह रक्षाक काज हुनका बाघिनक सम्मुख आनैत अछि। आख्यान हुनकर योद्धा-साहसक चित्रण करैत अछि, मुदा संगहि कहैत अछि जे ओ ‘स्त्री जाति’क बाघिनपर पूरा बल नहि लगबैत छथि। एहि कारण ओ मारल जाइत छथि। एहि विधानमे मनुष्यक लैंगिक मर्यादाकेँ पशुरूपपर आरोपित कएल गेल अछि।

कथाक धार्मिक–सांस्कृतिक भाषा एहि संयमकेँ नैतिक उच्चता रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। पर प्राणरक्षाक परिस्थिति आ पशु-आक्रमणक व्यवहार केँ मानव स्त्रीपुरुषक सामाजिक मर्यादाक सरल नियमसँ मापब तार्किक रूपसँ कठिन अछि। एतय लोकनायकक करुण मृत्यु नायकक ‘सम्मान’क फल कहि अर्थ पबैत अछि; आलोचक एहि औचित्यक यथार्थ जीवनमे अनुकरणक विरुद्ध सावधान रहबाक चाही।

भैंसक रक्षा करते लालमैन मारल जाइत छथि। हुनकर मित्र धनसाराम प्रसंगमे उपस्थित छथि, मुदा घटना-पछिलका हुनकर काज कथा केन्द्र बनेत। बाघिनक आक्रमण आरम्भक संकट, मित्रक अन्तिम इच्छाक प्रति कर्तव्य वास्तविक दुखान्त-द्वन्द्व अछि।

अध्याय ३ : अन्तिम इच्छा

मृतकक गरिमा आ मित्रक मौनक नैतिक अर्थ

मृत्युक निकट लालमैन धनसारामसँ विधिपूर्वक दाह-संस्कार करएबाक आग्रह करैत छथि। ई साधारण, स्पष्ट आ पूरा कएल जा सकनिहार अन्तिम इच्छा अछि। जीवनक अन्तिम क्षणमे मित्रक भरोसा सामाजिक सम्बन्धक सर्वाधिक गहीर परीक्षा बनैत अछि। मृत्युपछाँ देहक गरिमा समूचा समुदाय लेल मानवीय कर्तव्यक प्रश्न उठबैत अछि।

धनसाराम गाममे एहि अनुरोधक बात नहि कहैत छथि। मूल कथा ओकर कारण निश्चित नहि करैत; भय, स्वार्थ वा उपेक्षा सम्भावना रूपमे मात्र प्रस्तुत छथि। अतः ओकर मनोभावक काल्पनिक विस्तृत इतिहास जोड़ब अनुचित। इएह मौन विश्वासघातक रूपमे कथा भितर स्थापित अछि।

नायकक अन्तिम वचन आ मित्रक अनुत्तरित चुप्पी बीचक विरोध साहित्यिक रूपसँ तीव्र अछि। मृतक स्वयं अपन संस्कार नहि करा सकैत, जीवित मित्र ओकर गरिमाक प्रतिनिधि रहबाक अपेक्षा अछि। विश्वासक एहि अनादरक पाछाँ आत्माक क्रोधक अद्भुत मोड़ अबैत अछि।

अध्याय ४ : आत्माक क्रोध

अनादरक उत्तरमे दोसर हत्या : न्यायकी तीक्ष्ण समस्या

लालमैनक आत्मा धनसाराम कैँ मारि दैत अछि—मूल कथा एहि घटनाकैँ शापित प्रतिशोधक रूपमे रचैत अछि। लालमैनक अन्तिम इच्छाक अनादर निन्दनीय अछि, मुदा एक गोटेक जीवन लेब ओकर अनुपातपूर्ण नैतिक दण्ड कहब कठिन। जहिना बाघिनक आक्रमण लालमैनक प्राण लैत अछि, तहिना आत्माक क्रोध मित्रक प्राण लैत अछि। एहि समरूपतामे हिंसाक दोहराव अछि, नहि केवल दुःखक समाधान।

दूनू साथी जे एके बोनमे भैंस चरबैत छलाह, एखन दुनूक मृत्यु भऽ गेल। कथानक एहि क्षतिपर गामक शोक देखबैत अछि। गाथाक नीति मृतकक इच्छा लेल आदर सिखबैत अछि, मुदा ओहि आदरक शिक्षा यदि घातक भय द्वारा स्थापित होए तँ न्याय आ प्रतिशोधक भेद धुँधला होइत अछि।

एहि अलौकिक घटनाकेँ शाब्दिक तथ्य मानि वर्तमान सामाजिक विवादमे प्रतिहिंसा केँ सही नहि ठहराओल जाए। आलोचकीय पाठक दृष्टि हुनकर मृत्यु, मित्रक दोष आ दण्डक अनुपात तीनू स्वतंत्र प्रश्न मानैत अछि।

अध्याय ५ : सामूहिक दाह-संस्कार

विलम्बित न्याय, समुदाय आ पछतावाक प्रक्रिया

धनसारामक मृत्युपछाँ गामक लोक पूरा कथा बुझैत छथि आ लालमैनक शवक विधिवत दाह-संस्कार करैत छथि। निजी मित्रक विफल कर्तव्य सामुदायिक जिम्मेदारी बनैत अछि। एहिमे लोकगाथा मृतदेहक सम्मान केँ सामाजिक संस्थामे बदलबाक कल्पना दैत अछि। सहस्रं घरक गाम कहियो-कखनो एक गोटेक अनादर सुधारबाक कर्ता बनैत अछि।

संस्कारक बाद आत्माकेँ शान्ति भेटब कथा-विश्वक समाधान अछि। मुदा लालमैन वा धनसाराम कोनो घुरि नहि अबैत। तैं ‘न्याय स्थापित’क कथावाचकीय घोषणा उपयुक्त दाह-संस्कारक स्तरपर उचित बुझा सकैत अछि, पर प्राणहानिक सम्पूर्ण नैतिक हिसाब बन्द नहि करैत।

गामक लोक भयक कारण एकजुट भेलाह कि विवेकक कारण, से मूल पाठ विस्तारसँ नहि देखबैत। एहि अस्पष्टतामे सच्चा पछतावा आ संकट-टारबाक सामूहिक व्यवहारबीचक अन्तर बचल अछि। लोकस्मृति फिरो शोककेँ सामाजिक समारोह द्वारा स्वीकारैत अछि।

अध्याय ६ : भगताक रूपमे अमर

भक्ति, लोकदेवत्व आ रक्षाक नब सामाजिक रूप

लालमैनक आत्मा भगताक देहमे प्रवेश करैत अछि—एहन विश्वासक उल्लेख अन्तिम अध्यायमे अछि। समुदाय मनोकामना लऽ लालमैन बाबाक शरण जाएब बताओल गेल अछि। लोकदेवत्वक एहि कल्पनामे मृतकक अयोग्य व्यवहारसँ उपजल रोष अन्ततः आशीर्वादक स्रोत बनैत अछि। दुखान्त स्मृति अब लोकसमुदायक धार्मिक संरक्षक-प्रतिमा बनैत अछि।

मूल कथावाचक लालमैनक बाघिन प्रति संयम आ मित्रक अन्तिम इच्छाक सम्मान कैँ प्रधान शिक्षा बनबैत छथि। मुदा लोकदेवत्वक प्रतिष्ठा हुनकर आत्माक प्रतिशोधक हिंसासँ अलग नहि पढ़ल जा सकैत। रक्षक आ प्राणहरण करनिहार दुनू रूप एके पात्रमे उपस्थित अछि—ई नैतिक जटिलता कृतिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक गुणो अछि, सीमा सेहो।

भगताक माध्यमसँ वर्तमान समयमे मनोकामना पूर्ति होएबाक कथा भीतरक दावा अछि। बाह्य तथ्यक रूपमे एकर प्रमाण लेल स्वतंत्र नृवंशशास्त्रीय शोध, मौखिक संस्करण आ अनुष्ठानक साक्ष्य आवश्यक। लोककथाक साहित्यिक सत्यक मूल्य एहि बाह्य सत्यापनपर निर्भर नहि, पर दू स्तर मिला देब शोधक दोष होयत।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

मित्रताक अनुबन्ध : देहसँ परे कर्तव्य

‘लालमैन बाबा’क नाटकीय केन्द्र बाघिनक युद्ध नहि, मित्रक अन्तिम इच्छाक पालन अछि। जन्मजात अथवा बाल्यकालसँ संग पालत पशुधनक श्रम मित्रताक विश्वास बनबैत अछि। मृत्यु एहि विश्वासक अंतिम परीक्षा लैत अछि। लालमैन अपन देहक संस्कारक जिम्मेदारी धनसाराम पर छोड़ैत छथि; धनसारामक मौन एहि अनुबन्धकेँ तोड़ैत अछि। व्यक्तिगत अनुभवसँ सामाजिक संस्कारक मूल्य उत्पन्न होएब कथा-निर्माणक मुख्य उपलब्धि अछि।

‘स्त्री जाति’क बाघिन : लोकमर्यादा आ अनुचित समानता

कथावाचक नायकक बाघिन केँ पूरा प्रहार नहि करबाक निर्णय स्त्रीप्रति आदर कहैत छथि। सामाजिक रूपक भीतर ई संयम वीरक मर्यादारूपेँ देखा सकैत अछि, मुदा प्राणरक्षाक जैविक परिस्थिति केँ मानवीय लैंगिक आचरणक परम्परासँ समान मानब कठिन अछि। पशु स्वतन्त्र प्राणी अछि, मनुष्यक सामाजिक स्त्रीपदक प्रतिरूप नहि। एहि विश्लेषणसँ कथाक सांस्कृतिक संकेत देखल जाइत अछि आ एकर वैज्ञानिक सामान्यीकरणक जोखिमो टरैत अछि।

मृतदेहक अधिकार आ समुदाय

मृतकक शवक सम्मान व्यक्तिक सामाजिक पहचान, जाति वा प्रतिष्ठापर निर्भर नहि करबाक चाही। लालमैनक कथा एहि गरिमाकेँ मृत्युपछिला न्याय-माँगक केन्द्र बनबैत अछि। अन्ततः सामूहिक दाह-संस्कार कएल जाएब मृतकक प्रति जन-उत्तरदायित्वक प्रतीक अछि। व्यक्तिगत मित्रता असफल भेलापर सामुदायिक कर्तव्य बचल रहबाक कथा-संरचना उल्लेखनीय अछि।

अपराध, दण्ड आ प्रतिशोध

धनसारामक चूक निन्दनीय अछि, मुदा ओकर प्राणहरण न्यायिक अनुपातक कसौटीपर अस्वीकार्य ठहरैत अछि। कथक ‘न्यायपूर्ण प्रतिशोध’क भाषा उपयोग करैत छथि; आलोचक एहि मूल्याङ्कनसँ असहमत प्रश्न उठा सकैत अछि। लोकभयक माध्यमसँ कर्तव्यक संरक्षण करब एक सांस्कृतिक युक्ति अछि, नैतिक दण्डक निर्विवाद सिद्धान्त नहि। कृतिक श्रेष्ठ आलोचना दूनू पक्ष देखैत अछि।

श्रद्धाक रूपान्तरण

लालमैनक लोकदेवता रूपमे प्रतिष्ठा कथानकक क्षमामूलक अन्त अछि। पहिने आत्मा क्रोधसँ मित्रकेँ मारैत अछि; बादमे भगताक माध्यमसँ उपकारक शक्ति मानल जाइत अछि। क्रोध सँ आश्रयक एहि परिवर्तनमे समुदाय अपन हिंसक स्मृतिकेँ संरक्षक आस्थामे ढारैत अछि। तथापि मृतक मित्रक अपराधक दोष आ प्राणहानिक नैतिक समस्या श्रद्धामे समाहित भेलाक बादो विचारणीय रहैत अछि।

कथन-शिल्प, रस आ चित्र

उपक्रम आ छओ अध्यायक संग बारह चित्र-संकेत अछि। नौहट्टाक बोन, भैंस, बाघिन, मरैत लालमैनक विनती, आत्माक प्रतिशोध, गामक सामूहिक संस्कार आ भगताक प्रतिष्ठा दृश्यात्मक क्रम बनबैत छथि। पहिने वीर-भय, तकर बाद करुणा, फेर रौद्र-अद्भुतता आ अन्तमे शान्त-श्रद्धाक संक्रमण अछि। कथा अत्यन्त संक्षेपमे अलौकिक न्याय स्थापित करैत अछि; एहि त्वरित परिणामसँ पात्रक आन्तरिक मनोवैज्ञानिक विकास अल्प रहैत अछि।

रचनात्मक सीमासभ

धनसाराम शवसँ सम्बन्धित जिम्मेदारी किएक नहि निभौलाह, ओकर स्पष्ट कारण विकसित नहि। नायकक पशुप्रति आदरक व्याख्या लैंगिक मान्यता कैँ पशु-जगतपर लागू करैत अछि। आत्माक हत्या दण्डक अनुपात बिगाड़ैत अछि। गामक पछतावाक मूल कारण भय कि करुणा, से स्पष्ट नहि। लोकदेवत्वक वर्तमान प्रचलनक बाह्य साक्ष्य पुस्तक नहि देैत। एहि सभक आलोचना कृतिक मुख्य मानवीय प्रश्न—मृतकक गरिमा—कैँ कम नहि करैत।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘लालमैन बाबा’ दोस्तीक नश्वर मानवीय अनुबन्धकैँ मृत्यु-पछिला कर्तव्यक कसौटीपर परखैत अछि। एक गोटेक अन्तिम इच्छाक उपेक्षा सामुदायिक सम्मानक नब विधान जन्मबैत अछि, मुदा प्रतिशोधक हिंसा कथा कैँ नैतिक रूपसँ विवादग्रस्त बनबैत अछि। लोकदेवता रूपमे लालमैनक स्मृति श्रमजीवी समाजक आत्म-सम्मान आ मृतकक

आदरक प्रतीक अछि। एहि गाथाक साहित्यिक मूल्य प्रश्नक समाधान मात्रमे नहि, न्याय आ प्रतिशोधक परस्पर असुविधाजनक सम्बन्ध देखएबामे अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। लालमैन बाबा : मित्रताक विश्वासघात आ शापित न्यायक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क १७; PDF पृष्ठ १०२०–१०४७।

कृति १९ : मूँगा आ जालिम सिंह

उपक्रम : बेतिया राज

प्रेमक आकर्षण सँ जाति-व्यवस्थाक सामाजिक परीक्षा धरि

उपक्रम जाति-कुलक देवाल आ राजदरबारक कुचक्र बीच जालिम सिंह आ मूँगाक प्रेमक यात्रा घोषित करैत अछि। राजपूत सैनिक आ दूधबंसी कन्याक सम्बन्ध कथाक प्रारम्भिक सामाजिक तनाव अछि। एहि विवादमे व्यक्तिगत स्नेह सामाजिक शक्ति-व्यवस्थाक चुनौती बनैत अछि। प्रेमक विजयक अग्रसूचना पाठककेँ पहिनेसँ भेटैत अछि; कथाक वास्तविक अर्थ तकर मूल्य आ बाधाक प्रक्रियामे विकसित होइत अछि।

उपक्रम बाघ-शिकारी महींस, राजाक क्रोध आ अन्तिम मिलनक रोमांच एकत्र करैत अछि। एहि असामान्य घटनाक शब्दावली लोकवीरगाथाक अछि। मुदा जातिगत प्रतिष्ठा, पत्नी पर हिंसा आ मित्रक प्राणहानि आधुनिक मूल्याङ्कनक विषय छथि। एकरे सुखान्त परिणाम सँ मध्यक सभी हिंसा नैतिक रूपसँ साफ नहि भऽ जाइत।

अध्याय १ : इनार लगक भेँट

नजरि, पानि आ स्त्रीक अनिश्चित प्रतिक्रिया

गामक इनारपर मुँगा पानि भरैत छथि। घोड़ापर आबैत सैनिक-सरदार जालिम सिंह हुनका देखि रुकैत छथि आ पानि माँगैत छथि। पियासक बहन्ना वास्तविक आकर्षणक आवरण बनैत अछि। सामान्य सार्वजनिक श्रमस्थल एकाएक प्रेमक आरम्भक दृश्य बनैत अछि।

मूँगा सैनिकक नजरि पहिचानैत छथि आ घैल छोड़ि भागैत छथि। कथा स्वयं अनिश्चितता रखैत अछि—लाज, डर कि दुनू? आलोचक एकरा स्वतः पारस्परिक प्रेमक स्वीकृति घोषित नहि करि सकैत। राजकीय पदधारी पुरुष आ ग्रामीण कन्याबीचक शक्ति-अन्तर एहि भेँटमे उपस्थित अछि; मूँगाक दौड़ि जाएब हुनकर निज प्रतिक्रिया छी, जकर अर्थ तत्क्षण निश्चित नहि।

इनारक पानि, घैल आ घोड़ाक टाप सामाजिक स्थानक सूक्ष्म प्रतीक बनैत अछि। सामान्य जीविका आ राजकीय शक्ति आमनेसामने अवैत अछि। ई दृश्य छोट होइतहुँ समस्त प्रेमगाथाक भावनात्मक आरम्भ अछि।

अध्याय २ : पृथ्वीपालक कुचक्र

दरबारी ईर्ष्या, हिंसा आ पट्टूक सामाजिक निष्ठा

पृथ्वीपाल जालिम सिंहक बढ़ैत प्रतिष्ठा सँ ईर्ष्यालु अछि। ओ अफवाह, चुगली आ झूठ आरोप द्वारा राजाक दृष्टि खराब करबाक प्रयास करैत अछि। एहि ठाम राजनीतिक सत्ता तथ्यक निष्पक्ष जाँचक बदला कान-भराइ सँ प्रभावित होइत देखाओल गेल अछि। जालिमक शत्रु प्रत्यक्ष युद्धक दल नहि, दरबारक भीतर संवादक विकृति अछि।

पट्टू मलाह जालिमक संगी छथि। पृथ्वीपाल द्वारा पठाओल आक्रमणकारीक विरुद्ध पट्टू हिंसक लड़ाइ लरि जालिमकेँ बचबैत छथि। जातिगत भिन्नता पाछाँ राखि पट्टूक निष्ठा कथाक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। मुदा पट्टूक हत्यात्मक विजय केँ पूर्ण रक्षाधर्मक निर्विवाद आदर्श नहि कहब। जालिमपर प्रारम्भिक हमला गलत, तइयो हिंसाक अनुपातक प्रश्न अलग अछि।

पृथ्वीपाल पराजय सँ आरो ईर्ष्यालु भऽ राजा केँ मूँगाक विषयमे सेहो भड़कबैत अछि। निजी प्रेम राजदरबारक सत्ता-संघर्षक औजार बनि जाइत अछि।

अध्याय ३ : गुरु मौनी बाबा

प्रेम, नैतिक सलाह आ स्वयं निर्णयक अधिकार

जालिम राजा सँ बढ़ैत दूरीक समाचार पबैत छथि। ओ पट्टू संग मौनी बाबा लग जाइत छथि आ मूँगाक आकर्षण आ राजनीतिक संकट विषयमे सलाह माँगैत छथि। मौनी बाबा मूँगासँ सम्बन्ध छोड़बाक कहैत छथि। एहि निर्देशमे सम्भवतः सत्ता-संघर्ष टारबाक व्यावहारिक पक्ष अछि, मुदा कथामे गुरु अपन निर्णयक विस्तार नहि करैत छथि।

जालिम मौन रहैत छथि, मुदा मनहि मे सुझाव स्वीकार नहि करैत। एहि मौनमे गुरु-आज्ञाक अधिकार आ निजी निर्णयक संघर्ष अछि। लोकगाथा गुरु केँ प्रतिष्ठित व्यक्ति मानैत अछि, तथापि नायकक जीवनक अन्तिम चुनाव स्वतंत्र रहैत अछि।

एहि प्रसंगमे मूँगाक स्वयं दृष्टि अनुपस्थित अछि—सलाह दुई पुरुषक संवादमे तय होइत अछि। प्रेमक भाव केवल जालिमक आन्तरिक दुविधा रूपमे प्रस्तुत अछि। आधुनिक आलोचना लेल स्त्रीपात्रक स्वतंत्र सहमतिक प्रक्रिया एखनहुँ स्पष्ट नहि।

अध्याय ४ : पट्टूक बलिदान

समुदाय-पार मित्रता आ अन्यायपूर्ण प्रतिहिंसाक चक्र

पृथ्वीपाल पट्टूक विरुद्ध नव चालि रचैत अछि। पट्टू भवानी माताक नाम लऽ लड़ैत छथि, पृथ्वीपाल कैं मारैत छथि, मुदा ओकर लोक-लश्कर द्वारा घेरि मारल जाइत छथि। एहि घटनामे मित्रक रक्षा लेल प्राण देबाक लोकनिष्ठा अछि। पट्टूकैं केवल सहायक पात्र मानब कथाक जाति-विरोधी सम्भावना घटाएत—कथानकक निर्णायक रक्षा हुनकर कर्मक फल अछि।

पृथ्वीपालक मृत्यु तथा पट्टूक मृत्युक घटनासभ छिटफुट वीररसक तीव्रता दैत अछि। मुदा हिंसाक प्रत्येक चरण आगाँक नव हानिक कारण बनैत अछि। पट्टूक मृत्यु जालिमक लेल निजी शोक अछि, मुदा कथा तुरन्त मूँगाक वनवासक समाचार दिस मुड़ैत अछि। एहि शीघ्र संक्रमणसँ मित्रक दुखक विस्तार कुछ घटैत अछि।

लोकवीरगाथामे मित्रक बलिदान सामाजिक निष्ठाक आदर्श बनैत अछि; आधुनिक पठनमे ओकर जीवित रहबाक सम्भावना, दमन रोकबाक संरचनात्मक साधन आ हिंसा घटाएबाक वैकल्पिक मार्गो प्रश्न होइत अछि।

अध्याय ५ : बोनक कनुआ

असाधारण शरीरबल आ स्त्री-बलिक असंगति

मूँगाक भौजीक भाए कनुआ नामक दुसाध व्यक्ति छथि, जे वनमे रहैत आ बाघ-शिकारी महींसपर चलैत छथि। हुनकर भोजन आ देह-बलक अतिशयोक्ति लोकवीर गाथाक दैहिक कौशलक परिचय अछि। मुदा एहि असाधारणताक बाद ओ मूँगाकेँ देवी लग बाँन्हि बलि देबाक तैयारी करैत अछि। कथा बलिदानक कारण विस्तारसँ नहि बतबैत।

एहि प्रसङ्गमे महत्त्वपूर्ण नैतिक तथ्य अछि जे मूँगा प्राणसंकटमे छथि; ओहि रीति-रिवाजक सामाजिक औचित्य स्रोत सिद्ध नहि करैत। बलिप्रथाक नामपर कन्याक प्राण लेबाक तैयारी निन्दनीय अछि। लोकविश्वासक घटना साहित्यिक अध्ययनक विषय भऽ सकैत, व्यवहारिक धर्मादेश नहि।

कनुआ आ मूँगाक पारिवारिक सम्बद्धता स्वयं कथामे उल्लेखित अछि। तैं कनुआ कैँ अनजान बाहरी राक्षस बनाकऽ सम्बन्धक जटिलता मेटा देब उचित नहि। एक स्त्रीपर हिंसाक खतरा कखनो अपन सम्बन्ध-जालक भीतर सँ सेहो आबि सकैत अछि।

अध्याय ६ : मरण-द्वारपर युद्ध

अचानक उद्धार, प्राणरक्षा आ प्रतिहिंसात्मक विजय

कनुआक खाँड़ा उठलाक क्षण जालिम वनमे पहुँचैत छथि। हुनकर एहन समयपर प्रवेशक स्पष्ट कारण मूल कथा नहि बतबैत; सूचना, अन्तःप्रेरणा वा नियतिक विकल्प कथक खुलल राखैत छथि। समीक्षामे निश्चित गुप्त संदेशवाहक वा मार्गदर्शक जोड़ब अप्रमाणित होयत।

जालिम भाला सँ कनुआक महींस कैं घायल करैत छथि, फेर कनुआसँ युद्ध करैत छथि। अन्तमे कनुआ मारल जाइत अछि आ मूँगा बाँचैत छथि। कथा एहि घटनाकैं प्रेम आ शौर्यक संयुक्त सफलता मानैत अछि। मुदा प्राणरक्षाक आवश्यकता आ शत्रुक प्राणहरणक औचित्यक प्रश्न पर स्वतन्त्र नैतिक विवेचन उचित अछि।

मूँगाकैं बन्धन सँ मुक्त करब कथा-रचनाक वास्तविक मानवीय विजय अछि। हिंसाक भीतर जीवन बचाओल गेल अछि, मुदा कनुआक मृत्युक पाछाँ कोन स्थानीय अथवा सामाजिक सुधार सम्भव भेल, से किताब नहि बतबैत।

अध्याय ७ : शोणितक लाल नूर

विवाह, जाति-व्यवस्थाक प्रतिरोध आ सामुदायिक मान्यता

वनक संघर्षक बाद जालिम मूँगाकेँ सिनूर दैत छथि। मूल कथामे पुरोहितक उपस्थिति वा गुरु मौनी बाबाक आशीषक रूपक विषयमे अनिश्चितता अछि; तैं एकटा निश्चित विधि कल्पित करब नहि उचित। जालिम मूँगाकेँ गाम लऽ जाइत छथि आ पत्नी घोषित करैत छथि। राजपूत घरानाक मर्यादाक सोझाँ जाति-भिन्न विवाहक खुलल स्वीकार सामाजिक साहसक चिह्न अछि।

जालिमक भाइ कुँअर मूँगाक दूधबंसी/दुसाध परिचय जानि विरोध करैत छथि। मुदा जालिमक माए बेटाक पक्ष लैत छथि। माए एतय घरक अधिकारक भीतर नव दम्पतिक प्राथमिक आश्रय छथि; स्त्रीक सक्रिय समर्थन सामाजिक अनुदारताक प्रतिवाद बनैत अछि।

कथाक विवाह-दृश्यमे मूँगाक स्वतंत्र सहमतिक विस्तृत संवाद नहि, मुदा पछिला अध्यायसभ हुनकर आत्मनिर्भर साहस आ देखभालक कर्म अवश्य प्रस्तुत करैत अछि। एहि कारण हुनका केवल पुरस्कार बनायब पाठक अन्याय होयत।

अध्याय ८ : भाइक विरोध

घरक भीतर जातिगत आक्रमण आ विश्वासक विघटन

माएक सहमतिक बादो भाइसभक जाति-आधारित रोष शान्त नहि होइत। ओ जालिमपर आक्रमण करैत छथि। एहि घटनामे प्रेमक विरोधक सबसे भयंकर रूप घरक भीतर घटैत अछि। बाहरी राजदरबारक षड्यन्त्र सँ बचल योद्धा अपन रक्तसम्बन्धक हाथसँ घायल होइत अछि।

आक्रमणकारी भाइसभ बादमे भागि जाइत छथि। हुनकर प्रेरणा डर अथवा अपमान—कथा निर्णय नहि दैत। अतः एकर निश्चित मानसिक इतिहासक रचना अनुचित। जालिमक घाव शारीरिक होइतहुँ सम्बन्धक विश्वास टूटबाक प्रतीक अछि। मूँगा घायल पतिकेँ लऽ जालिमक दोस्त भैरवक घर दिस चलैत छथि। एतय कथा नायिकाकेँ सक्रिय रक्षक बनबैत अछि।

अध्याय ९ : वैद्यक द्वार

मूँगाक निर्णयक शक्ति आ चिकित्सकीय देखभालक यथार्थ

बाटमे जालिमक रक्तस्राव आ दर्द बढ़ैत अछि। मूँगा वैद्य लग रुकैत छथि, उपचार करबैत छथि आ राति भरि जागि देखभाल करैत छथि। एतय लोकगाथा पहिनुक बलसंपन्न युद्धदृश्य सँ हटि साधारण मानवीय स्वास्थ्यसेवाक भूमिका स्वीकार करैत अछि। नायकक जीवन अब तरुआरि नहि, मूँगाक निर्णय आ वैद्यक उपचार सँ सुरक्षित होइत अछि।

इनार लग पहिल भेटमे भागि गेल ग्रामीण कन्या एखन गम्भीर संकटमे विवेकशील संरक्षिका छथि। एहि चरित्र-विकासमे कृतिक साहित्यिक उपलब्धि अछि। मूँगाक साहस नायकक सैन्य पराक्रमक पूरक नहि मात्र; ओ स्वतंत्र जीवनरक्षक क्रिया अछि।

मूल कथक मरहम-पट्टी आ रक्तस्राव घटबाक सामान्य वर्णन दैत छथि। एकरा निर्दिष्ट ऐतिहासिक चिकित्सा-पद्धति वा चिकित्सकीय प्रमाणक रूपमे विस्तार करब नहि।

अध्याय १० : घर घुरब

पश्चात्ताप आ पाठगत सम्बन्ध-विसंगति

घायल जालिमक उपचार चलैत अछि तखन परिवारक लोक कानैत अबैत छथि आ दम्पति कैँ पुनः अपन घर लऽ जाइत छथि। मूल पाठक भाषामे एहि ठाम ‘मूँगाक माए आ भाइ’ उल्लेखित अछि, मुदा पहिने आक्रमणक विषय ‘जालिमक भाइ कुँअर आ आन भाइ’ छल। पाछाँ एके प्रसङ्गमे पूर्व आक्रमणकारी भाइकैँ पछताइत देखाओल गेल अछि। एहि कारण पाठ भीतर सम्बन्ध-सूचक पहिचानक असंगति अछि; संपादकीय परीक्षामे वास्तविक मूल पृष्ठ आ पारिवारिक वृत्तान्तक मिलान चाही।

कथाक नैतिक केन्द्र स्पष्ट अछि—हिंसा कयनिहार घरजन अपन काजपर पछतबैत छथि आ नव दम्पतिगण कैँ स्वागत करैत छथि। मुदा पात्र-पहिचानक अनिश्चितता नुका कऽ निष्कर्ष कैँ अधिक निश्चित बनायब अनुचित। पश्चात्तापक अभिनय आ हिंसाक जिम्मेदारीक व्यवहारिक स्वीकृति बीच अंतर सेहो रहैत अछि।

अन्तिम घुरती सामाजिक मेलमिलापक सुखान्त अछि। तइयो अपमानक संरचना केवल एक पारिवारिक स्वीकारसँ पूर्ण रूपसँ समाप्त भऽ गेल, एहन व्यापक सामाजिक दावा पाठसँ सिद्ध नहि होइत।

अध्याय ११ : प्रेमक विजय

लोकगाथाक सुखान्त आ सामाजिक संरचनाक प्रश्न

अन्तिम अध्याय कथा कैँ जाति-कुलक देवाल पर प्रेमक विजय कहैत अछि। इनारक भेँट, पृथ्वीपालक षड्यन्त्र, पट्टूक बलिदान, कनुआक हिंसा, भाइक आक्रमण आ वैद्यक उपचार सबटा एक समेकित घटना-वृत्त बनैत अछि। लेखक बाह्य इतिहासक भाषा प्रयोग करैत छथि, मुदा पाठमे स्वतंत्र अभिलेख नहि अछि।

मूँगाक चरित्र केवल प्रेमक वस्तु बनि नहि रहैत; उपचारक निर्णायक चरणमे हुनकर साहस कथाक अन्तिम मोड़ तय करैत अछि। पतिपत्नी एक-दोसराक जीवन बचेबाक अलग-अलग समयमे कर्ता छथि। ई पारस्परिकता सुखान्तक मानवीय आधार अछि।

मूल समापन बेतिया क्षेत्रमे लोकगीत द्वारा गाथा जीवित रहबाक दावा करैत अछि। एहन लोकपरम्पराक वर्तमान प्रचलनक तथ्य शोधपरक रूपेँ स्थापित करबाक लेल स्वतंत्र क्षेत्रीय स्रोत चाही। कथा भीतर ई दावा स्मृतिगत स्थायित्वक प्रतीक रूपमे पठनीय अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

प्रेमक कथामे जातिगत सत्ताक आलोचना

‘मूँगा आ जालिम सिंह’क कथानक इनार लगक निःशब्द भेँटसँ आरम्भ होइत अछि आ हिंसा, पलायन, उपचार एवं सामाजिक स्वीकारक लम्बा मार्ग पार कऽ घर घुरैत अछि। जालिमक राजपूत पद आ मूँगाक दूधबंसी परिचय केवल पात्रक पृष्ठभूमि नहि, विरोधक सामाजिक आधार अछि। पृथ्वीपालक दरबारी ईर्ष्या प्रेमक विषयकेँ सत्ता-संघर्षमे बदलैत अछि; जालिमक भाइसभक विरोध जाति-सीमाक भीतर पारिवारिक हिंसा उत्पन्न करैत अछि। एहि क्रममे प्रेमक निजी अधिकार सामूहिक मर्यादाक सत्तासँ टकराइत अछि। अन्तिम स्वीकृति सामाजिक सम्भावनाकेँ रेखांकित करैत अछि, मुदा परिवारक परिवर्तन पूरे समाजक जाति-व्यवस्थाक समाप्ति सिद्ध नहि करैत।

मूँगाक बदलैत भूमिका : देखल गेल स्त्री सँ निर्णय लेनिहार व्यक्ति

पहिल अध्यायमे मूँगा इनारपर पानि भरैत छथि आ राजकीय सैनिकक दृष्टि देखि भागैत छथि। एहि मौनक अर्थ लाज कि भय—स्रोत निश्चित नहि करैत। बादक अध्यायमे हुनका बलि देबाक प्रयास होइत अछि; जालिम द्वारा बचाओल जाएब संकट-निवारण अछि। मुदा कथाक सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्री-केंद्रित प्रसंग वैद्यक द्वार अछि। घायल पतिकेँ उपचार लेल रोकब, रातिभरि देखभाल करब आ उचित निर्णय लेब मूँगाक सक्रिय विवेक उद्घाटित करैत अछि। एतय ओ केवल नायकक विजयक फल नहि; नायकक जीवनरक्षाक स्वयं निर्णायक कर्ता छथि। एहि चरित्र-विकासक मूल्य पुस्तकक रोमांचकारी युद्धसँ कम नहि।

पट्टूक बलिदान आ मित्रताक वर्गीय स्वर

पट्टू मलाह मित्र दरबारक सैनिक-सरदार जालिमसँ सामाजिक पदमे अलग छथि, मुदा कथामे जालिमक भरोस हुनकर बल आ निष्ठापर आधारित अछि। पृथ्वीपालक विरुद्ध हिंसक प्रतिरोधमे पट्टू प्राण गमबैत छथि। एहि घटनाक लोकवीर अर्थ जातिगत भिन्नताक बावजूद सहयोग अछि। पर पट्टूक मृत्यु कथामे अपेक्षाकृत शीघ्र मुख्य प्रेमकथाक पाछाँ छूटैत अछि। जालिमक सुखान्तमे पट्टूक अपूरणीय हानिक अलग सामाजिक न्याय वा परिवारक भाग्य वर्णित नहि; ई रचनाक करुण सीमा अछि।

लोकवीरत्वक अतिशयोक्ति आ घटनाक सम्भाव्यता

कनुआक बाघ-शिकारी महींस, असाधारण भोजन, महाबली देह आ युद्धक अत्यन्त तीव्र परिणाम लोकवीरगाथाक अद्भुत विधान अछि। एकर अर्थ नायकक खतरा दृश्यात्मक बनायब अछि, वास्तविक जीवविज्ञान वा सामरिक इतिहासक दस्तावेज प्रस्तुत करब नहि। कनुआक मूँगाकेँ देवीक समक्ष मारबाक तैयारीक कारण मूल पाठ अस्पष्ट छोड़ैत अछि। एहि रिक्ततासँ निश्चित धार्मिक प्रथा, कालविशेषक सामाजिक कानून वा मुँगाक निजी दोषसँ भरब बिना साक्ष्यक कल्पना होयत। साहित्यिक प्रभाव आ इतिहासक दावासँ अलग राखब कृतिक उचित अध्ययन अछि।

मातृत्व, सहमति आ घरक न्याय

जालिमक माए अंतरजातीय सम्बन्धक पाछाँ ठाढ़ होइत छथि। एहि समर्थनसँ उपन्यासक घरेलू संसार केवल नियंत्रणक स्थल नहि रहैत; सामाजिक परिवर्तनक पहली शरणो बनैत अछि। कुँअर आ भाइसभक विरोधक सोझाँ माएक स्वीकृति कृतिक सुखान्त सम्भव बनबैत अछि। पर विवाहक निर्णायक दृश्य मूँगाक स्वयं विस्तृत

सहमतिक बयान नहि दैत। तैं बादक सक्रिय व्यवहार कैं पहिल क्षणक सभ प्रक्रिया स्वतः प्रमाणित मानब उचित नहि। व्यक्तिक स्वतंत्रता आ सांस्कृतिक वचनबद्धता दूनूक चर्चा आवश्यकीय अछि।

रक्त, उपचार आ प्राणरक्षाक नैतिकता

कथामे तलवारि आ भालाक चोट नायकत्वक बहिरंग छवि रचैत अछि; वैद्यक मरहम-पट्टी आ मूँगाक देखभाल जीवन टिकएबाक भितरंग सत्य उद्घाटित करैत अछि। जालिमक बल विरोधीकैं मारि सकैत अछि, मुदा अपन घाव स्वयं नहि भरा सकैत। एहि कारण देखभाल, व्यावसायिक चिकित्सा आ श्रमसँ जुड़ल सामाजिक ज्ञान हिंसक शौर्यक पूरक बनैत अछि। प्रेमक साहित्यिक विजय मरण-युद्धक परिणाम मात्रमे नहि, दू मनुष्यक बचल जीवनक देखभालमे स्थापित होइत अछि।

पाठालोचनक आवश्यक सुधार

अध्याय ८ मे जालिमक भाइ कुँअर आ अन्य भाइसभ द्वारा जातिगत आक्रमण अछि। अध्याय १० मे आगन्तुकक पहचान ‘मूँगाक माए आ भाइ’ कहि प्रस्तुत होइत अछि, फेर आक्रमण करनिहार भाइक पछतावा सेहो जुड़ैत अछि। एहि सम्बन्ध-निर्देशमे असंगति अछि। ई आलोचकद्वारा कल्पना कऽ एकरूप करबाक विषय नहि; अधिकृत सम्पादनमे मूल पृष्ठ, वाक्यरचना आ पात्र-सम्बन्धक दोसर प्रमाण जाँचिकऽ संशोधन करब आवश्यक। मौनी बाबाक विवाहसमय उपस्थितिक विषयमे स्रोत स्वयं विकल्प राखैत अछि; तकरा सेहो निश्चित घटना नहि बनाओल जाए।

भाषा, रस आ दृश्यात्मक क्रम

एगारह अध्यायक संग बाइस चित्र-संकेतक क्रम अछि। इनार, दरबार, गुरु, वन, बलिदानस्थल, विवाह-सिनूर, घायल देह आ वैद्यक उपचार दृश्यक आरोह बनबैत छथि। शृंगार-स्नेह, वीर-भय, करुणा आ अन्तिम शान्ति कथाक प्रमुख भाव-क्रम छथि। अनेक अध्याय संक्षिप्त निर्णयात्मक वाक्यसँ घटना समाप्त करैत अछि, जाहिसँ पात्रक मनोवैज्ञानिक जटिलता कहियो अविकसित रहैत अछि। मुदा ई संक्षिप्तता सचित्र लोककथाक द्रुत प्रस्तुति सँ सेहो सम्बद्ध अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘मूँगा आ जालिम सिंह’क स्थायी उपलब्धि प्रेम कैं जातिगत शक्ति-व्यवस्थाक सोझाँ सामाजिक विकल्प रूपमे रखब आ नायिकाकैं संकटमे सक्रिय जीवनरक्षिका बनएब

अछि। पट्टूक मित्रता आ मातृसमर्थन सामाजिक सम्बन्धक व्यापक सहकार दर्शबैत अछि। एकर सीमासभमे नायिकाक स्पष्ट वैवाहिक सहमतिक अल्प प्रस्तुति, बलीक कारणक अनिश्चितता, हिंसाक तीव्र महिमाक सम्भावना, पारिवारिक सम्बन्धक पाठगत असंगति आ लोकइतिहासक अप्रमाणित सामान्यीकरण प्रमुख छथि। एहि सभकेँ मानि पढ़ला पर ई गाथा केवल स्नेहक सुखान्त नहि, जाति, सत्ता, हिंसा, देखभाल आ सामाजिक स्वीकृतिक जटिल आख्यान बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मूँगा आ जालिम सिंह : बेतिया राजक प्रेम आ प्रतिशोधक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क १८; PDF पृष्ठ १०४८–१०९५।

कृति २० : बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे

उपक्रम : निष्कलंक जीवन

आदर्श चरित्रक पूर्वघोषणा आ ग्रन्थकारत्वक असंगति

उपक्रम बोधि कायस्थ कैँ मिथिलाक दरबारक सत्यनिष्ठ, लोभरहित आ भक्तिपरायण सेवक मानि प्रस्तुत करैत अछि। जीवनक अन्तिम समय गंगा-लाभक कल्पना एहि नैतिक पात्रक परम लक्ष्य बनैत अछि। एहि प्रकार जीवनीक सामान्य विवरण सँ कथा नैतिक उदाहरणक विधामे प्रवेश करैत अछि—पाठक पहिनेसँ जनैत अछि जे नायक निष्कलंक छथि, कौतूहल हुनकर चरित्रक दोष-खोजमे नहि, अंतिम कृपाक चमत्कारमे अछि।

कृतिक उपक्रम इतिहासवृत्तक जकाँ ज्योतिरीश्वर, पुरुषपरीक्षा आ विद्यापतिक सम्बन्ध बनबैत अछि। मुदा ई कथनक भीतर ई ग्रन्थकारत्वक असंगति पाँचम अध्यायमे प्रकट होइत अछि। कृतिक भक्तिरसक प्रभाव बनौने राखि, पाठालोचन ई तथ्य अलग करैत अछि जे विद्यापतिक पुरुषपरीक्षाक स्थापित रचनाकारत्वक पाछाँ प्रमाणित विद्वत् प्रकाशन उपलब्ध अछि; ज्योतिरीश्वरक पुरुषपरीक्षाक दावा वर्तमान पाठसँ स्थापित नहि होइत। जँ लेखक लोकश्रुति कैँ साहित्यिक रूप देबाक लेल ई सम्बन्ध जोड़ैत छथि तँ एकरा ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि, आख्यानक दावा मानब उचित।

अध्याय १ : निष्कलंक कायस्थ

राजकीय सेवा, दान आ सादगीक नैतिक विन्यास

पहिल अध्यायमे बोधि कायस्थ दरबारमे वेतनभोगी सेवक छथि। हुनकर जीवन साधारण अछि; अतिरिक्त कमाइ दान-पुण्यमे खर्च करैत छथि। कथाकार दोसरक धन वा स्त्रीक प्रति लालसा नहि करब आ हिंसासँ दूरीक गुण गनबैत छथि। ई नैतिक चरित्र-निर्माण स्पष्ट अछि : राजदरबारक सत्ता आ सम्पत्तिक निकट रहितो लोकहितक पक्ष चुनब।

दानक विवरण नायकक सामाजिक पुण्य अर्जनक साधन बनैत अछि। मुदा कथा कुन विशिष्ट दान, किन प्राप्तकर्ता आ कोन सामाजिक परिणाम देल गेल, से विस्तृत नहि करैत। एतय गुण-घोषणा घटनात्मक प्रदर्शन सँ बेसी अछि। काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ नायकक आदर्शत्व स्थापित करबाक ई तीव्र विधि अछि, मुदा आधुनिक चरित्रचित्रणक दृष्टिसँ ओकर जटिलता सीमित रहैत अछि।

भोला बाबाक भक्ति दैनिक धर्माचारक अंग अछि। जीवनक साधारण अर्थार्जन आ आध्यात्मिकता विरोधी नहि मानल गेल छथि। एहि संतुलनमे श्रम, कर्तव्य, दान आ श्रद्धाक एक नैतिक संसार रचल गेल अछि। अलग सामाजिक उदाहरणक अल्पताक बावजूद कथा अभिलषित जीवनचर्याक एक परिचित रूपक प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय २ : गंगा-लाभक निर्णय

जीवनक अन्तिम यात्रा आ देहत्यागक सांस्कृतिक विधान

बुढ़ापामे बोधि कायस्थ गंगातटपर अंतिम समय व्यतीत करबाक लेल घर छोड़ैत छथि। लेखक गंगा-लाभ कैँ मोक्षदायी मानल धार्मिक परम्पराक हिस्सा कहैत छथि। एहि निर्णयमे मृत्यु सँ संबंधित आस्था, यात्राक कष्ट आ जीवनपर्यन्त साधनाक विश्वास मिलैत अछि। भक्तक यात्रामे भौतिक दूरी जेना-जैना घटैत अछि, आध्यात्मिक उत्कंठा बढ़ैत अछि।

मूल प्रसङ्ग यात्रा कैँ संकल्पक विजय मानैत अछि। मुदा बालपाठक लेल एकटा जरूरी विवेक अछि : पवित्र स्थानपर मृत्यु चाहब वा अकेले कठिन यात्रा करब सामान्य व्यवहारिक आदर्श नहि। वृद्ध व्यक्तिक सुरक्षा, उपचार आ सहायताक मानवीय आवश्यकता नहि घटैत। धार्मिक भावना कृतिक पात्रक प्रेरणा अछि; जीवनक संरक्षणक नैतिकता स्वतन्त्र मानक रहैत अछि।

घर-द्वारक विदाईक प्रसङ्ग भावनात्मक अछि, मुदा परिवारक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया विस्तारमे नहि। एतय लेखक गृहस्थ संघर्षक बदला तीर्थयात्रीक निजी चेतनाकैँ प्रधानता दैत छथि। कथा स्थूल जगतसँ हटि भक्त आ नदीमाताक द्विपक्षीय सम्बन्ध दिस केन्द्रित होइत अछि।

अध्याय ३ : गंगाकैँ सम्बोधन

भक्तिक प्रार्थना आ दूरत्वक नाटकीयता

बोधि कायस्थ गंगातटसँ लगभग आधा कोस दूर रुकि गंगा कैं पुकारैत छथि। कथाकार एकरा अहंकार नहि, समर्पणक याचना कहैत छथि। मंदिर-गमन वा तीर्थयात्राक सामान्य क्रम उलटैत अछि : भक्त स्वयं नदी धरि पहुँचबाक बदला नदीकैं अपन दिस अनबाक अनुरोध करैत छथि। एहि असामान्य कृत्यसँ कथा-तनाव उत्पन्न होइत अछि।

आधा कोस दूरी कथाक ठोस भौगोलिक सीमा अछि; भक्तिक भाषामे ई दूरी भगवत् कृपाक परीक्षण बनैत अछि। नायकक प्रार्थना आ सम्भावित निष्फलताक प्रश्नक पुनरावृत्तिसँ अध्यायक लय बढ़ैत अछि। पाठक जकरा पहिनेसँ निष्कलंक जनैत अछि, ओकर इच्छा सफल होएबाक अपेक्षा बनैत अछि।

भक्ति-मीमांसाक दृष्टिसँ ई दृश्य अहंकारशून्य आत्मसमर्पणक रूपक पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा नैतिक दृष्टिसँ ‘भक्ति देखएबाक परीक्षा’ आ व्यक्तिक अंतर्जगतक विनम्रता हर बेर समान बात नहि। लेखक स्वयं याचनाकैं विनम्र कहैत छथि; आलोचक ओकर कलात्मक प्रयोजन पहिचानैत अछि, आ दावा-निर्णायक अन्य ऐतिहासिक प्रमाणक अभावो मानैत अछि।

अध्याय ४ : गंगाक अद्भुत कृपा

नदीक मानवीकरण, अलौकिक घटनाक अर्थ आ प्राणान्तक प्रश्न

चौठम अध्यायमे गंगा माय अपन तट छोड़ि बोधि कायस्थ लग पहुँचैत छथि आ हुनका अपना प्रवाहमे समाहित करि लैत छथि। ई लोकभक्ति आख्यानक चरम दृश्य अछि। नदीक मानवीकरण मातृत्व आ करुणाक देवत्व बनबैत अछि। प्रकृति निस्पन्द वस्तु नहि, भक्तक पुकार सुनि प्रतिक्रिया देनिहार व्यक्ति रूपमे चित्रित अछि।

‘धार अपना सीमासँ चलि आबि गेल’ सन कथा-घटना कैं वास्तविक नदीविज्ञानक प्रमाण नहि कहब। लोककथात्मक अद्भुत रस एही असम्भव आगमनसँ बनैत अछि। आध्यात्मिक विश्वासक भीतर घटना मोक्षदायी कृपाक प्रतीक अछि; तकर वैज्ञानिक अथवा ऐतिहासिक सत्यापन अलग प्रश्न अछि।

नायकक देहत्यागक वर्णनमे ‘सीधे स्वर्ग’ प्राप्तिक मूल्याङ्कन लेखकक धार्मिक विधान अछि। पाठक लेल जीवनभरि सदाचार आ श्रद्धाक महत्त्व एहि रूपकसँ स्पष्ट होइत अछि, मुदा मृत्यु वा देह-हानि कैं व्यवहारिक अनुकरणीय अन्तिम लक्ष्य बनायब अनुचित। एहि दृश्यक नैतिक अर्थ सदाचारक प्रतिष्ठामे अछि; जीवित मनुष्यक सुरक्षा ओकर विरोधमे नहि ठाढ़ करबाक चाही।

अध्याय ५ : विद्यापतिक अमर पद

कविताक प्रथम-पुरुष स्वर आ जीवनीक अनिर्णीत सम्बन्ध

अन्तिम अध्याय ‘बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे’ कैं विद्यापतिक गंगा-स्तुति मानैत अछि आ बोधि कायस्थक गंगा-लाभसँ जोड़ैत अछि। पदक आरम्भ गंगातटपर प्राप्त सुखक स्मृति रखैत अछि; पदक अन्तिम भागमे ‘विद्यापति’क स्वयं नामोच्चार अछि।

एहि कारण पदक काव्य-वक्ता कैँ बिना पाठाधारित प्रमाण बोधि कायस्थ मानि लेब आलोचकीय त्रुटि होयत। काव्यकार, गीतक वाचक आ कथा-नायकक अलग-अलग पहिचान जरूरी अछि।

एहि अध्यायमे पुरुषपरीक्षा कैँ ‘विद्यापति रचित संस्कृत ग्रन्थ’ कहल गेल अछि—जे उपक्रमक ज्योतिरीश्वर-आरोपणसँ भिन्न अछि। बाह्य ग्रन्थ-सूचना विद्यापतिक रचनाकारत्वक समर्थन करैत अछि। तैं कृतिक मूल ग्रन्थकारत्वक दावा संशोधनीय अछि। एहि पाठालोचनक आवश्यकता भक्तिसाहित्यक मूल्य घटबैत नहि; उलटे विद्यापतिक काव्य कैँ सही सन्दर्भमे पढ़बाक बाट बनबैत अछि।

कथाक भाषामे पदक शीर्षक कैँ बोधि कायस्थक अनुभवक ‘सार-तत्त्व’ कहल गेल अछि। ई एक व्याख्यात्मक सम्भावना हो सकैत अछि, पर ऐतिहासिक निश्चितताक प्रमाण नहि। कविता भीतर नदीसँ विदाईक भाव, पुनर्दर्शनक इच्छा, पवित्रताक प्रति क्षमा-याचना आ मृत्युक समय स्मरणक कामना अछि। एहि बहुस्तरीय भावककैँ एक पात्रक अलौकिक घटना मात्रमे सीमित करब पदक स्वतन्त्र काव्यात्मक मूल्य कम करत।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

नैतिक जीवनीक अलौकिक विधान

कृतिक प्रारम्भ बोधि कायस्थक सदाचारक गुणघोषणासँ होइत अछि, मध्य भाग अंतिम यात्रा आ प्रार्थनाक नाटकीय तनाव बनबैत अछि, अन्त गंगाक कृपा आ विद्यापतिक

पदक माध्यमसँ स्मृतिगत स्थायित्व रचैत अछि। ई विन्यासमे पात्रक नैतिक जीवनक फल कहि नदीक अद्भुत प्रतिक्रिया प्रस्तुत अछि। संस्कृत-आधारित कथानैतिक परम्पराक जकाँ सदाचारक सतत आचरण कैँ कथा अन्तमे अलौकिक पुष्टिक आधार देइत अछि। मगर नैतिक संदेश आ घटना-इतिहास एक नहि; सदाचारक मूल्य चमत्कार सिद्ध भेलाक प्रमाणपर आश्रित नहि रहबाक चाही।

नदी-माता आ प्रकृतिक मानवीकरण

गंगा कृतिक भीतर जलप्रवाह मात्र नहि, याचना सुननिहार, पुत्रसमान भक्त कैँ अपनाबनिहार माता छथि। एहि मानवीकरण सँ भक्तिरस आ करुण भावना बनैत अछि। आधा कोसक दूरी जखन नदी द्वारा पार होइत देखाओल जाइत अछि, तखन बाह्य भूगोल आध्यात्मिक निकटताक प्रतीक बनैत अछि। कथा प्रकृतिक समक्ष मनुष्यक लघुत्व आ धार्मिक दृष्टिमे कृपाक व्यापकता चित्रित करैत अछि। एकरा भौतिक नदी-प्रवाहक ऐतिहासिक घटना घोषित करबाक साक्ष्य प्रस्तुत नहि।

सदाचार आ दानक लोकशिक्षात्मक अर्थ

बोधि कायस्थक वेतनभोगी जीवन, संग्रहक अभाव आ समाजहितमे खर्च आदर्श-नैतिकताक पाठ बनबैत अछि। एहि गुणसभक सामाजिक महत्त्व अछिये। तथापि दरबारक वास्तविक राजकीय पद, दानक दस्तावेज, परिवारक प्रतिक्रियाक पूर्ण विवरण आ बोधिक काल-सूचना कृतिमे अनुपस्थित अछि। एहि अभावमे जीवनचरित कैँ प्रमाणित ऐतिहासिक जीवनी नहि मानल जाए। नायक धार्मिक–नैतिक शिक्षाक आदर्श पात्र छथि।

इतिहासक अनुक्रम आ कृतिक आन्तरिक अन्तर्विरोध

उपक्रम ज्योतिरीश्वर द्वारा संस्कृत पुरुषपरीक्षामे आख्यान वर्णनक दावा करैत अछि। पाँचम अध्याय वएह ग्रन्थ विद्यापतिक रचना कहैत अछि। प्रकाशित पुरुषपरीक्षाक सम्पादित अनुवाद आ आधुनिक ऐतिहासिक अध्ययन दुनू विद्यापतिक रचनाकारत्व पुष्टि करैत अछि। एहि कारण उपक्रमक लेखक-आरोपण संशोधनयोग्य अछि। एहि मतभेदपर टिप्पणी मात्र पर्याप्त नहि; मूल पुस्तकक अगिला संपादित संस्करणमे प्रमाणित ग्रन्थसूची सँ पाठ-भेद, ग्रन्थकार आ स्रोत-अध्याय अलग मिलान अपेक्षित अछि।

पदक स्वायत्त आवाज

‘बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे’ विद्यापतिक प्रसिद्ध गंगास्तुतिक आरम्भिक शब्द छथि। पदमे विदाई, पानिक पवित्रता, क्षमा, अन्तसमयक स्मरण आ आत्मसमर्पणक सूक्ष्म भाव अछि। ई पदक कवि-वक्ता स्वतन्त्र काव्यात्मक आवाज रखैत अछि। बोधि कायस्थक कथा पदक ‘प्रसङ्ग’ कहि एक व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि, मुदा ग्रन्थसाक्ष्य बिना कविता केवल ओकर व्यक्तिगाथाक प्रतिलेख नहि बनि सकैत। पद आ लोककथा बीच समान भक्तिभाव मानल जा सकैत; विशेष जीवनीक निश्चित सम्बद्धता अलग प्रमाण माँगैत अछि।

बालपाठकक दृष्टिसँ मृत्यु आ मोक्ष

बाल-सचित्र संकलनमे बुढ़ापा आ मृत्यु एक संवेदनशील विषय छथि। कृति मृत्यु कैँ पूजनीय गंगा-लाभक सुखान्तर मानैत अछि। आधुनिक शिक्षापद्धतिमे बालपाठक कैँ मृत्यु संबंधी संस्कारक सांस्कृतिक अर्थ बुझबाओल जाए, मुदा रोगी, वृद्ध आ संकटग्रस्त मनुष्यक जीवित सुरक्षा तथा चिकित्साक जिम्मेदारी घटाओल नहि जाए। श्रद्धा आ स्वास्थ्य-रक्षाक उद्देश्य परस्पर विरोधी नहि। कथा कैँ लोकविश्वास रूपमे पढ़ब एहि विवेक कैँ टिकाएत।

कथनरूप, रस आ दृश्य-अर्थ

पाँच अध्यायमे दस चित्र-संकेत अछि। दरबारक निष्कलंक सेवक, दान, विदाई, गंगा-यात्रा, आधा कोसक विराम, नदीमाताक प्रकट होएब आ पदक स्मृतिरूपेँ प्रकाश—ई घटना-क्रम अध्यात्मिक आरोह बनबैत अछि। भक्तिरस प्रधान, अद्भुत घटनासँ विस्मय आ अंतिम विदाईसँ करुणताक स्पर्श अछि। एकर सीमा नायकक जटिल आन्तरिक संशयक अभाव, चमत्कारक सरल प्रमाण-रचना आ पदक वास्तविक पाठगत सन्दर्भक अपर्याप्त स्थापना अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे’ सरल जीवन, दान, धर्माचरण आ नदीमाताक प्रति श्रद्धा सँ मोक्षपरक लोकगाथा रचैत अछि। गंगाक निकटता अलौकिक करुणाक प्रतीक बनि कृतिक भावात्मक केन्द्र अछि। लेकिन एहि कथा कैँ सही शोधमूल्य देबाक लेल ज्योतिरीश्वर–विद्यापति ग्रन्थकारत्वक अन्तर्विरोध, बोधि कायस्थक कथाक प्रमाणस्तर आ विद्यापतिक पदक स्वतन्त्र काव्यिक वाणी स्पष्ट करब अनिवार्य अछि। आदर्श

जीवनक नैतिक पक्ष महत्त्वपूर्ण रहैत अछि, भले चमत्कारक बाह्य प्रमाण उपलब्ध नहि हो। एहि भेद-बुद्धिसँ श्रद्धा आ तथ्य-परीक्षा परस्पर पूरक आलोचनात्मक दृष्टि बनैत अछि।

ग्रन्थाधार आ मुद्रित सन्दर्भ

गजेन्द्र ठाकुर। बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे : बोधि कायस्थक गंगा-लाभ आ विद्यापतिक अमर पद। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क १९; PDF पृष्ठ १०९६–१११९।

विद्यापति ठाकुर। पुरुषपरीक्षा। मूल संस्कृत ग्रन्थ; पाठालोचनक सन्दर्भ।

Vidyāpati Ṭhākura. The Test of a Man: Being the Purusha-parîkshâ of Vidyâpati Thakkura. Translated by George Abraham Grierson. Royal Asiatic Society, 1935.

Pankaj Jha. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press, 2019. विशेषतः पुरुषपरीक्षाक सम्बन्धी अध्याय।

कृति २१ : बत्तू

उपक्रम : बलिदानसँ बचाव

छोट जीवक जीवनाधिकार आ मातृत्वक सूझ

उपक्रम चारि मासक छागरक बलिदानक सम्भावना रखैत अछि आ ओकरा बचएबाक लेल माएक योजना बतबैत अछि। एहि आरम्भक कारण पाठक शिकारक दृष्टिसँ नहि, संकटग्रस्त प्राणीक दृष्टिसँ घटना देखैत अछि। कृतिक नैतिक केन्द्र साधारण धार्मिक परम्पराक गौरव नहि, प्राणी-जीवनक संरक्षण अछि। मातृत्व एहिठाम केवल दयालु भावना नहि, संकटसँ बचएबाक दूरदृष्टि अछि।

जंगलक स्वतन्त्रता सुरक्षित नहि—ओतय बाघ अछि। मुदा बलि लेल तय मृत्यु आ जंगलक अनिश्चित जोखिमक बीच छागर कैँ जीबाक सम्भावना चुनबाक बाट भेटैत अछि। एहि विरोधसँ एकटा महत्त्वपूर्ण लोककथात्मक प्रश्न खुलैत अछि : प्राणरक्षाक नैतिक अधिकार केवल पैघ बलवान प्राणीकैँ नहि, कमजोर बच्चाकैँ सेहो अछि।

अध्याय १ : बलिदानक छाया

पशुक मोलभाव आ जीवित देहक वस्तुकरण

एक बकड़ी अपन बच्चाकेँ पोसैत अछि। दुर्गापूजाक समय एक व्यक्ति छागर केँ बलि देबाक लेल किनबाक मोलभाव करैत छथि। मालिक दाम तय करैत छथि, मुदा क्रेता लग तखन पाइ नहि; अगिला दिन आबि छागर लऽ जेबाक निश्चय होइत अछि। ई छोट आर्थिक अवरोध कथानकक जीवनरक्षक अवसर बनैत अछि। जँ पाइ तत्काल देल जाइत, माए लेल चेतावनी आ पलायनक अवकाश नहि भेटित।

कथाक दृष्टि बिक्रीक क्रियाकेँ पशुक जीबैत अनुभवसँ जोड़ैत अछि। मानव लेल ई खरीद-बिक्री अछि; बकड़ी लेल संतानक मृत्यु-पत्र। एहि दृष्टि-परिवर्तनसँ सामान्य समझल जाएबला अनुष्ठानक हिंसा प्रश्नाधीन बनैत अछि। विक्रेताक आर्थिक सौदा आ छागरक जीवनाधिकारबीचक दूरी कृतिक मूल नैतिक तनाव अछि।

धार्मिक परम्पराक एहि प्रसंगक मूल पाठमे उल्लेख अछि, मुदा ई निष्कर्ष नहि निकालब जे दुर्गापूजाक सभ रूपमे प्राणीबलि अनिवार्य अछि। कथा एक विशिष्ट परिस्थितिक वर्णन करैत अछि। आलोचकीय मूल्याङ्कन हिंसाक विरोध करैत अछि, आस्थाक समुदायसभक अनावश्यक सामान्यीकरण नहि।

अध्याय २ : माएक चेतावनी

सुरक्षादाताक कष्टकर निर्णय आ बालकक पलायन

माए सुनल मोलभावक अर्थ बुझि बच्चाकेँ रातिमे बोन भागि जाएबाक कहैत अछि। ई निर्देश ममताक सहज प्रतिमा उलटैत अछि : माए बच्चाकेँ अपना कोरामे राखि सुरक्षा

नहि दऽ सकैत, तैं दूरी द्वारा जीवन बचाएबाक विकल्प चुनैत अछि। विदाईक पीड़ा आ जीवित रहबाक सम्भावना एकहि निर्णयमे गुँथल अछि।

छागर जंगलक अज्ञात संसार दिस निकलैत अछि। ओ छोट अछि, निरापद आश्रय त्यागैत अछि आ अनिश्चित प्राकृतिक जोखिम स्वीकार करैत अछि। पाठमे एकरा साहस मानल गेल अछि, मुदा वास्तविक नान्हि पशु अथवा बालकक लेल राति मे अकेल खतरनाक बोन घुसब व्यवहारिक निर्देशन नहि। कथात्मक पलायन प्रतिकूल परिस्थिति सँ बचबाक प्रतीक अछि।

अध्यायक संक्षिप्ततामे माता-पुत्रक अलग पड़बाक पछिला भावना अधिक विकसित नहि। मुदा माएक विदाईक निर्णय कथा कैं सामान्य चलाक पशुक विनोदी कहानीक बदला जीवनरक्षा सम्बन्धी करुण आधार प्रदान करैत अछि।

अध्याय ३ : बत्तूक रूपान्तरण

समय, वन्य स्वतंत्रता आ शरीरक नब पहिचान

जंगलमे दू-तीन बर्ख बितला पर नान्हि छागर बत्तू नामक पैघ, दाढ़ी–सींगवला शक्तिशाली पशु बनैत अछि। एहि समयान्तरक कारण नायकक परिवर्तन अलौकिक जन्मसिद्ध शक्ति नहि, बढबाक दीर्घ प्रक्रिया जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। छागर आब बाघसँ लड़बाक दाँव-पेंच नहि सीखल, मुदा ओकर असाधारण रूप भय उत्पन्न करबाक साधन बनैत अछि।

जंगल अपन रक्षा करबाक जोखिमपूर्ण स्थान होइतहुँ बत्तूक व्यक्तित्वक स्वतन्त्रता विकसित करैत अछि। कथक वनक सामान्य रोमांच आ बत्तूक नब शारीरिक बल एकत्र करैत छथि। देहक बड़पन आरम्भिक माएक भयक पूर्ण समाधान नहि, कारण बाघक शिकारी शक्ति अलग अछि। अहिठाम वास्तविक सामना बुद्धिसँ होयत।

बत्तू दोसर बोनमे पहुँचैत अछि आ पहिल बेर बाघ देखि घबराइत अछि। नायकक भय ओकर बुद्धिक विरोधी नहि; खतरा पहचानबाक स्वाभाविक प्रतिक्रिया अछि। एही कारण आगेक चतुराइ अधिक प्रभावशाली बनैत अछि।

अध्याय ४ : आमने-सामने भँट

शब्दक प्रदर्शन, भयक विनिमय आ प्राणी-नीतिकथाक अलंकार

बाघ बत्तूक पैघ दाढ़ी, सींग आ मोट शरीर देखि अचम्भित भऽ डरि जाइत अछि। सामान्य शिकारी–शिकारक सम्बन्ध उलटि जाइत अछि : जकर बल अधिक, ओ अज्ञात रूपसँ अधिक डरैत अछि। बाघ अपन भय छिपा कऽ ऊँच स्वरमे परिचय पूछैत अछि। एहि दोगल भाव—भितरक डर आ बाह्य शासकीय भाषा—सँ नाट्य-हास्य बनैत अछि।

बत्तू उत्तरमे अपनाकेँ अति शक्तिशाली प्राणी बतबैत अछि जे अनेक बाघक सेवन करि सकैत। एहि दावे मे तथ्य नहि, आत्मरक्षाक नाटकीय छल अछि। शाब्दिक रूपेँ ई असम्भव कथा-विश्वक रणनीति अछि। बोलबाक ढंग आ काव्यात्मक अतिशयोक्ति

बाघक अज्ञानक फायदा उठबैत अछि। बलहीन पक्षक पाछाँ विचारक तात्कालिक कुशलता कथा कैँ विजयी मोड़ दैत अछि।

नायकक चालि शत्रुक प्रत्यक्ष प्राणहरण नहि करैत; बाघ भागि जाइत अछि। शारीरिक संघर्ष नहिएँ होएब अहिठाम नैतिक सुखद परिणाम अछि। हिंसक आक्रमणक सम्भावना वाणी द्वारा टरल—ई प्राणी-नीतिकथाक प्रभावकारी शिक्षा अछि।

अध्याय ५ : सियारक धूर्तता

जानकार प्रतिद्वन्द्वी आ सुरक्षा-व्यवस्थाक उलटा परिणाम

भागैत बाघकैँ सियार भेटैत अछि। ओ बत्तूक वास्तविक परिचय बुझि बाघक भयक मजाक करैत अछि आ ओकरा भोजन-समान शिकार मानैत अछि। एहि प्रसंगमे सियार अनुभवक प्रतिनिधि अछि, मुदा ओकर बुद्धि जीवनरक्षाक बदला आक्रमणक आयोजनमे लगैत अछि। नायकक चतुराइ आ प्रतिनायकक धूर्तता उद्देश्यक आधारपर अलग छथि।

बाघ सियारक आश्वासनपर पूर्ण विश्वास नहि करैत। सियार बाघक पएर सँ अपन पएर बाँधि लएबाक युक्ति सुझबैत अछि, जाहिसँ कियो एक-दोसराकैँ छोड़ि भागि नहि सकय। ई सुनबाक दृष्टिसँ तर्कपूर्ण जकाँ बुझाइत अछि, मुदा दूनूक चलबाक अलग गति आ डरक अनिश्चितता सँ ई व्यवस्था स्वयं पैघ संकट बनि सकैत अछि। मूल कथा एहि असावधानी कैँ आगामी परिणतिसँ जोड़ैत अछि।

सियारक उपाय ‘बुद्धिमत्ता’क प्रतिमा केवल एही कारण नहि मानल जाए जे ओ बत्तूक परिचय जानैत अछि। ज्ञानक सही उपयोग आ अपन छलक परिणामक आकलन अलग गुण छथि। एहि अन्तरमे कथा केवल एक चतुर आ एक मूर्खक साधारण विरोध नहि, बुद्धिक नैतिक उपयोगक प्रश्न उठबैत अछि।

अध्याय ६ : बत्तूक अन्तिम चतुराइ

क्षणक अर्थ बुझबाक क्षमता आ भयक पुनर्निर्माण

बत्तू बाघ आ सियारकेँ पएर बाँन्हि आबैत देखैत अछि आ तुरन्त बुझि जाइत अछि जे सियार ओकर वास्तविक परिचय खोलि बाघकेँ फेर आनि रहल अछि। कथा एहि क्षण केँ नायकक बुद्धिक सबसँ प्रखर परीक्षा बनबैत अछि : पहिने एक अनजान शिकारी केँ डरायल छल, एखन जानकारी राखनिहार सियारक उपस्थिति सँ रणनीति बदलेबाक आवश्यकता अछि।

बत्तू भय लुकाबि सियारकेँ तेज आवाजमे कहैत अछि जे ओकरा दू बाघ अनबाक कहल गेल छल, मुदा ओ एकटामात्र आनलक। एहि एक वाक्यमे शत्रुक संगठन बदलि जाइत अछि। सियार जे बाघकेँ भरोसा देनिहार बनि आयल छल, बत्तूक कथामे आदेशपालक बनि जाइत अछि। बाघक मोनमे भ्रम उत्पन्न होइत अछि जे सियार बत्तूक सहकर्मी रहल होएत। एहि भ्रमक मूल कारण बत्तूक शारीरिक शक्ति नहि, संवादक परिस्थिति बुझबाक दक्षता अछि।

बाघ पुनः प्राण बचा भागैत अछि। ओकर पएरमे बन्हल सियार घिसिआइत मरि जाइत अछि। कथा एहि मृत्यु कैं धूर्तताक फल कहैत अछि, मुदा सियारक प्राणहानि दुःखद हिंसा अछि। बचबाक काजक सफलताक प्रशंसा करब आ प्रतिपक्षक मृत्युकैं उत्सव बनायब एकसमान नहि। घटनाक वास्तविक आलोचनात्मक शिखर बत्तूक प्राणरक्षा अछि।

अध्याय ७ : चतुराइक विजय

बलक बदला वाणी, मुदा परिणामक नैतिक द्वैध

अन्तिम अध्याय पहिल बलिप्रसंग सँ आखिरी बचाव धरि बत्तूक जीवनयात्रा समेटैत अछि। नायक पहिने माएक चेतावनी मानि बचल, फेर बनमे बढ़ल, तकर बाद दू-दू बेर बाघक शिकारी आक्रमणसँ शब्दक माध्यमसँ बाँचल। कथाकार एकरा बुद्धिक विजय कहैत छथि। लोकनीतिकथाक शिक्षा स्पष्ट अछि : संकटमे शक्ति एकमात्र साधन नहि, सजगता आ सही बोल शत्रुक हिंसा रोकि सकैत अछि।

सियारक मृत्यु कथाक ‘काव्यात्मक न्याय’ कहल गेल अछि। मुदा भागैत बाघक पएरमे बाँन्हल रहबाक कारण सियारक मृत्यु एक संयोगात्मक घातक परिणाम अछि; तकरा नैतिक अदालतक सुनाओल दण्ड कहबाक दार्शनिक आधार अलग अछि। विरोधीक दुष्ट उद्देश्य हानि पहुँचेबाक अनुमान योग्य बना सकैत, मुदा प्रतिहिंसक सुख लोकनीतिकथाक करुणा घटबैत अछि।

कथाक अन्तमे बत्तू जीवित आ स्वतन्त्र रहैत अछि। ई बात मूल उपक्रमक सन्दर्भमे अधिक महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओकर जीवन पहिने मनुष्यक बलिप्रथा द्वारा संकटग्रस्त भेल छल। बुद्धिक विजय आ प्राणी-जीवनक रक्षा एकहि रेखामे जुड़ैत अछि। अत्याचारसँ बचबाक कथा अन्ततः स्वतंत्र अस्तित्वक मूल्य स्वीकार करैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

प्राणी-नीतिकथाक संरचना

‘बत्तू’क रचना संकटसँ सुरक्षा, दोसर संकट, आ अंतिम सफल बचावक आवर्ती विन्यास पर अछि। पहिल खतरा मानवीय बलिप्रथा, दोसर वनक शिकारी, तेसर सियार द्वारा सम्भव बनाओल सामूहिक हमला। बत्तू प्रत्येक बेर अलग साधनसँ बचैत अछि—पहिने माएक चेतावनी, फेर जंगलक समयमे शारीरिक विकास, अन्तमे भाषा आ चतुराइ। एहि क्रममे नायकक बचाव साधन परिस्थिति अनुसार बदलैत अछि। ई शिक्षात्मक संरचना बच्चाकेँ बदलैत खतरा पहिचानबाक प्रश्न सोचबाक अवसर दैत अछि।

मातृत्व आ कथाक आरम्भिक नैतिकता

माएक एकटा निर्णय पूरा गाथाक जीवन-संरक्षण सम्भव करैत अछि। ओ बलि लेल बिक्रीक गप सुनैत अछि आ छागर केँ भागबाक कहैत अछि। एहि भूमिकाक मूल्य केवल भावुक मातृत्व नहि; संकट पहचानि तत्काल कारगर निर्णय लेल जयबाक क्षमता अछि। मुदा माए पाछाँ कथामे घुरि नहि अबैत, आ संतानक मनोवैज्ञानिक स्मृति

विकसित नहि। लोककथाक तीव्र गतिमे मातृत्व आरम्भक निर्णयक भूमिका पाबैत अछि, दीर्घ सम्बन्धक कथा नहि।

भयक मनोविज्ञान आ वाणी

बाघक पहिल भय बत्तूक देहक अपरिचित रूपसँ अछि। बत्तू अपन कल्पित बलक कथनसँ भय बढ़बैत अछि। सियारक हस्तक्षेप जानकारी द्वारा एहि भ्रमकेँ तोड़बाक प्रयत्न अछि, मुदा अंतिम संवाद सियारक पक्षकेँ उलटि दैत अछि। एहि तरह भयक स्थान दू बेर बदलैत अछि। पुस्तक शारीरिक बलसँ अधिक मनोवैज्ञानिक गति, तात्कालिक प्रत्युत्पन्नमति आ श्रोता-केंद्रित भाषा केँ विजयक कारण बनबैत अछि।

रूपकक नैतिक जटिलता

बत्तूक भ्रामक कथन आत्मरक्षा लेल अछि; सियारक छल ओकेँ शिकार बनएबाक लेल। दुनू एक अर्थमे असत्य अथवा युक्तिपूर्ण वचन उपयोग करैत अछि, मुदा उद्देश्यक अन्तर निर्णायक अछि। एतय नैतिक प्रश्न ‘असत्य सदा खराब’ सन सरल नारा सँ आगाँ जाइत अछि। हिंसा टारबाक लेल वाणी आ हिंसा करबाक लेल योजना—दूनूक नैतिक दिशा अलग अछि। तइयो आत्मरक्षाक कथा केँ सामान्य जीवनमे छलक असीम अनुमति नहि मानल जाए।

मिथिलाक लोकभाषा आ काव्यात्मक संवाद

बाघ आ बत्तूक आमने-सामनेक दृश्य मे छन्दमय विनिमय अछि। बत्तूक उत्तर कथाक भावात्मक चरम अछि। लयबद्ध पंक्तिसँ वक्ताक आत्मविश्वासक प्रदर्शन श्रोता पर प्रभाव करैत अछि। लोकमौखिकता एहिठाम कहानी कहबाक मात्र माध्यम नहि, कथानकक काज करैत अछि—वाणी बाघक भागबाक कारण बनैत अछि। बालसाहित्यमे भाषा-शक्ति विषयक ई एक प्रभावकारी दृश्य अछि।

प्राणीहिंसा, श्रद्धा आ पर्यावरण

पहिल अध्यायमे बलि लेल छागरक सौदा, बादमे वनक शिकारी आ अन्तमे सियारक प्राणहानि—ई तीन स्तरक हिंसा छथि। लेखक प्रधानतः बत्तूक जीवनरक्षा प्रशंसित करैत छथि। समीक्षामे समस्त प्राणीक जीवनक मूल्य केवले नायक पर सीमित नहि रहबाक चाही। आस्था-सम्बद्ध अनुष्ठानक सम्मान आ प्राणी-बलिक आलोचना सहअस्तित्व रखि सकैत अछि। कथाक व्यवहारिक शिक्षा पशु कैं हिंसा पहुँचएब नहि, संकटग्रस्त जीव कैं रक्षा करब अछि।

रस, चित्र आ शैली

सात अध्यायक चौदह चित्र-संकेतक बीच बलिप्रसंगक भय, माएक करुण विदाई, वनमे बड़ होएबाक स्वाधीनता, दाढ़ी–सींग देख बाघक आश्चर्य, सियारक धोखा आ बत्तूक मौखिक जवाबक दृश्य क्रमशः रचल अछि। भय, अद्भुतता आ हास्यक मिश्रण कृतिक जीवंतता बढ़बैत अछि। अतिशयोक्ति प्राणी-नीतिकथाक विधागत स्वभाव अछि; एकरा प्रकृतिक शाब्दिक सत्य कहि पढ़ब उचित नहि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘बत्तू’ देहबलसँ बेसी बुद्धि, भयक सोझाँ धैर्य आ जीवनरक्षाक नैतिक पक्ष केँ महत्त्व देनिहार लोकप्राणी-कथा अछि। एक छागर माएक सूझसँ बलि सँ बचैत अछि आ अपन बुद्धिसँ बाघक शिकार होएब टारैत अछि। सियारक मृत्यु कथा केँ हिंसामुक्त सुखान्त नहि बनबैत; एहि कारण बुद्धिक सफल प्रयोग आ प्रतिपक्षक प्राणहानिक मूल्याङ्कन अलग करब आवश्यक अछि। कृतिक स्थायी उपलब्धि शारीरिक रूपसँ कम सामर्थ्यवान जीवक स्वतंत्रता आ वाणी-प्रेरित आत्मरक्षाक कल्पनामे अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। बत्तू : जंगलक चतुर छागरक अद्भुत साहस। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क २०; PDF पृष्ठ ११२०–११५१।

कृति २२ : भाट-भाटिन

उपक्रम : गुप्त प्रेम

गृहस्थीक अविश्वाससँ हिंसक रहस्यक निर्माण

उपक्रम भाटिनक गुप्त प्रेम आ पति कैँ मारबाक षड्यन्त्रक सूचना पहिनेसँ दैत अछि। ई अग्रसूचनासँ ‘अपराध कियो कएल’क रहस्य समाप्त, मुदा अपराध कसरी टरत आ ककर बुद्धिसँ बचाओल जाएत, ताहि दिशा मे कथानकक कौतूहल बढैत अछि। कथा स्त्रीक विवाह-बाह्य आकर्षण कैँ हिंसक छलक प्रेरक परिस्थिति बनबैत अछि। मुदा एक पात्रक अपराध सम्पूर्ण स्त्री-समुदायक नैतिक स्वभावक प्रमाण नहि; वैवाहिक निष्ठाक प्रश्न कैँ लैंगिक सामान्यीकरण सँ बचा पढ़ब आवश्यक अछि।

भाटक बहिनक आगमनक अग्रिम सूचना सामाजिक सम्बन्धक वैकल्पिक विश्वास प्रस्तुत करैत अछि। पत्नी–पति बीचक सम्बन्ध टूटैत अछि, मुदा बहिन–भाइक सम्बन्ध जीवनरक्षाक मार्ग बनैत अछि। एहि संरचनामे घरक भीतरक हिंसा आ दोसर परिजनक हस्तक्षेप विरोधी नैतिक शक्ति बनैत छथि।

अध्याय १ : गुप्त प्रेमक विषबेल

भोजनक असमानता, देहक क्षय आ हिंसाक तैयारी

भाटिन मणिधारी गहुमन सँ गोपनीय प्रेम करैत अछि। ओ साँप लेल नीक भोजन बनबैत, पतिकेँ बासी आ घटिया भोजन दैत अछि। एहि असमानता केँ लेखक भावनात्मक उपेक्षा सँ जोड़ैत छथि। लोकगाथाक भौतिक संकेत बहुत सुस्पष्ट अछि : जे कोरामे अन्न भेटबाक चाही, ओतय देह कमजोर होइत अछि। भाट दिनानुदिन दुबर होइत जाइत अछि। घरेलू संसाधनक वितरण प्रेम–अप्रेमक चिन्ह बनैत अछि।

कथा अन्ततः भाटिन द्वारा साँपकेँ भाट पर विषाक्त आक्रमण करबाक आदेश धरि पहुँचैत अछि। एहि निर्णयमे विवाहक अविश्वास हिंसक हत्या-योजनामे बदलैत अछि। अनिष्ठा आ हत्या समतुल्य कृत्य नहि; हत्या अपन आपमे विशिष्ट नैतिक अपराध अछि। पत्नी–सर्पक असाधारण प्रेम लोककथाक कल्पना अछि, मुदा विषदंश द्वारा हत्या करबाक योजना कथानकक वास्तविक हिंसक संरचना अछि।

भाटक अपनी दुर्बलताक सन्दर्भमे चेतना पाठमे कम अछि। ओ कारण बुझैत नहि, जाहिसँ पाठकक पूर्वज्ञान आ पात्रक अज्ञानबीचक तनाव बनैत अछि। एहि पूर्वज्ञानक नाट्य–विडम्बना अगिला अध्यायमे प्राणरक्षाक दृश्यकेँ प्रभावकारी करैत अछि।

अध्याय २ : पनहीमे नुका एल मृत्यु

दैनिक आदतक अनपेक्षित जीवनरक्षक परिणाम

भाट धार लग पएर धोअय पनही उतारि राखैत अछि। गहुमन ओहि पनहीमे नुका जाइत अछि, एहि आशामे जे पहनिते विषदंशसँ भाट मरि जायत। साधारण वस्तु प्राणघातक जाल बनैत अछि। लोककथाक कथा-भय एहि कारण तीव्र अछि : बाहरी युध्द नहि, दैनिक उपयोगक एक साधनमे मृत्युक सम्भावना नुका एल अछि।

भाट पनही पहनबासँ पहिने झाड़ैत अछि। साँप बाहर गिरैत अछि आ भाट पनहीसँ मारैत अछि। कथावाचक एकरा आत्मरक्षा मानैत छथि। एहि घटना मे सावधानी आ संयोग दूनू छथि—भाटकेँ साँपक योजना पहिनेसँ ज्ञात नहि छल। दैनिक जाँचक आदत प्राणरक्षाक कारण बनि जाएब प्राणी–नीतिकथाक एक ठोस कथा-युक्ति अछि।

साँपक प्राणहानि केवल खलनायकक अन्त नहि; एहि परिणामक बाद भाटिनक नब प्रतिशोध आरम्भ होइत अछि। जे घटना हत्या रोकैत छल, ओहीसँ पछिलका प्राणघातक प्रहेलिका जन्मैत अछि। कथा एहि तरह संकटकेँ समाप्त नहि, बदलैत अछि।

अध्याय ३ : बरक गाछपर लटकाएल सत्य

अनजान पति आ शोक लुकेबयवाली पत्नी

भाट मारल साँपकेँ बरक गाछपर लटकबैत अछि। एकर प्रयोजनक विषयमे कथा निश्चित नहि; चेतावनी वा प्रदर्शनक सम्भावना खुलल अछि। पति खुशीसँ पत्नीक समक्ष बचबाक घटना बतबैत अछि, मुदा नहि जनैत अछि जे मारल साँप हुनकर पत्नी सँ जुड़ल रहए। एहि स्थितिमे एकेक पात्रक अलग सूचना पर लेखक कथा बनबैत छथि।

भाटिन भीतरसँ व्यथित होइत अछि, मुदा अपना शोकक कारण नुकेबैत अछि। बरक गाछ लग साँपक देह देखि बेहोश भऽ जाइत अछि। कथा पात्रक आन्तरिक गुप्त सम्बन्धकेँ देहक अनियन्त्रित प्रतिक्रियासँ प्रकट करबैत अछि। भाट पाछाँ सेहो गुप्त कारण बुझि नहि पबैत—एहि विरोधाभाससँ पाठकक जानकार स्थिति बनल रहैत अछि।

साँपक देह लटकाएबाक दृश्य शोक आ अपमानक स्थल बनैत अछि। व्यक्ति लेल भाट द्वारा मारल संभावित हत्यारा पशु, भाटिन लेल गुप्त प्रिय—दू विपरीत अर्थ एकहि दृश्यमे उपस्थित छथि। एहि बहुअर्थी दृश्य सँ कथाक नैतिक सरलता अस्थिर होइत अछि; भाटिनक हिंसक व्यवहार गलत होइतहुँ ओकर शोकक आन्तरिक अनुभूति एक मनोवैज्ञानिक तथ्य रूपमे उभरैत अछि।

अध्याय ४ : नौ टुकड़ीक रहस्य

गुप्त प्रमाणक स्थान-विन्यास आ प्रहेलिकाक यन्त्रणा

भाटिन साँपक मृत देह बरक गाछसँ उतारि नौ टुकड़ी करैत अछि। ओ चारि टुकड़ी खटियाक चारू पायाक नीचाँ, शेष पाँच अलग-अलग ठाम—मचिया, तेल, नून, अनाज-भण्डार आ खोपा—नुका दैत अछि। एहि कुल नौ स्थान-सम्बन्धक समेकित स्मृति अगिला प्रश्नक उत्तर बनत। कथा जटिल पहेली लेल व्यवस्थित वस्तुसूची तैयार करैत अछि।

एहि व्यवस्थाक साहित्यिक महत्त्व अछि जे हत्या-योजना शारीरिक बलसँ नहि, असमान सूचना सँ बनैत अछि। भाटिन रहस्यक उत्तर जानैत अछि, भाट नहि। प्रश्नक उत्तर देबाक अवसर स्वतन्त्र अनुभवक आधारपर नहि, अपराधीक गुप्त तैयारीपर निर्भर अछि। तैं पहेली आदर्श बौद्धिक प्रतियोगिता नहि, सुनियोजित छलक औजार अछि।

घरक परिचित वस्तु—खाट, मचिया, नून, तेल, डाँर आ खोपा—अब सामान्य गृहस्थीक उपयोगसँ हटि मृत्यु धमकीक संकेत बनैत अछि। महिला गृहस्थीक आन्तरिक वस्तु-परिचयकेँ हिंसक योजनामे बदलैत अछि। एहि गृहस्थ–रहस्यक द्वंद्व लोककथाक दृश्यात्मक बल अछि।

अध्याय ५ : प्राणघातक प्रहेलिका

भाषाक खेल केँ मृत्युदण्डक छद्म-विधान बनएब

भाटिन भाटकेँ नुका देल वस्तुक रहस्य बुझबाक कहैत अछि आ गलत उत्तर पर मारबाक धमकी दैत अछि। ई परीक्षा तर्क, ज्ञान अथवा सामान्य नैतिक विवेक पर आधारित नहि। उत्तर गुप्त रखने व्यक्ति स्वयं न्यायाधीश आ जल्लाद बनि जाइत अछि। एहि संरचनामे भाषा के नैतिक मूल्य खोइ जाएत अछि, जखन प्रश्न निष्पक्ष जाँचक बदला मृत्युदण्डक उपकरण होइत अछि।

भाट गुप्त टुकड़ीसभक सम्बन्धमे नहि जनैत अछि। ओ बहिनसँ भेटबाक लेल दू दिनक अवकाश माँगैत अछि। भाटिन ई अवकाश दैत अछि, मुदा ओकर कारण कथक निश्चित नहि करैत। एहिठाम कथामे पहिल बेर हिंसक आदेशक भीतर समयक दरार बनैत

अछि—जे मृत्यु तत्काल निश्चित बुझाइत छल, से विलम्बित होइत अछि आ सहायता सम्भव बनैत अछि।

भाटक बहिन लग जाएब परिवारक वैकल्पिक भरोसक दिश कदम अछि। घरक एक सम्बन्ध दूषित होइतहुँ परिवारक दोसर सदस्य सहायता दऽ सकैत—ई सामाजिक सम्भावना गाथाक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि।

अध्याय ६ : दीयाक रहस्योद्घाटन

अलौकिक साक्षी आ बहिनक सक्रिय ज्ञानार्जन

भाट अपन बहिन लग पहुँचैत अछि। बहिन ओकर आयु-भाग्यक हिसाब जोड़ि रहल छथि—एहि प्रसंगमे लोकविश्वासक ज्योतिषीय अथवा पारिवारिक अनुष्ठानक संकेत अछि। भाटक मृत्यु-धमकीक कथा सुनि ओ साथ जाएबाक निर्णय लैत छथि। ई निश्चय कृतिक निर्णायक नैतिक मोड़ अछि : बहिन केवल सहानुभूति नहि, संकटमे ठोस सहायता देबाक काज करैत छथि।

बाटमे धर्मशालामे दूनू राति बितबैत छथि। बहिन चिन्ताक कारण सुतय नहि सकैत छथि। तखन धर्मशालाक दीया आपसमे गप करैत छथि आ एक दीया भाटिनक षड्यन्त्र तथा साँपक नौ टुकड़ीक ठाम बतबैत अछि। कथा भीतर अलौकिक वस्तु मानवक अत्याचारक गोपनीय साक्षी बनैत अछि। प्रकाशक वस्तु सत्यक वाहक बनब साहित्यिक रूपकक दृष्टिसँ अर्थपूर्ण अछि।

मुदा कथाक जीवनरक्षाक केवल दैवी हस्तक्षेप मानि बहिनक बुद्धि कम कऽ नहि देखल जाए। ओ भाटक समस्या सुनैत छथि, सहायता लेल संग चलैत छथि, जागल रहैत छथि आ रहस्यक अर्थ बुझि अगिला कदमक योजना बनबैत छथि। दीपकद्वारा सूचना प्राप्ति अद्भुत घटना अछि, मुदा ओहि सूचनाक उपयोग करब बहिनक विवेकक काज अछि। ई ज्ञानसँ कर्म धरि जायबाक नारी-स्वाधीन प्रक्रियाक विशिष्ट उदाहरण अछि।

अध्याय ७ : न्यायक प्रतिशोध

बहिनक उत्तर, भाटक रक्षा आ हिंसात्मक सुखान्तक सीमा

भोरमे बहिन भाटिन कैँ कहैत छथि जे ओहो प्रहेलिका सुनए चाहैत छथि। भाटिन हुनका सेहो उत्तर नहि दऽ सकलापर मारबाक धमकी दैत अछि। बहिन प्रतिप्रश्नक रूपमे शर्त रखैत छथि जे सही उत्तर देला पर ओ भाटिन कैँ मारि देथिन्ह। ई बदलल शर्त शक्ति-संतुलन उलटैत अछि; जे दोसराक प्राणपर एकाधिकार चाहैत छल, आब अपना निर्मित नियमक सोझाँ पड़ैत अछि।

प्रहेलिका सुनिते बहिन नौ टुकड़ी एक-एक कऽ निकालि दैत छथि। उत्तरक प्रमाण वस्तुतः रहस्यक वास्तविक सामग्री अछि; अनुमान नहि। एहि प्रकार गुप्त सूचना सार्वजनिक भऽ जाइत अछि आ भाटक प्राणघातक परीक्षा भंग होइत अछि। ई कृतिक सर्वाधिक प्रबल बुद्धिगत सफलता अछि : अत्याचारक युक्ति ओकर प्रमाण देखबेलासँ विफल होइत अछि।

मुदा बहिन अपन कहल शर्तक अनुसार भाटिन कैँ मारि दैत छथि। कथावाचक एकरा ‘न्यायक विजय’ कहैत छथि। आलोचकीय दृष्टिसँ भाटक प्राणरक्षा न्यायसंगत लक्ष्य अछि, मुदा अपराधीकैँ प्राणदण्ड देबाक निजी प्रतिशोध अलग नैतिक प्रश्न अछि। नारीक बुद्धिक विजयक प्रशंसा आ भाटिनक हत्याक अनुमोदन एक नहि। एहि विभाजनसँ कथा कैँ बिना विकृत कएल आधुनिक मानवीय न्यायबोधक कसौटीपर परखल जा सकैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकप्रहेलिकाक मूल संरचना

‘भाट-भाटिन’ मे कथानकक चुम्बक कोई वस्तु मात्र नहि, जानकारीक असमानता अछि। भाटिन गहुमनक नौ टुकड़ी नुका दैत अछि; भाट एहि तथ्यसँ अनजान अछि; बहिन दीपकक संवाद द्वारा ज्ञान पबैत छथि। तीन पात्रक तीन स्तरक ज्ञान पाठक कैँ अलग-अलग समयपर भेटैत अछि। एहि संरचनासँ सरल हत्या-खिस्सा बौद्धिक रहस्यक रूप लैत अछि। वस्तु नुकेबाक स्थानक गणना प्रहेलिकाक ठोस उत्तर बनैत अछि, मुदा प्रश्न निष्पक्ष परीक्षा नहि—हत्याक योजना अछि।

लैंगिक रूढ़ि आ दू स्त्रीक विपरीत भूमिका

कथा भीतर पत्नी हिंसक विश्वासघातक प्रतिनिधि छथि आ बहिन जीवनरक्षाक नायिका छथि। ई विपरीत स्त्री-पात्र नाटकक द्वन्द्व गढ़ैत अछि। पर ई दूनू पात्रक विशिष्ट काज छथि; एकरासँ पत्नीसमूहक अविश्वसनीयता अथवा बहिनसमूहक एकमात्र पवित्रता सन

सामान्य सिद्धान्त निकालब अनुचित। वास्तविक आलोचना लेल ओहि सभ सामाजिक शक्ति-सम्बन्धकेँ देखब अधिक उपयोगी अछि, जाहिमे घरेलू भोजन, गोपनीयता, शिक्षा आ हत्या-धमकी स्त्री-पात्रक हाथमे अलग-अलग शक्ति बनैत अछि।

घरेलू वस्तुक डरावन अर्थ

पनही, बरक गाछ, खाट, मचिया, नून, तेल, अनाज-भण्डार, खोपा आ दीया—ई लोकजीवनक परिचित वस्तु छथि। कथा पहिने पनहीकेँ विषदंशक खतरा बनबैत, फेर घरक सामान केँ टुकड़ी नुकेबाक स्थान आ अन्ततः दीयाकेँ सत्यक वाचक बनबैत अछि। एहन रूपान्तरण लोककथाक भाषा केँ दैनिक परिवेशसँ गहीर जोड़ैत अछि। रोमांचक भय असम्भव दूर दुनिया सँ नहि, निकट परिचित वस्तुक भीतर उत्पन्न होइत अछि।

प्रकाशक रूपक : जागरण आ साक्ष्य

दीयाक चेतना अलौकिक अंश अछि, मुदा ओकर अर्थ ज्ञानक इजोत रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। मानवीय पात्र जकरा नहि देखलथि, निर्जीव दीपक ओकरा देखैत–कहैत अछि—ई लोकविधाक उलटाव अछि। बहिन राति भरि चिन्तामे जागल छथि; एहि जागरणक क्षणमे प्रकाश द्वारा सूचना भेटैत अछि। ज्ञानक प्राप्ति मात्र धार्मिक वरदान नहि; ओ बहिनक सक्रिय सावधानीक कथा-युक्तिसँ जुड़ल अछि।

प्रतिशोधक हिंसा आ नैतिक अन्तर्विरोध

भाटिनक अपराध छलक माध्यमसँ पति हत्या करबाक स्पष्ट प्रयास अछि। ओकरा रोकब, भाटक जीवन बचाएब आ गुप्त षड्यन्त्र खोलब न्यायोचित कार्य अछि। मुदा अन्तिम निजी प्राणदण्डक प्रश्नक विवेचन करे बिना कथा ‘न्याय’ शब्दक महिमा अतिशय बढ़बैत अछि। आधुनिक न्याय-विवेकमे अपराधक साक्ष्य, निष्पक्ष सुनवाई आ दण्डक अनुपातक संस्था आवश्यक अछि। लोककथा एहन विधिक प्रक्रिया नहि दिखाबैत, तैं ओकर परिणामकेँ नीतिशास्त्रीय उदाहरण रूपमे सीमित राखब उचित।

कथनक गति आ रस

उपक्रम आ सात अध्यायक संग चौदह चित्र-संकेत अछि। दुबर भाट, पनहीमे नुका साँप, बरक गाछपर लटकल देह, खाट–मचिया–नून–तेलक पहेली, धर्मशालाक बोलनिहार दीप आ बहिनक प्रमाणक दृश्य नाटकीय आरोह रचैत छथि। भय आ वीभत्सक संकेत सँ प्रारम्भ भेल कथा अद्भुतता, कौतूहल आ आखिरी रौद्रतामे समाप्त होइत अछि। उपक्रम पहिनेसँ विश्वासघातक रहस्य खोलि दैत अछि, मुदा प्रहेलिकाक समाधानक विधि बादमे प्रकट कएलासँ कथानकक आकर्षण बनल रहैत अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘भाट-भाटिन’ एक हिंसक घरेलू षड्यन्त्र केँ प्रहेलिका, वस्तु–रहस्य आ बहिनक सूझबूझक माध्यमसँ नाटकीय रूप दैत अछि। कृतिक श्रेष्ठ साहित्यिक बिन्दु भाटक प्राणरक्षा आ बहिन द्वारा गुप्त जानकारीकेँ ठोस प्रमाणमे बदलब अछि। पत्नी–सर्प प्रेमक अद्भुतता, दीयाक संवाद आ नौ टुकड़ीक वस्तुसूची लोककथाक विशिष्ट शिल्प छथि। मुदा बहिनक अन्तिम प्राणघातक प्रतिशोध केँ निर्विवाद न्याय कहब कृतिक

नैतिक सीमा अछि। बुद्धि, साहस, सत्योद्घाटन आ हिंसाक अनुपातक प्रश्न एकसंग पढ़ल जाए तँ ई गाथा लोकप्रहेलिकाक जटिल सामाजिक–साहित्यिक अर्थ खोलैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। भाट-भाटिन : विश्वासघातक प्रहेलिका आ बहिनक बुद्धिक विजय। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क २१; PDF पृष्ठ ११५२–११७६।

कृति २३ : बिहुला

उपक्रम : चम्पानगर

बिहुलाक कथन-केन्द्र आ देवता–मनुष्यक द्वन्द्वक पूर्वसूचना

उपक्रम जहाज, व्यापार आ गंगाक घाटवला चम्पानगर चित्रित करैत अछि। देवता आ मनुष्यक जिद्दक बीच पूरा परिवार पिसाएबाक अग्रकथन कृतिक मूल नैतिक संरचना अछि। मुदा उपक्रम अन्तमे स्पष्ट करैत अछि जे ई आख्यानक केन्द्र देवता अथवा सौदागर नहि, बिहुला छथि। एहि उद्घोषणासँ पाठक आरम्भहि सँ बुझैत अछि जे पुरुषक धार्मिक हठ आ देवीक मान्यताक संघर्ष कथानकक पृष्ठभूमि अछि; संकटसँ जीवनक बाट निकालब नवकनियाँक कर्म बनत।

बिहुलाक नदी-यात्रा प्रारम्भे मृत्यु-सम्बद्ध संकट सँ जुड़ल मानल गेल अछि। गाथाक चमत्कारक चरम पहिनेसँ उद्घाटित होएब पाठकक कौतूहल घटबैत नहि; प्रश्न बनबैत अछि जे जखन अधिकारसंपन्न पुरुष वा देवी दया नहि देखाओलथि, तखन पीड़ित स्त्री किन उपायसँ न्याय माँगतीह। गाथाक सामाजिक अर्थ एहि शक्ति-संतुलन पर टिकल अछि।

अध्याय १ : चाँद सौदागर

धन, व्यापार आ धार्मिक निष्ठाक सीमा

चाँद सौदागर चौदह जहाजक स्वामी पैघ व्यापारी छथि। हुनकर दैनिक धार्मिक चर्या शिवभक्ति सँ जुड़ल अछि—गंगास्नान, बेलपत्र, रुद्राक्ष आ महादेवक स्मरण। लेखक नायकक पहिचान धनसँ बेसी अटल निष्ठा मानैत छथि। एहि व्याख्यामे भक्तिक स्वतंत्रता अछि : व्यक्तिक आराधनाक चुनाव राजकीय वा देवताक दबावसँ अलग रहबाक चाही।

मुदा चाँदक एकदेव-निष्ठाक प्रतिज्ञा आगामी घटनामे कठोर हठक रूपो ग्रहण करैत अछि। अपन पवित्र विश्वास न छोड़ब सम्मानक विषय होइतहुँ, एकर परिणाम पुत्रसभ पर संकट लाबय तँ पारिवारिक उत्तरदायित्व पर प्रश्न उठैत अछि। कथा एहि प्रश्नकेँ पाठकक समक्ष बहुत शीघ्र ठाढ़ करैत अछि, यद्यपि अपराधक मूल जिम्मेदारी हिंसा करनिहार सत्ताकेँ देबाक चाही।

जहाजक संख्या आ धनक विस्तार कथा भीतर चाँदक सामाजिक प्रतिष्ठाक माप बनैत अछि। संपन्न पुरुषक समर्थन पाबि मनसाक पूजा समाजमे पसरि सकत—ई अनुमान दोसरा अध्यायमे प्रकट होयत। तैं व्यापारिक प्रतिष्ठा धार्मिक स्वीकृतिक सार्वजनिक साधन बनि जाइत अछि।

अध्याय २ : मनसाक मनोरथ

स्वीकृतिक भूख आ धर्मक सार्वजनिक वैधताक प्रश्न

मनसा सर्पदेवी मृत्युलोकमे पूजा आ सम्मान चाहैत छथि। हुनकर योजना अछि जे नगरक सबसे प्रभावशाली व्यक्ति पहिने माथ झुकाओत, तखन शेष समाज सहज मानि लेत। देवत्वक कथानक एतय अत्यन्त मानवीय राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा चलैत अछि—प्रतिष्ठित व्यक्तिक अनुमोदन सामाजिक वैधताक आधार बनैत अछि।

मनसा चाँद सौदागर लग सीधा पूजा करबाक आदेश दैत छथि। ई वचनमे आमंत्रण वा संवादक अपेक्षा आज्ञाक स्वर अछि। चाँदक धार्मिक स्वाधीनता आ मनसाक मान्यता-अर्जनक दाबी में संघर्ष इएह कारण तीव्र होइत अछि। शक्ति स्वीकृति चाहैत अछि, मुदा स्वीकृतिक असल मूल्य स्वेच्छामे अछि—ई प्रश्न कथा भीतर मुख्य नैतिक सूत्र अछि।

लोकगाथाक देवीक आचरण कैं जीवित धार्मिक समुदायपर आरोपित करब उचित नहि। ई स्रोतक पात्रक इच्छा आ क्रिया अछि; विभिन्न लोकविश्वासक वास्तविक अनुष्ठानक व्यापक अध्ययन बिना सर्वत्र सामान्यीकरण नहि।

अध्याय ३ : इनकार

असहमति सँ दैवी प्रतिहिंसा धरि

चाँद मनसाक पूजा करबाक मना करैत छथि। कथाक भाषा एहि इनकारमे घृणा अथवा व्यक्तिगत अपमान नहि देखबैत; ओ अपन शिवनिष्ठाक कारण दोसर पूजा नहि करबाक निर्णय व्यक्त करैत छथि। ई धार्मिक चुनावक एक तीव्र उद्घोषणा अछि। एतय आदर्श

मानि पढ़बाक पक्ष ‘भय बिना अपना आस्था राखब’ अछि, न कि सभ दोसर आस्थाक प्रति अनादर।

मनसा क्रोधित होइत छथि आ चाँदक सात पुत्रक विरुद्ध हिंसक योजना बनबैत छथि। विवश करबाक लेल परिवारक सबसे कमजोर स्थानपर चोट करब सत्ता-दुरुपयोगक मुख्य रूप बनैत अछि। सन्तान पिताक आस्था-निर्णयक कर्ता नहि, मुदा ओकरा दण्ड देबाक कल्पना दण्डक अनुपात आ निर्दोषक अधिकार दूनू पर प्रश्न उठबैत अछि।

एहि क्षण मूल कथा देवताक मान्यता-भूख कैं नैतिक रूपैं समस्याग्रस्त बना दैत अछि। प्रेमसँ पूजित होयब आ भयद्वारा पूजा लेल जाएब भिन्न प्रक्रिया छथि। आराधनाक स्वतन्त्रता बचबैत मानवीय जीवन नष्ट करब धार्मिक अधिकारक वैधता संकटग्रस्त करैत अछि।

अध्याय ४ : सात आघात

निर्दोष सन्तानक मृत्यु आ प्रतिरोधक करुण मूल्य

मनसा सातू पुत्रकैं विषदंश द्वारा मारैत छथि। कृति कुटुम्बक संपूर्ण विनाशक करुण प्रतिमा रचैत अछि। धनक आधारपर सुरक्षित मानल जाएबला घर एकाएक सात शोकस्थल बनैत अछि। परिवारक पैघ पुरुषक धार्मिक निर्णयक प्रतिशोध निर्दोष पुत्रसभ पर पड़ैत अछि। एहि घटनाक नैतिक दोष पिताक असहमतिमे नहि, हिंसा करनिहार सत्ताक काजमे अछि।

नगरक लोक डरि चाँदकेँ पूजा करबाक कहैत छथि, मुदा चाँद मना करैत छथि। हुनकर प्रतिरोधक दार्शनिक तर्क ई अछि जे भय सँ झुकल पूजा श्रद्धा नहि। ई कथाक प्रमुख विचारोत्तेजक वचन अछि। तइयो सात प्राणक हानि भेला पर परिवारक आन सदस्यक शोक आ इच्छा अधिक विस्तार पएने रहित तँ प्रतिरोधक भावात्मक जटिलता बढ़ित।

लेखक भक्तिक दृढ़ता केँ करुण संहारक सोझाँ ठाढ़ करैत छथि। वीररसक स्थान नैतिक विरोध लैत अछि; चाँदक विजय अभी दृश्यगत नहि, बल्कि ‘न झुकब’क निर्णयमात्र अछि। एहि विरोधक अत्यधिक मूल्य बिहुलाक आगामी संघर्षक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

अध्याय ५ : डूबल जहाज

व्यापारक विनाश आ नब सन्तानक आशा

चाँद व्यापारक यात्रासँ घुरैत छथि, मनसाक कारण समुद्रमे आन्ही उठैत अछि आ चौदहो जहाज डूबि जाइत अछि। चाँद कोनहुना प्राण बचा किनार लगैत छथि, मुदा धन-संपत्ति हेरि जाइत अछि। पहिने सन्तान, आब व्यवसाय : दैवी दबावक दायरा निजी पारिवारिक जीवनसँ आर्थिक जीवन धरि फैलैत अछि।

अलौकिक कारण कथाक विश्वास-विश्वमे मनसाक प्रतिशोध अछि। वास्तवमे जहाजक डूबब प्राकृतिक जोखिमक विषय होइत, मुदा एतय गाथा ओ घटना देवीक संकल्पक

परिणाम कहैत अछि। दुःखकेँ धर्म-अधर्मक सरल प्रतिफल मानब हानिकारक हो सकैत; निर्दोष सभक दुःखक निश्चित अपराधकारण बनब वास्तविक पीड़ा केँ गलत अर्थ देत।

विनाशपछाँ चाँदकेँ एकटा बेटा होइत छथि—लखिन्दर। नब जीवनक जन्म अपूरणीय अतीतकेँ बदलैत नहि, पर भविष्यक संभावना बनबैत अछि। एहि रोपल आशाक कारण देवीक प्रतिशोधक अगिला लक्ष्य सेहो स्पष्ट होइत अछि। कथा नब जीवन आ पुरान हिंसाक छाया एकहि अध्यायमे रखैत अछि।

अध्याय ६ : लखिन्दर आ बिहुला

कुण्डली, विवाह आ स्त्रीक भाग्यकेँ सुरक्षा-कवच बनएबाक प्रयास

लखिन्दर जवान होइत छथि, आ चाँद ओकर जीवन पर मनसाक खतरा देखि भयभीत रहैत छथि। उपाय रूपमे एहन कन्या खोजल जाइत अछि जकर कुण्डलीमे वैधव्यक योग नहि। एहि कारण बिहुलासँ विवाह तय होइत अछि। विवाह एतय केवल दू व्यक्तिक सम्बन्ध नहि, पिता द्वारा ज्योतिषीय सुरक्षा खोजबाक साधन बनि जाइत अछि।

कथाक भीतर ‘अखण्ड सौभाग्यवती’ रूपमे बिहुलाक परिचय सामाजिक-धार्मिक मान्यताक अंग अछि; भविष्य निश्चित करबाक सत्यापित उपाय नहि। आधुनिक नैतिक दृष्टिसँ स्त्रीक मूल्य केवल पतिक दीर्घायु वा वैधव्यविहीन पहिचानपर निर्भर नहि। बिहुलाक स्वयं चुनाव, जीवनक आकांक्षा आ व्यक्तित्व एहि प्रारम्भिक विवाह-वर्णनमे अपेक्षाकृत कम उद्घाटित अछि; आगे ओ अपने कर्मसँ कथा-केन्द्र बनतीह।

विवाहक प्रथम रातिकेँ मनसा कोहबरमे लखिन्दर केँ डसबक चेतावनी दैत छथि। एहि क्षण उत्सव आ मृत्यु-भयक चरम विरोध बनैत अछि। बिहुला विवाहक आनन्द लेल नहि, अगिले प्राणसंकटक संघर्ष लेल प्रवेश करैत छथि—एहने दुखान्त पूर्वसंकेत कथा केँ करुण गति दैत अछि।

अध्याय ७ : जालीक कोहबर

अभेद्य सुरक्षा-कवचक विफलता आ धार्मिक दबावक चरम

मनसाक चेतावनी पाछाँ चाँद सौदागर लखिन्दर–बिहुला लेल महीन जाली, लोहे–काँसाक चादरि आ पहरेदारसँ युक्त कोहबर बनबैत छथि। सुरक्षा पर भारी ध्यान देल गेल अछि; साँपक लेल छिद्र नहुर्येँ रहबाक अनुमान अछि। एहि युक्तिमे मनुष्य द्वारा तकनीकी उपायसँ प्राकृतिक खतराक सामना करबाक आकांक्षा अछि। पिताक भय भौतिक वस्तु मे रूपान्तरित होइत अछि।

मुदा मनसा अत्यन्त सूक्ष्म रूप धऽ जालीक बीचसँ प्रवेश करैत छथि आ लखिन्दर केँ डसैत छथि। लोकगाथाक अद्भुत शक्तिक सोझाँ मनुष्यक अभेद्य योजना विफल होइत अछि। एहिसँ कथा देवीक सर्वशक्तिमत्ता सिद्ध करबाक प्रयत्न करैत अछि; आलोचकक दृष्टिसँ निर्दोष नवविवाहित युवकक हत्या दैवी मान्यताक लेल अनुपातहीन हिंसा अछि।

बिहुलाक वैवाहिक जीवनक प्रथम राति पर मृत्यु छा जाइत अछि। पिता द्वारा पत्नी कैं सौभाग्य-कवच बनएबाक युक्ति विफल होइत अछि। एहि विफलतासँ कृतिक सूत्र बदलैत अछि : पुरुषक सुरक्षात्मक वास्तुशिल्पक ठाम महिला स्वयं जीवन लौटेबाक प्रयत्न शुरू करतीह। कोहबरक लौह-जाली आ नदीक असुरक्षित थिम्हक बीच आगामी दृश्यात्मक विरोधक पूर्वसूचना एतय अछि।

अध्याय ८ : केराक थिम्ह

शवक संगे नदी-यात्रा : शोकसँ क्रियाशीलता धरि

मूल कथा कहैत अछि जे साँपक काटल मृतकक देह केराक थिम्हपर बहाएबाक लोकरीति अछि, एहि आशामे जे कतहु कोनो गुनी–वैद्य प्राण घुरा सकैत। एहि कथित प्रथाकैं सम्पूर्ण मिथिलाक सर्वकालीन व्यवहारक वैज्ञानिक विवरण नहि मानल जाए; ई लोकविश्वासक दृश्य अछि। लखिन्दरक देह थिम्हपर राखि नदीमे छोड़ल जाइत अछि।

बिहुला नवकनियाँक रूपमे ओहि थिम्हपर बैसि जाइत छथि। गामक लोक रोकैत छथि—धार, साँप, अनजान रस्ता आ जीवनक खतरा सभ उपस्थित अछि। मुदा ओ अपन मृत पतिक देह संग यात्रा चुनैत छथि। कथक एकरा अटल सोहागक प्रतिज्ञा मानैत छथि; समकालीन नैतिक विवेक एहि असुरक्षित यात्राकैं अनुकरणीय निर्देश नहि कहत। स्त्रीक साहस आ ओकर जीवनक मूल्य दूनू महत्वपूर्ण छथि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई मोड़ अत्यन्त बलिष्ठ अछि : जालीक सुरक्षित कोहबरमे युवक मारल गेलाह; खुलल नदीक असुरक्षित थिम्हपर नवकनियाँ सक्रिय अभियान शुरू करैत

छथि। मृत्यु-स्थलक निष्क्रिय शोक सँ जलयात्राक कर्मपर्यन्त परिवर्तन कथाक केन्द्रीय नायिका उद्घाटित करैत अछि।

अध्याय ९ : त्रिवेणीक धोबिन

भयावह मृत्यु–पुनर्जीवनक दृश्य आ ज्ञानक अनपेक्षित स्रोत

बिहुलाक थिम्ह बहैत त्रिवेणी घाट पहुँचैत अछि। ओतय एक धोबिन कपड़ा पीटैत छथि। छोट बच्चाक कानबक कारण खिन्न भऽ धोबिन ओकरा मारि दैत छथि आ देह नुका कऽ काम करैत रहैत छथि। फेर साँझमे किछु मन्त्र-जकाँ कहि बच्चे कैं फेर जीवित करैत छथि। लोकगाथाक भीतर ई अत्यन्त भयावह चमत्कार अछि—मृत्यु कैं घरेलू श्रमक बीच अस्थायी घटना बनाओल गेल अछि।

एहि दृश्य मे दुविधा अछि : बिहुला कैं पति जियएबाक सम्भावना भेटैत अछि, मुदा धोबिन द्वारा बच्चा मारब गंभीर हिंसा अछि। चमत्कारिक पुनर्जीवनक कारण एहि हिंसाकैं स्वीकार्य पालन-पोषण वा अनुशासन नहि मानल जा सकैत। बालपाठक लेल ई नैतिक अन्तर स्पष्ट राखब जरूरी अछि।

धोबिन बिहुला कैं बतबैत छथि जे जीवन–मरणक शक्ति मनसा लग अछि। एहि सूचनासँ बिहुलाक यात्रा नब दिशा पबैत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण बात जे ज्ञानक स्रोत कोई राजदरबारक पण्डित वा श्रेष्ठी नहि, साधारण कपड़ा धोबैत स्त्री छथि। नायिकाक मार्गदर्शक श्रमजीवी स्त्रीक रूपमे उपस्थित छथि—एहि कथात्मक चयनमे लोकसमाजक ज्ञानक वैकल्पिक प्रतिष्ठा अछि।

अध्याय १० : बिहुलाक तप

नारीक नैतिक प्रश्न आ निजी शोकसँ सामूहिक याचनाक यात्रा

बिहुला मनसाक आराधना करैत छथि—सेवा, नृत्य, अश्रु आ तपक माध्यमसँ। किन्तु हुनकर महत्त्व केवल दीन प्रार्थनामे नहि। ओ सीधा पूछैत छथि जे देवीक क्रोध पुरुषपर छल तँ सजाय नवकनियाँ किएक भोगथि। एहि प्रश्नमे कृतिक सर्वाधिक प्रखर न्याय-विवेक अछि। पूजा पबबाक अधिकार आ निर्दोष लोकक प्राणहरण बीचको असंगति नायिका देवताक समक्ष राखैत छथि।

मनसाक मन बदलैत अछि आ ओ वरदान माँगबाक कहैत छथि। बिहुला केवल अपन पति लखिन्दर नहि, ओकर मृत सातो जेठ भाइसभक पुनर्जीवन माँगैत छथि। ई प्रसंग नायिकाक आत्मकेन्द्रित दुःख सँ सामुदायिक दायित्व धरि यात्रा देखबैत अछि। जकर कारण ओ संकट मे उतरलीह, तकर समाधान मात्र निजी परिधिमे नहि सीमित रखैत छथि।

इएह कृतिक कथन-चरम अछि। पिता जकरा कठोर असहमति सँ बचा नहि सकलाह, बिहुला अपन नैतिक प्रश्न आ दूसरक पीड़ाक प्रति विचारसँ संवादक बाट खोलैत छथि। तथापि देवी द्वारा पूर्व हिंसाक आलोचना आ पश्चात् क्षमा स्पष्ट न्यायिक उत्तर रहत कि नहि, से विचारणीय अछि। प्राणदान मृत्युक घटनाकेँ कथा-विश्वमे उलटैत अछि, मुदा मनसाक पूर्व निर्णयक नैतिक समस्या पूर्ण रूपसँ समाप्त नहि होइत।

अध्याय ११ : जीवन-दान

आठ प्राणक घुरती आ भयक स्थानपर कृतज्ञताक स्थापना

मनसा लखिन्दर आ ओकर सातो जेठ भाइ कैँ पुनर्जीवित करैत छथि। बिहुलाक नदीक शोक-यात्रा पुनर्मिलनक उत्सव बनैत अछि। चम्पानगरमे प्रसन्नता घुरैत अछि। कथा चित्रात्मक हिसाब रचैत अछि—जहिया सात चिताक दुःख छल, आब आठ जीवनक उत्सव अछि। एतय करुणरस सँ अद्भुत–शान्त रस दिस संक्रमण होइत अछि।

चाँद सौदागर पूजा करैत छथि, मुदा कथक स्पष्ट करैत छथि जे ई भय सँ नहि, कृतज्ञतासँ भेल। एहि अन्तरमे धर्मक नैतिक पुनर्परिभाषा अछि : धमकीसँ माँगल स्वीकृति अर्थहीन, उपकारपछिल धन्यवाद स्वेच्छाक निकट होइत अछि। तथापि ई प्रश्न बचल अछि जे कृतज्ञता ओही देवी प्रति व्यक्त होइत अछि जिनक आदेशसँ पहिने निर्दोष सन्तान मारल गेल छलाह। कृति एहि अन्तर्विरोधकैँ सहज सुखान्तमे समाहित करैत अछि; समीक्षा ओकरा अदृश्य नहि बनाओत।

जीवन-दान लोकगाथाक चमत्कार अछि। वास्तविक विषदंशक आपात अवस्थामे चिकित्सकीय सहायता अनिवार्य अछि; नदीमे शव बहाएब अथवा अलौकिक हस्तक्षेपक प्रतीक्षाकैँ उपचारक विकल्प नहि मानल जाए। कथा-विश्वक पुनर्जीवन आ व्यवहारिक जीवनरक्षा अलग मानक छथि।

अध्याय १२ : पूजा — मनसा आ बिहुला

लोकदेवत्वक वितरण आ मानवीय नायिकाक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा

अन्तिम अध्याय कहैत अछि जे मनसाक पूजा संग बिहुलाक पूजो पसरि गेल, आ मनसा–गीत तथा बिहुला–नाच लोकपरम्परामे जुड़ल। कथा-विश्वमे देवी जकरा बलपूर्वक पूजा पाबए चाहैत छलीह, अन्ततः बिहुलाक आराधनाक माध्यमसँ सम्मान पबैत छथि। एतय मानवीय नायिका धार्मिक प्रतिष्ठाक निर्णायक मध्यस्थ बनैत छथि।

बिहुला स्वयं वरदान मांगए गेल छलीह, मुदा स्वयं पूजा पबए लगलीह—कृतिक सुखान्त लोकदेवत्वक अन्तिम रूप अछि। एहि परिवर्तनमे कर्मनिष्ठ स्त्रीक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा अछि। कथा केवल पतिक प्रति निष्ठा नहि, समूचा पीड़ित परिवार लेल न्याय माँगबाक साहस कैँ पूजनीय बनबैत अछि। ‘सती’ शब्दक रूढ़ सीमासँ बाहर बिहुला स्वतंत्र विवेकक स्त्री रूपमे उभरैत छथि।

लोकगीत आ लोकनाचक वर्तमान प्रचलनक दावा मूल कथा करैत अछि, मुदा ओकर क्षेत्रीय विस्तार, काल-निर्धारण अथवा प्रदर्शन-भेदक ऐतिहासिक पुष्टि अलग क्षेत्रकार्यसँ होएत। साहित्यिक आलोचकीय दृष्टिसँ गाथाक अन्तिम संदेश नियतिक सोझाँ निःशक्त आत्मसमर्पण नहि, असमान सत्ता सँ संवाद करबाक असाधारण मानवीय प्रयास अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

मूल कथासंरचना : सत्ता-संघर्षक पाछाँ नायिकाक न्याययात्रा

‘बिहुला’क कथा चौदह जहाजक स्वामी चाँद सौदागर आ मनसा देवीक परस्पर अस्वीकृति सँ चलैत अछि, मुदा घटनाक नैतिक मोड़ बिहुलाक प्रवेशपछाँ घटैत अछि। पहिल पाँच अध्यायमे संघर्ष निर्णय लेनिहार पुरुष आ देवीक बीच अछि; फल भोगनिहार पुत्रसभ छथि। छठम सँ आठम धरि विवाहक रक्षात्मक उपाय विफल होइत अछि, नौम सँ बारहम धरि बिहुला सक्रिय समाधानक मार्ग रचैत छथि। एहि संरचनामे नायिकाक विलम्बित प्रवेश रचनात्मक रूपसँ जानबूझि महत्त्वपूर्ण अछि : जकर बोलबाक अधिकार आरम्भमे नहि छल, अन्तमे वैह देवीसँ न्याय माँगबाक प्रमुख व्यक्ति बनैत छथि।

धर्मक स्वेच्छा बनाम धमकी

चाँद सौदागर मनसाक पूजा करबाक अस्वीकार करैत छथि। हुनकर धार्मिक निष्ठाक स्वतंत्रता कथाक वैचारिक आधार अछि। मनसा पूजास्वीकृति लेल पुत्रसभक हत्या आ जहाज-डुबानक शक्ति प्रयोग करैत छथि। ई उत्पीड़नक नैतिक तर्क मानेनाइ कठिन अछि—देवत्व शक्ति होइतहुँ नीतिगत उचितता नहि सिद्ध करैत। अन्तमे कृतज्ञता द्वारा पूजा होएबाक कथन आ पहिने भयद्वारा पूजा माँगबाक भेद धार्मिक आचारक स्वतंत्र संकल्पक महत्त्व रेखांकित करैत अछि।

निर्दोष सन्तानक अधिकार

सात पुत्र आ लखिन्दर पिताक धार्मिक निर्णय लेल दण्डित छथि। कृतिक करुणा एहि कारण विशेष तीव्र अछि जे हिंसाक शिकार स्वयं विवादक पक्षकार नहि। जीवित सन्तानक अधिकार पिता वा देवीक प्रतिष्ठागत संघर्ष सँ उच्चतर मानब एक आधुनिक नैतिक पठनक आग्रह अछि। बिहुलाक अन्तिम माँग आठ प्राणक घुरती एहि अन्यायक प्रति सामूहिक प्रतिक्रिया अछि। कथा धार्मिक सुखान्तद्वारा हत्या कैँ उलटि दैत अछि, मुदा परिणामक चमत्कार नैतिक प्रश्नक समाधानक एकमात्र मानक नहि।

बिहुला : वैवाहिक चिन्हक सीमा सँ बाहर

विवाहक आरम्भमे बिहुला कुण्डलीक ‘अखण्ड सौभाग्यवती’ परिचय पबैत छथि। एतय स्त्री कैँ पतिक जीवनक सुरक्षा-साधन मानबाक सामाजिक भाषा अछि। मुदा थिम्हपर यात्रा, धोबिनसँ ज्ञान पाबब, देवी लग पहुँचना आ आठ प्राणक माँग—ई सभ हुनकर स्वतंत्र साहस आ निर्णयक कर्म अछि। एहि कारण बिहुला कैँ केवल ‘सती’ अथवा पतिनिष्ठक आदर्शमे सीमित करब कृतिक मूल कार्यक संकुचन होयत। हुनकर शक्ति व्यक्तिगत स्नेहक संग सामुदायिक न्यायबोध अछि।

स्त्री-संघर्षक दू रूप : धोबिन आ बिहुला

त्रिवेणीक धोबिन नायिकाक बाट खोलैत छथि। यद्यपि स्रोतक धोबिनक छोट बच्चा मारबाक क्रिया निन्दनीय अछि, ओकर कथात्मक काज गुप्त जीवन–मृत्यु-ज्ञानक सूचना दियाओल अछि। साधारण श्रमजीवी स्त्री धार्मिक संकटमे मार्गदर्शक बनैत छथि। एहिसँ कथाक ज्ञानव्यवस्था में दरबारक पुरुषक बाहरी वर्चस्व टूटैत अछि : नायिका मार्गदर्शन

ओहि स्त्रीसँ पबैत छथि जिनकर सामाजिक स्थानक प्रतिष्ठा व्यापारी वा देवता जतेक नहि।

नदी, कोहबर आ लोककथाक प्रतीक

लौह–जालीक कोहबर सुरक्षित मानल गेल स्थान अछि, मुदा ओतय नवदूल्हाक मृत्यु होइत अछि। केराक थिम्ह खुलल, असुरक्षित जलपथ अछि, मुदा ओहीपर जीवन घुरेबाक प्रयास सफल दिशा पबैत अछि। एहि उलटावमे शिल्पक गहिराइ अछि—संरक्षित घर असहाय, जोखिमपूर्ण यात्रा सक्रिय agencyक स्थान बनैत अछि। धारक निरन्तरता शोकसँ तप, तपसँ वरदान धरि भावात्मक परिवर्तनकेँ रूपक दैत अछि। मुदा गहराइयुक्त नदीमे शवसंग यात्रा वास्तविक जीवन लेल अनुकरणीय सुरक्षा-उपाय नहि।

लोकगाथाक नाट्यरूप आ बालग्राफिक पाठ

उपक्रम आ बारह अध्यायक संग चौबीस चित्र-संकेत अछि। व्यापारक जहाज, मनसाक आगमन, चाँदक इनकार, सात पुत्रक शोक, जहाजक विनाश, जालीक कोहबर, केराक थिम्ह, त्रिवेणीक धोबिन आ मनसाक दरबारक प्रसंग लघु दृश्य-इकाइमे विभक्त छथि। विशद नाट्यवर्णन सँ बेसी निर्णायक दृश्यक चयन कथा केँ चित्रयोग्य बनबैत अछि। भाव-क्रममे रौद्र आ करुण प्रधान होइतहुँ बिहुलाक प्रश्न सँ वीर–अद्भुत, अन्तमे शान्त भाव प्रकट होइत अछि। एकर सीमा छिटपट वर्णनमे पुत्रसभक व्यक्तिगत मनोविज्ञानक पर्याप्त विस्तार नहि।

आधुनिक साहित्यिक पठनमे न्यायिक सीमा

मनसाक पूर्व हिंसाक बाद पुनर्जीवन आ पूजा प्राप्ति गाथाक सुखान्त अछि। मुदा पीड़ित परिवारक सम्मान, निर्दोष हत्या प्रति जवाबदेही आ शक्ति-प्रयोगक नैतिक सीमा विषयक तर्क मूल पाठ विस्तारसँ प्रस्तुत नहि करैत। ई शेष प्रश्न आधुनिक आलोचकक दायित्व अछि। देवीक बदलल मनक स्वीकार रूपकसँ दया आ संवादक सम्भावना स्पष्ट होइत अछि, मुदा प्राणदण्डक पूर्व भयावहता नुका देब नहि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘बिहुला’ केवल पतिव्रता स्त्रीक महिमागान नहि; असमान शक्ति द्वारा उत्पन्न हिंसाक बीच कमजोर पक्ष द्वारा नैतिक पुनर्संतुलनक आख्यान अछि। चाँद सौदागर आ मनसाक प्रतिष्ठागत संघर्ष आठ निर्दोष जीवन पर भारी पड़ैत अछि, आ बिहुला देवीक सोझाँ निजी अधिकारक बदला समस्त परिवारक जीवनक माँग रखैत छथि। एहि कर्मसँ कृति प्रतिशोधक राजनीति सँ करुणा आ सार्वजनिक भलाइ दिस मुड़ैत अछि। कथानकक अलौकिक पुनर्जीवन लोकविश्वासक प्रभावकारी समाधान अछि, ऐतिहासिक वा चिकित्सकीय तथ्य नहि। एहि विधागत भेदकेँ स्वीकारि पढ़ला पर बिहुला नारीक साहस, दृढ़ संवाद, सामुदायिक उत्तरदायित्व आ धार्मिक शक्तिक नैतिक सीमाक प्रतिनिधि बनैत छथि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। बिहुला : चम्पानगरक सती — मनसा आ चाँद सौदागरक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क २२; PDF पृष्ठ ११७७–१२६४।

कृति २४ : ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा

उपक्रम : देबीगंजक शर्त

बालकक प्रश्नाधिकार आ ज्ञानक यात्रा

देबीगंजक ब्राह्मण दूरक पूजा-अनुष्ठानमे जाइत छथि। असगर यात्राक असुविधा दूर करबाक लेल ओ ठाकुरक बच्चाकेँ संग लैत छथि। बच्चा पहिले शर्त रखैत अछि जे असमझ गपक उचित उत्तर नहि भेटल तँ ओ संग नहि चलत। एतयसँ सहयात्राक सम्बन्ध सामान्य गुरु-शिष्यक एकतरफा आदेशक बदला संवादमूलक अनुबन्ध बनैत अछि।

कथा एखन केवल गन्तव्य धरि पहुँचनाक यात्रा नहि, लगातार उठैत तीन रहस्यक अर्थ बुझबाक यात्रा बनैत अछि। प्रश्नक अधिकार बालक लग अछि, उत्तर देबाक दायित्व ब्राह्मणपर। एहि रूपमे बाह्य पथक प्रत्येक दृश्य आन्तरिक कथाक द्वार खोलैत अछि। गुरु ज्ञान पर एकाधिकार रखैत छथि, मुदा बच्चाक प्रश्न बिनु ओहि ज्ञानक प्रसंगहि नहि बनित।

इएह रूपक कृतिक शिल्पक सर्वाधिक सशक्त पक्ष अछि। विद्यार्थी मार्ग बदलि सकैत अछि, प्रश्नक गति निर्धारित करैत अछि आ संवादक शर्त राखैत अछि। एहि सक्रिय जिज्ञासा मे बालसाहित्यक शिक्षण-मूल्य अछि, भले भीतरक कथासभ कतेको कठोर हिंसक घटनासँ भरल छथि।

अध्याय १ : भाँसैत लहास

दृश्यसँ उपाख्यान धरि : स्त्रीक मृतदेहक रहस्य

धारक लग बच्चा एक स्त्रीक बहैत देह देखैत अछि। देहक भाँसबाक स्थिति पर ओकर आश्चर्य आ डर मिश्रित अछि। बच्चा शर्तक स्मरण करा ब्राह्मणसँ व्याख्या माँगैत अछि। कथा-प्रविधि मे ई प्रथम फ्रेम अछि : दृश्य स्वयं छोट, मुदा ओकर उत्तरमे पूरा एक पारिवारिक अतीत खुलबाक अछि।

ब्राह्मण केनगरक राजघरानाक कथा शुरू करैत छथि। राजा मरि जाइत छथि, बेटा राज्य सम्भालि नहि पबैत, राज्य बन्हक पड़ि जाइत अछि। सम्पन्न स्थितिसँ आर्थिक अपमान धरि बदलाव राजकुमारक निजी सम्बन्ध पर असर करैत अछि। दाम्पत्यक पहचान जखन आर्थिक प्रतिष्ठासँ जुड़ल रहैत अछि, अभावक समय व्यक्ति सामाजिक रूपसँ अदृश्य बनि जाइत अछि।

मृतदेहक दृश्य आगामी दुखान्तक परिणाम पहिनेसँ देइत अछि, जाहिसँ कथाक कौतूहल घटना-कारण बुझब बनैत अछि। मुदा बालकक भावनात्मक प्रतिक्रिया आ मृत स्त्रीक गरिमाक दृष्टिसँ बहैत देह कैं केवल ‘अद्भुत पहेली’ बनाबब एक नैतिक सीमा सेहो अछि।

अध्याय २ : टूटल खाटक कथा

अर्थहीन सम्पन्नता आ संबंधक अपमान

सासुरक धार्मिक पूजा अवसरपर गरीब राजकुमार अबैत छथि, मुदा कियो आदर नहि करैत। पूजा, प्रसाद आ सामाजिक भीड़ जीवनक अतिथि-सम्मान कैं सुनिश्चित नहि करैत। भूखल राजकुमार बचल भोजन खाइत अछि आ टूटल खाटपर सुतए बाध्य होइत अछि। पत्नी हुनका पहचानि नहि सकैत छथि आ खाटक टाँगक व्यवस्था करबाक काज देइत छथि।

एहि घटनामे धार्मिक अनुष्ठान आ मानवीय करुणा बीच गहन विरोध उपस्थित अछि। बाह्य पूजा सम्पन्न अछि, मुदा साधारण अतिथिक भूख नहि बुझल गेल। राजकुमारक आर्थिक पतन ओकर मानवीय पहचानकैं लोकक दृष्टिसँ हेराएल बनबैत अछि। सामाजिक पदक भ्रम आ व्यक्तिगत सम्मानक प्रश्न कृतिक एक प्रखर आलोचनात्मक बिन्दु अछि।

सुतलाक समय सपनमे गुप्त धनक सूचना भेटैत अछि; राजकुमार घर घुरि बन्हक राज्य छुड़बैत अछि। एहि अलौकिक स्वप्नद्वारा सम्पत्ति पुनर्प्राप्ति लोककथाक सुविधाजनक मोड़ अछि। मुदा आर्थिक सुधार भेला परो पहिले भेल अपमानक स्मृति मेटाइत नहि; अगिला अध्याय एहि घावक परिणाम खोलैत अछि।

अध्याय ३ : ऐंठक स्मृति

अपमानजनित एकान्त आ स्त्रीक दुखान्त मृत्यु

राजकुमार फेर राजकीय सम्मान पाबैत छथि आ पत्नीकेँ गौना करा घर आनैत छथि, मुदा हुनका दासी संग कोठलीमे अलग रखैत छथि। पत्नी दुख प्रकट करैत छथि। राजा पहिल दिनक अपमान स्मरण करबैत छथि : टूटल खाटक पैरक काज कराएब आ भोजनक बचे टुकड़ा खुवाएब। एहि बदला-जकाँ दूरीमे मानवीय सम्बन्ध सुधारबाक अवसर हेराइत अछि।

स्त्रीक अन्तिम व्यवहार स्रोतमे नदीमे कूदि प्राण गमाएबाक रूपमे प्रस्तुत अछि। एहि दुखान्त केँ स्त्रीक अपराधक उचित दण्ड वा वैवाहिक अपमानक नैतिक प्रायश्चित्त मानब अनुचित अछि। ई असहनीय लज्जा, सम्बन्धक विघटन आ सहायक संवादक अभावक त्रासदी अछि। पुरुषक हृदयाघात आ स्त्रीक अन्तिम विकल्पहीनता दूनू पर सामाजिक जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत अछि।

ब्राह्मण एहि मृतदेहकेँ बच्चा द्वारा देखल बहैत शरीरसँ जोड़ि पहिल रहस्यक उत्तर दैत छथि। पर ज्ञान-प्राप्तिक सुखक सोझाँ एक जीवनक अपूरणीय हानि ठाढ़ रहैत अछि। बालपाठक केँ परिस्थिति समझएबाक संग पीड़ितक जीवनक सम्मान एवं सहायता खोजबाक आवश्यकता स्पष्ट करब आधुनिक समीक्षाक दायित्व अछि।

अध्याय ४ : मारल जाइत बकरी

सामूहिक प्राणीहिंसा आ दोसर रहस्यक नैतिक आधार

पहिल रहस्यक उत्तरक बाद ब्राह्मण आ बच्चा आगाँ बढ़ैत छथि। एक गाममे बकरीक बच्चाकेँ लोक लात मारैत छथि। बच्चा कारण पूछैत अछि; ओ अनुमान करैत अछि जे बकरी ककरो फसल खा लेल होएत, मुदा सामूहिक अत्याचारक कारण स्पष्ट नहि। एहि दृश्यसँ नब कथा-खिड़की खुलैत अछि। बच्चाक प्रश्न स्वयं करुणा आ न्यायबोधक सम्भावना खोलैत अछि—कियो पशु संग एहन व्यवहार किएक करय?

ब्राह्मण लोदीपुरक राजाक बेटा आ ठाकुरक बेटाक मित्रताक कहानी कहैत छथि। दुनू वनमे शिकार लेल जाइत छथि आ राति गाछ तर बितबैत छथि। बीध-बीधीनक आगमनक बाद दुनूकेँ लालपरी लग पठाएबाक अलौकिक प्रसंग बनैत अछि। कथा एतय सामाजिक यथार्थसँ वन-परिकथाक लोकजगतमे प्रवेश करैत अछि।

दू मित्रक आरम्भिक निकटता आगामी धोखाक नैतिक प्रमाण बनेत। पहिल कथामे अपमान विवाह तोड़ैत छल; दोसरमे मित्रताक गोपनीय ज्ञान सत्ता-हड़पबाक साधन बनेत।

अध्याय ५ : चोला-मंत्रक विश्वासघात

देह-अधिग्रहण आ मित्रताक सीमानाश

लालपरी राजकुमारसँ विवाह करैत छथि। विदाइपूर्व दूनू मित्र परीक पिता सँ जीव-बदलाबक मन्त्र सीखैत छथि। मन्त्र प्राप्ति एहि लोककथामे असाधारण शक्ति अछि; ओकर नैतिक उपयोग नायकक चुनावपर निर्भर अछि। मार्गमे राजकुमार मृत सुग्गाक देहमे प्रवेश करैत छथि, आ तखन ठाकुरक बेटा राजकुमारक खाली देह अपना अधीन कऽ लैत अछि।

ई देह-हरण शारीरिक सामर्थ्यक नहि, ज्ञानक दुरुपयोगक अपराध अछि। मित्रक साझा गुप्त साधन ओकरा विरुद्ध उपयोग भेल। नकली राजा प्रतिष्ठा, विवाह आ राज्यक लाभ अपनाबैत अछि; असल राजा प्राणधारी सुग्गाक देहमे सीमित भऽ जाइत छथि। व्यक्ति-देह आ व्यक्ति-चेतनाक विभाजन लोककथाक अद्भुत तत्त्व अछि, वास्तविक आत्मा-अन्तरणक प्रमाण नहि।

परी भेषधर व्यक्तिक अपरिचित व्यवहार बुझैत छथि आ अपना लेल समय माँगैत छथि। हुनकर संशय कथाक नायिकाक विवेक उद्घाटित करैत अछि। आगे छलक उलटा देबाक मुख्य योजना हुनकर हाथमे जायब, जखन कि मूल राजकुमार तत्काल असहाय छथि।

अध्याय ६ : परीक बुद्धि

शिकारीक जालसँ सच्चा परिचयक पुनःप्राप्ति

नकली राजा असल राजकुमारक सुग्गा-देह समाप्त करबाक लेल बोनक सुग्गासभ मारबाक आदेश दैत अछि। एहि आदेशमे निजी सत्ता कायम रखबाक लेल व्यापक प्राणीहिंसाक चिन्ताजनक रूप उपस्थित अछि। राजकीय शक्ति छोट शिकार सभक प्राण समाप्त करबामे लगैत अछि। एक व्यक्ति कैँ हानिपहुँचएबाक भय सँ अनेक निर्दोष प्राणीक हत्या कएल जाएब दण्डक अपार असंगति अछि।

लालपरी शिकारीक सुग्गासभ खरीदब आरम्भ करैत छथि आ प्रत्येकसँ मन्त्रक ज्ञान पूछैत छथि। अंततः एक सुग्गा सही उत्तर दैत अछि—वैह वास्तविक राजकुमारक जीव थिक। नायिकाक धैर्य, प्रश्नाधारित परीक्षा आ संसाधनक प्रयोगक कारण सच्चा परिचय प्राप्त होइत अछि। लोकगाथामे स्त्रीक बुद्धि पुरुषक लुटल अस्मिता कैँ फेर उजागर करबाक उपाय बनैत अछि।

परी एक बकरीक बच्चा किनि आगामी योजना रचैत छथि। एहि काजक अन्तिम प्रयोजन नकली राजाक छल कैँ उलटब अछि, मुदा पशुक जीवनक उपयोगक नैतिक प्रश्न सेहो उठैत अछि। कृतिक सिद्धान्त ‘छल पर बुद्धिक विजय’ रहितो प्राणीहिंसाक कीमत उपेक्षित नहि कएल जाए।

अध्याय ७ : पुनर्जन्मक क्षण

देह-बदलाबक प्रत्युत्तर आ हिँसक दण्डक समस्या

परी बकरीक बच्चा मृत भेलापर शोकक नाटक करैत छथि। नकली राजा सांत्वना लेल जीव-बदलाबक मन्त्र प्रयोग करैत अछि आ बकरीक देहमे प्रवेश करैत अछि। तत्क्षण

सुग्गा-रूपमे रहैत असली राजकुमार अपना मूल मानव-देहमे घुरैत छथि। एहि घटनासँ ‘चोला’क दुरुपयोग उलटि जाइत अछि। कथा जकरे देह चोराएल छल, ओकर पहचान आ सामाजिक स्थान पुनर्स्थापित करैत अछि।

पर मुदा नकली राजाक देह बकरीक बच्चामे फँसि जाइत अछि आ गामक लोक ओकरा मारैत छथि। कथक एहि परिणाम कैं विश्वासघातक फल कहैत छथि। नैतिक दृष्टिसँ गलती करनिहारक दण्डक प्रश्न अलग, निर्बल पशु-देहपर भीड़ द्वारा हिंसाक प्रश्न अलग अछि। दण्ड-समान्तरता लोककथाक कथात्मक सुख देइत हो, मुदा जीवन्त प्राणीपर मारपीटकैं न्यायपूर्ण उदाहरण मानब अनुचित अछि।

ब्राह्मण एहि तरह दोसर रहस्यक उत्तर दैत छथि। बच्चा जकर दृश्य देखलक, ओकरा लम्बा उपाख्यानमे अर्थ भेटैत अछि। मुदा कथा ज्ञानक समाधानक संग हिंसाक वैधतापर जटिल प्रश्न छोड़ैत अछि : देह बदलि गेलासँ अपराधी व्यक्ति दोषी रहैत अछि, तइयो वर्तमान रूपक जीवनक अधिकार शून्य नहि होइत।

अध्याय ८ : फाँसीक बुढ़िया

राजकीय प्राणदण्ड आ तेसर रहस्यक उद्घाटन

तकर बाद नगरक चौबटियापर अस्सी बर्खक एक बुढ़ियाकैं फाँसी देल जाइत देखल जाइत अछि। ठाकुरक बच्चा फेर ब्राह्मणसँ प्रश्न करैत अछि। एहि दृश्यक भय पहिलका मृत स्त्री वा मारल जाइत बकरी सँ अलग अछि, कारण एतय हिंसा सार्वजनिक दण्डक

रूपमे आयोजित अछि। बच्चा तर्क खोजैत अछि—आखिर वृद्ध व्यक्तिक अपराध की छल?

ब्राह्मण विराटनगरक राजकुमार आ मन्त्रिपुत्रक दोस्तीक कथा सुनबैत छथि। दुनू जंगलमे रुकैत छथि; एक दिन मन्त्रिपुत्र राजकुमार कैं गाछपर सुरक्षित राखैत छथि। रातिमे मणिधारी साँपक मणि प्राप्त होइत अछि आ नागवंशी कन्या संग राजकुमारक विवाहक सम्बन्धक कथा खुलैत अछि। लोकपरम्पराक अलौकिक आरम्भ तेसर रहस्यक प्रतीकात्मक आधार बनैत अछि।

साँपक आत्म-विनाश, मणिक प्रकाश आ मणिद्वारा पोखरि धरि पहुँचब कल्पनात्मक युक्ति छथि। एहि घटनाक आधारपर वास्तविक जीवविज्ञान अथवा ऐतिहासिक राजवंशक निष्कर्ष नहि निकालल जाए। साहित्यक मुख्य प्रश्न सामाजिक दण्ड आ ईर्ष्या-प्रेरित सत्ता-अपहरणक नैतिकता अछि।

अध्याय ९ : बताह प्रेमी

नागवंशी कन्याक इच्छा आ छलपूर्वक अपहरण

राजकुमार आ नागवंशी कन्याक सम्बन्धक समाचार फैलैत अस्थिर घटना शुरू होइत अछि। दोसर राजघरानाक युवक कन्याकैं देखि मोहित भऽ विक्षुब्ध भऽ जाइत अछि। ओकर पिता पुत्रकैं ठीक करनिहार व्यक्ति लेल राज्यक हिस्सा आ विवाहक प्रतिज्ञा करैत छथि। एहि घोषणामे स्त्रीकैं पुरस्कार रूपमे पेश करबाक गंभीर समस्या अछि, जखन कि कन्याक अपन सहमति केंद्रमे नहि राखल गेल।

एक अस्सी बर्खक गरीब बुढ़िया राजकीय प्रतिज्ञा सुनि उपाय करए लगैत छथि। ओ कन्याक विश्वास प्राप्त करबाक लेल सेवा–ममताक बहन्ना बनबैत छथि, फेर संकेत देइतहि सखी-मण्डली द्वारा कन्याकेँ पकड़ि ठगपुर लऽ जाएबाक व्यवस्था करैत छथि। एहि क्रियाक संरचना सरल सहायता नहि, विश्वासघात आ अपहरण अछि।

वृद्धाक आर्थिक परिस्थिति स्रोत बतबैत अछि, मुदा गरीब होएब कथाक अपराधक स्वतः कारण नहि। सत्ता द्वारा पुरस्कारक प्रलोभन, युवराजक एकतरफा आकर्षण आ कन्याक आत्मनिर्णयक अभाव मुख्य आलोचनात्मक बिन्दु छथि। ‘प्रेम’ नाम देला मात्रसँ बिनु सहमतिक अपहरण वैध नहि भऽ जाइत।

अध्याय १० : मन्त्रीक बेटाक चालि

उद्धारक छद्मवेश आ नैतिक द्वैध

मन्त्रिपुत्र विवाहक तैयारी सँ घुरैत बीचमे जानैत छथि जे नागकन्याकेँ ठगपुरमे रोकल गेल अछि। ओ भिक्षुकक भेष धरि कृतिक भीतर प्रवेश करैत छथि, कन्याकेँ संकेत दैत छथि आ राजकीय युवकक स्थान लेबाक योजना रचैत छथि। ई रणनीति सूचना, समय, वेशभूषा आ पात्रक भरोसक प्रयोगसँ बनैत अछि। कथाक प्रतिपक्ष द्वारा चलल छलक उत्तरमे नब छल अपनाओल जाइत अछि।

मन्त्रिपुत्र दोसर युवककेँ जंगलमे छोड़ि ओकर वस्त्र पहिरि कन्याकेँ बाहर निकालैत छथि। नागकन्या अपन पहिल प्रतिज्ञाक सम्बन्धमे घुरबाक मार्ग पबैत छथि। मुदा उद्धारक प्रयोजन होइतहुँ दोसर मानसिक रूपसँ अस्थिर व्यक्तिकेँ ठकि दूर छोड़ब नैतिक रूपसँ समस्या रहित नहि। कृतिक संघर्षमे सार्थक लक्ष्यक संग हानिकारक साधन जुड़ल अछि।

बुढ़ियाकेँ मृत्युदण्ड देबाक कथाक कारण बादमे राजकीय ठगीक आरोप बनैत अछि। निजी बिनु-सहमतिक अपहरण निन्दनीय अछि, मुदा वृद्ध व्यक्तिक फाँसी उचित दण्ड अछि कि नहि—ई न्यायिक अनुपातक खुलल प्रश्न अछि। राजकीय वचन, पुरस्कार आ दण्ड सभमे सत्ता अपन मनसँ नियम बदलैत देखाइत अछि।

अध्याय ११ : रस्तेक पचीस संकट

पूर्वज्ञान, मित्रक सूझ आ सहयोगक कर्म

नागकन्या आ राजकुमारक विवाहपछाँ बरियातीक घुरतीमे गाछ तर राति बितैत तीनू व्यक्तिक कथा अबैत अछि। बीध–विधाताक वार्ता अनुसार राजकुमार लेल पचीस संकट बाँकी छथि। नागकन्या आ मन्त्रिपुत्र ई बात सुनैत छथि, तैं सावधानी सँ आगाँक बाट तय करैत छथि। कथामे पूर्वज्ञानक अलौकिक युक्ति अछि, मुदा संकट टारब सामूहिक सूझ आ सजगतासँ जुड़ल अछि।

वृक्षक खसब, धारमे जलजन्तुक जोखिम आदिक प्रसङ्ग कथा भीतर देखाओल गेल अछि; सभ पचीस संकटक अलग-अलग विस्तृत कथन नहि। एहि कारण आलोचना

कल्पित शेष संकटक सूची नहि बनाओत। जतेक दृश्य मूल पाठमे अछि, ततेक पर निर्णय कएल जा सकैत अछि।

मन्त्रिपुत्रक परिश्रम आर नागकन्याक सावधानी दूनू राजकुमारक रक्षा करैत अछि। एकरासँ मित्रता केवल निजी भावनात्मक सम्बन्ध नहि, जीवन-मरणक साझेदारी बनैत अछि। ई सफलता कथा-अन्तमे गलतफहमी आ राजकीय धमकी द्वारा संकटग्रस्त होएत—कथानक एहि मार्मिक मोड़ दिस बढ़ैत अछि।

अध्याय १२ : पाथरक शरीर

रहस्य खोलबाक दबाव आ आत्मबलिदानक भयावह रूप

घर पहुँचि राजकुमार मन्त्रिपुत्र आ नागकन्याक बीचक गुप्त बातचीतपर शंका करैत छथि। मन्त्रिपुत्रक स्पष्टीकरण टारबाक प्रयास असफल होइत अछि; राजकुमार सत्य नहि कहलापर फाँसीक धमकी दैत छथि। जे मित्र अनेक संकटसँ जीवन बचौलक, वैह मित्र बिना साक्ष्य शंका आ दण्डक लक्ष्य बनैत अछि। भरोसक टूटब एहि दृश्यक नैतिक केन्द्र अछि।

मन्त्रिपुत्र बीध–विधातासँ सुनल भेद सुनाबय लगैत छथि आ ओकर शरीर पाथर बनैत जाइत अछि। अन्ततः ओ पूरा पाथर बनि जाइत छथि। लोकगाथाक विधानमे गोपनीय आदेशक उल्लङ्घन अलौकिक दण्ड अछि। अपराधी छलसँ अपनाकेँ बचाएब चाहैत छथि; सहायक मित्र प्राणरक्षा हेतु सुनल सच्चाइ बताबैत छथि, मुदा ओकरा दण्ड भुगतब पड़ैत अछि। एहि उलटावमे नीतिगत असंगति तीक्ष्ण अछि।

तकर बाद मूल पाठमे नवजात बालक कैं टुकड़ा कऽ देबाक कठोर दृश्य अछि, जकर परिणाम पाथर बनल व्यक्ति पुनः जीवित होएब अछि। कथा बलिदानक अद्भुत तर्क अपनबैत अछि, मुदा बालकपर हिंसाकैं व्यवहारिक औचित्य अथवा पुनर्जीवनक भरोसासँ अनुमोदित नहि कएल जा सकैत। ई भयावह प्रसङ्ग लोककथाक नैतिक सीमाक विशिष्ट उदाहरण अछि।

अध्याय १३ : क्षमा आ मित्रताक पुनर्स्थापन

राजकीय पश्चात्ताप आ हिंसाक अपूरणीय प्रश्न

मन्त्रिपुत्र नवजात बालककैं अपन सासुर लऽ जाइत छथि। स्रोतक लोकजादूक विधान अनुसार स्त्रीक रक्तक बूँद बालकक देहपर पड़लाक बाद बच्चा पुनः जीवित होइत अछि। एहि अलौकिक घटनाक साक्ष्य केवल कथाभित्रक अछि। वास्तविक जीवनमे घायल बच्चाक आपात चिकित्सकीय सहायता प्राथमिक कर्तव्य अछि; धार्मिक वा जादुई पुनर्जीवनक आशाक आधारपर हिंसा एकदम अस्वीकार्य अछि।

मन्त्रिपुत्र बालककैं राजकुमार लग घुरा दैत छथि आ मित्रता समाप्त करबाक घोषणा करैत छथि। एहि वचनमे चोट खाएल आत्मसम्मान अछि—बारम्बार जीवन बचौने मित्रक प्रति राजकुमार विश्वास नहि रखलाह। राजकुमार पछता कऽ क्षमा माँगैत छथि। एहि क्षमायाचनासँ कथा-समाप्ति सहयोग आ अपन दोष स्वीकार करबाक लोकनीतिक सन्देश दैत अछि।

अन्तमे ब्राह्मण आ ठाकुरक बच्चा यात्रा समाप्त कऽ गन्तव्य पहुँचैत छथि। तीनू प्रश्नक उत्तर भेटैत अछि, मुदा कथाक नैतिक प्रश्न समाप्त नहि। अपमानजनित स्त्री-मृत्यु, पशुहिंसा, अपहरण, वृद्धाक फाँसी, मित्रक बलिदान आ बालकपर हिंसा—ई घटना कौतूहलक उत्तर देलाक बादो मानवीय विवेकक खुलल परीक्षा बनल रहैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

तीन रहस्यक समवर्ती आख्यान-शिल्प

‘ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा’ यात्राक प्रस्तावना आ तीन कथान्तर्गत प्रश्नसँ विकसित अछि। बच्चाक जिज्ञासा कथा कहबाक प्रेरणा अछि; ब्राह्मण घटनाक अर्थ बतबैत छथि। मृत स्त्रीक देह, मारल जाइत बकरी आ फाँसी पबैत वृद्धा—तीनू दृश्य हिंसासँ जुड़ल छथि। ताहि दृश्यसभक व्याख्याक लेल विभिन्न अतीतक पूरा उपाख्यान खुलैत अछि। ई कथानक-भीतर-कथानकक विधा मौखिक लोककथाक स्मृतिविन्यास सुदृढ़ करैत अछि। एक घटना बुझलापछाँ यात्रीसभ आगाँ बढ़ैत छथि, जखन दोसर दृश्य फेर प्रश्न बनि ठाढ़ होइत अछि।

बालकक प्रश्नाधिकार आ ब्राह्मणक ज्ञानाधिकार

बच्चा प्रश्न करैत अछि, आ ज्ञानधारी ब्राह्मण उत्तर दैत छथि। एहि पद्धतिमे शिष्यक सक्रिय भूमिका प्रारम्भिक सम्पादकीय महत्त्व अछि; गुरु प्रश्न टारि नहि सकैत छथि, कारण यात्रा बच्चाक पूर्वशर्तपर आरम्भ भेल छल। लेकिन ब्राह्मण द्वारा सुनाओल कथा ही अन्तिम व्याख्या बनि जाइत अछि। बच्चा उत्तरक नैतिक विरोधाभासपर पुनः प्रश्न

नहि करैत। एहि सीमा मे शिक्षात्मक पद्धति आधा खुलल रहैत अछि—कारणक ज्ञान भेटैत अछि, मुदा निर्णयक आलोचना कम। आधुनिक बालसाहित्यक दृष्टिसँ पाठक स्वयं एहि अनुत्तरित प्रश्नसभक पुनर्विचार कऽ सकैत अछि।

अपमान आ देहगत परिणाम

पहिल कथामे निर्धन भऽ गेल राजकुमारकेँ पहिचान नहि देब आ बासी भोजन खुवएब अपमानक क्रिया अछि। राजकुमार पछाँ सम्पन्न भऽ पत्नीकेँ अलग राखि अपमानक स्मृति जीवित रखैत अछि; पत्नी देह-हानिक दुखान्त विकल्प चुनैत छथि। दोसर कथामे मनुष्यक चेतनासँ पशुरूपक सम्पर्कक परिणाम सामूहिक लात मारब अछि। तेसरमे वृद्धा राजकीय फाँसीक लक्ष्य बनैत छथि। तीनू दृश्य सामाजिक प्रतिष्ठा बदलला पर देहक असुरक्षाक अलग रूप छथि। कृति अपराधक परिणाम बुझएबाक प्रयत्न करैत अछि, मुदा बारम्बार अपमान आ दण्डकेँ करुणामूलक वैकल्पिक समाधानसँ अलग नहि करि पबैत।

मित्रता, देह-हरण आ पहचान

दोसर रहस्यक राजकुमार–ठाकुर मित्रता ज्ञानक साझा साधन ‘चोला-मन्त्र’ सँ टूटैत अछि। ठाकुरक बेटा राजकुमारक देह अपना अधिकारमे लैत अछि। पहचान देहमे नहि, स्मृति, व्यवहार आ नैतिक सम्बन्धमे निहित अछि—ई रूपक लालपरीक विवेकसँ व्यक्त होइत अछि। परी नकली पति पहिचानैत छथि आ तर्कपूर्ण तरकीबसँ असल व्यक्तिकेँ पुनः स्थापित करैत छथि। तेसर रहस्यक मन्त्रिपुत्र राजकुमारक रक्षा करैतहुँ आरोपित होइत अछि। दू मित्रता-प्रसंगमे विश्वासक उलटा व्यवहार कथा केँ तुलनात्मक गहिराइ

दैत अछि : एक मित्र विश्वासघात करैत अछि, दोसर उपकार करैतहुँ अपमान पबैत अछि।

स्त्रीक निर्णय आ सामाजिक नियन्त्रण

पहिल कथाक स्त्री अपमानक बाद जीवित सहयोग नहि पबैत, दुखान्तमे पहुँचैत छथि; लालपरी धोखाक पहचान आ बचावक योजना बनबैत छथि; नागवंशी कन्या अपहरणक शिकार बनैत छथि, मुदा संकटसँ छुटबाक प्रक्रियामे सहयोग दैत छथि; वृद्धा छलपूर्वक अपहरण करैत छथि। एके कृतिमे स्त्री-पात्र केवल एक मूल्यक प्रतीक नहि। हुनकर क्रियाशीलता, विवशता आ हिंसक चुनाव अलग-अलग अवस्थामे अछि। समीक्षाक मुख्य चुनौती ई जे कथा द्वारा देल ‘दोष’ अथवा ‘पुण्य’क पूर्वनिर्णय मानि कोनो स्त्रीक स्वतन्त्र सन्दर्भ नष्ट नहि कएल जाए।

राजकीय दण्डक आलोचना

तेसर रहस्यक वृद्धाक फाँसी आ मन्त्रिपुत्रकेँ फाँसीक धमकी राजकीय अधिकारक स्वेच्छाचारिता देखबैत अछि। युवकक निजी आकर्षण राजकीय इनामक कारण दोसर व्यक्तिक अपहरण सम्भव बनैत अछि। दोषपूर्ण क्रियाक जाँचक बदला प्राणदण्ड घोषित होइत अछि। अन्तमे राजकुमार क्षमा माँगैत छथि, मुदा दण्डव्यवस्थाक असन्तुलनक व्यापक सुधार प्रदर्शित नहि। आख्यानक सुखान्त व्यक्तिगत सम्बन्धक स्तरपर अछि, संस्थागत न्याय स्थापित भेलाक प्रमाण नहि।

अलौकिकता आ बालपाठकक विवेक

बीध-विधाता, मृत सुग्गामे चेतनाक प्रवेश, जादुई मणि, नागवंशी विवाह, पाथर बनैत शरीर आ नवजातक पुनर्जीवन लोककथाक अद्भुत विधान छथि। एहि प्रतीकक साहित्यिक अर्थ सम्पूर्ण कथा कैँ जादूयी सन्दर्भ दैत अछि; कोनो जीव-विज्ञान अथवा उपचार-पद्धतिक साक्ष्य नहि। विशिष्ट रूपसँ बालकपर हिंसा कऽ पुनर्जीवन पएबाक कथा कैँ व्यवहारिक अनुकरणसँ दूर रखब आवश्यक अछि। व्यक्तिक जीवन आ शरीरक सुरक्षा सर्वप्रथम मानवीय कर्तव्य अछि।

पाठगत गुत्थी आ सम्पादकीय सम्भावना

कथाक मुख्य रूपरेखा तीन दृश्य आ हुनकर उत्तर पर अछि, मुदा प्रत्येक उत्तर लम्बा उपाख्यानमे बदलैत अछि। तेसर कथामे अनेक राजघराना, नागवंशी कन्या, मनोरोगजकाँ अवस्था, वृद्धा, मन्त्रिपुत्र, पचीस संकट आ पाथर-रूपक घटनासँ कथानक अधिक घना भेल अछि। स्रोत पचीस संकटक समस्त पृथक सूची नहि दैत, अतः तकर कल्पित विवरण जोड़ब उचित नहि। एकर संरचनात्मक समीक्षामे दृश्य-फ्रेम, अन्तर्कथाक प्रवेश, पात्रसम्बन्ध आ कथन-समाप्तिक सीमाक चिह्नित करब सर्वाधिक उपयोगी अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा’ तीन प्रहेलिकाक उत्तरक बहन्ना मनुष्यक अपमान, विश्वासघात, न्याय, स्वत्व आ मित्रताक बहुस्तरीय अध्ययनक अवसर दैत अछि। कृतिक महत्त्व जिज्ञासापूर्ण बाल-प्रश्न, मौखिक लोककथाक अन्तर्कथात्मक कौशल,

लालपरीक स्वतन्त्र विवेक आ अन्याय सहनिहार मित्रक अन्तिम आत्मसम्मानमे अछि। एकर सीमासभमे हिंसक दण्डक महिमा, स्त्रीक मृत्युक दुखान्त समाधान, सामूहिक पशुहिंसा आ नवजातक प्राणहानिक अलौकिक औचित्य मुख्य छथि। एहि विरोधाभासक सम्पूर्ण अवलोकनसँ कथा नीतिकथाक एकरेखीय उपदेशसँ बाहर निकलि जटिल मानवीय सम्बन्धक साहित्यिक पाठ बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा : रस्तेक तीन रहस्य आ एकटा शर्त। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क २३; PDF पृष्ठ १२६५–१३०७।

कृति २५ : डाकू रौहिणेय

उपक्रम : मगधक आतंक

राजसत्ता, जनसमर्थन आ चतुर अपराधीक नैतिक द्वन्द्व

मूल उपक्रम मगधमे डाकू रौहिणेयक आतंक आ राजकीय असमर्थता प्रस्तुत करैत अछि। संगहि डाकूक गरीबक सहायता करबाक प्रवृत्ति ओकर जनसमर्थनक कारण कहैत अछि। लोकनायकत्वक ई मिललजुलल स्वर कथा कैं असामान्य बनबैत अछि : एके व्यक्ति धनिक कैं लूटैत अछि, पर अपन लाभक किछु अंश गरीबमे बाँटैत अछि। ई सामाजिक सहानुभूतिक प्रतिमा अपराधक प्रश्न स्वयं मेटबैत नहि।

उपक्रम कथा कैं अन्तिम हृदय-परिवर्तनक दिशासँ पढ़एबाक प्रस्ताव करैत अछि। श्रेय केवल पुलिसक बल अथवा मन्त्रीक कौशलकैं नहि, महावीरक एक वचन सँ उपजल विवेककैं भेटैत अछि। तइयो ई वचन पहिने डाकू कैं छद्म स्वर्गसँ बचाएत, तकर बाद नैतिक परिवर्तनक प्रेरणा बनत—आत्मरक्षा आ आत्मसुधार एके समय पर समान घटना नहि। एहि अन्तरक पहिचान कृतिक मूल मनोवैज्ञानिक संरचना बुझबाक कुंजी अछि।

अध्याय १ : पिताक अन्तिम आदेश

अपराधक उत्तराधिकार आ नैतिक शिक्षासँ भय

रौहिणेयक पिता लोहखुर मृत्युशय्यापर बेटाकेँ आदेश दैत अछि जे महावीरक प्रवचन कहियो नहि सुनिह। पिता अपन डकैतीक जीवनप्रणाली पर नब विचारक सम्भावनासँ भयभीत अछि। तैं एहि वचनक निषेध एक तरहक ज्ञान-नियन्त्रण अछि—जे बात सुनलापर पेशाक नैतिकता प्रश्नाधीन भऽ सकैत, ओहि बातसँ दूर रहबाक आदेश।

रौहिणेय पुत्रधर्म बुझि आदेश मानैत अछि। मुदा पितृभक्ति आ नैतिक स्वतन्त्रता समान नहि। पिता सँ प्राप्त व्यवसाय जे दोसरक संपत्ति आ स्वतन्त्रता हानि पहुँचबैत, ओकर विवेकहीन अनुसरण योग्य नहि। ई तनाव कथा भीतर पहिने सँ रोपल अछि।

रौहिणेय केवल धनिक केँ लूटैत आ गरीब केँ धन बाँटैत अछि। एही कारण गामक सहयोग भेटैत अछि। एहि लोकसमर्थनक मनोवैज्ञानिक अर्थ अछि, मुदा नीतिशास्त्रक दृष्टिसँ परोपकारी वितरण चोरी अथवा अपहरणक चोट केँ मेटबैत नहि। श्रमसँ जुटाओल संपत्ति, नागरिक सुरक्षा आ न्यायिक प्रक्रिया स्वायत्त मूल्य छथि।

अध्याय २ : मदनवतीक अपहरण

‘निष्ठुरता नहि’क कथावाचकीय दावाक परीक्षण

रौहिणेय पाटलिपुत्रक धनी सेठक पुतोहु मदनवती केँ वाटिकासँ अपहरण करैत अछि। ओकर संगी पतिकेँ गलत जानकारी दऽ समय गँवबैत अछि। कथानक एहि घटनेक

अपराधीक चतुराइ आ साहसक प्रदर्शन कहैत अछि। मुदा अपहृत स्त्रीक भय, स्वतंत्रता आ परिणतिक विवरण अत्यल्प अछि।

मूल अध्यायमे कथावाचक कहैत अछि जे एहि साहसक पाछाँ क्रूरता नहि छल। कथात्मक उत्साह आ घटनाक मानवीय अर्थ एतय असहमत छथि : बिनु सहमति स्त्री कैं उठाएब स्वयं गंभीर हानि अछि। अपराधीक बलक प्रदर्शन द्वारा पीड़ित व्यक्तिक आवाज दबि जाएब लोकवीरक महिमागानक स्पष्ट सीमा अछि।

साहित्यिक आलोचनामे मदनवती कैं अपराधीक चातुर्य मापबाक वस्तु नहि मानल जाए। जकर जीवनपर असर पड़ल, तकर स्वतन्त्र दृष्टि अनुपस्थित रहबाक तथ्य कथाक सामाजिक अपूर्णता अछि। एहि अभावक कारण रौहिणेयक कथावाचकीय ‘दयालु डाकू’ छवि आलोचनासँ परे नहि।

अध्याय ३ : नकली नर्त्तकीक चालि

उत्सवक सार्वजनिक व्यवस्था आ सामाजिक भयक निर्माण

सुभद्र सेठक पुत्रक विवाह-सम्मेलने रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष धरैत अछि, संगी नर्त्तक बनैत अछि। नाचक बीच कपड़ाक साँप छोड़ि भीड़मे भगदड़ उत्पन्न कएल जाइत अछि, आ गहना पहिरने वर उठाओल जाइत अछि। एहि दृश्य मे रंगमंचीय भेष, झूठ खतरा आ सम्मिलित भीड़क प्रतिक्रियाक उपयोग अपराध लेल कएल गेल अछि।

कथावाचक एकरा अत्यधिक चतुराइ कहैत अछि, मुदा बियाहक सामाजिक समारोहमे भय उत्पन्न करब, अनावश्यक भगदड़ कराएब आ नववरक अपहरण करब एक गंभीर हिंसक जोखिम अछि। छलक तकनीकक साहित्यिक दक्षता आ नागरिक जीवन पर असर अलग जाँचबाक अछि।

नर्त्तकक मनोरंजन अपराधक आवरण बनैत अछि। सामाजिक दृष्टिसँ कला आ भयक जालक विरोधाभास कथा कैं रोमांच देइत अछि। मुदा कृति पीड़ित वर आ उपस्थित जनसमूहक पीड़ा अलग विकसित नहि करैत, जेकर परिणाम अपराधीक रोचक व्यक्तित्व एकतरफा प्रधान बनैत अछि।

अध्याय ४ : अभयकुमारक चुनौती

राजकीय प्रतिष्ठाक दबाव आ फाँसीक धमकी

रौहिणेय पकड़ि नहि पबएबला कोतवाल असमर्थता स्वीकारैत अछि। मन्त्री अभयकुमार पाँच दिनमे डाकू पकड़बाक जिम्मा लैत छथि। राजा असफलतापर अभयकुमारक गरदनि कटबयबाक धमकी दैत छथि। विधि-व्यवस्थाक समस्या राज्यक क्रोध आ प्रतिष्ठामे बदलि जाइत अछि।

एहि धमकीक अनुपात अनुचित अछि। मंत्री पकड़ नहि सकलाह तँ अपन प्राण किएक गमाओथि? अपराधक दण्ड अपराधीपर विचारणीय अछि, जाँच करनिहार अधिकारीपर निर्दिष्ट समयसीमाक असफलताक रूपमे प्राणदण्ड नहि। राज्यद्वारा भयक प्रयोग अपराधीद्वारा भय उत्पन्न करबाक समानान्तर आलोचनात्मक समस्या बनैत अछि।

अभयकुमार जासूस लगबैत छथि आ सूचना संकलित करैत छथि। एहि पद्धतिमे आवेगक बदला रणनीति अछि। हुनकर कौशलक वास्तविक परीक्षा अपराधीक असल पहचान आ प्रमाण स्थापित करब अछि, न कि राजाक हिंसक आदेश पूरा करबाक तात्कालिक दौड़ मात्र।

अध्याय ५ : राजमहलक दुस्साहस

अपराधक अहंकार आ अनायास ज्ञानक प्रवेश

राजकीय गिरफ्तारीक चुनौती जनित खतरा रहितो रौहिणेय राजमहल लूटबाक विचार करैत अछि। एहि चयनमे अपराधीक साहसक संग नियंत्रणहीन घमण्ड अछि। सुरक्षा अधिक होइतहुँ चुनौती चुनब व्यावहारिक लाभ सँ बेसी अपन अजेय पहिचान प्रमाणित करबाक प्रयास बुझाइत अछि।

मार्गमे महावीरक प्रवचन चलैत अछि। पिता क आदेशक स्मरण कऽ ओ कान बन्द करैत अछि, मुदा पएरमे काँट गरि जाइत अछि। पीड़ा कारण क्षणभरि कान खोलबाक बाध्यता ज्ञानक प्रवेशक आकस्मिक द्वार खोलैत अछि। लोककथाक कथानकक सूक्ष्म निर्माण एतय अछि : अत्यन्त साधारण काँट भावी आत्मपरिवर्तनक केन्द्रीय कारण बनैत अछि।

काँट जेना बाहरी देहक कष्ट, महावीरक वाणी भीतरक विवेकक सम्भावना बनैत अछि। पिताक निषेधक पूर्ण अभेद्यता एक छोट प्राकृतिक घटनासँ टूटैत अछि। एहि प्रतीकक प्रभाव कृतिक पछिला निर्णायक मोड़मे प्रकट होयत।

अध्याय ६ : अनसुनल वचन

इन्द्रियानुभव आ भ्रम-परीक्षणक बौद्धिक बीज

महावीरक प्रवचनक एक वाक्य रौहिणेयक कानमे पड़ैत अछि : देवताक शरीरपर पसीना नहि, माला नहि मौलाए, पएर धरतीपर नहि पड़य आ पिपनी नहि खसय। मूल कथा ई चारि लक्षण लोकधार्मिक ज्ञानक रूपमे दैत अछि। इन्द्रिय-जाँचसँ प्राप्त ई विशेषता भौतिक जगतमे देवताक वैज्ञानिक विवरण नहि, अलौकिक कल्पनाक अन्तर्गत कसौटी अछि।

रौहिणेय काँट निकालि कान फेर बन्द कऽ लैत अछि, मुदा सुन्नल शब्द स्मृतिमे बसि जाइत अछि। एहि मनोवैज्ञानिक संरचनामे श्रोता ज्ञान ग्रहण करए लेल सचेत रूपसँ तैयार नहि, तथापि सुनल तथ्य याद रहैत अछि। आत्मपरिवर्तनक मूल प्रेरक घटना अनपेक्षित शिक्षण अछि—ज्ञानक प्रभाव सुनबाक इच्छासँ हरदम निर्भर नहि।

राजमहल लग रौहिणेय कैं पहरेदार सुतल देखाइत छथि, मुदा ई अभयकुमारक योजनाबद्ध भ्रम अछि। ई दृश्य अगिला ‘नकली स्वर्ग’क लघु पूर्वरूप अछि : छल कैं चातुर्यसँ चिन्हबाक आवश्यकता अब अपराधीक अपना सम्मुख ठाढ़ होइत अछि।

अध्याय ७ : गिरफ्तारी आ छलक भण्डाफोड़

बलप्रयोग पर अंकुश आ प्रमाणाधारित न्याय

रौहिणेय राजमहल लग पकड़बाक प्रयाससँ भागि काली मंदिरमे शरण लैत अछि, मुदा सैनिक घेराबन्दी द्वारा अन्ततः पकड़ल जाइत अछि। कथा राज्यक रणनीतिक विजयसँ तुरन्त राजाक प्राणदण्डक आदेश दिस मुड़ैत अछि। एही क्षण मन्त्री अभयकुमार हस्तक्षेप करैत छथि : चोरीक माल आ पहिचानक साक्ष्यबिना फाँसी उचित नहि।

एहि आपत्तिमे आधुनिक विधिशास्त्रसँ तुलना योग्य एक मूल सिद्धान्त अछि—दोष प्रमाणित कएने बिना कठोर दण्ड नहि। राजा जे पहिने मन्त्रिकेँ असफलतापर मारबाक धमकी देने छलाह, ओ एखन संदिग्ध अपराधीकेँ प्रक्रिया छोड़ि दण्डित करए चाहैत छथि। मन्त्रीक हस्तक्षेप राजकीय मनमानीक भीतर विवेकक स्थान बनबैत अछि।

रौहिणेय ‘दुर्गा किसान’क नकली परिचय दैत अछि। ई आत्मरक्षाक कथन नहि केवल, पूर्वनियोजित पहचान-छल सेहो अछि। राज्यक न्यायकर्ता सँ छिपबाक ओकर बुद्धिक प्रयोग आरम्भक समाज-पक्षधर दावाकेँ जटिल बनबैत अछि। गरीबीक सहायता करनिहार अपराधी निर्दोष किसानक पहिचान हरण करि सकैत अछि।

अध्याय ८ : चतुर भेष

जनसहयोगक दोधारी शक्ति आ झूठक सार्वजनिक साक्षी

राजा संबंधित गाममे सत्यापन लेल लोक पठबैत छथि। गामक लोक रौहिणेयक पहिल व्यवस्था अनुसार ओकर नकली पहिचानक समर्थन करैत अछि। एहि दृश्य मे लोकसमर्थन सत्यक सार्वभौम प्रमाण नहि। जनहितक काजक कारण स्थानीय सहयोग भेटल, मुदा जे सहयोग राज्यक तथ्य-जाँच कैं भ्रमित करैत अछि, ओ नागरिक न्यायकैं बाधित सेहो करैत अछि।

अभयकुमार अन्य उपाय सोचैत छथि। ओ रौहिणेय कैं सुख-सुविधापूर्ण महलमे रखबैत छथि, फेर मदिरा पिआ ओकरे अचेतन अवस्थाक लाभ उठबैत छथि। अपराधजाँचक नामपर नशा द्वारा नियन्त्रण आजक नैतिक मानकपर गम्भीर अस्वीकार्य पद्धति अछि। मंत्रीक चातुर्य साहित्यिक रूपसँ रोचक होइतहुँ गवाही प्राप्तिक वैधता, स्वतन्त्र सहमति आ अधिकारक प्रश्न उठबैत अछि।

पूर्वक राजा बिनु प्रमाण प्राणदण्ड चाहैत छथि, मन्त्री बिनु स्पष्ट प्रमाण गोपनीय मनोवैज्ञानिक जाल रचैत छथि। कथा एहि दूनू संकटकैं साथ रखैत अछि : शासकीय हड़बड़ी आ जाँचक अत्यधिक छल। न्याय केवल दोषी पकड़बाक इच्छा नहि, प्रमाण जुटएबाक विधिक न्यायोचित रूप सेहो होइत अछि।

अध्याय ९ : नकली स्वर्गलोक

नाट्य-भ्रम, मदिरा आ जबरन स्वीकारोक्तिक प्रयत्न

रौहिणेय होशमे अबैत अछि तँ गन्धर्व–अप्सराक अभिनय, नृत्य आ राजमहलक सजावट सँ घेरल स्वयंकेँ स्वर्गमे मानैत अछि। ओकरा कहाल जाइत अछि जे ओ मरि कऽ देवता बनल अछि। दृश्य अत्यन्त योजनाबद्ध नाटक अछि, जाहिमे कलाकार, पोशाक, सजावट आ सामूहिक संवाद प्रत्यक्ष भ्रम उत्पन्न करैत छथि।

छद्म इन्द्रदूत स्वर्गमे प्रवेशसँ पहिने पृथ्वीक नीक–अधलाह कर्मक स्वीकार माँगैत अछि। ई प्रश्न असल अपराधक बयान प्राप्त करबाक साधन अछि। धर्मक दण्ड–फल सम्बन्धक कल्पना राज्य द्वारा गोपनीय अनुसन्धानक रणनीति बनि जाइत अछि। कथानक एतय मनोरंजनक नाट्यरूप केँ न्यायिक छलसँ मिलबैत अछि।

राजसत्ताक एहि तरकीबक साहित्यिक रचना निश्चय चतुर अछि, मुदा जबरन नशाक बाद नाटक द्वारा बयान लेबाक वैधता प्रश्नाधीन रहैत अछि। भले अपराधी दोषी हो, साक्ष्य संग्रहक अन्यायपूर्ण उपाय दोषसिद्धिक आदर्श नहि। एहि सीमा कृतिक अनुसन्धानपरक मूल्यकेँ अधिक गम्भीर बनबैत अछि।

अध्याय १० : सत्यक क्षण

एक वाक्यक स्मृति सँ प्रत्यक्ष निरीक्षण धरि

रौहिणेय स्वर्गक दावा मानि पाप स्वीकार करबाक विचार करैत अछि, मुदा अचानक महावीरक सुनल वचन याद अबैत अछि। ओ उपस्थित कलाकारसभ केँ देखैत अछि :

पसीना, मौलाएल माला, धरती छूबैत पएर आ पिपनीक गति। कथाक अलौकिक देवता-लक्षणक कसौटी सँ ए सभ दृश्य मेल नहि खाइत। तैं ओ नाटकक भेद पकड़ैत अछि।

एहि ठाम ज्ञान केवल श्रवण नहि, तथ्यक निरीक्षण आ अनुमानक संयोग अछि। पूर्व सुनल विधान एक सामान्य नियम बनैत अछि; प्रत्यक्ष दृश्य ओहि नियमक अपेक्षित गुणसँ अलग अछि; फलतः ‘ई स्वर्ग नहि’ निष्कर्ष निकलैत अछि। नव्य न्यायसँ निकट तुलनात्मक पठनमे ‘उपलभ्य लक्षण’ आ ‘विरोधी प्रत्यक्ष’क अनुबन्ध देखल जा सकैत अछि, यद्यपि कथाकार औपचारिक अनुमानक प्रतिज्ञा–हेतु–दृष्टान्त प्रस्तुत नहि करैत। नियमक अलौकिक सत्य अलग; कथाक भीतर निरीक्षणक विधि अधिक महत्त्वपूर्ण अछि।

रौहिणेय चतुराइ सँ अपन पुण्यक गुणगान करैत अछि। ओहि क्षण ओकर नैतिक परिवर्तन पूर्ण नहि भेल अछि—ओ अभयकुमारक जालसँ बचबाक लेल झूठक सहारा लैत अछि। महावीरक वचन पहिने बुद्धिगम्य रक्षा दैत अछि; आत्मसंयमक निर्णय पछिला अध्यायमे अबैत अछि। एहि क्रमभेदक ध्यानसँ कथानकक मनोविज्ञान सुस्पष्ट रहैत अछि।

अध्याय ११ : अभयदान आ प्रायश्चित्त

दण्ड-मुक्ति, सत्योद्घाटन आ वैराग्यक क्रम

अभयकुमार राजा सँ अभयदानक प्रस्ताव करैत छथि। दण्ड-मुक्तिक आश्वासनपछाँ रौहिणेय जंगलक गुफाक पता बतबैत अछि, जतय लूटल सम्पत्ति आ अपहृत व्यक्ति रखल छथि। एहि स्वीकारोक्तिमे पहिल बेर डाकू दोसरो लोकक पीड़ाक वास्तविकता सार्वजनिक करबाक काज करैत अछि। मुदा जे अपहृत लोक छथि, हुनकर मुक्ति, उपचार, पुनर्वास आ हानि भरपाइक विस्तृत स्थिति मूल पाठ नहि देखबैत।

राजा रौहिणेय कैँ संपत्ति राखबाक अनुमति दैत छथि। कथावाचक एहि उदारताक प्रशंसा करैत छथि, मुदा लूटल सामान वास्तवमे मालिकक अधिकार छल कि नहि, ई प्रश्न न्यायक दृष्टिसँ निर्णायक अछि। डाकू जे लूटल धन राखि सकैत अछि, से माफीक नामपर पीड़ितक अधिकार हरणक सम्भावना बनैत अछि। नायक ओ धन लेब अस्वीकार करैत अछि, मुदा राजकीय निर्णयक नैतिक सीमा ओहिसँ मेटाइत नहि।

रौहिणेय कहल वचनक पूर्ण शिक्षण पएबाक लेल महावीरक दीक्षा लेबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि। एहि चुनावमे पिताक अन्तिम निषेधक विपरीत स्वयं विवेकसँ नब जीवन-पथ अपनाओल जाइत अछि। एहि रूपान्तरणक साहित्यिक बल धन अस्वीकारब मात्र नहि, अपन पुरान काजक गलत दिशा बुझि शिक्षा स्वीकार करब अछि। चतुर अपराधीसँ सजग शिष्य धरि परिवर्तन कथाक अन्तिम उपलब्धि अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

दू बुद्धिक टकराव : अपराध बनाम कानून

‘डाकू रौहिणेय’क पहिल भाग अपराधीक चातुर्यक क्रमिक प्रदर्शन अछि : धनिकसँ लूट, ग्रामीण सहयोग, मदनवतीक अपहरण, नर्त्तकीक भेष आ वरक अपहरण। पछिला भाग राज्यक मन्त्री अभयकुमार द्वारा अपराधीक पहिचानक परीक्षण अछि। कथाकार दूनू पक्षकेँ समान रूपसँ चालाक देखबैत छथि, मुदा हुनकर नैतिक लक्ष्य समान नहि। डाकूक बुद्धि निजी प्रभुत्व आ लूट लेल, मन्त्रिक बुद्धि सार्वजनिक सुरक्षाक लेल प्रयुक्त होइत अछि; तइयो मन्त्रीक नशा पिआ छलपूर्वक स्वीकारोक्ति लेबाक उपाय स्वयं कानूनी–नैतिक परीक्षासँ मुक्त नहि।

लोकसमर्थन आ वास्तविक लोकहितक भेद

रौहिणेय गरीब केँ लूटल धन बाँटैत अछि, तेँ गामक लोक ओकर पक्षमे झूठ बयान दैत छथि। एहि चित्रणमे धनिक–गरीब संसाधनक असमानता आ राज्यप्रति असन्तोषक संकेत अछि। मुदा लूटल सम्पत्ति ककरा सँ लेल गेल, ओकर वास्तविक पीड़ा की, आ गरीब लोक किएक अपराधी पर निर्भर भेल—स्रोत विस्तार नहि दैत। जनसमर्थन सत्ता-सम्बन्धक साक्ष्य अछि, अपराधक स्वतः नैतिक वैधता नहि।

पीड़ितक दबायल स्वर

मदनवती आ वर दुनू अपहरणक शिकार छथि। कथा रौहिणेयक चातुर्यपर आश्चर्य व्यक्त करैत अछि, मुदा अपहृत व्यक्तिक इच्छा, भय, मुक्ति आ सुरक्षित वापसीक भावनात्मक विस्तार कम अछि। आखिरी अध्यायमे गुफामे अपहृत लोक भेटबाक उल्लेख अछि; ओकर स्वतंत्र जीवनक पुनर्स्थापनक ब्योरा नहि। नायकक प्रायश्चित्त पूर्ण मानए सँ पहिने पीड़ितक न्यायक प्रसंग अलग देखब आवश्यक अछि।

एक वाक्य सँ निरीक्षणात्मक विवेक

काँट चुभलाक क्षण महावीरक चारि देव-लक्षण रौहिणेय सुनैत अछि। स्वर्गक नाटकीय भ्रममे ओ ठोस दृश्य सँ वचनक तुलना करैत अछि आ असंगति पहिचानैत अछि। ई ज्ञानक काव्यात्मक गति अत्यन्त प्रभावकारी अछि : पिताक निषेध ज्ञानकेँ बाहर राखबाक प्रयास करैत अछि, मुदा सुनल शब्द वास्तविक संकटक घड़ीमे बुद्धिक कसौटी बनि उपसैत अछि। कथा प्रत्यक्ष निरीक्षण आ पूर्वश्रुत नियमक तुलनासँ निष्कर्ष बनएबाक बौद्धिक आदर्श प्रस्तुत करैत अछि।

धार्मिक शिक्षाक प्रभावक क्रमिकता

स्वर्ग-छल पहिचानिते रौहिणेय सन्त नहि भऽ जाइत। ओ तत्काल अपना अपराध नुकेबाक लेल पुण्य-गाथा गढ़ैत अछि। नैतिक परिवर्तन ओहि बाद होइत अछि, जखन डाकू सोचैत अछि जे महावीरक एक वचन जेना रक्षा कएलक, सम्पूर्ण शिक्षाक प्रभाव आरो व्यापक भऽ सकैत अछि। एहि क्रममे ज्ञानक पहिल फल आत्मरक्षा, दोसर फल अपराधी जीवनपर पुनर्विचार आ तेसर फल शिक्षाग्रहणक स्वेच्छिक निर्णय अछि। ई अन्तर रचनाक मनोवैज्ञानिक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

राजसत्ता, साक्ष्य आ अभयदानक विरोधाभास

राजा पकड़ल व्यक्तिकेँ बिना पर्याप्त साक्ष्य फाँसी दए चाहैत छथि; अभयकुमार प्रतिरोध करैत छथि। मुदा अभयकुमार नकली स्वर्गद्वारा नशाक अवस्थाक लाभ उठबैत

छथि। अन्ततः अभयदान देल जाइत अछि। एहि घटनाक शृंखलामे ‘राजकीय न्याय’ एकरेखीय आदर्श नहि : कठोरता, प्रमाणक मानक, गुप्त छल आ क्षमा संग-संग उपस्थित छथि। आधुनिक कानूनक दृष्टिमे पीड़ितक हक, वस्तु-बरामदगी आ स्वेच्छिक स्वीकारोक्तिक प्रश्नसमूह अलग-अलग जाँचनीय छथि।

जैन परम्पराक तुलनात्मक पाठ

हेमचन्द्रक महावीरचरित्रमे लोहखुर, रौहिणेय, महावीरक प्रवचन, काँट, देवताक लक्षण, अभयकुमारक राजकीय उपाय आ अन्तमे महावीर लग आत्मस्वीकृतिक कथा अछि। ओहि आधारपर वर्तमान ग्राफिक पुनर्लेखनक मुख्य हृदय-परिवर्तन सूत्रक परम्परागत पाठ-समर्थन भेटैत अछि। मुदा वर्तमान संकलनक मदनवतीक अपहरण, विवाह–समारोहक वर-अपहरण आ राजकीय अभयदानक कतिपय विस्तार स्वतंत्र रूपसँ एही मूल जैन संस्करणमे समान शब्द-क्रममे नहि भेटैत। अतः जैन कथा-परम्पराक साझा केन्द्र आ ग्राफिक पुस्तकक विशिष्ट कथन-निर्माणक भेद राखब आवश्यक। सर्वप्रथम ऐतिहासिक सुधार सेहो जरूरी : बिम्बिसार अशोकक पिता नहि छलाह; बिन्दुसार पिता छलाह।

संरचना, रस आ दृश्य–नाट्य

एगारह अध्यायक बाइस चित्र-संकेत प्रहरीक जाल, छद्मवेश, विवाह-समारोह, प्रवचनक वाटिका, काँटक चोट, गिरफ्तारी, राजकीय पूछताछ, नर्तक–गन्धर्वक नकली सभा आ अन्तिम दीक्षाक आकांक्षाकेँ दृश्यगत क्रम दैत अछि। आरम्भमे अपराधक रोमांच, बीचमे भय आ कौतूहल, नकली स्वर्गमे अद्भुत-हास्य, अन्तमे शान्तरसक सम्भावना अछि।

कृतिक सबसे सघन कला नकली स्वर्गक दृश्य अछि, जतय अभिनयक माध्यमसँ अपराधक स्वीकारोक्ति चाहल जाइत अछि आ ज्ञानक माध्यमसँ अभिनयक भेद खुलैत अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘डाकू रौहिणेय’क सर्वाधिक उल्लेखनीय तत्त्व ई नहि जे एक डाकू बड़ चतुर छल, बल्कि ई जे अपन चतुराइकेँ अन्ततः नव नीतिज्ञानक अधीन करबाक निर्णय लेलक। कथाक दार्शनिक केन्द्र पिताक अन्ध आज्ञापालनसँ ज्ञानक स्वतन्त्र परीक्षण आ वैराग्यक ओर जायब अछि। मुदा अपराधीक लोकनायक छवि मदनवती आ वरक अपहरणक पीड़ा नुकेबैत अछि, मन्त्रिक युक्ति साक्ष्य-संग्रहक नैतिक सीमा पार करैत अछि, राजा लूटल सम्पत्तिक अधिकारक प्रश्न अस्पष्ट रखैत छथि आ उपक्रम इतिहासक एक प्रमाणित कालक्रमक त्रुटि दोहरबैत अछि। एहि सभकेँ स्पष्ट करबाक बादे कृतिक वास्तविक उपलब्धि—श्रवण, निरीक्षण आ आत्मसुधारक क्रम—पूर्ण महत्त्वसँ उभरैत अछि।

ग्रन्थाधार आ तुलनात्मक मुद्रित ग्रन्थ

गजेन्द्र ठाकुर। डाकू रौहिणेय : मगधक चतुर डाकूक हृदय-परिवर्तनक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क २४; PDF पृष्ठ १३०८–१३४४।

हेमचन्द्र। त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र। महावीरचरित्र, रौहिणेयक उपाख्यान।

Hemacandra. Triṣaṣṭiśalākāpuruṣacaritra. Translated by Helen M. Johnson. Gaekwad’s Oriental Series, 1931 onward; Mahāvīra-caritra, Rauhiṇeya episode.

JAINA Education Committee. Jain Story Book: Level 2. ‘Abhaykumar and Thief Rohineya’.

कृति २६ : डोकी डोका

उपक्रम : दुनूगोटेक प्रेम

अतिशयोक्त प्रेम-विधान आ ईर्ष्याक कथात्मक प्रवेश

उपक्रम डोका–डोकीक सम्बन्ध अतिशय त्वरित सहायता आ असीम अनुरागक रूपमे स्थापित करैत अछि। डोकी जे माँगैत अछि, डोका तुरन्त पूरा करबाक प्रयत्न करैत अछि। एहि गुणघोषणासँ प्रेमक विश्वासक आदर्श निर्मित होइत अछि। मुदा ‘सभ इच्छा तुरन्त पूरा करब’क कल्पना पारस्परिक सम्बन्धक मानवीय सीमासभ कैं औझर करैत अछि; स्वस्थ स्नेहक माप केवल निरन्तर आज्ञापालन नहि।

ईर्ष्यालु सियार एहि प्रेमक विरोधी बनैत अछि। वह बाहरक आक्रमण नहि करैत; डोकीक भीतर शंका रोपबाक युक्ति चुनैत अछि। एहि कारण संकट बाह्य शक्ति-प्रयोगसँ नहि, सम्बन्धमे सूचना आ विश्वासक टूटबसँ जन्मैत अछि। कथा एक संवेदनशील प्रश्न उठबैत अछि—प्रेमक निकटतम पक्षकारसभ जखन आपसमे स्पष्ट नहि बजैत, तखन बाहरी अफवाहक कतेक प्रभाव भऽ सकैत अछि?

अध्याय १ : अटूट प्रेम

तरेगणक अतिशयोक्ति आ प्रतिज्ञाक प्रश्न

डोकीक कथित इच्छापर डोका तरेगण धरि आनि देबाक तत्परता रखैत अछि—एहन अतिशयोक्त उदाहरणसँ गाथा प्रेमक अपरिमेयता संकेत करैत अछि। ई लोककथात्मक अलंकार अछि; शाब्दिक घटना नहि। प्रेम कैँ असम्भव काजो सम्भव बनायबला शक्ति मानब काव्यात्मक प्रभाव दैत अछि, मुदा साथीपर असीम इच्छा-पूर्तिक दबाव सेहो सोचनीय अछि।

सियार एक कनही सियारिनसँ मिलि डोका–डोकीक सम्बन्ध तोड़बाक योजना बनबैत अछि। एहि ठाम षड्यन्त्रकारक संख्या दू अछि, मुदा आगेक मुख्य भ्रम सियारक वचनसँ उपजैत अछि। सियारिनक स्वतंत्र भूमिका बादक मूल विवरणमे अल्प अछि। प्रारम्भिक आयोजनक एहि संक्षिप्ततामे लोककथाक पात्र अक्सर एक उद्देश्यक साधन बनि रहि जाइत अछि।

अध्याय २ : सियारक छल

निराधार आरोप आ विश्वासक संवादहीनता

सियार भोजन करैत डोका–डोकीकेँ अलग-अलग बजबैत अछि। पहिने डोकाकेँ दूर करैत, फेर डोकी कैँ कहैत अछि जे डोकाक मोन कोनो दोसरपर अछि। एहि आरोपक कोनो प्रमाण नहि। सियार तत्काल उत्तर देबाक बदला भागि जाइत अछि—शंका स्थापित करब ओकर पूरा उद्देश्य अछि।

डोकी स्पष्टीकरण चाहैत अछि, मुदा सूचना देनिहार गायब भऽ जाइत अछि। कथाक मनोवैज्ञानिक गति एतय विश्वसनीय अछि : सत्यापित तथ्यसँ नहि, पूरा नहि भेल बातचीतसँ बेचैनी बढ़ैत अछि। प्रेमक घनिष्ठताक बावजूद डोका सँ प्रत्यक्ष तथ्य-जाँचक अवसर कथा तत्काल नहि दैत। बाहरी वचनक असर जखन प्रेमी-द्वयक आपसी संवादक बदला लेइत अछि, तखन विश्वासक दरारि उत्पन्न होइत अछि।

सियारक दुष्टता आरोपक विषयमे मात्र नहि, आरोप दऽ भागि जाएबामे सेहो अछि। ओ अपना कथनक प्रमाण वा जवाबदेहीसँ बाँचि जाइत अछि। एही सूचना-असमानताक आधारपर अगिला संकट दाम्पत्यक भीतर पहुँचैत अछि।

अध्याय ३ : डोकाक अन्तर्धान

घरक संकट आ श्रापक व्याख्याक सीमा

शंका सँ व्याकुल डोकी घरमे कोलाहल करैत अछि। डोका सियारक योजना सँ अनजान रहैत अछि आ लकड़ी काटबाक सामान्य काज लेल बोन जाइत अछि, फेर नहि घुरैत। मूल पाठ नहि कहैत जे सियार स्वयं डोकाकेँ अपहरण कएलक अथवा कोन निश्चित भौतिक घटनासँ ओ हेरायल। एहि रिक्तता केँ कल्पित अपराध-वृत्तान्तसँ भरब अनुचित अछि।

भोरमे एक जोगी अबैत अछि आ कहैत अछि जे ई पूर्वजन्मक श्राप अछि : डोकी भरोसा त्यागतीह तँ डोका दूर होयत, मुदा सातम दिन भेटत। ई लोकगाथाक आध्यात्मिक व्याख्या अछि, कथामे स्वतंत्र सत्यापन नहि। डोकीक शंकाकेँ सम्पूर्ण दोष मानब सेहो

कठिन, कारण सियार जानबूझि भ्रम उत्पन्न कएने छल। दम्पतिक संवादहीनता आ छलक शिकार होएबाक अन्तर सम्हारब जरूरी अछि।

जोगीक घोषणा ‘सातम दिन’क संरचनात्मक समयसीमा तय करैत अछि। कथा आरम्भिक प्रेमक अनिश्चित संकट कैँ गनल जा सकनिहार आशामे बदलैत अछि। एहि वचनक नाटकीय प्रयोजन आगामी खोजयात्रा कैँ गति दियाओल अछि।

अध्याय ४ : खोजक आरम्भ

प्रतीक्षा आ सक्रिय यात्रा बीच नायिकाक चुनाव

जोगी सातम दिन भेटबाक कहला परो डोकी घरे बैसि नहि रहैत अछि। ओ डोकाकैँ ताकबाक लेल जंगलक बाट पकड़ैत अछि। एहि काजमे नायिकाक सक्रियता अछि—भविष्यवाणीक निष्क्रिय प्रतीक्षासँ अलग अपन कष्ट सँ समाधानक सम्भावना खोजब। ओकर यात्रा स्नेहक व्यक्तिगत प्रमाण बनैत अछि, मुदा निरन्तर विपन्न अवस्थामे विश्राम नहि लेबाक निर्णय शारीरिक थकानक जोखिमो बढ़बैत अछि।

बाटमे बगुला, दोसर सियार, बटवृक्ष आ हाथी रुकबाक निमन्त्रण दैत छथि। प्रत्येक एक रातिक विश्रामक विकल्प अछि। डोकी सभ प्रस्ताव अस्वीकार करैत अछि। एहि आवर्तित प्रसंगसँ मौखिक कथा कैँ गान–लय आ दर्शकक अपेक्षा भेटैत अछि। संगहि ‘प्रत्येक विश्राम प्रेमक विफलता’ मानबाक कठोर मनोदशाक संकेत सेहो अछि।

लोककथाक दृष्टिमे निरन्तर आगे बढ़ब दृढ़ता अछि; व्यवहारिक दृष्टिमे यात्रा दौरान भोजन, सुरक्षा आ आराम प्राणरक्षाक आवश्यक साधन छथि। एही द्वैध स्तरपर पाठक प्रेमक प्रतीकात्मक अर्थ आ अनुकरणीय जीवन-व्यवहारबीचक अन्तर बुझि सकैत अछि।

अध्याय ५ : मूसक खिस्सा

लम्ब कथा सुनबाक शर्त आ मौखिक संवादक टूटब

मूस डोकी कैँ महल धरि लऽ जाएब आ खिस्सा सुनएबाक प्रस्ताव दैत अछि। संग शर्त रखैत अछि जे डोकी बीच-बीचमे ‘हँ’ कहि सुनबाक प्रमाण देत। एहि संवादमे मौखिक कथाकार–श्रोताक सम्बन्धक सजीव प्रतिमा अछि : कथा सुनब निष्क्रिय नहि, बीच-बीच प्रत्युत्तर दऽ ध्यान प्रदर्शित करब अछि।

खिस्सा नमहर भेला पर डोकी ‘हँ’ कहब बिसरि जाइत अछि। मूस सेहो अपन कथा कतय छूटल से बिसरि जाइत अछि। एहि विडम्बनामे स्मृतिक सामाजिक आधार खुलैत अछि—कथक स्मृति केवल ओकर अपन नहि, श्रोताक सहमति–सूचक ध्वनि सेहो ओकर लय टिकबैत अछि। परन्तु डोकीक मौन लेल सम्पूर्ण दोष दएब उचित नहि; लम्ब मौखिक प्रस्तुति स्वयं स्मृति-भंगक शिकार भऽ सकैत अछि।

कथा टूटलापर दुनू यात्रा जारी रखैत छथि। ई परिणाम सन्तुलित अछि—छोट संवाद-विफलता सदा सम्बन्धक अन्त नहि। मूसक सहयोग बना रहब डोकीक पहिनुक सम्बन्धक संकटसँ भिन्न आश्वासन दैत अछि।

अध्याय ६ : सुरंगक यात्रा

अन्हार मार्ग, सहायता आ मूसक दुर्घटनात्मक मृत्यु

डोकी आ मूस दीवालमे भूर कऽ सुरंगमार्गमे प्रवेश करैत छथि। दू राति धरि अन्हारमे चलबाक बाद महल पहुँचैत छथि। सुरंगक लम्बाइ डोकीक मनोदशाक अनिश्चितता रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि : प्रेमीक ठाम अज्ञात अछि, मुदा साथी आ लक्ष्यक आशा यात्रा कैँ चलबैत अछि। मूस एतय केवल खिस्सा सुनबयवला नहि, बाट दिखबयवला सहयोगी अछि।

महलमे डोकी हलुआ बनएबाक तैयारी करैत अछि, फेर पानि अनबाक लेल बाहर जाइत अछि। एहि छोट अनुपस्थितिमे मूस बरतनमे मुँह दैत अछि आ मरि जाइत अछि। मूल कथा भूख अथवा लोभ दुनू सम्भावना दैत अछि, निश्चित कारण नहि। तैं मूसक दोषक मनोवैज्ञानिक विवरण गढ़ब उचित नहि। मुदा ई मृत्यु यात्राक सहयोगी सम्बन्धकेँ अकस्मात् तोड़ैत अछि।

एहि प्रसङ्गक साहित्यिक शक्ति ई अछि जे कथाक मुख्य लक्ष्य डोका सँ मिलन छल, मुदा बीचमे सहयात्रीक मृत्यु नब शोक बनि उपस्थित होइत अछि। डोकीक पीड़ा केवल विछोहक नहि रहैत; जकरा संग ओ बाट चललीह, तकर प्राणहानिक करुणा सेहो ओहि क्षण जोड़ैत अछि। यदि हलुआक पात्रमे प्राणघातक गर्मी अथवा ककरो अन्य विशिष्ट कारण स्रोत स्पष्ट नहि करैत, समीक्षामे सेहो ओकर कल्पना नहि होएत।

अध्याय ७ : सातम रातिक चमत्कार

गीतमे संचित यात्रास्मृति आ अचानक पुनर्मिलन

मूसक देह देखि डोकी विलाप करैत गीत गबैत अछि। गीतमे बगुला, सियार, बटवृक्ष आ हाथीक प्रस्ताव छोड़ि मूसकेँ संगी बनएबाक निर्णयक क्रम दोहराओल अछि। एहि आवर्तनमे यात्रा-सूची केवल घटना-गणना नहि; डोकीक अपन चुनावक पुनर्स्मरण बनैत अछि। लोकगीत शोकक क्षणमे आत्मकथनक माध्यम बनैत अछि। जकर संग यात्रा गूढ़ भेल, ओकर मृत्यु कथा केँ दुखान्तक कगारपर आनैत अछि।

मूल समापन मूसक मृत्यु केँ ‘बलिदान’ कहैत अछि, मुदा छठम अध्याय मे मूस स्वयं प्राण त्यागक निर्णय नहि लेल; बरतनमे मुँह देलाक परिणामस्वरूप मरि गेल। तैं स्वेच्छिक परोपकारी त्याग आ दुर्घटनात्मक मृत्यु केँ अलग-अलग अर्थमानकपर देखब आवश्यक अछि। मूसक सहायताक मूल्य अपार रहि सकैत अछि, भले ओकर मृत्यु नियोजित बलिदान नहि छल।

डोकी निराशासँ साँस टूटबाक स्थितिमे पहुँचैत अछि, आ तखने कुर्हाड़ी लेने डोका केवाड़ी खोलि उपस्थित होइत अछि। एहि अचानक पुनर्मिलनसँ जोगीक सातम रातिक भविष्यवाणी कथा-विश्वमे पूर्ण होइत अछि। मुदा डोका कतय छल, सात राति अनुपस्थित किएक रहल आ एही क्षण किएक घुरल—एहि सभक निश्चित भौतिक व्याख्या मूल पाठ नहि दैत। साहित्यिक सफलताक अर्थ भावात्मक सुखान्त अछि, न कि सभ घटनाक कारणात्मक गाँठ सुलझब।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

प्रेम–विश्वासक मनोविज्ञान

कृतिक आरम्भमे डोका–डोकीक स्नेहक महिमा अछि, तकर तुरन्त बाद निराधार सियार-वचन शंका बनि प्रवेश करैत अछि। प्रेमक ई संरचना ध्यान दैत अछि जे भावुक निकटता अप्रमाणित सूचना सँ स्वतः सुरक्षित नहि। डोकीक भरोसा टूटबाक दोष सम्पूर्ण रूपसँ ओकरा पर थोपब नीतिगत रूपसँ उचित नहि; सियारक सुनियोजित छल मुख्य बाहरी कारण अछि। प्रेमक रक्षा लेल स्नेहक संग प्रत्यक्ष बातचीत आ प्रमाण-जाँच आवश्यक होइत—ई आधुनिक सामाजिक पठनक नैतिक निष्कर्ष अछि, मूल कथाक जोगी-श्राप सँ भिन्न।

जोगीक समयसूचना आ कथात्मक प्रतीक्षा

जोगीक ‘सातम दिन’ वचन कथा कैं सुनियोजित कालसीमा दैत अछि। एहि समयान्तरमे डोकी यात्रा, वनचरसभक निमन्त्रण, मूसक संगत, सुरंग आ शोकक अनेक चरण पार करैत अछि। सात रातिक वचन दर्शकक अपेक्षा टिकबैत अछि। एतय भविष्यवाणी घटना-चक्र बनएबाक शिल्प अछि, इन्द्रीयसिद्ध नियति-नियम नहि। वचनक प्रभाव कथामे पूर्ण होइत अछि, मुदा डोकाक गायब होएबाक सामान्य कारण अनुत्तरित रहल अछि।

सहयात्रीक अर्थ : मूस बनाम अन्य वनचर

बगुला, सियार, गाछ आ हाथीक प्रस्ताव डोकी अस्वीकार करैत अछि, कारण ओ रुकबाक चाह नहि रखैत। मूस विलम्ब नहि, यात्रा जारी रखबाक प्रस्ताव दैत अछि। एहि चुनावमे देखल जाए तँ डोकी ‘संगति’ मात्र नहि, लक्ष्यक अनुकूल संगति चुनैत अछि। मूसक खिस्सा सुनबाक शर्त, सुरंगमे साथ चलब आ महल पहुँचब सहयोगक व्यवहारिक रूप छथि। ओकर अन्तिम मृत्यु नायिकाक मानसपर एही कारण गहींर प्रभाव डालैत अछि।

मौखिक कथन, श्रवण आ लय

मूसक लम्ब खिस्सामे ‘हँ’क आवृत्ति आ अन्तिम विलापगीत एके लोकशैलीक दू भिन्न पक्ष छथि। पहिलमे श्रोताक सहमति कथाक स्मृति-क्रम चलबैत अछि; दोसरमे गायक अपन अनुभवक क्रम गीतमे पुनः रचैत अछि। कथनक लय टूटला पर मूस अपन खिस्सा बिसरैत अछि, जखन कि शोकक गीतमे डोकी पूरा यात्रा याद करैत अछि। ई विरोध लोकमौखिकताक साहित्यिक सामर्थ्यक सुन्दर उदाहरण अछि।

मूसक मृत्यु : करुणा आ ‘बलिदान’ शब्दक सीमा

समीक्षा लेल एकटा स्पष्ट पाठ-संशोधनयोग्य प्रसंग ई अछि जे छठम अध्यायमे मूसक मृत्यु असावधान भक्षणद्वारा होइत अछि। सप्तम अध्याय एही घटनाकेँ ‘बलिदान’ कहैत अछि। जँ लेखक सहायताक समर्पणकेँ व्यापक अर्थमे ‘बलिदान’ कहबाक चाहथि, तँ एहि व्याख्याक आधार स्पष्ट करब उचित; अन्यथा स्वेच्छिक प्राणत्यागक भ्रामक छवि बनैत अछि। ई शब्दार्थक भेद पुस्तकक करुण प्रभाव नष्ट नहि करैत, ओकर नैतिक सुस्पष्टता बढ़बैत अछि।

प्राणी-लोककथा, चित्र आ संरचनात्मक सीमा

सात अध्यायक चौदह चित्र-संकेत सियारक भ्रम, जोगीक घोषणा, वनचरक प्रस्ताव, मूसक खिस्सा, सुरंग, हलुआक तैयारी आ पुनर्मिलनक दृश्यगत क्रम बनबैत छथि। नायक–नायिका पशुपात्र होइतहुँ मानवीय प्रेम, ईर्ष्या आ शोकक अनुभव व्यक्त करैत छथि। एहि मानवीकरणक अर्थ मनुष्यक सम्बन्ध पढ़बाक रूपक अछि, वास्तविक पशुक व्यवहारक दावा नहि। कथा डोकाक लम्ब अनुपस्थितिक कारण आ सियारिनक पछिला भूमिका विकसित नहि करैत; मूसक मृत्यु सँ पुनर्मिलन बहुत अचानक होइत अछि। ई द्रुत गति लोककथाक विशेषता आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक सीमा दुनू अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘डोकी डोका’क साहित्यिक उपलब्धि प्रेमक एकरेखीय सुखान्त नहि, अप्रमाणित वचनसँ उपजल अविश्वासक बीच नायिकाक सक्रिय खोज, सहयात्रीक सहयोग आ गानद्वारा शोकक अभिव्यक्ति अछि। सातम रातिक पुनर्मिलन लोकविश्वासक कथात्मक समाधान अछि। एहि सुखान्तक भीतर मूसक दुर्घटनात्मक मृत्यु, श्राप-व्याख्याक अप्रमाणित कारणताक प्रश्न आ प्रत्यक्ष दम्पति-संवादक अभाव अनुत्तरित रहैत अछि। तइयो कथा कहैत अछि जे सम्बन्धक संकटमे प्रतीक्षा मात्र नहि, खोजक कर्म आ स्मृतिमे संगीक सम्मान सेहो मानवीय अर्थक महत्त्वपूर्ण आधार भऽ सकैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। डोकी डोका : सातम राति धरि अटूट प्रेम-खोज। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क २५; PDF पृष्ठ १३४५–१३७६।

कृति २७ : गोनूझा आ दस ठोप बाबा

उपक्रम : मिथिलाक सुखाड़

संकटग्रस्त समाजक आशा आ प्रमाणहीन वचनक आकर्षण

सुखाड़क कारण फसल नष्ट, जनसाधारण कष्टमे आ राज्य चिन्तामे अछि। राजा उपायक घोषणा करैत छथि आ पुरस्कारक आश्वासन दैत छथि। एहि आरम्भमे सामूहिक आवश्यकता वास्तविक अछि : वर्षाक अभाव कृषि-आधारित जीवनक संकट अछि। एहन संकटमे तत्काल उपचारक दावी व्यक्ति कैँ समाज असाधारण महत्त्व दऽ सकैत अछि।

गोनूझाक लोकबुद्धि सँ भ्रम-भेदनक गाथा उपक्रमे प्रस्तुत अछि। कृतिक मुख्य प्रश्न एतय धार्मिक श्रद्धा बनाम अधर्म नहि, प्रकट चिह्नक आधारपर दावा स्वीकार करबाक प्रवृत्ति बनाम प्रमाणक खोज अछि। तपस्वीक बाह्य परिधानक सत्यता प्रश्नाधीन भेला परो सभ श्रद्धालु व्यक्ति ठग होइत अछि—एहन सामान्यीकरण कृति नहि दैत। लक्ष्य एक विशिष्ट ढोंगीक असत्य दावा अछि।

अध्याय १ : दस ठोप बाबाक आगमन

आकृतिक प्रभाव आ प्रमाणबिनु राज्यक भरोसा

सुखाड़क बीच एक बाबा देहपर दस ठोप चिन्ह लगा राजदरबारमे पहुँचैत छथि। ओ सौ बर्ख हिमालयमे तपस्या कए वर्षा करएबाक सामर्थ्यक दावा करैत छथि। वर्षाक अभावमे शासन एहन आश्चर्यजनक उपाय लेल सहज उत्सुक अछि। राजा तत्काल सम्मान, आवास आ सामग्री उपलब्ध करा दैत छथि। एहि स्वीकृतिमे सामूहिक आवश्यकताक दबाव आ असाधारण व्यक्तिक कथित प्रतिष्ठाक संयोग अछि।

किन्तु घोषणा स्वयं परीक्षण नहि। ‘हम वर्षा करा सकैत छी’ कथनक समर्थन लेल स्वतंत्र प्रक्रिया, मौसमविज्ञानक कारण वा प्रत्यक्ष प्रदर्शन प्रस्तुत नहि भेल अछि। बाह्य चिन्हक संख्या आ दीर्घ तपस्याक कथन दावा करनिहारक आत्मपरिचय अछि, प्रमाणित तथ्य नहि। कृतिक व्यंग्य एही विवेकहीन त्वरित भरोस पर केन्द्रित अछि।

गोनूझा तखन बाहर छथि। एहि अनुपस्थितिसँ राजदरबार एकपक्षीय सूचना पर निर्णय लैत अछि। कथा विवेकक वापसी लेल एक छोट नाटकीय अवकाश बनबैत अछि।

अध्याय २ : गोनूझाक आश्चर्य

घरेलू सूचना सँ सार्वजनिक साक्ष्य-परीक्षा धरि

गोनूझा घुरि अपन पत्नी सँ घटनाक विवरण सुनैत छथि—बाबाक आगमन, दावा आ राजाक विश्वास। एहि प्रसंगमे घरेलू सूचना राजकीय निर्णयक समीक्षा आरम्भ करबैत

अछि। पत्नी समाचारक वाहिका छथि, गोनूझा प्रश्नक सक्रिय पक्ष बनैत छथि। कथा ज्ञानक प्रसार केवल दरबारपर निर्भर नहि मानैत।

सौ बर्ख हिमालयक तपस्या आ यज्ञसँ वर्षाक दावा सुनि गोनूझा शंकित होइत छथि। मुदा ओ तुरन्त कोनो विशिष्ट अपराध घोषित करबाक बदला व्यक्ति कैं देखबाक निर्णय लैत छथि। एतय आलोचनात्मक बुद्धिक पहिल गुण प्रकट अछि : प्रमाणबिनु असत्य घोषणा करब उचित नहि, मुदा प्रमाणबिनु सत्य मानबो उचित नहि।

राजा तँ सम्मान दऽ चुकल छथि, तैं जांच व्यक्तिगत मनोरंजन नहि, सार्वजनिक संसाधनक उत्तरदायित्व अछि। गोनूझाक सावधानी कथामे राज्यहितक रूपमे वर्णित अछि; वैज्ञानिक दावाक कसौटी परखब एकर व्यापक आधुनिक अर्थ अछि।

अध्याय ३ : बीस ठोप बाबाक प्रवेश

वेश–छल द्वारा मिथ्या प्रतिष्ठाक प्रतिस्पर्धा

भोरसँ पहिने राज्यमे बीस ठोप बाबाक आगमनक चर्चा फैलैत अछि। ई दोसर बाबा वस्तुतः गोनूझा छथि, जे नकली दाढ़ी–मोंछ लगा भेष बदलैत छथि। ‘दस’क सोझाँ ‘बीस’ चिह्नक प्रतियोगिता बनैत अछि। संख्याक दोगुना होएब गुणक दोगुना होएबाक कोनो प्रमाण नहि, मुदा दृश्य–प्रतिष्ठाक बाजारमे ई संख्या हीन–श्रेष्ठक आधार बनैत अछि।

गोनूझा अपना भेषसँ पहिल बाबाक परीक्षा लेबाक नाटक रचैत छथि। कृतिक हास्य एहि बातमे अछि जे ढोंगक भाषा कैँ ढोंगक माध्यमसँ प्रश्नाधीन कएल जाइत अछि। औपचारिक आलोचना एतय ध्यान देत जे गोनूझाक स्वयं छलक औचित्य सार्वजनिक ठगी रोकबाक उद्देश्यसँ जुड़ल अछि, मुदा कोनो उद्देश्य भ्रम पैदा करबाक हर उपाय स्वतः मान्य नहि बनबैत।

एहि अध्यायमे व्यंग्यक वस्तु धार्मिक प्रतीक नहि, धार्मिक प्रतीकक कृत्रिम व्यावसायिक मूल्यांकन अछि। दस–बीस ठोपक तुलना कौशलक कसौटी छोड़ि केवल संख्या सँ श्रद्धा खरीदबाक सामाजिक प्रवृत्ति पर टिप्पणी करैत अछि।

अध्याय ४ : दुनू बाबाक भेँट

अधिक उपाधिक हास्य आ मेघ खींचबाक असम्भव दावी साधन

पहिल बाबा अपन पदकैँ बचएबाक लेल स्वयंकैँ ‘श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा’ कहैत छथि। इहिना संख्याक बढ़ोतरी आध्यात्मिक प्रतिष्ठाक आत्मघोषणाकैँ हास्यास्पद बनबैत अछि। गोनूझा मूल प्रश्न पूछैत छथि—वर्षा कोन विधिसँ कराएब? प्रश्न वेशभूषासँ हटि क्रियाविधिक परीक्षणपर पहुँचैत अछि।

दस ठोप बाबा कहैत छथि जे लम्ब बाँसक प्रयोगसँ मेघ खींचि आनताह। एहि कल्पनामे मौसमक भौतिक प्रक्रिया सँ असंगति अछि। कथावाचक दावा कैँ अवैज्ञानिक मानैत छथि। वर्षाक कारणताक चर्चा लेल मेघक निर्माण आ गति वायुमण्डलीय प्रक्रियाक विषय अछि; बाँसक देहगत क्षमता सँ मेघ कैँ खींचबाक सम्भव प्रमाण पुस्तक नहि दैत।

बाबाक उत्तरक बौद्धिक दुर्बलता देखएबाक लेल केवल हास्य पर्याप्त नहि, साधन–उद्देश्यक सम्बन्ध पर प्रश्न आवश्यक अछि। अगिला अध्यायमे गोनूझाक प्रश्न एहि कसौटी कैँ स्पष्ट करैत अछि।

अध्याय ५ : चतुर प्रश्न आ भण्डाफोड़

उपकरणक आकारक प्रश्न सँ दावाक असंगति खोलब

गोनूझा पूछैत छथि जे मेघ खींचबाक एतेक नमहर बाँस कतय राखल अछि। ई सामान्य प्रश्नमे व्यावहारिक तथ्यनिष्ठा अछि : साधन द्वारा कार्य सम्भव कहनिहार कैँ साधनक उपलब्धता, आकार आ काजक तर्क बताबय पड़त। बाबा सन्तोषजनक उत्तर नहि दैत छथि। कथामे एतयसँ दावाक खोखलापन प्रत्यक्ष होइत अछि।

गोनूझा ढोंगी कहि आरोप लगबैत छथि। पहिल बाबा शौचक बहन्ना बनाकऽ भागए लगैत छथि। हुनकर खराम आ कमण्डल छूटि जाएब हड़बड़ीक नाटकीय प्रमाण बनैत अछि। कृतिक विनोद एहि बातमे अछि जे जकर आत्मप्रदर्शन बहुत सुव्यवस्थित छल, संकटमे ओहि चिह्नसभकैँ छोड़ि प्रस्थान करैत अछि।

एतय तार्किक महत्त्व दू स्तरपर अछि : मेघ खींचबाक विधिक असम्भव व्याख्या पहिने सँ असत्यक संकेत दैत अछि; पलायन दावाक परीक्षणसँ बचबाक व्यवहार प्रस्तुत करैत

अछि। ककरो असहज उत्तर मात्रसँ सभ आरोप निर्णायक सिद्ध होइ—एहन सामान्य नियम नहि; मुदा एहि घटनामे सामूहिक साक्ष्य बहुत बढ़ैत अछि।

अध्याय ६ : नकली दाढ़ीक रहस्य

परिधानक भण्डाफोड़ आ नीतिकथाक सुखान्त

भागैत बाबा कैँ लोक रोकबाक प्रयासमे हुनकर दाढ़ी पकड़ैत छथि, आ दाढ़ी नकली निकलैत अछि। एहि दृश्य सँ वेशबदलावक प्रत्यक्ष प्रमाण भेटैत अछि। ध्यान देबाक बात अछि जे गोनूझा सेहो नकली दाढ़ी लगा एलाह; तैं परिधानक कृत्रिमता एकटा स्वतन्त्र निर्णायक अपराध नहि, संदर्भित दावाक विश्वासनीयता जाँचबाक एक अंग अछि।

दस ठोप बाबा भागि जाइत छथि, गोनूझा अपन वेश खोलि वास्तविक परिचय प्रकट करैत छथि। राजा हुनकर बुद्धि आ तत्परताक प्रशंसा करैत छथि। गाथा एहि घटना कैँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाओल लोकस्मृति कहैत अछि। बाह्य ऐतिहासिक प्रमाणबिना एकरा निश्चित राजकीय घटना मानबाक बदला लोकव्यंग्यक सांस्कृतिक स्मृति मानल जाए।

सुखाड़क वास्तविक संकट तखनहुँ कथा-अन्तमे हल भेल अछि अथवा नहि, से मूल पाठ स्पष्ट नहि करैत। ढोंगी भगा देल गेल, मुदा वर्षाक प्रतीक्षा, किसानक फसल आ राहतक समस्या बनी सकैत अछि। एहि शेष प्रश्नकेँ देखब कथा कैँ चतुर आदमीक सफल तमाशासँ आगाँ सार्वजनिक नीति आ लोकजीवनक वास्तविक जिम्मेदारी दिस खोलैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

सुखाड़ आ आश्वासनक राजनीतिक अर्थ

कथाक सामाजिक आरम्भ सुखाड़क वास्तविक संकटसँ अछि। किसानक फसल, जनजीवनक पानि आ राजकीय प्रशासन संकटग्रस्त छथि। राजा घोषित पुरस्कारद्वारा समाधान चाहैत छथि। एहि परिस्थितिमे छद्म साधुक असाधारण दावी केवल व्यक्तिगत ढोंग नहि, सार्वजनिक संकटक अवसरवादी उपयोग अछि। दुखी समाज त्वरित चमत्कार पर विश्वास करबाक अधिक प्रवण भऽ सकैत अछि। गोनूझाक हस्तक्षेप एहि असमान शक्तिक क्षणमे नागरिक विवेकक प्रतीक अछि।

प्रतिष्ठाक संख्या आ मापनक भ्रम

दस ठोप, बीस ठोप आ ‘१०८ बीस ठोप’क प्रतिस्पर्धा बाह्य संकेतकेँ आध्यात्मिक सामर्थ्यक मापन मानबाक प्रवृत्तिक व्यंग्य अछि। अध्यायक विनोद संख्या बढ़ला पर सत्य बढ़बाक भ्रमसँ जन्मैत अछि। ई संख्या धर्मग्रन्थक निर्दिष्ट सांकेतिक अर्थक गहन अध्ययन नहि; कथामे प्रतिष्ठाक व्यापारिक प्रदर्शनक उपकरण अछि। लोकनाट्यक दृष्टिसँ अचानक बढ़ैत उपाधि दर्शकक हास्य जगबैत अछि, मुदा सामाजिक चिन्ता सेहो उद्घाटित करैत अछि।

प्रमाण आ व्यावहारिक प्रश्नक शक्ति

गोनूझा ‘मेघ कोना खींचब’ आ ‘बाँस कतय राखल अछि’ पूछैत छथि। पहिल प्रश्न क्रियाविधिक, दोसर उपकरणक उपलब्धताक अछि। एहि दू चरणमे ज्ञान–मीमांसाक मूल अर्थ देखल जाइत अछि : प्रतिज्ञा अपन साधन, प्रमाण आ कार्यकारण सम्बन्धसँ परीक्षण योग्य होएबाक चाही। इहिना शास्त्रीय तर्कदृष्टि मे असंगत साधनक आधारपर कल्पित निष्कर्ष स्थापित नहि होइत। कृति औपचारिक नव्य-न्याय पदावली नहि गढ़ैत, मुदा लोकबुद्धिक व्यवहारिक अनुमानक उदाहरण जरूर बनैत अछि।

छद्मवेश द्वारा सत्यपरीक्षणक नैतिक प्रश्न

गोनूझा अपनाकेँ बीस ठोप बाबा कहि प्रस्तुत करैत छथि। एहि छलक मुख्य उद्देश्य पहिल बाबाक दावाक जाँच अछि, व्यक्तिगत धनलाभ नहि। तइयो ई साधन पारदर्शिताक आदर्शसँ अलग अछि; आधुनिक सार्वजनिक प्रशासनमे ठगीक परीक्षण स्वतंत्र जाँच, दस्तावेज आ प्रत्यक्ष साक्ष्यसँ करब उचित। लोककथाक व्यंग्यात्मक परिस्थिति मे छद्मवेश नाटकीय साधन अछि, सार्वभौम अनुसन्धान-पद्धतिक अनुकरणीय नियम नहि।

नकली दाढ़ी : प्रतीक आ साक्ष्यक सीमा

दाढ़ीक नोचल जाएब दृश्यगत निर्णायक नाट्य–क्षण अछि। पर गोनूझाक अपना दाढ़ी सेहो नकली छलीह, तैं दाढ़ी कृत्रिम होएब मात्रसँ मानसिक कपट प्रमाणित नहि। पहिल बाबाक अप्रमाणित वृष्टि-दावा, प्रश्नक उत्तर नहि देब आ भागब सँग जोड़ला पर आरोपक संदर्भ मजबूत होइत अछि। एहि सूक्ष्म अन्तरमे कृतिक बौद्धिक मूल्य अछि :

कोनो चिह्नक अर्थ स्वयं निर्विवाद नहि; ओकर प्रमाणार्थ परिस्थिति आ अन्य साक्ष्यसँ बनैत अछि।

लोकसाहित्यक हास्य-रस आ दृश्यरचना

उपक्रमक बाद छओ अध्यायक बारह चित्र-संकेत अछि। सुखाड़, राजदरबारक सम्मान, गोनूझाक आश्चर्य, दुगुना ठोपवला नव बाबा, काल्पनिक बाँस, भागैत बाबा, नोचल दाढ़ी आ गोनूझाक असल रूप—ई सभ दृश्य लोकव्यंग्यक छोटी–छोटी नाटकीय इकाइ बनैत छथि। हास्य निष्क्रिय सजावट नहि; कथाक भ्रम-उद्घाटनक साधन अछि। वेशभूषाक अतिरेक सँ हास्य उत्पन्न होइत अछि, प्रश्नोत्तर ओकर नीतिशास्त्रीय अर्थ खोलैत अछि।

अन्तिम समेकित प्रश्न : ढोंग गेल, सुखाड़क की भेल?

कथाक चरमपर ठग भागि जाइत अछि आ राजकीय सम्मान गोनूझाकेँ भेटैत अछि। मुदा जकरा लेल पूरा घोषणा भेल छल—सुखाड़क समाधान—ओकर परिणाम पाठमे नहि बताओल गेल। एहि अभावमे नीतिकथा सफल बुद्धिप्रदर्शन बनैत अछि, कृषि–संकटक सम्पूर्ण समाधान नहि। आलोचकक दृष्टिसँ एहि रिक्तताक उल्लेख करना पुस्तकक उपलब्धिक अवमानना नहि; उलटे सार्वजनिक हितक प्रश्न खुलल रखैत अछि। छल-भेदन नीति निर्माणक एक अनिवार्य चरण हो सकैत अछि, मुदा जलसंकट, राहत, कृषि-सुधार आ जनसुरक्षाक वास्तविक उत्तर अलग कार्य छथि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘गोनूझा आ दस ठोप बाबा’ संकटमे फँसल समाजक चमत्काराकांक्षा आ कथित सिद्ध पुरुषक स्वार्थपर लोकबुद्धिक तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। गोनूझाक श्रेष्ठता हुनकर पैघ दावा नहि, बल्कि प्रतिपक्षसँ छोट प्रश्नक ठोस उत्तर माँगबाक क्षमता अछि। बाह्य चिन्हक असत्य प्रतिष्ठा नाटकीय छद्मवेश आ वाचिक परीक्षणद्वारा टूटैत अछि। तइयो गोनूझाक साधनक नैतिक सीमा, नकली दाढ़ी प्रमाणक सापेक्ष अर्थ आ सुखाड़क अनसुलझल सामाजिक संकट आलोचना लेल बचल अछि। एहि बहुस्तरीय पठनमे कृति अन्धविश्वास-विरोधी छोट उपदेशक बदला प्रमाण, हास्य आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक जीवन्त लोककथा बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। गोनूझा आ दस ठोप बाबा : चतुर मैथिलक ढोंगी-भेदन। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क २६; PDF पृष्ठ १३७७–१४०४।

कृति २८ : ज्योति पँजियार

उपक्रम : पम्पीपुर गामक सिद्ध

भक्तिक परीक्षा आ शक्ति-दुरुपयोगक आरम्भिक सम्भावना

ज्योति पँजियार सिद्ध तांत्रिक मानल गेल छथि, धर्मराज हुनकर कुलदेवता छथि। पत्नी लखिमाक संग हुनकर संतुष्ट गृहस्थी अछि। उपक्रम एकटा अल्प घटनासँ जीवनक अनर्थक पूर्वसूचना दैत अछि : भिक्षुकक माँगल काज पूरा नहि करबाक कारण बारह बर्खक तपस्या भोगबाक होयत। कथा एहिठाम भक्तिक नम्रता कैं प्रधान शिक्षा प्रस्तावित करैत अछि।

मुदा आलोचनामे अलग प्रश्न अछि : काजमे मग्न मनुष्य द्वारा भिक्षा नहि देब, विशेष रूपसँ जखन पत्नी भोजन देबाक तैयार छलीह, तकर उत्तरमे धनहरण आ कुष्ठरोगक शाप दियाओल कतेक न्यायसंगत? अलौकिक शक्ति आ नैतिक औचित्य समान बात नहि। ई द्वन्द्व कथा भीतर बिना प्रश्न किए स्वीकारल गेल छैक, आधुनिक पठनमे एकरा सामने आनब आवश्यक अछि।

अध्याय १ : धर्मराजक शिक्षा

भिक्षुक-वेषक परीक्षा आ दण्डक अनुपात

लखिमा सूपमे अन्न लऽ साधु लग जाइत छथि। साधु कहैत छथि जे केवल ज्योतिक हाथसँ भिक्षा लेथिन्ह। ज्योति गहबर बनबए मे व्यस्त रहैत छथि आ काज छोड़ि नहि अबबाक कहैत छथि। एहि स्थिति मे वास्तवमे भिक्षा देबाक इच्छा आ व्यवस्था दूनू उपस्थित अछि—मात्र विशिष्ट व्यक्ति द्वारा दानक मांग पूरा नहि भेल। कथावाचक एकरा भक्तिक परीक्षा मे विफलता मानैत छथि।

वेषधारी धर्मराज क्रोधित भऽ ज्योतिक निर्धन होएब आ कुष्ठरोग सँ पीड़ित होएबाक शाप दैत छथि। एहि दण्डमे असामान्य अनुपात अछि : छोट अनादरक परिणाम देहगत रोग, आर्थिक क्षति आ सामाजिक अपमान। ई लोकदेवताक प्रभुत्वक रूपक भऽ सकैत, मुदा रोगी कैं अपराधी मानबाक नैतिक औचित्य नहि।

लखिमाक भूमिका सेहो उल्लेखनीय अछि। स्त्री नेमक अनुकूल अन्न लऽ पहुँचैत छथि, किन्तु साधुक व्यक्तिगत अपेक्षाक कारण हुनकर प्रयास अमान्य ठहरैत अछि। ई चयन परिवारक देखभाल–कार्यक अवमूल्यनक प्रश्न सेहो उठबैत अछि।

अध्याय २ : शापक फल

रोग, निर्धनता आ सम्बन्धीक अस्वीकारक दोसर हिंसा

शापक पश्चात् ज्योतिक धन क्षीण होइत अछि आ देहपर कुष्ठक चिह्न उत्पन्न होइत अछि—एहन लोककथात्मक कारण–परिणाम प्रस्तुत अछि। समाजमे हुनकर सम्मान

घटैत अछि, बहिनक घरमे आश्रय माँगला पर अपन परिजन हुनका स्वीकार नहि करैत। एहि दुर्व्यवहारमे देहगत पीड़ासँ अलग सामाजिक बहिष्कारक पीड़ा अछि।

कथाक भीतर रोग कैँ शापसँ जोड़ल गेल अछि। चिकित्सकीय तथ्य एकर विरोध करैत अछि : कुष्ठरोग जीवाणुसँ होइत अछि आ आधुनिक बहुऔषधि उपचार सँ ठीक भऽ सकैत अछि। रोगक नैतिक कलङ्क सामाजिक अन्याय बढ़बैत अछि। बहिनक संकोच व्यक्तिगत डरक संकेत भऽ सकैत, मुदा रोगी भाइकेँ गरिमापूर्वक सहायता देब परिवारक मानवीय जिम्मेदारी अछि।

ज्योति ओइटदल गाममे पुरान संगी लगवार लग पहुँचैत छथि। एहि दृश्यसँ एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक बात बचैत अछि—रक्तसम्बन्ध असफल होइतहुँ पुरान मित्रता आश्रय देबाक सम्भावना बनैत अछि। गाथाक दुखान्तक भीतर करुणा एहि सहयात्रीक रूपमे प्रवेश करैत अछि।

अध्याय ३ : तांत्रिकक निर्देश

बारह बर्खक तपस्या आ उपचारक भिन्न मार्ग

ओइटदलमे एक तांत्रिक बारह बर्ख कदलीवनमे धर्मराजक आराधना, गहबर, करची आ बाँसक घर बनएबाक विधि सुझबैत छथि। ज्योति एहि सलाहकेँ अपन शापसँ मुक्ति पएबाक आशा मानि स्वीकार करैत छथि। एहि घटनामे दीर्घ साधनाक दृढ़ता कथा-समर्थित गुण अछि, मुदा रोगक चिकित्सा कैँ ओकर विकल्प मानब उचित नहि।

बारह बर्खक वनवास शारीरिक रूपसँ कमजोर व्यक्तिक लेल व्यापक जोखिम रखैत अछि। मूल कहानीक आध्यात्मिक विधान मे कठिन तपस्याक फल अनिवार्य मुक्ति अछि; आधुनिक स्वास्थ्यबोध मे समयपर निदान, उपचार, स्वच्छता, पोषण आ सामाजिक सहयोग अधिक आवश्यक छथि। श्रद्धा आ चिकित्सा परस्पर विरोधी नहि, पर शरीरक वास्तविक रोग कैं औषधिक बदला केवल तपस्यासँ ठीक होएबाक गारंटी नहि।

ज्योतिक पहिल इनकार ‘अहंकार’ छल कि कामक एकाग्रता, स्रोतक घटनामे एहि प्रश्नक अस्पष्टता अछि। दण्डक बाद हुनकर विनम्रताक कथन लेखकक नैतिक व्याख्या अछि, मनोवैज्ञानिक रूपसँ विस्तारसहित प्रमाणित कारण नहि।

अध्याय ४ : सैनी गाछक बलिदान

वृक्षक छाँह, आकस्मिक विनाश आ अनपेक्षित दोषारोपण

ज्योति यात्रामे सैनी गाछक छाहमे विश्राम करैत छथि। तत्क्षण गाछ सूखि खसि पड़ैत अछि। कथावाचक ई परिणाम ज्योतिक शापित उपस्थितिक प्रभाव अथवा अज्ञात कारणसँ भऽ सकबाक संभावना रखैत छथि। ई अनिश्चितता महत्त्वपूर्ण अछि : प्राकृतिक गाछक सूखबक कारण केवल श्रद्धा-संबंधी कल्पनासँ प्रमाणित नहि होइत।

कथाक शीर्षक ‘बलिदान’ कहैत अछि, मुदा गाछ द्वारा सचेत स्वेच्छा सँ प्राण देबाक घटना पाठमे नहि अछि। छाह प्रदान करब उपयोगी काज, पश्चात् मृत्यु दुखद घटना—ई अर्थ अलग राखब उचित। रूपकात्मक ‘बलिदान’क उपयोग करब संभव अछि, मुदा ओ जीवित वृक्षक वास्तविक कारण-विज्ञान नहि।

ज्योति गाछक नष्ट होएब देखि दुखी होइत छथि आ आगाँ दोसर लोक कैँ हानि नहि पहुँचे से सोचैत छथि। एहि करुण संवेदनामे पात्रक नैतिक मानवीय पक्ष अछि। जखन शक्ति-प्राप्ति केन्द्र नहि, दोसराक सुरक्षित रहबाक चिन्ता प्रधान बनैत अछि, ओतय गाथा अधिक प्रभावकारी होइत अछि।

अध्याय ५ : कोइलीक बलिदान

सेवा, तूफान आ अकाल मृत्यु

ज्योतिकैँ पियास लगैत अछि, ओ कोइली सँ पानि अनबाक कहैत छथि। कोइली उड़ैत अछि आ आन्ही-तूफानमे मरि जाइत अछि। स्रोत घटना कैँ ‘बलिदान’ कहैत अछि, मुदा कोइली द्वारा मृत्यु स्वीकारक सचेत निर्णयक प्रमाण नहि; सेवा करैत प्राकृतिक संकटमे प्राणहानि भेल अछि। एहि भेदक कारण श्रद्धाक भावात्मक बल बना रहितो कथाक नैतिक अर्थ अधिक सुस्पष्ट रहैत अछि।

कोइलीक मृत्यु सेहो ज्योतिक कथित शापक विस्तार कहि पढ़ाओल गेल अछि। मुदा तूफान एक प्राकृतिक घटना अछि; रोगी मनुष्यक उपस्थितिक कारण अन्हार, आन्ही

अथवा पशु-मृत्यु होइत अछि—एहन वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि। रोगी कैं दोसराक अनिष्टक स्रोत मानब सामाजिक कलङ्कक विकृत रूप बनि सकैत अछि।

ज्योतिक दुःख एहि कारण गहीर होइत अछि जे यात्रा स्वयं बचबाक प्रयत्न अछि, पर संगक सहायक लोक–प्राणी दुख भोगैत छथि। एहि करुण प्रसंगकैं सहानुभूतिक आधारपर पढ़ब उचित, भयद्वारा बहिष्कारक आधारपर नहि।

अध्याय ६ : कदलीवन धरि यात्रा

भेषधारी मार्गदर्शक आ लिखित पातक रहस्य

ज्योति कदलीवन पहुँचैत छथि, जतय एक महिसबार हुनका अछमितपुर जायबाक कहैत छथि। मूल कथावाचक एकरा पुनः धर्मराजक भेष कहैत छथि। आगाँ एक व्यक्ति बरक पातपर उत्तर भेटबाक संकेत दैत अछि, फेर परबा बनि जाइत अछि। ज्योति पातपर ‘यैह छी अछमितपुर’ सन लिखल संदेश पढ़ैत छथि। ई दृश्य भूगोलक सामान्य सूचना कैं देवदत्त सङ्केत बना दैत अछि।

अछमितपुरक राजा निःसन्तान छथि—ई तथ्य पछिला चमत्कारक पारिवारिक पृष्ठभूमि बनैत अछि। ज्योतिक यात्रा एखन अपना रोगमुक्ति लेल मात्र नहि, दोसरक सन्तान-आकांक्षाक समाधानक मार्ग सेहो बनैत अछि। रहस्य-युक्त रस्ता कृतिक भक्ति–लोकगाथाक विधागत गुण अछि, प्रमाणित दिशानिर्देश वा चमत्कारी पत्राचार नहि।

आख्यानक एहि बिन्दुमे धर्मराज पहिने दण्डदायी, बादमे छद्म मार्गदर्शक छथि। देवत्वक भूमिका बदलैत अछि; दण्डक अनुपातक प्रश्न पाछाँ छोड़ि मोक्षक संवाद स्थापित होइत अछि। आलोचना दूनू रूपकेँ साथ देखबाक अछि।

अध्याय ७ : छागरक वरदान

सन्तान-प्राप्तिक आशा आ प्राणीकेँ साधन बनएबाक प्रश्न

ज्योति अछमितपुरक राजाकेँ सलाह दैत छथि जे एक निश्चित दिन छागर पोसला पर गर्भ ठहरत, आ ज्योति कदलीवनसँ घुरलापर छागर स्वयं बन्धनसँ मुक्त होयत। लोककथा एहि घटनाकेँ वरदानक रूपमे रचैत अछि। मुदा मानव गर्भधारण आ छागर पोसबक बीच आवश्यक जैविक कारण सम्बन्ध स्थापित नहि अछि। प्राणी धार्मिक आशाक प्रतीक होए, तकरा वैज्ञानिक प्रजनन-विधि कहब अनुचित।

राजा सन्तानक अभावसँ दुखी छथि आ ज्योतिक कथनपर विश्वास करैत छथि। एहि मानवीय दुःख केँ मान्यता देबाक संग संतानप्राप्ति केँ जीवनक एकमात्र सार्थकता घोषित नहि करब। परिवारक आदर्श अनेक रूपमे संभव अछि; बालकक जन्म न होएब अपराध नहि।

ज्योति फेर कदलीवन घुरि गहबर, करची आ बाँसक घर तैयार करैत छथि, बारह बर्खक तपस्या पूरा करैत छथि। दीर्घ कालखण्डक ई सङ्कलित वर्णन कृतिक भक्ति–समर्पणक प्रतीक अछि, चिकित्सकीय निदान अथवा प्राणीक संरक्षणक व्यवहारिक नियम नहि।

अध्याय ८ : बारह बरख पूर्ण

प्रकृतिक पुनर्जीवन आ रोगमुक्तिक कथात्मक रूपान्तरण

बारह बर्खक अन्तमे ज्योति पँजियार तपस्या समाप्त कऽ कदलीवनसँ बाहर अबैत छथि। कथामे कोइलीक पुनर्जीवन, सूखल धारमे पानिक वापसी आ सैनी गाछक फेर हरियर होएब एकहि क्रममे आबैत अछि। ई सभ दृश्य पछिला हानिक प्रतिलोम रूप छथि : जे कोइली मरल छल, से जीवित; जे गाछ खसल छल, से फेर हरा; जे पानि सुखायल छल, से पुनः बहैत अछि। एहि पुनरावर्तनसँ आख्यान अपन पूर्व दुखान्तकेँ प्रतीकात्मक रूपसँ सुलझबैत अछि।

पाठक लेल एहि चमत्कारक अर्थ आ प्रमाणक स्तर अलग राखब जरूरी अछि। गाछक वृद्धि आ धारमे पानि घुरब प्राकृतिक प्रक्रिया द्वारा सम्भव होइत अछि, मुदा मृत कोइलीक जीवन घुरा देबाक कथा अलौकिक विश्वासक अंग अछि। ज्योतिक तपस्या द्वारा कुष्ठरोगक उपचारक दावाकेँ चिकित्सकीय निष्कर्ष नहि मानल जाए। धर्मविश्वास मनोबल देबाक साधन होए सकैत अछि; निदान आ औषधि ओकर स्थानापन्न नहि।

चौठम आ पाँचम अध्यायमे जकरा 'बलिदान' कहल गेल, ओकर प्राणहानि असावधान अथवा प्राकृतिक संकटसँ होइत अछि। आठम अध्यायक चमत्कार ओकर भावात्मक क्षतिपूर्ति करैत अछि, मुदा स्वेच्छिक प्राणत्यागक प्रमाण उत्पन्न नहि करैत। एहि भेदसँ कथा भीतरक करुण प्रभावो सुरक्षित रहैत अछि आ शब्दार्थक सटीकता सेहो।

अध्याय ९ : अछमितपुरक चमत्कार

छागर, राजपुत्र आ रूपान्तरणक अनिर्णीत सम्बन्ध

अछमितपुरक राजा ज्योतिकेँ बतबैत छथि जे छागर आ हुनकर पुत्र दूनू एकहि दिन मरि गेल। ज्योति छागरक बच्चाकेँ जीवित करैत छथि आ कदलीवनक धारमे नावपर चढ़ि जाएबाक कहैत छथि, जतय ओ मनुष्यरूप पाबत। एहि आदेशक बाद राजपुत्र शिकारी सँ घोड़ा पर चढ़ि जीवित घुरैत अछि। मूल पाठ एहि घटनासभ केँ एक गुप्त आत्मिक सम्बन्धक माध्यमसँ जोड़ैत अछि, मुदा आत्मा ककर देहमे कतय गेल आ फेर कोना बदलल, तकर क्रम पूर्ण स्पष्ट नहि।

एहि अस्पष्टताकेँ कल्पित देह-बदलाबक विस्तारसँ पूरा करब उचित नहि। ई लोकगाथाक चमत्कारी अन्त अछि, जाहिमे प्राणी आ मानवीय जीवनक परस्पर निर्भरता एक रूपक रूपमे देखाओल जा सकैत अछि। छागरक मृत्यु आ राजपुत्रक संकट दूनू मानवीय संरक्षणक पात्र छथि; प्राणी केँ केवल चमत्कारक साधन मानबाक सीमा सेहो विचारणीय अछि।

ज्योति अपन गाम पम्पीपुर घुरैत छथि। आरम्भमे शक्ति-अहंकार, रोग आ अपमानसँ चिह्नित व्यक्ति अन्तमे अनुभवी, विनम्र आ लोकहितकारी सिद्ध रूपमे प्रस्तुत छथि। मुदा हुनकर सामाजिक सम्मानक वापसीक वास्तविक कारण करुणापूर्ण सहअस्तित्व होएबाक चाही; लोकविश्वासक अलौकिक परिणाम केँ रोगी सभक सम्मानक आवश्यक शर्त नहि बनाओल जाए।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

शाप आ वरदानक आवर्ती आख्यान-विन्यास

‘ज्योति पँजियार’क नौ अध्याय एक क्रमिक प्रतिलोम-विन्यास पर आधारित छथि। पहिल चरणमे देवताक शाप सँ धनक हानि, कुष्ठरोगक कथात्मक आरम्भ, परिजनक अस्वीकार, गाछ आ कोइलीक मृत्यु होइत अछि। दोसर चरणमे कदलीवनक तपस्या, देवताक छद्म मार्गदर्शन आ अन्तिम वरदान द्वारा पहिल क्षतिसभक प्रतीकात्मक पुनःस्थापना होइत अछि। ई शिल्प दुखक बिन्दु–बिन्दु उलटा उत्तर देबाक माध्यमसँ पूर्णताक अनुभूति रचैत अछि। बालचित्र-कथाक दृष्टिसँ नव अध्याय आ अठारह चित्र-संकेत द्वारा क्षति आ पुनर्जीवनक जोड़ स्पष्ट बनैत अछि।

शक्ति आ दण्डक अनुपात

धर्मराज भिक्षाक आग्रह विशिष्ट व्यक्ति द्वारा पूरा नहि होएबाक कारण ज्योति केँ निर्धनता आ रोगक शाप दैत छथि। जखन लखिमा भिक्षा देबाक लेल तैयार छलीह, तखन एहि दण्डक नैतिक न्यायिकता आरो प्रश्नाधीन होइत अछि। आध्यात्मिक शक्ति कथा-विश्वमे प्रबल होएबाक अर्थ दण्ड अनिवार्यतः न्यायोचित होएब नहि। आधुनिक मूल्याङ्कन धार्मिक आस्थाक अवमानना नहि करैत; पात्रक निर्णयक अनुपात आ निर्दोष परिवारपर ओकर प्रभावक विवेचना करैत अछि।

रोगक सामाजिक कलङ्क

कुष्ठरोगक चिह्न प्रकट भेलापर ज्योतिक बहिन आ परिवार हुनका स्वीकार नहि करैत। जखन कथामे देवताक शाप रोगक कारण मानल गेल अछि, तखन सामाजिक लोग सेहो रोगी कैं दुर्भाग्यक वाहक मानि सकैत छथि। वास्तविक रोग जीवाणुजनित अछि, आ आधुनिक बहुऔषधि उपचारसँ ठीक भऽ सकैत अछि। एतय साहित्यिक कल्पना आ चिकित्सकीय तथ्यक सीमारेखा चिह्नित करब बालपाठक लेल विशेष अनिवार्य अछि। ज्योतिकैं आश्रय, स्नेह आ चिकित्सीय सहायता देब मानवीय दायित्व अछि; बहिष्कार दूहर हानि पहुँचबैत अछि।

सैनी गाछ आ कोइलीक करुण अर्थ

गाछक छाह आ कोइलीक सेवा नायकक निर्बल अवस्थामे सहायता प्रदान करैत अछि। मुदा दूनूक अन्त कथामे मृत्यु अछि। एकर शीर्षक ‘बलिदान’ रहने परो सचेत त्यागक निर्णायक क्रिया स्पष्ट नहि। वृक्षक आकस्मिक सूखब आ कोइलीक आन्हीमे मरब दुखद घटनासभ छथि। अध्याय ८ मे दूनूक पुनर्जीवनक अलौकिक विधान ई करुण स्थिरता भङ्ग करैत अछि। एहि उलटावक काव्यात्मक महत्त्व दुख पर आशाक विजय अछि, न कि अन्य जीवक मृत्यु कैं नायकक सिद्धि लेल सामान्य मानब।

स्त्रीक देखभालक अल्प प्रतिष्ठा

लखिमा भिक्षुक लेल अन्न लऽ जाइत छथि, मुदा देवता केवल ज्योतिक हाथसँ भिक्षा लेबाक आग्रह करैत छथि। एही कारण संपूर्ण गृहस्थी विपन्न होइत अछि। स्त्रीक स्वयं सम्पन्न करबाक इच्छुक सेवा कैं स्वीकृति नहि देब कथा भीतर धार्मिक मर्यादाक कठोर पुरुष-केंद्रिक अपेक्षा उद्घाटित करैत अछि। बहिनक अस्वीकृति आ लगवार मित्रक

आश्रयक तुलना परिजनक जैविक सम्बन्ध आ नैतिक सहयोगक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

अछमितपुर : प्रजननक लोकविश्वास आ रूपान्तरण

निःसन्तान राजाक छागर पोसब आ सन्तान प्राप्तिक आशा, छागर आ पुत्रक समकालिक मृत्यु, प्राणी-रूपक पुनर्जीवन आ राजपुत्रक अप्रत्याशित पुनरागमन—ई सभ घटनासभक सम्बन्ध तांत्रिक लोकविश्वासक काल्पनिक संरचनामे अछि। जैविक गर्भधारण, रोगमुक्ति वा मृतव्यक्तिक पुनर्जीवनक वैज्ञानिक विधि एकरासँ सिद्ध नहि होइत। प्राणीक देखभाल आ संतानहीन परिवारक सम्मान दोसर स्वतंत्र सामाजिक मूल्य छथि।

रस आ कथावस्तुक सामंजस्य

आरम्भमे शापजनित भय, दोसर–पाँचम अध्यायमे करुणरस, छठम–सातममे रहस्य आ नव मार्गक प्रतीक्षा, अन्तिम दू अध्यायमे अद्भुत एवं शान्त रसक संयोग अछि। नौ अध्यायक अपेक्षाकृत संक्षिप्त दृश्यश्रृंखला घटनाक नाटकीय आरोह दृढ़ करैत अछि, मुदा ज्योतिक वास्तविक अन्तर्मन, लखिमाक पछिला जीवन, बहिनक परिवर्तन आ शापमुक्तिक सामाजिक परिणाम पर पर्याप्त विस्तार नहि। एहि सीमा सँ चरित्र जीवनीक अपेक्षा लोकविश्वासक उदाहरण रूपमे अधिक परिलक्षित अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘ज्योति पँजियार’ विपन्नता, बहिष्कार, दीर्घ तपस्या आ पुनर्निर्माणक तांत्रिक–भक्ति लोकगाथा अछि। एकर सार्थक साहित्यिक गुण करुणा द्वारा चमत्कारक अपेक्षा तैयार करब आ पहिल विनाशक अन्तिम प्रतिलोम द्वारा सुखान्त रचब अछि। मुदा रोग केँ शापक फल कहबाक लोकविश्वास आ कुष्ठरोगक वास्तविक जीवाणुजनित कारणक अन्तर, दण्डक अनुपातहीनता, स्त्रीक सेवा अवमूल्यन आ प्राणी-मृत्यु केँ ‘बलिदान’ कहलाक शब्दगत समस्या स्पष्ट राखब आवश्यक अछि। ज्योतिक गरिमा चमत्कारक आधिकारिक प्रमाण सँ नहि, हुनकर मनुष्यत्व आ अधिकारसँ जुड़ल अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। ज्योति पँजियार : शापसँ वरदान धरि तांत्रिक–भक्ति गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क २७; PDF पृष्ठ १४०५–१४४४।

कृति २९ : कौवा आ फुद्दी

उपक्रम : भजार-सखी

निकट मित्रता सँ शृंखला-प्रेरित अविश्वास धरि

कथा कौआ आ फुद्दी कैँ भजार-सखी रूपमे स्थापित करैत अछि। आपसी निकटता आ संकटमे साथ देबाक दावा उपक्रमक भावनात्मक आधार अछि। मुदा मुख्य घटना ई सम्बन्धक नैतिक कसौटीपर कठोर परीक्षा अछि—अकालमे जीवित रहबाक संकट जखन व्यक्तिगत सन्तानक जीवन पर आघात करैत अछि, तखन मित्रताक एकरूपता टूटैत अछि।

शृंखला-कथा अपन तकनीक उपक्रमहि मे बतबैत अछि : एक शर्त दोसर शर्त जनमबैत अछि, फेर तेसर, अन्ततः आकस्मिक नाटकीय समापन। एहि संरचनामे पात्रक लगातार लक्ष्यनिष्ठा कथाक हास्य, उत्कंठा आ करुणा उत्पन्न करैत अछि। आलोचनाक प्रश्न अछि जे शब्दक आवर्तनक बीच निर्णयक विवेक किएक निलम्बित रहैत अछि।

अध्याय १ : दुर्भिक्षक विपत्ति

अकाल, बालहिंसा आ मित्रताक नैतिक संकट

कौआ आ फुद्दी गाढ़ सखी छथि। भयावह दुर्भिक्षक समय दुनू अपन-अपन बच्चा खएबाक निश्चय करैत छथि। पहिने कौआक बच्चा दुनू मिलि खा जाइत छथि। एहि दृश्यक वीभत्स प्रभाव कथाक आरम्भहि में पाठक कैं स्तब्ध करैत अछि। प्राकृतिक अभावक पीड़ा व्यक्तिगत प्रियजनक जीवित रहबाक अधिकारसँ भिड़ैत अछि।

फुद्दी अपन बच्चाकैं बचएबाक योजना रचैत अछि। एहि बदलावकैं केवल ‘धूर्तता’ कहि सरल करब पर्याप्त नहि; ओ अपन सन्तानक रक्षा चाहैत अछि, मुदा पहिल चरणमे कौआक बच्चाक प्राणहानिमे सहभागी भेल। एतय नैतिक असमानता अछि : जे हिंसा पहिने स्वीकारल गेल, वैह अपन बच्चाक सन्दर्भमे असह्य होइत अछि। सखी-दूनूक सहमतिक न्यायिकता प्रारम्भसँ प्रश्नाधीन अछि, कारण बच्चासभक स्वतन्त्र अधिकारक उपस्थिति कथा अवहेलित करैत अछि।

लोककथामे अकालक भयावहता अतिशयोक्त रूपमे प्रस्तुत अछि। वास्तविक बालसुरक्षाक परिप्रेक्ष्यमे अभावमे सहायता, भोजन, सामुदायिक सहयोग आ आपात सुरक्षा खोजब उचित उपाय छथि; शिशुहत्या कदापि स्वीकार्य समाधान नहि।

अध्याय २ : शुद्धिकरणक बहन्ना

विलम्बक चालि आ धार्मिक शुद्धताक मिथ्या प्रयोग

फुद्दी कौआ कैं कहैत अछि जे ओकर ठोर अशुद्ध अछि, पहिने गंगामे धोबि आबय, तखन ओकर बच्चा खाएब सम्भव होयत। ई आदेश मातृत्वक रक्षा लेल छलपूर्वक रचल गेल

अछि। शुद्धिकरणक धार्मिक शब्दावली नैतिक अधिकारक भ्रम बनबैत अछि, जखन कि ओकर वास्तविक प्रयोजन समय खींचब अछि।

कौआ गंगामाय सँ पानि माँगैत अछि। उत्तरमे चुक्का अनबाक शर्त भेटैत अछि। एहि क्षण पहिल व्यक्ति द्वारा रचल छल एक निष्पक्ष जकाँ लगैत संसाधन-प्राप्तिक शृंखलामे प्रवेश करैत अछि। गंगा सँ पानि लेबाक लक्ष्य छोट होइतहुँ ओकरा पहुँचबाक प्रक्रिया अब घटक–उपकरणक श्रृंखला पर निर्भर अछि।

ई गाथा धार्मिक पवित्रताक सिद्धान्तक परिभाषा नहि दैत; फुद्दी द्वारा दुरुपयोग कएल पवित्रताक बहन्ना उद्घाटित करैत अछि। कौआक विश्वासक प्रश्न एतय निर्णायक अछि, कारण ओ मूल नैतिक आदेशक न्यायिकता नहि जाँचैत, ओकर क्रियाविधि पूर्ण करबाक ओर भागैत अछि।

अध्याय ३ : कुम्हार आ माटिक खोज

श्रमक परस्पर निर्भरता आ असंगत मांगक विस्तार

कौआ चुक्का लेल कुम्हार लग जाइत अछि। कुम्हार माटि माँगैत छथि; खेत मालिक माटि कोरबाक लेल हरिणक सींगक शर्त रखैत छथि; हरिण सिंह कैं लऽ अनबाक कहैत अछि, जे ओकरा मारि सींग दऽ सकय। एहि क्रममे एक छोट पानि-पात्र बनएबाक प्रक्रिया घातक शिकारक शर्तधरि पहुँचैत अछि।

कथात्मक शृंखला दुनू पक्ष देखबैत अछि : कुम्हारक काम लेल माटिक आवश्यकता वास्तविक उत्पादन-संबंध अछि, मुदा माटि खोदबाक एकमात्र साधन हरिणक सींग किएक, तकर तर्क पाठमे आवश्यक मानि लेल गेल अछि। साधन प्राप्तिक प्रत्येक असामान्य शर्त कैँ प्रश्नबिनु स्वीकार करब शृंखला-कथाक विनोदी विधान अछि।

हरिण स्वयं अपन मृत्यु संभव करबाक बात करैत अछि। ई प्राणी-मानवीकरण लोककथाक विधागत अतिशयोक्ति अछि, वास्तविक पशु–चेतनाक मनोवैज्ञानिक साक्ष्य नहि। कथा एक व्यक्ति कैँ लक्ष्यप्राप्ति लेल दोसरक प्राण खर्च करबाक कड़ी मे बान्हैत अछि—एहि नैतिक विडम्बनाक ओर ध्यान देब आवश्यक अछि।

अध्याय ४ : सिंह आ गायक शर्त

भोजन–शक्ति–शिकारक परस्पर संरचना

सिंह अपना वृद्ध आ शक्तिहीन कहैत अछि; हरिण मारबाक लेल पहिने गाएक दूध माँगैत अछि। गाय दूध देबाक लेल घास, घास कटबाक लेल हाँसू माँगैत अछि। एहि क्रममे मानव श्रमक साधन, पशुपालन, पोषण आ शिकारी–प्राणी सम्बन्ध एक शृंखलामे जुड़ैत अछि। मौखिक कथनमे प्रत्येक माग नेहरर–नेहरर के जोड़ैत अछि।

सिंहक दूध आवश्यक होएब कथा भीतरक विधान अछि, वास्तविक शिकारी प्राणीक पोषणक स्थापित नियम नहि। तथापि साहित्यिक अर्थ ई जे पैघ बलधर प्राणी सेहो दोसर संसाधनपर निर्भर होइछ। सिंहक कमजोरी बलक नश्वरता प्रदर्शित करैत अछि।

घास द्वारा हाँसू माँगब प्रकृतिक मानवीकरण अछि। लोहक उपकरणक जरूरत शृंखला कें लोहार तक आनैत अछि। एहि बिन्दुपर कौआक लक्ष्य बहुत दूर छूटल बुझाइत अछि, पर ओ स्वयं मूल न्यायिक प्रश्नपर विचार नहि करैत। एक निर्णयक संसाधन-शृंखला वृहत्तर प्रणालीक रूप लेइत अछि।

अध्याय ५ : लोहारक दू हाँसू

संचित लोकगीत आ विकल्पक घातक भ्रम

कौआ लोहार लग पहुँछि पूरा शृंखलाक गान करैत अछि—हाँसू सँ घास, घास सँ गाय, गाय सँ दूध, दूध सँ सिंहक शक्ति, सिंह सँ हरिणक सींग, सींग सँ माटि, माटि सँ चुक्का, चुक्का सँ गंगाजल आ अन्ततः फुद्दीक बच्चाक जीवनपर आघात। ई लम्ब गीत मौखिक कथाक स्मृति-शिल्प अछि। हर कड़ी सुनबाक बाद श्रोता आगामी कड़ी अनुमान करए लगैत अछि; पुनरावृत्ति कथा कें श्रव्य लय प्रदान करैत अछि।

लोहार दू हाँसू देखबैत छथि—कारी आ लाल। कौआ लाल चुनैत अछि। रंगक आकर्षण व्यावहारिक जाँचपर भारी पड़ैत अछि। किंतु मूल दृश्य लोहार स्पष्ट चेतावनी दैत छथि कि नहि, तकर उल्लेख नहि; कौआ तपल धातुक जोखिम नहि पहचानैत। एहि कारण अन्तिम दुर्घटना पूर्वसूचित दैवी दण्ड नहि, जानकारीक अभाव आ सावधानीक असफलता अछि।

लाल हाँसू रंगक प्रतीक रूपेँ प्रलोभन बनैत अछि, मुदा तथ्य एतबे जे ओ आगिमे तपल छल। कृतिक नैतिक पठनमे कामक साधन चुनबाक समय रूप मात्र नहि, सुरक्षा जाँचबाक महत्त्व खुलैत अछि।

अध्याय ६ : अन्तिम भूल

तपल धातु, दुर्घटना आ योजनाक अनपेक्षित परिणाम

कौआ नव तपाओल लाल हाँसू अपन लोलमे दबैत अछि आ छटपटा प्राण गमबैत अछि। ई कथा-अन्तक आकस्मिक आ कठोर दृश्य अछि। जकरा गंगाजल सँ ठोर धोबाक लेल घरसँ पठाओल गेल छल, ओकर ठोरे गर्म हाँसू द्वारा घातक चोट पबैत अछि। ठोर–शुद्धिकरण आ ठोर–दहनक एहि उलटावमे कथा विडम्बना रचैत अछि।

कौआक मृत्यु फुद्दी द्वारा प्रत्यक्ष आक्रमणसँ नहि, पर फुद्दीक शुद्धिकरणक छलसँ उत्पन्न लम्ब यात्राक अन्तर्गत घटैत अछि। कारण–श्रृंखलाक विभिन्न स्तर छथि : प्रारम्भिक धोखा, प्रत्येेक अनावश्यक शर्त, लाल उपकरणक चुनाव आ हाँसू गरम होएबाक अज्ञान। एहि सभकेँ एकरे समान दण्ड–फलक सरल सिद्धान्त नहि बनाओल जाए।

कौआ द्वारा फुद्दीक बच्चा खाएबाक योजना गंभीर अनिष्ट थीक, मुदा ओकरा मारब उचित न्याय-दण्ड छल कहबाक प्रमाण नहि। कृति दुखान्त करुणा उत्पन्न करैत अछि; आधुनिक पाठक निर्दोष बच्चाक रक्षा आ कौआक प्राणरक्षाक प्रश्नकेँ एकसंग राखि सकैत अछि।

अध्याय ७ : शृंखलाक शिक्षा

पुनरावृत्तिक शिल्प आ नीति-उपसंहारक सीमा

अन्तिम अध्याय मित्रताक भ्रम, कौआक भोलापन आ फुद्दीक धूर्तता कैं गाथाक शिक्षा मानैत अछि। कथावाचक कहैत अछि जे छोट काजो एक संसाधनक कारण क्रमश: दोसर संसाधनपर निर्भर भऽ सकैत अछि। एहि शिक्षाक साहित्यिक शक्ति अनुक्रिया अछि : प्रत्येक माग पिछिला कड़ी कैं अगिला दिश ठेलैत अछि।

मुदा गाथाक आरम्भिक नैतिक परिस्थिति बच्चासभक हिंसासँ जुड़ल अछि, आ अन्त एक प्राणीक दुर्घटनात्मक मृत्यु सँ। तैं ‘फुद्दी बच्चा बचा लेलक’ कहबाक संग पहिल बच्चाक प्राणहानि, मित्रताक विफलता आ अनावश्यक शर्तसभक विनाशकारी गति पर चर्चा जरूरी अछि। फुद्दीक रणनीति सफल अछि, मुदा करुणामय सहयोगक आदर्श नहि।

शृंखला-कथाक विधागत विशेषता पुनरावर्तन आ स्मृति अछि। मौखिक प्रस्तुति मे श्रोता सेहो गायकक अगिला वाक्य पूरा करि सकैत। एहि शिल्पगत सम्पन्नता कैं क्रूर घटना सँ अलग अनदेखा करब उचित नहि; सशक्त लोककथामे मनोरंजन आ कठिन नैतिक प्रश्न एकसंग संभव छथि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

शृंखला-कथाक समय आ कारण

‘कौवा आ फुद्दी’ मे घटना-गति एकके बाद एक मागक पुनरावृत्तिसँ उत्पन्न अछि। कथा सीधाक साधारण उद्देश्य—ठोर धोबि आबब—कैं असंख्य परोक्ष साधनपर आश्रित करैत अछि। गंगा सँ चुक्का, चुक्का लेल माटि, माटि लेल सींग, सींग लेल सिंह, सिंह लेल दूध, दूध लेल घास, घास लेल हाँसू—ई आवर्तन कथाक मूल संरचना अछि। प्रत्येक कड़ीक प्रत्यक्ष हेतु पर्याप्त सामान्य कारण नहि, तथापि मौखिक लोकशैलीमे ई अनिवार्य लगए लगैत अछि। लोकगीत एही शृंखलाकैं श्रुतिस्मृतिमे अंकित करैत अछि।

मातृत्व, मित्रता आ नैतिक असमानता

दुनू पक्ष अकालमे अपन बच्चा खएबाक योजना बनबैत छथि; कौआक बच्चाक मृत्यु भेलापछि फुद्दी अपन बच्चा बचबाक चाहैत अछि। मातृत्वक एहि आग्रहक मानवीय मूल्य अछि, मुदा पहिने दोसरा बच्चाक हत्या मे सहभागिता ओकर नैतिक स्थितिकैं जटिल बनबैत अछि। मित्रताक नामपर समान संकट झेलबाक आदर्श तखन टूटैत अछि, जखन एक पक्ष अपन प्राणरक्षाक लेल दोसरक जीवन अधिक मूल्यवान मानैत अछि। कथा फुद्दीक चतुराईकैं सफलता कहैत अछि, मुदा ई व्यक्तिगत अस्तित्वक रक्षा आ सामूहिक भरोसक ध्वंस दूनू अछि।

धार्मिक शुद्धता बनाम जीवनक अधिकार

फुद्दी द्वारा गंगाजल सँ ठोर धोबाक माग वास्तविक मूल अपराधकेँ उचित नहि बनबैत। पवित्रताक बहन्ना हत्या-इच्छाक मार्गमात्र विलम्बित करैत अछि। एही रूपमे कृति प्रश्न उठबैत अछि जे बाह्य शुद्धिकरण द्वारा हिंसक निर्णय नैतिक रूपसँ शुद्ध होइ सकैत अछि कि नहि। धार्मिक आस्थाक स्वयं दोषारोपण नहि, ओकर छलपूर्ण उपयोग आलोचनाक विषय अछि।

श्रम, उपकरण आ निर्भरता

कुम्हार, खेत-मालिक, लोहार, सिंह, गाय आ घासक मांगसभ लोकजीवनक विविध श्रम तथा प्रकृतिक परस्पर निर्भरता देखबैत अछि। मगर हर कड़ीक आवश्यकताक तर्क समान नहि। चुक्काक लेल माटि एक वास्तविक संसाधन, हरिणक सींग द्वारा माटि खनब कृतिक असामान्य विधान, सिंह द्वारा हरिणक मृत्यु आ पशुदूधक शर्त कल्पनात्मक रूपान्तरण छथि। आलोचना एहि सभकेँ एक समान पर्यावरण-विज्ञानक प्रतिपादन नहि बनाओत।

ज्ञानहीन चुनाव आ आकस्मिक दुर्घटना

कौआ तपल लाल हाँसू चुनेबाक समय ओकर ताप नहि जनैत अछि। मृत्यु तुरन्त होइत अछि। एतय दुर्घटनाक प्रत्यक्ष कारण गर्म धातु केँ लोलमे दबाएब अछि; शृंखलाक पूर्व शर्त सभ केवल ओहि ठाम पहुँचबाक कारण। मुदा कथा फुद्दीक छल केँ अन्तिम मृत्यु सँ जोड़ैत अछि। कथात्मक कारणसमूह आ प्रत्यक्ष दुर्घटनाक भौतिक कारणक भेद राखला पर अन्याय, अज्ञान आ सुरक्षा-प्रश्न अधिक साफ देखाइत अछि।

रस, काव्यशिल्प आ द्रुत दुखान्त

सात अध्यायक चौदह चित्र-संकेत अछि। अकालक वीभत्स आरम्भ, गंगामाय सँ शुद्धिकरणक कथा, कुम्हार–माटि–सींग–सिंह–गाय–घासक श्रृंखला, लोहारक गीत आ लाल हाँसूसँ अन्तिम मृत्यु कथात्मक आरोह रचैत छथि। मौखिक आवर्तन हास्य आ स्मरणीयता उत्पन्न करैत, मुदा अन्तक मृत्यु करुण–विस्मयमे परिणत करैत अछि। एहि नाटकीय विधामे पुनरावृत्ति केवल सामग्री दोहरब नहि, उद्देश्यक दूर होइत जाएबाक काव्यात्मक अनुभव अछि।

बालसाहित्यक पाठकीय जिम्मेदारी

कथा स्वयं निर्दोष बच्चाक प्राणहानि आ पशुक मृत्यु चित्रित करैत अछि। एकरा बालपाठक समक्ष केवल ‘चतुर फुद्दी’क मनोरंजक सफलता कहब पर्याप्त नहि। बालजीवनक सुरक्षा, अभावक समय सामूहिक सहयोग, अनावश्यक हिंसासँ दूरी, सुरक्षित उपकरणक उपयोग आ असत्य मागपर प्रश्न करबाक महत्त्व जोड़ि पढ़ब कृतिक जिम्मेदार विवेचन अछि। मूल पाठक करुणाघटना बदलि नहि देब, मुदा ओकर आधुनिक अर्थ विवेकपूर्वक खोलब जरूरी अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘कौवा आ फुद्दी’ मैथिली लोकमौखिकताक श्रृंखला-रूपक एक प्रभावकारी उदाहरण अछि। एकमात्र बहन्नाक बाद अनवरत मागसभक कारण पाठक अन्तिम परिणाम धरि कौतूहलसँ चलैत अछि, आ तपल हाँसू एक क्षणमे पूरा यात्रा रोकि दैत अछि। एकर

महत्त्वपूर्ण शिल्पलोकगीतक संचयन, साधन-निर्भरता आ विडम्बनापूर्ण अन्त अछि। लेकिन कौआ–फुद्दीक बालहिंसा, मित्रता-विघटन आ अन्तिम मृत्यु कैं सरल चतुराईक विजय घोषित करब उचित नहि। असमान न्याय आ असुरक्षित निर्णयक जटिलता स्वीकारल गेलापर गाथाक सांस्कृतिक गहराइ बढ़ैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। कौवा आ फुद्दी : शृंखला-कथाक दुखान्त — लोभक अन्तिम मूल्य। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क २८; PDF पृष्ठ १४४५–१४६९।

कृति ३० : माधव सिंह आ अमता गाम

उपक्रम : संगीत आ पानि

राजकीय इतिहासकेँ रसात्मक स्मृतिमे बदलबाक उद्घोष

उपक्रम युद्धक बदला गान, सेना बदला राग आ शस्त्रक बदला पानिक भाषामे गाथा शुरू करैत अछि। मिथिलाक राजा माधव सिंह, नेपालक गबैया भाइ, अमताक खीरी गाछ आ राजाक अन्तिम इच्छा—चारि वस्तु कथाक आगामी रूपरेखा बनबैत अछि। शुरुआतहि सँ ई व्यक्तिगत चरित्रक विजयगाथा नहि, प्रकृतिक आपत्ति सँ संगीतक सामुदायिक शरण आ मृत्यु–वियोगक शोक धरि पहुँचबाक योजना अछि।

‘आकाशक बुन्नीमे ध्रुपदक थाप’ सन रूपकीय भाषा मौसमकेँ संगीतक दृश्य बनबैत अछि। एहिठाम नायकत्व सामरिक शक्ति नहि, सांगीतिक श्रम आ सुनेबाक क्षमता अछि। राजा अन्तमे श्रोता बनैत छथि—ई भूमिका परिवर्तन कृतिक महत्त्वपूर्ण कलात्मक केन्द्र अछि।

अध्याय १ : सुखाएल मिथिला

दुर्भिक्षक विस्तृत दृश्य आ प्रकृतिक मौन

मिथिलाक डबरा, चभच्चा, खेत, पोखरि आ धानक बीया सुखाएल देखाओल गेल अछि। सूखल माटि आ किसानक आकाशपर टिकले नजरि सँ प्राकृतिक अभाव सामाजिक त्रासदी बनैत अछि। राजाक रात्रिक आकाशक निरीक्षण आ खाली आकाशक छवि द्वैध स्थिति रचैत अछि—प्रजा हताश, शासक चिन्तित। एहि दृश्यनिष्ठ वर्णनक बल एहि बातमे अछि जे कथा वर्षा-उपायसँ पहिने जलाभावक मानवीय अर्थ स्थापित करैत अछि।

मुदा ‘पानिविहीन मिथिला’क रसात्मक अतिशयोक्ति कैं तत्कालीन मौसम अभिलेख मानब उचित नहि। गीत–बरखा कथाक प्रभावी सिद्धान्त होएबाक लेल सुखाड़क पैघ बिम्ब चाही, तथापि कतिक दिनक अनावृष्टि वा कुन वर्षक घटना छल से स्रोत नहि बतबैत। ऐतिहासिक काल–वर्ष गढ़ब समीक्षाक कार्य नहि।

राजा दरबार बजबैत छथि। आपत्तिक सामाजिक समाधान लेल प्रकृतिसँ मानव ज्ञानदिस मुड़बाक ई क्षण कथाक मूल वैचारिक दिशा बदलैत अछि।

अध्याय २ : दरबारक मंत्रणा

जलसंकटमे कला आ राजकीय निर्णय

मंत्री, पण्डित आ जनप्रतिनिधि उपाय सुझबैत छथि—यज्ञ, दान, इनार खनन। एहि विकल्पमे सांस्कृतिक आ व्यावहारिक उपाय संग उपस्थित अछि। एक वृद्ध सभासद नेपाल दरबारक चारि भाइ संगीतज्ञक उल्लेख करैत छथि, जे कथित रूपसँ राग गाबि

वर्षा करा सकैत छथि। दरबारमे किछु लोक मुस्करबैत छथि, मुदा राजा आग्रह पठएबाक निर्णय लैत छथि।

राजाक उदारता एतय नव उपाय सुनबाक तत्परतामे अछि। लेकिन जलसंकटक वास्तविक प्रशासनिक उपाय—पेयजल, जलाशय, खाद्य–राहत आ सिंचाइ—कथामे गौण भऽ जाइत अछि। लोककथाक नाट्यसंकल्प एक विशेष कला चमत्कारपर केन्द्रित अछि; आधुनिक नीति-दृष्टि मे वर्षाक भरोसपर सब उपाय छोड़ब उचित नहि।

नेपाल दरबारसँ आग्रह सांस्कृतिक आदानप्रदानक कथा-तत्त्व अछि। विशेष संगीतज्ञसभक इतिहासक पुष्टि बिना एहि विशिष्ट समारोहकेँ प्रमाणित राजकीय घटना कहल नहि जाए।

अध्याय ३ : नेपालसँ दू भाइ

संगीतक श्रम, सहयोग आ स्थलान्तरक अर्थ

राधाकृष्ण आ करताराम नेपालसँ मिथिला अबैत छथि। ओ ध्रुपद परम्पराक गबैया छथि। संग तानपुरा आ अभ्यासक स्मृति आनैत छथि। कृषिक्षेत्रक विनाश देखी ओ गायनकेँ सामान्य दरबारी प्रदर्शन नहि, जनजीवनक आशाक काज बुझैत छथि। संगीतक सामाजिक उत्तरदायित्वक ई रूप कथा केँ केवल राजकीय मनोरंजनसँ अलग करैत अछि।

मिथिलाक पखावजी भीम मल्लिक सहयोग लेल अबैत छथि। दू स्वर आ एक थापक त्रयी कृतिक निर्णायक कलात्मक समूह बनैत अछि। एहि सहयोगमे सीमा-पार सांस्कृतिक काजक कल्पना अछि—नेपालक कलाकार आ मिथिलाक कलाकार सामूहिक संकटमे एक मंचपर छथि। शिल्पगत रूपसँ ध्रुपद गानक तैयारी, तानपुराक स्वर आ पखावजक प्रतीक्षा दृश्यात्मक तनाव बनबैत अछि।

भीम मल्लिकक योगदान केवल संगतकारक छोट भूमिका नहि। पाँचम अध्यायमे पखावजक बोल वर्षाक दृश्यसँ जोड़ल गेल अछि; तैं कथाक कथित चमत्कार केवल गबैया भाइसभक एकल उपलब्धि नहि, सामूहिक संगीतक परिणाम बनैत अछि।

अध्याय ४ : नोम-तोम

आलापक काल–रचना आ मेघक आगमनक अद्भुत दावा

दू गबैया मेघ-मल्हारक नोम-तोम आलाप आरम्भ करैत छथि। पखावज एखन मौन अछि। सुर धीरे-धीरे विस्तृत होइत अछि; दरबार सुनबाक श्रम आ प्रतीक्षा साझा करैत अछि। एहि मौन आ स्वरक क्रमबद्ध आयोजन सँ पाठक संगीतक रूपगत अनुभव पबैत अछि, भले ध्वनि वास्तविक रूपमे उपलब्ध नहि।

आलाप समाप्त होएबाक समय आकाशमे घटा उमड़बाक सूचना अबैत अछि। कथा संगीत आ मेघक कालगत संयोग कैं कारण-सम्बन्धक रूप दैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई प्रकृतिक मानवीकरण आ अद्भुतरसक उत्कृष्ट दृश्य अछि; वैज्ञानिक दृष्टिसँ विशेष राग स्वयं वृष्टि सुनिश्चित करैत अछि—एहन प्रमाण नहि।

पखावजक एखन नहि बाजब एक शिल्पात्मक विलम्ब अछि। गायक कहैत छथि जे मेघ आनब अधूरा काज अछि, बरसाएब बाँकी। एहि कथनसँ संगीतक आरोहक पछिला चरणक अपेक्षा बनैत अछि।

अध्याय ५ : पहिल बुन्नी

ध्रुपदक बोल, पखावज आ वर्षाक मानवीय प्रतिक्रिया

बखतदश आरम्भ होइत अछि आ भीम मल्लिकक पखावज जागैत अछि। घटा गहिर होइत अछि आ पहिल बुन्नी खसैत अछि। आकाशक बुन्नी कैं श्रुति–लयक परिणाम देखएबाक शिल्प प्राकृतिक घटना कैं कलात्मक पराकाष्ठा बना दैत अछि। माटिपर पानिक पहिल गन्धक चित्रण इन्द्रियानुभवक विविध रूप जागृत करैत अछि।

दरबारक लोक कृतज्ञता, हँसी आ कनबाक भाव व्यक्त करैत छथि। एहि भागमे संगीतक सामाजिक प्रभाव वर्षा-सिद्धिक वैज्ञानिक दावासँ भिन्न देखल जा सकैत अछि। लोकसंगीत सामुदायिक स्मृति, सहानुभूति आ सामूहिक आशाक वाहक होएत—ई अनुभव सम्भव अछि। मुदा ‘साँच राग सँ आकाश सुनैत अछि’ कथन काव्यात्मक उपमा अछि।

दू गबैया आ पखावजी अपन साधनामे लीन रहैत छथि। समारोहक बाह्य चमत्कार आ संगीतज्ञक आन्तरिक एकाग्रता बीच विरोध गाथाक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

अध्याय ६ : दरबारमे पानि

अतिवृष्टिक दृश्य, जनपरीक्षण आ संगीतक विराम

मेघ-मल्हारक गायनक बीच बरखा एतेक बढ़ैत अछि जे दरबारक फर्शपर पानि बहैत अछि। एहि दृश्यक नाटकीय अर्थ अछि : जकर राज्य पानि लेल तरसैत छल, ओकर सर्वोच्च राजकीय स्थल स्वयं पानिसँ भरि जाइत अछि। प्रकृतिक संकट–समाधान राजा आ सामान्य लोकक बीचक पदविभाजन अस्थायी रूपसँ मिटबैत अछि—दूनू पानिक आगमनसँ प्रभावित छथि।

माधव सिंह गाम-गाम दूत पठा पूछबैत छथि जे कतहु सुखाड़ बाँचि तँ नहि गेल। राजाक ई जिज्ञासा केवल अद्भुत घटना देखि प्रसन्न होएब नहि, राज्यक व्यापक स्थितिक परीक्षणक काज अछि। दूतसभ बतबैत छथि जे सभ दिस बरखा भेल। तखन राजा गायन विश्रामक संकेत दैत छथि। कथा एकरा राजा द्वारा सामूहिक आवश्यकताक निरीक्षण मानैत अछि।

गायक थम्हितो वर्षा जारी रहैत अछि। एहि परिणामक साहित्यिक अर्थ गानक असर आकाशक भीतर बसि गेल मानब अछि। मुदा मौसम-संबंधी प्रत्यक्ष प्रमाणक अभावमे एकर विज्ञानगत व्याख्या दावाक रूपमे निश्चित नहि होएत।

अध्याय ७ : राजाक कृतज्ञता

पुरस्कारक अर्थ : धनक बदला सुरक्षित साधनास्थल

वर्षापछि खेत, पोखरि आ डबरामे पुनर्जीवनक दृश्य अछि। राजा कलाकारसभक उपकारक उत्तरमे धन अथवा पदक बदला अमता गाममे बसोबासक घर–व्यवस्था दैत छथि। एहि चयनमे कला कैं जीवनभरि साधनाक समय आ स्थिरता चाही—एहि सामाजिक तथ्यक मान्यता अछि। राजा केवल तत्काल पुरस्कार नहि दैत, कलाकारक पछिला रियाजक सम्भावना संस्थागत करबैत छथि।

अमता गामक ‘खीरी गाछ’क फलमे दूध होएबाक उल्लेख लोककथात्मक अद्भुत विधान अछि। वनस्पतिक वास्तविक परिचय वा दूध-जकाँ स्रावक सत्यापन एहि स्रोतमात्रसँ संभव नहि। एहि गाछक साहित्यिक काज गामकैं एक स्मृति-प्रतीक बनएब अछि—जतय संगीत, आतिथ्य आ अमृत-जकाँ जीवनरस मिलैत अछि।

दरबारक उद्धारक घटना जखन गामक नियमित जीवनमे बदलैत अछि, तखन कहानीक केन्द्र सूखल खेतसँ कलाकारक नया निवास दिस खसैत अछि। कला आपदाक उपकरण मात्र नहि, राजकीय-सांस्कृतिक सम्बन्धक दीर्घ आधार बनैत अछि।

अध्याय ८ : अमता गामक साँझ

राजाक श्रोता-रूप आ संगीतसभाक समता

माधव सिंह अमता गाम ध्रुपद सुनबाक लेल नियमित अबैत छथि। राजसी तामझाम घटैत अछि; साँझक यात्रा, खीरी गाछक छाह आ स्वरक बैसक प्रधान बनैत अछि। कथक स्पष्ट करैत अछि जे एहि सभामे सिंहासन नहि—राजा, गबैया, गामक लोक आ चिड़ै सभ एकहि स्वरविश्वक भाग छथि। ई समानता संगीतक सामाजिक कल्पनामे अछि, राजकीय वर्गव्यवस्थाक वास्तविक समाप्तिक प्रमाण नहि।

राजाक बुढ़ापा आबैत अछि, मुदा अमताक प्रेम नहि घटैत। जीवनक उत्तरार्धमे संगीत विलासिता नहि, व्यक्तिगत सांत्वना आ स्मृतिक केन्द्र बनैत अछि। कथा राजाक पदवाचक गौरवकेँ धीरे-धीरे ‘सुननिहार’ व्यक्ति मे रूपान्तरित करैत अछि। एहि चरित्र-गति मे भावात्मक सघनता अछि।

संगीतक सार्वजनिकता एतय महत्वपूर्ण अछि। कलाकारकेँ स्थिर निवास दियाओलासँ ओहि गामक लोक सेहो ध्रुपद सुनैत छथि। कला राजमहलक केन्द्रसँ गामक सामूहिक जीवनधरि पसरैत अछि।

अध्याय ९ : अन्तिम इच्छा

मरणासन्न व्यक्तिक गरिमा आ जीवनभरि सुनल संगीतक स्मृति

राजाक मृत्यु निकट अछि। वैद्य निरुपाय छथि; राजा राज्यव्यवस्था वा उत्तराधिकारक चर्चा नहि करैत, अपनाकेँ अमता लऽ चलबाक आग्रह करैत छथि। ओ एक बेर ध्रुपद

सुनए चाहैत छथि। एहि इच्छाक भावात्मक महत्त्व अछि : जकरा कखनो संगीते मिथिलाक जीवित रहबाक आशा देलक, ओ अन्तिम क्षणमे ओही स्वरमे सांत्वना खोजैत अछि।

मृत्युक निकट समयमे व्यक्तिक निजी इच्छा कैं सम्मान देब मानवीय देखभालक अंग भऽ सकैत अछि। मुदा अस्वस्थ व्यक्तिकैं पालकीमे दुरूह यात्रा कराएब सुरक्षा-जोखिम सहित अछि। कथा एहि यात्राकैं प्रेमक गरिमा बनबैत अछि, चिकित्सा-परामर्शक व्यवहारिक विधान नहि। इच्छाक सम्मान आ व्यक्ति-जीवनक सुरक्षा दूनूक सम्बन्ध सम्यक् विचारणीय अछि।

पालकी द्वारा अमताक यात्रा कृतिक प्रमुख प्रतीक बनैत अछि : जीवनक यात्रा अंतिम पथपर चलैत अछि, मुदा मंजिल पहुँचबाक समय सीमित अछि। कथा एतय संघर्षक परिणामक पहिनेहि दुखान्तक आभास रचैत अछि।

अध्याय १० : रस्तेमे

अधूरा यात्राक शान्त दुखान्त

अमता पहुँचबाक पहिने माधव सिंहक साँस पालकीमे थम्हि जाइत अछि। कथा कोनो युद्ध, चमत्कारी उपचार वा भयावह शापक माध्यमसँ मृत्यु नहि रचैत; सामान्य मानवीय कालसीमा द्वारा अन्तिम इच्छा अधूरा छोड़ि दैत अछि। एही संयममे कृतिक करुण सौन्दर्य अछि। यात्रा जारी रहबाक बाह्य सम्भावना आ यात्रीक जीवन समाप्ति बीच व्याकुल असमानता बनैत अछि।

साँझक दृश्य मे अमता आगाँ अछि, गायक प्रतीक्षारत होएताह, वाद्य मिलाओल गेल होएत—ई सभ अनुमानक रूपमे कथावाचकक भावमय भाषा अछि। मूल पाठ एहि प्रतीक्षा कैँ दृश्यात्मक विरोध बनबैत अछि : गन्तव्य उपलब्ध, मुदा पहुँचबाक समय समाप्त। ‘राजा रस्तेमे रहि गेलाह’ शीर्षकक अर्थ साहित्यिक शोकमे बदलैत अछि।

एहि घटनाकेँ 'नियतिक अन्याय' कहनाइ अलंकारात्मक अछि; कोनो विशेष दैवी दण्डक कारण स्रोत नहि दैत। समीक्षामे मृत्युक अनिश्चितताकेँ मनुष्यक अस्तित्वक सामान्य सीमा रूपमे पढ़ब अधिक सुसंगत अछि।

अध्याय ११ : अमताक शोक

स्मृतिक लोकगीत आ शोकक सांगीतिक पुनर्निर्माण

अमता गाम राजाक मृत्यु-समाचार सुनैत अछि। खीरी गाछक फलसँ दूधक बदला नोर टघरबाक लोकविश्वासक उपमा प्रकट होइत अछि। कला–स्नेहक पूर्व अमृतमय गाछ आब करुण भावक प्रतीक बनैत अछि। प्रकृतिक मानवीकरण कृतिक अन्तिम दृश्यकेँ उदास लोकगीतक भाषा दैत अछि।

राधाकृष्ण आ करताराम किछु काल धरि मंचपर नहि बैसैत छथि। राजाक अनुपस्थिति कलाकारक संगीत-अर्थकेँ बदलि दैत अछि। बादमे तानपुरा फेर बजैत अछि, प्रथम राग मेघ-मल्हार होइत अछि। शोकक उत्तरमे संगीत स्वयं नव स्मृतिक रूप ग्रहण करैत

अछि। ‘बिनु मेघ बुन्नी’क आखिरी दृश्य अन्तिम श्रुति–लोकविश्वास अछि, मौसमक प्रमाणित घटना नहि।

गाथाक अन्तमे राजा अमता भौतिक रूपमे नहि पहुँचि सकलाह, मुदा लोकस्मृतिमे सदाक लेल जुड़ल रहि जाइत छथि। कहानी एहने विरोधमयी निष्कर्ष रचैत अछि : अधूरा यात्रा आ पूर्ण सांस्कृतिक उपस्थिति। एतय कलाकार, श्रोता, भूमि आ वर्षाक अन्तर्सम्बन्ध मिथिलाक सामूहिक स्मृतिस्थल बनैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

आपदा–उद्धार सँ मृत्यु–स्मृति धरि कथाक संरचना

‘माधव सिंह आ अमता गाम’क एगारह अध्यायक पहिल छओ अध्याय सुखाड़ आ लोककथात्मक संगीत-उद्धारपर केन्द्रित छथि। सातम–आठम अध्यायमे कृतज्ञता सांस्कृतिक आश्रय आ गामक सांगीतिक बैसक बनैत अछि। अन्तिम तीन अध्याय राजाक जरा, मृत्यु आ स्मृतिक करुण विधान रचैत अछि। एहि संरचनामे बाहरी सामूहिक संकट अन्ततः आन्तरिक व्यक्तिगत विरहमे बदलैत अछि। एके राग पहिने जीवनदायी कल्पना, बादमे स्मृतिदायी सहारा बनैत अछि।

ध्रुपद, नोम-तोम आ पखावजक संवेदनात्मक भाषा

कथामे ध्रुपदक आलाप, नोम-तोम, बखतदश, तानपुरा आ पखावजक उल्लेख अछि। संगीतशास्त्रीय रूपक वास्तविक शब्दसँ कथा कैँ विशेष स्वरगत देह भेटैत अछि, सामान्य जादुई गान सँ अलग। भीम मल्लिकक थाप गायनक संरचनात्मक आधार अछि। आलापक आरम्भसँ बोल-लय धरि काव्यात्मक आरोह वर्षाक दृश्यकैँ समयदृष्टिसँ व्यवस्थित करैत अछि। संगीतज्ञक निष्ठा दर्शकक उत्साहसँ स्वतंत्र रहैत अछि।

संगीत आ मौसमक प्रमाणभेद

कथानक रागक बाद मेघ उमड़ब आ बरखा पड़ब कैँ एक विश्वसनीय कथा-कारण मानि रचैत अछि। गाथाक अन्तिम बुन्नी सेहो राजाक स्मृतिसँ जोड़ल गेल अछि। एही घटनाक प्रमाणक स्तर साहित्यिक अछि; मौसम विज्ञानक स्थापित कारणक रूपमे प्रयोग नहि होएत। राग जनभावना, सामाजिक एकता आ स्मृतिक अनुभव बदलि सकैत अछि—ई मानवीय प्रभाव संगीतसँ मौसम बदलबाक अलौकिक दावासँ भिन्न अछि।

दरबारसँ गाम धरि सांस्कृतिक स्थानान्तरण

नेपाल दरबारक गबैया मिथिला अबैत छथि आ अमता गाममे बसैत छथि। सांस्कृतिक सम्पर्कक ई कथा राजसी प्रतिष्ठासँ गामक साझा संगीतिक लोकजीवन धरि अग्रसर होइत अछि। कलाकारक पुरस्कार धन नहि, निवास आ रियाजक निश्चिन्त समय अछि। कला कैँ जीवनयापनक आधार, जगह आ श्रोता चाही—कृतिक भीतर ई एक व्यापक सांस्कृतिक नीतिक विचार अछि। विशेष घटनाक प्रमाणित स्थान–कालक दस्तावेज स्रोत नहि दैत, तैं लोकस्मृति आ अभिलेखीय इतिहासक अन्तर मानल जाए।

राजा श्रोता बनैत छथि

माधव सिंहक चरित्रक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन सत्ता–स्वामित्व सँ श्रवण–सहभागिता धरि अछि। राजसी सिंहासनक बदला गाछतर बैसक, राजाज्ञाक बदला संगीत सुनबाक धैर्य, परिहासक बदला रागक प्रतीक्षा कृतिक मानवीय केन्द्र अछि। संगीतक सम्मुख साझा ध्यानक क्षण सामाजिक समताक प्रतीक बनि सकैत अछि, यद्यपि वास्तविक जाति अथवा वर्गसंरचना खत्म भेलाक तथ्य नहि।

खीरी गाछक मानवीकरण

अमताक गाछ पहिने अमृतमय फल, फेर राजाक मृत्युपर नोर टघरबाक बिम्ब बनैत अछि। एहि द्वैध उपयोगसँ एक भौगोलिक स्थल जीवनक उपहार आ शोकक स्मारक बनैत अछि। लोककथात्मक दुग्ध-फल एवं अश्रु-फल वनस्पति विज्ञानक साक्ष्य नहि; गीतात्मक अलंकार छथि। गाछक छाहे बैसक रचैत अछि—प्रकृतिक उपस्थिति केवल वर्षामे नहि, संगीतक दैनन्दिन आश्रयमे सेहो अछि।

मृत्यु–अन्तिम इच्छा आ अस्तित्ववादी अर्थ

राजा जकर आदेशसँ नेपाल सँ कलाकार आयलाह, वैह अन्तिम बेर राग सुनबाक इच्छा पूरा नहि कऽ सकलाह। कथा एतय मानवक सीमा उद्घाटित करैत अछि—सत्ता, धन आ कृतज्ञता मृत्यु-कालकेँ नियन्त्रित नहि करि सकैत। यात्राक असफलता साहित्यिक दृष्टिसँ कृतिक चरम सत्य अछि, कारण पहिल चरणक चमत्कारिक बरखा सँ विपरीत

अन्तिम चरणमे चमत्कार नहि घटैत। ई दार्शनिक विरोध कृतिक भावनात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘माधव सिंह आ अमता गाम’ लोकगाथाक अलौकिक वर्षा-विधान कैँ संगीत, कलाकार–राजा सम्बन्ध आ नश्वर जीवनक करुण स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। कृतिक स्थायी महत्त्व वर्षा 'करएबाक' वैज्ञानिक सिद्धान्तमे नहि, लोकसमुदायक आशा कैँ सांगीतिक रूप देब, कलाकार लेल स्थिर जीवनस्थानक मूल्य पहिचानब आ राजाक अधूरा इच्छा सँ सांस्कृतिक विरासत बनएबामे अछि। ऐतिहासिक पात्रसभक निश्चित प्रमाण अनुपस्थित रहबाक सीमा स्पष्ट करितो कृतिक काव्यात्मक उपलब्धि कम नहि होइत। बरखाक बुन्नी आ ध्रुपदक थापक संयुक्त बिम्ब कृतिक स्मृतिमे नायकत्वक बदला श्रवण, विनम्रता आ नश्वरता प्रतिष्ठित करैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। माधव सिंह आ अमता गाम : राग मेघ-मल्हार, बरखा आ एकटा राजाक अन्तिम यात्रा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क २९; PDF पृष्ठ १४७०–१५५०।

कृति ३१ : मोतीसाएरि

उपक्रम : मोरंग

शून्य कोरा सँ शापित राज्य धरि

मोरंगक राजा भीमसेन निःसन्तान छथि; कथा एकटा यज्ञोत्तर कन्याक जन्मसँ शुरू भऽ राज्यक नाशपर समाप्त होइत अछि। उपक्रम पहिनेसँ तीन लोभ पहिचानैत अछि—पण्डितक निजी लोभ, राजाक सन्तान–वंशक लिलसा आ राजसत्ताक विस्तारक लोभ। ई पूर्वघोषणा पात्रसभक काज कैँ नैतिक श्रृंखला मानएबाक काव्यात्मक व्यवस्था अछि।

स्रोत स्पष्ट कहैत अछि जे मोतीसाएरि सर्वाधिक निर्दोष छलीह, मुदा सबसँ अधिक दण्ड भोगलीह। एहि तथ्यसँ कृतिक नारीकेंद्रिक आलोचनाक आधार बनैत अछि। जकर विषयमे दरबार निर्णय लैत अछि, ओकर इच्छा आरो देर धरि कथामे लगभग अनुपस्थित अछि। उपक्रमक त्रासदी केवल शापक नहि, संस्थागत अविवेक आ परस्पर सत्ता-प्रलोभनक परिणति अछि।

अध्याय १ : यज्ञक फल

सन्तानक स्वागत आ नियतिक पूर्वनिर्मित भय

निःसन्तान राजा भीमसेन आ रानी यज्ञ करबैत छथि। कन्या जन्मलाक बाद उत्सव मनाओल जाइत अछि, बन्दी मुक्त होइत छथि आ अन्न बाँटल जाइत अछि। एहि स्वागतक महत्त्व अछि जे कन्या होएब राज्यक प्रसन्नता घटबैत नहि। राजकीय उत्तराधिकारक अभावक बावजूद सन्तानक आगमन स्नेहक विषय बनैत अछि।

नाम ‘मोतीसाएरि’ सौन्दर्य आ गहिराइक संयुक्त प्रतिमा अछि। कथावाचक कुण्डलीमे असाधारण योगक पूर्वसंकेत देइत अछि। एहि उपक्रमसँ कन्याक जीवनक स्वतंत्र सम्भावना तत्काल दैवी निर्धारणक आवरणमे पड़ैत अछि। शास्त्रीय भाग्यवादक भाषा नायकाक भविष्यक जिज्ञासा बनबैत अछि, मुदा कन्याक वास्तविक जीवनाधिकार जन्मक क्षणसँ ओकर स्वत्व अछि, कुण्डलीक परिणाम पर आश्रित नहि।

अध्याय २ : कुण्डली आ पण्डित

ज्ञानक विश्वास सँ लोभक षड्यन्त्र धरि

राजपण्डित कुण्डली खोलि देखैत अछि जे मोतीसाएरिसँ विवाह करनिहार पुरुष प्रचुर सुख, धन आ प्रतिष्ठा पाओत। एहि भविष्यकथनपर राजपण्डित स्वयं कन्यासँ विवाह करबाक लालसा पालैत अछि। कथा एहि क्षणमे विद्वत्–पदक नैतिक पतन देखबैत अछि : जकरा राजपरिवार सत्य-समाचार लेल बजौलक, वैह सूचना अपन निजी लाभ लेल नुकेबैत अछि।

कुण्डलीक कथित फल कथा-विश्वक अलौकिक–ज्योतिषीय नियम अछि, सत्यापित व्यक्तिक भविष्य नहि। समस्याक ठोस पक्ष भविष्यवाणी स्वयं नहि, बल्कि अधिकार-

पद सँ प्राप्त भरोसक दुरुपयोग अछि। स्त्री केँ लाभक स्रोत मानि विवाह चाहब, ओकर स्वतंत्र सहमति पर विचार नहि करब, एहि लोभक मुख्य नैतिक दोष अछि।

राजपण्डितक ज्ञान असमान शक्ति बनैत अछि—राजा स्वयं भविष्य व्याख्या नहि करैत, विशेषज्ञक वचन निर्भर होइत छथि। एहि ज्ञानक अपारदर्शिता पछिला हिंसक निर्णयक आधार बनेत।

अध्याय ३ : झूठ भविष्यवाणी

कन्याकेँ राज्यद्रोहक अप्रमाणित खतरा बनएब

राजपण्डित उलटा भविष्यवाणी करैत अछि : बेटी जीवित रहलीह तँ राज्यक विनाश होएत, तैं हुनका बाहर करब आवश्यक। राजा बिना स्वतंत्र सत्यापन उक्त वचन मानि लैत छथि। जकर बच्चा लेल यज्ञ करौलनि, ओही बच्चाकेँ भयक कारण घरसँ निकालबाक निर्णय लेलनि। राजधर्मक नामपर पितृउत्तरदायित्वक नाश एतय कृतिक करुण शिखर अछि।

मोतीसाएरिकेँ खेनाइ–पिनाइक सामग्री संग सन्दूकमे बन्द कऽ नदीमे बहाओल जाइत अछि। भोजन देब जीवनरक्षाक पर्याप्त व्यवस्था नहि : धारक वेग, बन्द सन्दूकक श्वास आ सम्भावित डूबबाक खतरा वास्तविक दृष्टिसँ अत्यन्त प्राणघातक छथि। कथामे ई नाबालिगक परित्याग आ गम्भीर हिंसा अछि।

राजाक धार्मिक भय आ पण्डितक गलत बयानक अन्तर महत्त्वपूर्ण अछि। पण्डित षड्यन्त्र रचैत अछि, राजा निर्णयक अधिकार प्रयोग करैत छथि। तैं अपराधक सम्पूर्ण कारण एक पर आरोपि राजाक जिम्मेदारी मेटाओल नहि जाए।

अध्याय ४ : बहैत सन्दूक

प्रकृतिक प्रतिकारक अलंकार आ षड्यन्त्रक विफलता

राजपण्डित पहिने सँ नदीक नीचला घाटपर सन्दूक पकड़बाक लेल प्रतीक्षा करैत अछि। ओकर मंशा राजकुमारीकेँ निकालि स्वयं विवाह करब अछि। धार तेज रहलासँ सन्दूक ओकर हाथसँ छूटि दूर बहैत जाइत अछि। लोभ–नियन्त्रित योजना केँ जलप्रवाहक अनिश्चितता विफल करैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ नदी एतय दैहिक असुरक्षा आ सम्भावित मुक्ति दूनूक माध्यम अछि। कथावाचक धार केँ मानवीय वाणी दैत अछि जे कन्या लोभीक धरोहर नहि। ई प्रकृतिक व्यक्तिकरण अछि; नदी वास्तविक रूपमे नैतिक इच्छा धरैत अछि—एहन दावा नहि। कथा एक अनपेक्षित भौतिक घटनाकेँ नैतिक न्यायसंगत मोड़ बनबैत अछि।

सन्दूक भोरमे घन वनक कात लागैत अछि। राजमहलक संरक्षण विफल, नदीक आकस्मिक सहारा उपलब्ध। एहि विरोधमे राजसत्ताक असफलता आ नब पालन–सम्बन्धक संभावना खुलैत अछि।

अध्याय ५ : गिल सिदान

रक्तसम्बन्धक बदला पालन–स्नेहक नब अर्थ

वनक सरदार गिल सन्दूक खोलि मोतीसाएरिकेँ पबैत अछि। ओ हुनका जाति, कुल अथवा जन्मक विस्तृत परिचयबिना बेटी रूपमे अपनबैत अछि। एहि निर्णयमे पितृत्वक जैविकतासँ अलग देखभालक नैतिक आधार स्पष्ट अछि। जकरा जन्मदाता राजा भविष्यवाणीक भय सँ छोड़ि देलाह, ओकरा वनसरदार बिना शर्त संरक्षण दैत अछि।

कथाक ई अंश मोतीसाएरिक जीवित अनुभवमे पहिल सापेक्ष सुरक्षित अवकाश अछि। लोकव्यवहारक संदर्भमे वनक सरदारक झोपड़ी राजमहलसँ अधिक मानवीय ठहरैत अछि। एहि तुलना सँ सभ ‘वन’ पिछड़ल आ सभ ‘राज्य’ सभ्य—एहन सामान्य रूढ़ि उलटैत अछि।

मुदा गिलक दृष्टिमे कन्या फेर पुरुष संरक्षणक अधीन छथि। एहन स्थिति कथा-विश्वक सन्दर्भमे जीवनरक्षक अछि, तथापि ओकर स्वतन्त्र राय–आवाज एखनहुँ पूर्ण विकसित नहि। आगामी राज्यसंघर्ष मे ई संरक्षण परीक्षा पाओत।

अध्याय ६ : पण्डितक दोसर चालि

वंश–लिलसाक माध्यमसँ पिताक अपन कन्याक विरुद्ध उकसाब

राजा भीमसेन फेर सन्तान चाहैत छथि। राजपण्डित ई अवसरमे दोसर छल रचैत अछि—वनसरदार गिलक पुत्रीसँ विवाह करला पर राजाकेँ बेटा होएबाक कथित योग बतबैत अछि। पण्डित जनैत अछि जे ‘गिलक पुत्री’ वास्तवमे राजाक अपन बेटी अछि। राजाकेँ ई तथ्य नहि बताओल जाइत अछि।

एहि षड्यन्त्रक लक्ष्य केवल स्त्रीक जीवन नियंत्रित करब नहि, राजाक अज्ञान द्वारा धर्मभ्रष्ट सम्बन्ध उत्पन्न करा सत्ता प्राप्त करब अछि। कन्याक सहमति या व्यक्तित्व पण्डितक गणनासँ लगभग बाहर अछि। एहि घटनामे स्त्री केँ राजकीय उत्तराधिकार आ सिंहासन-हड़पक राजनीतिक साधन बनाबबाक प्रक्रिया स्पष्ट होइत अछि।

राजाक कमजोर बिन्दु राजकुलक वंश-लिलसा अछि। पहिल बेर सन्तानक रक्षा त्यागल गेल, दोसर बेर नया सन्तानक लालसामे कन्याक विरुद्ध हिंसा सम्भव बनैत अछि। ई आवर्ती नैतिक अन्धत्व कृतिक राजनीतिक आलोचनाक तीव्र पक्ष अछि।

अध्याय ७ : गिलसँ युद्ध

सत्ताक विवाह–दाबी आ पालनपिताक अस्वीकार

राजा गिल लग विवाह-प्रस्ताव पठबैत छथि। गिल स्पष्ट अस्वीकार करैत अछि। एहि ना कहबाक अर्थ कन्याकेँ राजनीतिक सौदा नहि मानबाक निर्णय अछि। स्रोत स्वयं गिलक वचनकेँ बेटीक स्वतंत्र गरिमाक संरक्षण सँ जोड़ैत अछि। विवाहक पक्षकार बेटी स्वयं प्रत्यक्ष संवादमे एखनहुँ उपस्थित नहि—ई सीमा बचल अछि।

राजा सेनाद्वारा वनपर आक्रमण करबैत छथि। गिलक लोक वनक भौगोलिक परिचय प्रयोग कऽ प्रतिरोध करैत छथि; राजसेना हारि जाइत अछि। एहि संघर्षमे सत्ता द्वारा विवाहक अस्वीकृति कैँ युद्धक कारण बनएब कृतिक गम्भीर नैतिक समस्या अछि। विवाहक वैधता भय वा सैनिक दमनसँ स्थापित नहि होइत।

हारल राजा फेर पण्डितसँ मंत्रणा करैत छथि, आ यादव सरदार कृष्णारामकेँ आधा राज्य देबाक शर्त पर गिलक बेटी पकड़ि अनबाक आदेश दैत छथि। कन्या प्रति हरेक नव मांग आर्थिक मूल्यक रूपमे बढैत अछि; व्यक्ति संपत्ति जकाँ बेचल जाइत अछि। एहि वस्तुकरणक विरोध कथा मे गिलक दृढ़ता द्वारा प्रकट अछि।

अध्याय ८ : कृष्णाराम

युद्धक असफलतापछि छल–अपहरणक सफलता

कृष्णाराम पहिने गिलकेँ मनएबाक प्रयत्न करैत अछि; गिल फेर अस्वीकार करैत अछि। युद्ध भेलापर गिल हारि नहि मानैत अछि। तखन कृष्णाराम मरछौर छिटकि दृष्टि बाधित करैत अछि आ हल्लाक अवसर पर मोतीसाएरिकेँ उठा लैत अछि। मूल घटनाक अर्थ स्पष्ट अछि : जकरा बल सँ प्राप्त नहि कएल जा सकल, ओकरा छलपूर्वक अपहरण कएल गेल।

राजा कृष्णारामकेँ आधा मोरंग दैत छथि। राज्यक बाँटवारा राजकन्याक अनिच्छित अपहरणक मूल्य बनैत अछि। ई घटनेक वस्तुकरण अति तीव्र अछि : राजकीय सीमा, सैन्य श्रम आ कन्याक व्यक्तित्व सभ एक पुरुष–व्यवहारक सौदामे फँसैत अछि।

कृष्णारामक जातीय परिचय स्रोत देइत अछि, मुदा तकर आधारपर पूरा यादव समाजक नैतिक चरित्र पर निष्कर्ष निकालब अनुचित। व्यक्तिगत अपहरण, सत्ता–प्रलोभन आ सैन्य छल एहि पात्रक कर्म छथि; सामाजिक वर्गक सामूहिक दोष नहि।

अध्याय ९ : प्रस्ताव

पितृत्वक अनजान विघटन आ कन्याक निर्णायक दृष्टि

मोतीसाएरि फेर ओही राजभवनमे उपस्थित छलीह जतय जन्मल छलीह, मुदा भीमसेन हुनका पहचानि नहि पबैत छथि। बीस बर्खक अन्तराल, सन्दूकमे परित्याग आ वनक पालन–जीवन एहि अपरिचयक कथा-आधार अछि। राजा विवाहक प्रस्ताव रखैत छथि। ओ अपन बेटीकेँ नहि जनैत छथि, पण्डित वास्तविक परिचय जानैत अछि। एहि सूचना-असमानतासँ चरम नाटकीय विडम्बना बनैत अछि।

स्रोतक अनुसार मोतीसाएरि दिव्य दृष्टिसँ जन्मक भेद, पण्डितक धोखा आ पिताक अज्ञान जानि लैत छथि। ई चमत्कारी ज्ञान लोकगाथाक विधान अछि; सामान्य वास्तविक जाँचक विधि नहि। मुदा काव्यार्थक केन्द्र ई जे पीड़ित स्त्री अन्ततः पूरा षड्यन्त्रक सत्य पहिचानैत अछि, जखन राजदरबारक पुरुष अपना लोभमे अन्ध छथि।

स्त्रीक राय पहिल बेर निर्णायक नैतिक शक्ति बनि प्रकट होइत अछि। तथापि पात्रक आत्मकथन विस्तृत नहि; ओ तुरन्त शापक मार्ग चुनैत छथि। एहि द्रुत निर्णायक क्षणमे स्वाधीनता आ अप्राप्त सांसारिक न्याय दूनूक द्वन्द्व अछि।

अध्याय १० : शाप

संचित अपमानक प्रतिरोध आ ‘मोक्ष’क द्विअर्थी परिणाम

मोतीसाएरि राज्य कैँ शाप दैत छथि : जे शासन अपन बेटी पर एहन अन्याय करैत अछि, ओकर अस्तित्व टिकबाक अधिकार नहि। जन्मलगात स्नेहहिंसा, नदीमे परित्याग, वनसँ अपहरण आ विवाह-प्रस्तावक त्रासदी—ई सभ स्मृति हुनकर घोषणामे संचित अछि। शाप कथामे पीड़ित स्त्रीक नैतिक निर्णायक केन्द्र बनैत अछि।

तकर बाद ओ अन्तर्धान भऽ ‘मोक्ष’ पबैत छथि। धार्मिक आख्यानमे संसारसँ मुक्ति उच्चतम सुखक रूपमे समझल जाइत अछि। लेकिन आधुनिक स्त्री-अधिकारक दृष्टिसँ प्रश्न अछि—की न्याय पएबाक लेल पीड़िताकैँ भौतिक जीवन सँ अदृश्य भऽ जेबाक आवश्यकता छल? पुरुष–शक्ति नष्ट भेल, मुदा कन्याक सुरक्षित, स्वायत्त जीवनक सम्भावना कथामे विकसित नहि। एहि सीमा कैँ दृष्टिअन्तर्गत राखब जरूरी।

राजा घटनाक बाद अपन गलती आ वास्तविक पुत्री-सम्बन्ध बुझैत छथि। एहि देर सँ आयल ज्ञानक दुखान्त प्रभाव अछि, मुदा पश्चात्ताप अकेले पूर्व पीड़िताक जीवनक हानि वापस नहि करि सकैत।

अध्याय ११ : राज्यक अन्त

कथात्मक शापक न्याय आ संस्थागत पतनक अनिश्चितता

शाप सफल होइत अछि आ भीमसेनक राज्य समाप्त होइत अछि। लेकिन किस सैन्य, आर्थिक वा राजनीतिक कारणसँ राज्यक समाप्ति भेल, स्रोत स्पष्ट नहि करैत। ई कथात्मक न्याय रूपमे रचल अन्त अछि, प्रमाणित ऐतिहासिक राजपतनक विस्तृत विवरण नहि। इतिहासक अभावकेँ कल्पना कऽ विशेष वंश, वर्ष अथवा युद्धक नामसँ भरब गलत होयत।

राजपण्डितक अन्त सेहो कथा नहि बतबैत। कथावाचक ओकर विस्मृत होएब केँ सर्वाधिक दण्डक प्रतीक बनबैत अछि। एहि व्याख्यामे प्रतिष्ठाक अस्थिरता पर नीति-सम्बन्धी व्यंग्य अछि, मुदा आरोपित षड्यन्त्रक सामाजिक जवाबदेही, अपराध-परीक्षा वा दण्ड-प्रक्रिया प्रस्तुत नहि।

कृष्णाराम आधा मोरंग पबैत अछि; गिल बेटी गमाएल पीड़ामे रहैत अछि। शापद्वारा राज्यक अन्त होएब सभ पीड़ितक क्षतिपूर्ति नहि। विशेषतः पालनपिता–बेटीक सम्बन्धक पुनर्मिलन नहि होइत; ई करुण अवशेष कृतिक दुखान्तक भाव स्थायी करैत अछि।

अध्याय १२ : मोक्षक अर्थ

परित्यक्त कन्याक स्वाभिमान आ लोकस्मृतिक दोसर जीवन

समापन मोतीसाएरिकेँ पराजित नहि, आत्मिक रूपसँ विजयी कहैत अछि। सन्दूकमे परित्यागपछाँ गिलक संरक्षण, फेर अपहरणपछाँ सत्यप्रकाश आ अन्ततः सांसारिक लालसाक परित्याग—ई तीन चरणक आवर्तित विवरण अछि। कथा स्त्रीक आत्मगरिमा केँ सत्ता, संपत्ति आ विवाहजनित प्रतिष्ठा सँ अलग मानबैत अछि।

मोरंगक धारक कात उज्जर आकृति देखएबाक लोकविश्वास समापनमे अबैत अछि। एकरा भूत–दर्शनक सत्यापित घटना नहि मानल जाए; पीड़ित बेटी केँ लोकस्मृतिमे उपस्थित रखबाक काव्यात्मक साधन अछि। गिलक बेटी प्रति प्रेमक स्मृति एहि लोकविश्वास केँ करुण आधार दैत अछि।

कथावाचक अन्तमे हर घरकेँ चेतावनी दैत अछि जे बेटी केँ दोसरक वचन पर तौलि नहि त्यागल जाए। ई स्पष्ट नैतिक शिक्षा कृतिक स्थायी उपलब्धि अछि। तथापि आधुनिक आलोचना एहि शिक्षा मे कन्याक स्वयं सहमति, सुरक्षित जीवन आ दोषी शासकक वास्तविक जवाबदेहीक अधिकार जोड़ि पढ़ैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

तीन लोभ आ स्त्रीक बहुस्तरीय परित्याग

‘मोतीसाएरि’क बारह अध्यायक मूल नाट्य-शक्ति तीन लोभक जाल अछि : राजपण्डितक धन–विवाह–राज्य लाभक लालसा, भीमसेनक पुत्र–उत्तराधिकारक इच्छा, कृष्णारामक आधा राज्य पएबाक स्वार्थ। एहि तीनू संरचनामे कन्या अपना इच्छा व्यक्त करबाक अधिकार सँ बारम्बार वंचित होइत अछि। पहिने सन्दूकमे कैद, दोसर बेर वनसँ अपहरण, अन्तमे जन्मपिताक विवाह-प्रस्ताव—कृतिक प्रत्येक संकट स्त्रीक स्वतन्त्र अस्मिताक नकार अछि। नायकाक अन्तिम शाप एहि संचयी अन्यायक भाषिक प्रतिरोध अछि।

ज्ञानक एकाधिकार आ न्यायक विफलता

राजपण्डित भविष्यफल देखबाक अधिकार रखैत अछि। राजा तकर परीक्षणक स्वतंत्र प्रक्रिया नहि अपनबैत छथि। सत्ता अन्ध-आस्था आ एक व्यक्तिक कथन सँ संचालित होइत अछि। एहि ज्ञान–राजसत्ता संयोगमे धर्मशास्त्रीय भाषा संस्थागत हिंसाक औजार बनैत अछि। कथा राजपण्डितक छल कैँ तऽ दण्डनीय कहैत अछि, मुदा प्रशासनिक जिम्मेदारीक कठोर प्रश्न राजाकैँ सेहो संबोधित होइत अछि। अपन बेटी कैँ सन्दूकमे बहाओल जाएब व्यक्तिगत दुर्भाग्य नहि, राजकीय अधिकारक अनुचित प्रयोग अछि।

पालनपिताक सामाजिक पुनर्परिभाषा

गिल मोतीसाएरिकैँ जाति–कुल देखएबिना बेटी रूपमे अपनबैत अछि। राजाक जनमदाता पद सँ ऊपर गिलक देखभालक कर्म नैतिक उच्चता पबैत अछि। एहि

विरोधसँ पिता होएब जैविक सत्यसँ अधिक सतत संरक्षणक दायित्व बनैत अछि। वनक सरदार बाहरी ‘सभ्यता’क राजमहलसँ बेसी न्यायपूर्ण प्रतीत होइत अछि। यद्यपि गिल सेहो कन्याक विवाह निर्णयमे मुख्य वक्ता अछि, ओकर अस्वीकारक आशय बेटीकेँ राजनीतिक सौदासँ बचायब अछि।

कन्याक अस्मिता आ विवाहक सहमति

पण्डित मोतीसाएरिकेँ संपन्नता प्राप्तिक साधन मानैत अछि, राजा वंश–रक्षाक उपाय, कृष्णाराम आधा राज्यक मूल्य। एहि तीनू सम्बन्धमे विवाहक सहमति मूल विचार नहि। न्यायविवेकक कसौटीपर विवाह दुई पक्षक स्वतंत्र, सूचित इच्छाक विषय अछि, राज्यक आदेश अथवा कुण्डलीक निर्णय नहि। कन्याक अन्तिम प्रतिरोध एहि अनुपस्थित अधिकारक उद्घोषणा बुझल जा सकैत अछि।

प्रवाह, वन आ महल : स्थलचित्रक नैतिक उलटाव

राजमहल जन्म–स्वागत सँ परित्याग–हिंसा धरि बदलैत अछि। धार मृत्यु–जोखिम होइतहुँ पण्डितक षड्यन्त्र विफल करैत अछि। वनक झोपड़ी सुरक्षित पालन–स्थान बनैत अछि। अन्तिम राजमहल फेर हिंसक विवाह प्रस्तावक स्थल होइत अछि। एहि स्थान–परिवर्तनमे राजकीय वैभवक बदला मानवीय संरक्षणक महत्त्व रेखांकित अछि। प्रकृति ओ कथानकमे केवल परिदृश्य नहि, भाग्यक अप्रत्याशित मोड़ बनबैत अछि।

‘मोक्ष’क सांस्कृतिक महिमा आ सांसारिक न्याय

कथा मोतीसाएरिकेँ अन्तिम मोक्ष द्वारा सर्वाधिक श्रेष्ठ ठहरबैत अछि। धार्मिक कथा-व्यवस्थामे ई दुखसँ मुक्ति अछि। मुदा स्त्रीक सामाजिक जीवनपर विचार कएल जाए तँ ई समाधान अधूरा बुझाइत अछि : पीड़िता जीवित समाजमे आत्मनिर्भर सुरक्षित अस्तित्व प्राप्त नहि करैत; ओकर आत्मिक विजयक साथ भौतिक अनुपस्थिति जुड़ल अछि। एहि आलोचनाक अर्थ लोकविश्वासक निषेध नहि; मुक्ति–कथा आ न्याय–कथा बीच फरक चिन्हित करब अछि।

ऐतिहासिक दावाक सीमारेखा

मोरंगक राजा भीमसेन, यादव सरदार कृष्णाराम, गिल आ शापे समाप्त राज्यक घटना सभ लोकगाथा भीतर प्रस्तुत छथि। विशेष राजकीय वंशावली, युद्धक वर्ष, भूगोलक पहचान अथवा राजपतनक दस्तावेज मूल पुस्तक नहि दैत। तैं कथा अन्तमे 'इतिहास गवाह' कहबाक अलंकार केँ स्वतन्त्र ऐतिहासिक तथ्य नहि मानल जाए। लोकस्मृतिक साहित्यिक सत्य आ राज्य–इतिहासक अभिलेखीय प्रमाण अलग स्रोत–स्तर छथि।

रस, दृश्यक्रम आ नाटकीय युक्ति

बारह अध्यायक चौबीस चित्र-संकेत अछि। राजप्रसवक उत्सव, पण्डितक कुण्डली, नदिमे सन्दूक, गिलक अपनत्व, युद्ध, धूर्त युक्ति, कन्याक अपरिचय आ शापक चरम दृश्यक क्रम अछि। आरम्भमे वात्सल्य आ आशा, बीचमे भय–करुणा–रौद्र, अन्तमे मोक्षक शान्त–अद्भुत छवि विकसित होइत अछि। कथा बारम्बार पाठक केँ भविष्यक छलक सूचना पहिने दैत अछि, जखन राजा अज्ञानी रहैत छथि। एहि नाटकीय विडम्बनासँ पाठकक नैतिक व्याकुलता बढ़ैत अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘मोतीसाएरि’ राजकीय लोभ, धार्मिक–ज्ञानक दुरुपयोग आ पितृसत्ताक हिंसाक बीच एक निर्दोष कन्याक अस्तित्वक कथा अछि। एहि कृतिक सबसे महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय उपलब्धि बेटी कैँ ‘राज्यक अनिष्ट’ कहल विचारक उलटावमे अछि : असल अनिष्ट कन्याकैँ परित्याग करनिहार सत्ता छल। गिलक पालन-स्नेह जन्मपिताक अधिकारक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि। तर अन्तिम मोक्ष पीड़िताक नैतिक उन्नति कहितहुँ समाजमे ओकर जीवन पुनर्स्थापित नहि करैत; शापद्वारा राज्यक अन्त दोषीक संस्थागत जवाबदेहीक पूरा रूप नहि। एहि नैतिक जटिलता कैँ मानि पढ़ब गाथाक नारीकेंद्रिक साहित्यिक महत्त्व स्थापित करैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मोतीसाएरि : मोरंगक राजकुमारी — लोभ, छल आ मोक्षक दुखान्त गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, कृति क्रमाङ्क ३०; PDF पृष्ठ १५५१–१६३८।

कृति ३२ : मूर्खाधिराज

उपक्रम : एकटा महामूर्ख बच्चा

मातृविहीन बालकक संरक्षण आ अपमान-हास्यक आरम्भ

गोपालकक पत्नी बच्चाक जन्मसमय मरि गेलीह; वृद्ध बा ओकर पालन करैत छथि। कथावाचक बालक कैँ जन्मसँ महामूर्ख कहैत अछि। हास्यरसक मुख्य आधार एहि घोषणामे अछि, मुदा बालकक सीखबाक अवसर, जिम्मेदारी आ सहायता-अभावक सामाजिक कारण पाठमे प्रश्न बनि उठैत अछि।

बालकक मूर्खता जतेक दोहराओल जाए, पाठक ततेक आगाँ अनुमान करैत अछि जे एखन कौन प्रसंग गलत होयत। एहि पूर्वापेक्षा सँ लोकहास्यक गति बनैत अछि। मुदा विकल बुद्धि कहि कोनो बच्चाक अपमान अथवा पीटाईक महिमामंडन शिक्षकक उचित उत्तर नहि। हास्यक रचनात्मक शिल्प आ बच्चाक गरिमा कैँ अलग राखब आवश्यक अछि।

अध्याय १ : महामूर्ख बालक

बारह बर्खक विवाह आ वृद्धाक पारिवारिक बोझ

बालक बारह बर्खक भऽ विवाह कएलाक घटना तक बिसरि जाइत अछि। वृद्ध बा घरक काजमे असमर्थ भेला पर ओकरा गौना कराकऽ पत्नी अनबाक कहैत छथि। एहि निर्देशमे गृहस्थ श्रमक सम्पादन नब कनियाँपर स्थानान्तरित होएबाक संकेत अछि— विवाहक उद्देश्य दम्पतिक परस्पर इच्छा नहि, वृद्धा लेल घरेलू सहायक भेटब बनि रहल अछि।

बालकक उम्र एक स्पष्ट नैतिक प्रश्न अछि। बालविवाहक ऐतिहासिक अथवा लोककथात्मक कथन कैँ समकालीन जीवनक उचित नियम नहि मानब। बालक, कन्या दुनूक स्वेच्छा, शिक्षा आ सुरक्षित विकासक अधिकार कथा भीतर अल्प छवि पबैत अछि।

बा गमछामे मुरही बाँन्हि रस्ता लेल देैत छथि। एहि छोट घरेलू देखभाल सँ आगामी कथा-शृंखलाक पहिल वाचिक भ्रम बनैत अछि। वस्तु साधारण अछि, मुदा ओकरा खएबाक क्रिया हास्यक आरम्भिक आधार बनेत।

अध्याय २ : उड़ि रहल मुरही

संदर्भबिहीन वचनक पहिल गलत अर्थ

रस्तामे हवा मुरही उड़ा लैत अछि। बालक ‘आऊ, उड़ी जाऊ’ कहैत अछि। समीप चिड़ीमार जाल पथारने अछि; ओ वाक्य कैँ अपन पकड़ल चिड़ै उड़ेबाक उकसावा बुझैत अछि। एहि गलतफहमी मे हास्यक भाषा-वैज्ञानिक आधार अछि : शब्दक अर्थ अवसर आ श्रोता अनुसार बनैत अछि।

चिड़ीमार बालक कैँ पिटैत अछि आ नब वचन सिखबैत अछि—‘आबि जो, फँसि जो।’ बच्चा एहि नव वाक्यकैँ हर प्रसंग लेल उपयोगी मानि लैत अछि। गाथाक मूल आवर्ती युक्ति एतय स्थापित भऽ जाइत अछि : स्थानीय परिस्थिति हेतु सिखाओल वाक्य अगिला भिन्न प्रसंगमे अनिष्टकर अर्थ बनैत अछि।

हिंसाक सामान्यीकरण अछि—प्रश्न पूछि अर्थ बुझएबाक बदला बड़ों द्वारा बालककैँ पिटब। आलोचना ई पहिचानैत अछि जे हास्य-घटना भऽ सकैत अछि, मुदा बच्चाक सुरक्षा आ संवादक शिक्षा महत्त्वपूर्ण छथि।

अध्याय ३ : डपटानक शृंखला

चोरसभक भय आ शिकाओल वाक्यक पुनरुक्ति

बालक ‘आबि जो, फँसि जो’ कहैत आगाँ बढ़ैत अछि। ओहि ठाम चोरीक योजना बनबैत लोक वाक्य कैँ अपना गिरफ्तारीक चेतावनी मानि लैत अछि। ओ सभ बच्चाकैँ दोसर बेर पिटैत अछि आ ‘एहन सभ घरमे होए’ कहबाक नव रूप बतबैत अछि। कथनक पुनरावर्तन मात्र शब्दरूप बदलैत अछि; बालकक शिकबाक तरीका नहि बदलैत।

एहि प्रसंगमे चोरसभ स्वयं अपराध करबाक योजना मे छथि, पर ओ अपराधक जिम्मेदारी छोड़ि बच्चापर दण्ड चलबैत छथि। परस्पर धाक–धमकीक आधारपर अर्थ ग्रहण कएल जाएब भाषिक गलतफहमीक हिंसक परिणाम अछि।

लोककथाक लय एही क्रमक अपेक्षासँ चलैत अछि—बालक जखन नव वाक्य सीखि लेइत अछि, पाठक बुझि जाइत अछि जे आगाँ ओकरा एक अन्य सन्दर्भमे विपत्ति भेटत। ई श्रुतिपरम्पराक ध्वन्यात्मक स्मृति-साधन अछि।

अध्याय ४ : श्मशानक क्रोध

शोक-प्रसंगक असंगत भाषा आ तेसर प्रहार

जमीन्दारक एकमात्र बेटाक मृत्यु भेला पर लोक श्मशानमे जमा छथि। बालक ‘एहन सभ घरमे होए’ कहैत अछि, जे करुण शोकसंदर्भमे मृत्यु अनेक घरमे होएबाक कामना जकाँ बुझाइत अछि। परिजन आ लोक कुपित भऽ बच्चाकेँ पीटैत छथि। वाक्य अपन पूर्व अवसरमे कहल गेल छल, मुदा एहि शोकस्थलमे ओकर अर्थ भयानक बदलि जाइत अछि।

लोक फिर ओकरा ‘एहन कोनो घरमे नहि होए’ वचन सिखबैत छथि। एहि शोकस्थलमे भाषा बदलबाक शिक्षा एक सीमा धरि उपयोगी बुझाइत अछि; मुदा नव वाक्य पुनः सबै प्रसंग मे लागू करब उचित नहि। विद्यार्थी केँ अर्थ, सन्दर्भ आ सहानुभूतिक सम्बन्ध सिखाएब आवश्यक, रटाएल वाक्य नहि।

एतय करुणरस आ हास्यरस एकत्र छथि। मृत बच्चाक परिवारक पीड़ा केवल हास्यक पृष्ठभूमि बनि जाएब एक नैतिक असुविधा अछि। बालसाहित्यक समीक्षामे शोकाकुल परिवार आ हिंसा सहैत बालक दूनूक गरिमा देखबाक चाही।

अध्याय ५ : बरातक अपमान

शोकक वाक्य मंगल-अवसरमे अनिष्ट संकेत बनब

बरियाती खुशीक अवसर मना रहल छथि। बालक पिछिला श्मशानसँ सीखल ‘एहन कोनो घरमे नहि होए’ वाक्य कहैत अछि। विवाहक समारोहमे ई वचन बरियातीक नकारात्मक भविष्यक कामना जकाँ सुनाइत अछि। बरियाती बालककेँ फेर पिटैत छथि आ अन्ततः चुप रहबाक आदेश दैत छथि।

कथात्मक आरम्भक मुरही–चिड़ीमार सँ एतय धरि चारि गलत सन्दर्भ बनि चुकल छथि। शब्द स्वयं ठीक–गलत नहि; पर अवसर अनुसार सही प्रयोग महत्त्वपूर्ण अछि। लोकहास्य एहि व्यवहारिक संप्रेषण समस्या केँ बारम्बार नाटकीय रूप दैत अछि।

चुप्पीक सलाह तात्कालिक संकट टारबाक प्रयत्न अछि, पर भाषिक दक्षता विकसित नहि करैत। एहि कारण अगिला अध्याय मे बालक के बोलब–नहि बोलबक कठोर विभाजन नब हास्य उत्पन्न करत।

अध्याय ६ : सासुरक मौन

शब्दनिषेध कैँ बुद्धिमानी मानबाक नाटकीय विडम्बना

बालक सासुर पहुँचैत अछि आ सिखाओल ‘मुँह बन्द राखू’ वचनक अक्षरशः पालन करैत अछि। ओ बजैत नहि, खाइतो नहि—कारण भोजन लेल मुँह खोलब पड़त। सासुरक लोक एहि मौनकेँ शिष्टता आ संयम मानैत छथि। वास्तविक कारण बुझबाक कोनो प्रयास नहि करैत। एहि प्रसङ्गमे सामाजिक बाह्य-आचरण आ व्यक्तिक वास्तविक समझक बीच दूरी हास्यक आधार अछि।

कनियाँक गौना सम्पन्न होइत अछि आ दुनू घर लौटबाक बाट पकड़ैत छथि। रौद आ उमसक कारण विश्राम लेल रुकैत छथि। बालकक सासुरक परिवार सँ संवाद नभेल कारण विवाहक परस्पर जानकारी, विश्वास आ कन्याक सुरक्षा विषयक अनेक प्रश्न अनुत्तरित रहैत छथि।

कथामे मौन कैँ ‘शिष्टता’ मानब अधिकारधारी समाजक भ्रम अछि; बच्चाक प्रभावी संप्रेषण शिक्षण केवले चुप्पी नहि। उलटे समझि बोलबाक क्षमता विकसित करब बालकक संरक्षण आ स्वतन्त्रताक आवश्यक पक्ष अछि।

अध्याय ७ : धोखराएल सिन्दूर

प्राकृतिक घाम कैँ वैवाहिक दोषक प्रमाण मानबाक भूल

उमसक कारण कनियाँक घाम खसैत अछि आ सिन्दूर धोखराइत अछि। बालक एहि परिवर्तन कैं पसीनाक स्वाभाविक परिणाम नहि मानैत; ओकर भ्रम जन्मैत अछि जे पत्नी पहिनेसँ ककरो दोसरक स्त्री छथि आ सासुरक लोक धोखा देलनि। एहि निष्कर्षमे प्रत्यक्ष दृश्य आ मानल गेल अर्थबीचक असंगति अछि।

सिन्दूरक सांस्कृतिक प्रतीक स्त्रीक जीवनपर पुरुष-केंद्रित अधिकारचिह्न बनि प्रस्तुत होइत अछि। ओ पसीना सँ फैलि गेल, तकरा स्त्रीक चरित्र अथवा जीवनक प्रमाण मानब अनुचित। विशेषतः बालकक अनुभवहीनताक दोष कनियाँपर आरोप लगबैत कथा सामाजिक अविश्वासक युक्ति रचैत अछि।

बालक पत्नी सँ प्रत्यक्ष पूछब, अवस्थाक कारण बुझब अथवा प्रमाण जाँचब—एहि सब चरण छोड़ि निर्णायक आरोप मनमे रखैत अछि। एहि कारण अगिला अध्यायमे अपरिमेय अनिष्ट संभव होइत अछि।

अध्याय ८ : बकरीक संग बदलेन

स्त्री कैं विनिमय-वस्तु बनएबाक हिंसक प्रश्न

रस्तामे हजामसँ भेँट भेला पर बालक अपन सन्देह बतबैत अछि। हजाम मौका देखि दूध देनिहार बकरीक संग कनियाँ बदलबाक प्रस्ताव रखैत अछि। बालक राजी भऽ जाइत

अछि। एहि स्थान पर कथा साधारण गलत वचनक हास्य छोड़ि स्त्रीक स्वतन्त्रता पर अति गम्भीर आघात उपस्थित करैत अछि।

कनियाँ एक सचेत मनुष्य छथि, वस्तु नहि; हुनका पति द्वारा बकरीक बदला देबाक कोनो नैतिक वा वैधानिक अधिकार नहि। मूल आख्यान पत्नी केँ एक साधन रूपमे चलैत देखबैत अछि आ हुनकर इच्छा–विरोधक पर्याप्त विस्तार नहि दैत। आधुनिक आलोचनामे एहि मौन केँ कथाक प्रमुख सीमा मानब आवश्यक अछि। हजामक शोषणकारी प्रस्ताव मात्र नहि, बालकक अज्ञान आ पारिवारिक संरचनाक स्त्री-स्वत्व विषयक अविवेक संकट बनैत अछि।

यथार्थ जीवनमे स्त्रीक सुरक्षित वापसी, स्वेच्छा आ सहायता प्राथमिक प्रश्न छथि। गाथाक हास्य-फल एहि हिंसा केँ स्वीकार्य जीवन-विधान नहि बना सकैत।

अध्याय ९ : बकरीसँ कदीमा धरि

मानवीय सम्बन्धक वस्तु-शृंखला मे रूपान्तरण

बालक बकरी केँ खूँटा सँ बाँन्हि विश्राम करैत अछि। बकरीक प्राकृतिक गतिविधिक अर्थ ओ अपन मुख चुमबाक प्रयास मानैत अछि। फेर हाटमे बकरी केँ कदीमाक बदला दऽ दैत अछि। एहि परिणाममे पहिने स्त्रीक विनिमय, तकर बाद पशुक खाद्य वस्तुसँ विनिमय एक पतनोन्मुख श्रृंखला बनैत अछि।

कथकक हास्य ई सोचबाक अछि जे बालक अपन क्रियाक सामाजिक अर्थ नहि बुझि, प्रत्येक नव वस्तुकेँ सहज स्वीकारैत अछि। मुदा स्त्री–प्राणी–भोज्य वस्तुक क्रमिक समानीकरण नैतिक रूपसँ अस्वस्थ अछि। पहिल विनिमयक शिकार स्त्री स्वयं छथि, जकर स्वतन्त्र पुनर्प्राप्तिक समस्या कथा नहि खोलैत।

एहि प्रसङ्गमे ‘मूर्खता’ कहबाक बदला निर्णय क्षमताक अभाव, सामाजिक शोषणक अवसर आ सतर्क मार्गदर्शनक आवश्यकता विश्लेषण लेल अधिक सटीक छथि।

अध्याय १० : बाएक विलाप

हँसीक चरम आ असुलझल पत्नी-अधिकार

बालक कदीमा लऽ गाम पहुँचिते बा पुतोहुक विषयमे पूछैत छथि। बालक निःसंकोच बतबैत अछि जे पत्नी हजामकेँ दऽ बकरी लेल, फेर बकरीक बदला कदीमा अनल। बा माथ पीटि कन्याक अनुपस्थितिपर दुख प्रकट करैत छथि। बालक उलटे कदीमाक तरकारी बनबएबाक निर्देश दैत अछि। लोकहास्यक ध्वन्यात्मक चरम एहि असंगत अन्तिम वचनमे अछि।

कथा एहि हास्य पर समाप्त होइत अछि। पत्नी कतय गेलीह, हुनकर सुरक्षा आ स्वेच्छा सुनिश्चित भेल कि नहि, बालक केकर मार्गदर्शन पाओत—ई प्रश्न छोड़ि देल गेल। एहि कारण हास्यरूपक सफलताक साथ कथानकक मानवीय अपूर्णता सेहो स्पष्ट होइत अछि।

बा एकमात्र पात्र छथि जे अन्तिम अनिष्टक अर्थ पहिचानैत छथि, मुदा समाधानक कार्यवाही पाठमे विकसित नहि। कृतिक आलोचनामे एहि रिक्ततासँ केन्द्रित करब हँसीक उपेक्षा नहि, पीड़ितक आवाजक पुनर्प्रतिष्ठा अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

लोकहास्यक आवर्ती वाक्य-विधान

‘मूर्खाधिराज’क मूल शिल्प एक प्रसंगमे सिखाओल वाक्य दोसर प्रसंगमे प्रयोग करब अछि। चिड़ीमारक ‘आबि जो, फँसि जो’, चोरसभक ‘एहन सभ घरमे होए’, श्मशानक ‘एहन कोनो घरमे नहि होए’ आ बरातक चुप्पीक आदेश—ई क्रम एक व्यवस्थित भाषिक खेल अछि। श्रोता पहिने सँ अगिला अनर्थक अनुमान करैत अछि, आ प्रत्येक नया प्रसंग पूर्ववर्ती निर्देशक असंगति खोलैत अछि। हास्य सामाजिक सन्दर्भक बदलैत अर्थसँ बनैत अछि।

हास्य आ हिंसाक संघर्ष

चिड़ीमार, चोर, श्मशानक लोक आ बरियाती चारि बेर बच्चाकेँ पिटैत छथि। एहि घटनासँ समाजक शिक्षण-विधिक गंभीर दोष उभरैत अछि : गलत वचनक अर्थ बुझबाबाक बदला शारीरिक दण्ड। लोकहास्यक नाट्य-प्रविधि हिंसाक क्रम पर निर्भर अछि, मुदा आधुनिक बालसुरक्षाक दृष्टिसँ ई अस्वीकार्य अछि। बच्चाक गलत समझो शारीरिक मारपीटक औचित्य नहि बनबैत।

बालविवाह आ गृहस्थ श्रम

बारह बर्खक बालक विवाह कएने अछि; वृद्ध बा पत्नी गृहकार्य लेल चाहैत छथि। एहि सामाजिक संरचनामे दूनू किशोर व्यक्तिक शिक्षा, सहमति आ जीवन-विकासक अधिकार पाछाँ छूटैत अछि। हास्यक बाहरी आधार बच्चाक अल्प समझ अछि, मुदा समाजक स्वयं अनेक निर्णय अविवेकी छथि। बालककेँ दोषी कहि प्रणालीक जिम्मेदारी मेटाओल नहि जाए।

स्त्रीक वस्तुकरणक चरम

कनियाँ कैँ बकरीक बदलामे, फेर बकरी कैँ कदीमाक बदलामे दएब कथाक अन्तिम हास्य-यन्त्रणा अछि। एहि घटनामे स्त्रीक मानवीय गरिमा अपमानित होइत अछि। कथनक लक्ष्य बालकक बुद्धिहीनता होइतहुँ वस्तु-व्यवहार द्वारा वास्तविक पीड़ित स्त्रीक स्वतन्त्र स्थिति कथासँ बिलाइत अछि। आलोचनाक सबसँ जरूरी उत्तर एहि उपेक्षित आवाजकेँ देखब अछि।

ज्ञानमीमांसात्मक गलती

बालक शब्द सुनि संदर्भ बुझैत नहि, प्राकृतिक घामक परिणाम समझैत नहि, पशुक सामान्य व्यवहार के अपन विरुद्ध संकेत मानैत अछि। एहि सभ गलतीक मूल सामान्य सिद्धान्त अछि—प्रत्यक्ष संकेतसँ असमर्थित निष्कर्ष निकालब। नव्य-न्यायक तुलनात्मक दृष्टिसँ अनुमानक हेतु आ साध्यक यथार्थ सम्बन्ध जाँचल जरूरी होइत;

बालक हर बेर एक संदर्भक ‘हेतु’ दोसर संदर्भमे बिना परीक्षण लागू करैत अछि। गाथा औपचारिक तर्कग्रन्थ नहि, मुदा गलत अनुमानक लोकव्यंग्यक उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘मूर्खाधिराज’ मैथिली मौखिक लोकहास्यक पुनरावृत्त, प्रत्याशित गड़बड़ी आ व्यंग्यपूर्ण अन्तिम वाक्यक प्रभावकारी गाथा अछि। एक अनुचित वचनक सामान्यीकरणक कारण नब अनर्थ बारम्बार जन्मैत अछि। मुदा हास्यक सँग बच्चापर लगातार मारपीट, अल्पवयस्क विवाह आ पत्नी कैँ वस्तु जकाँ देब एक गम्भीर नैतिक सीमा छथि। जब हास्यक अवसरमे पीड़ित मनुष्य अदृश्य भऽ जाए, तखन आधुनिक समीक्षा ओकर अधिकार पुनः दृश्य बनबैत अछि। कृतिक स्थायी शिक्षण-मूल्य प्रसंग-सापेक्ष भाषा आ प्रमाणाधारित निर्णयक महत्त्वमे अछि, न कि कमजोर पात्रक अपमान अथवा स्त्रीक वस्तुकरणमे।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। मूर्खाधिराज : महामूर्ख बेटाक हास्यास्पद यात्रा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क ३१; PDF पृष्ठ १६३९–१६७२।

कृति ३३ : नैका बनिजारा

उपक्रम : वणिकपुत्र शोभनायक

बारह बर्खक प्रतीक्षाक पूर्वघोषणा आ स्त्रीक केन्द्रिकरण

शोभनायकक विवाह तिरहुतक बारीसँ भेल आ तकर तुरन्त बाद व्यापार लेल मोरंगक यात्रा आरम्भ भेल। उपक्रम ई नब दाम्पत्य कैँ विरहक कथा बनाबैत अछि। आर्थिक लाभक हेतु पुरुष घर छोड़ैत छथि; हुनकर निर्णयक परिणाम परित्यक्त नवविवाहित स्त्री भोगैत छथि। कथा आरम्भे पाठक कैँ बारह बरखक अनुपस्थिति आ अन्यायपूर्ण आरोपक परिणामक पूर्वसूचना दैत अछि।

यद्यपि शीर्षक व्यापारीक यात्राकेँ केन्द्रित बुझबैत अछि, कृतिक नैतिक केन्द्र बारीक अनुभव अछि। पतिद्वारा रचल गोपनीयता, परिवारक सन्देह आ देवरक सहानुभूति हुनकर जीवनक दिशा निर्धारित करैत अछि। एहि कारण कथाक साहित्यिक अर्थ व्यापारिक साहस सँ बेसी स्त्रीक सामाजिक सम्मानक संघर्षमे उद्घाटित होइत अछि।

अध्याय १ : तुरत बिदाई

व्यापारक अनिवार्यता आ नवविवाहित दाम्पत्यक रिक्ति

विवाह आ दिरागमनक बाद शोभनायक पत्नी संग एको दिन बितएबाक पहिने मोरंग लेल बिदा होइत छथि। कथा व्यापारिक जिम्मेदारीक बाह्य दबाव प्रस्तुत करैत अछि। मुदा एही निर्णयमे नव विवाहक भावात्मक पक्ष आ पत्नी केर इच्छा गौण होइत अछि। विवाहक सम्बन्ध पहिलहि दिन दूरी, प्रतीक्षा आ संवादक अभावमे प्रवेश करैत अछि।

बारी नवविवाहिता छथि; हुनकर परवर्ती संकटक बीज एही तत्काल बिदाइमे अछि। स्रोत व्यापारक काज लेल अनिवार्य समय-सीमा बतबैत अछि, मुदा पत्नीकेँ सूचना दैत रहबाक व्यवस्था अथवा भविष्यक प्रत्यक्ष सम्पर्कक विश्वसनीय आश्वासनक विस्तृत वर्णन नहि। एही रिक्तताक परिणाम पाँचम अध्यायमे सामाजिक अन्याय बनि प्रकट होइत अछि।

अध्याय २ : डकहरक भविष्यवाणी

पक्षी-वाणी आ दाम्पत्यक आकस्मिक पुनर्मिलनक प्रेरणा

रस्तामे रात्रि-विराम करैत शोभनायक गाछपर रहैत डकहर आ ओकर भायारिक बातचीत सुनैत छथि। पक्षी कहैत अछि जे एहि शुभ रात्रिमे पत्नी संग रहनिहार व्यक्ति प्रतिभावान पुत्र पाओत। लोककथाक अलौकिक श्रवण घटना नायकक यात्रा रोकैत अछि। ओ अपन पत्नी लग तत्क्षण घुरबाक निश्चय करैत छथि।

विवाहक बाद सम्पर्कक कमी दूर करबाक हेतु पत्नी सँ भेटब एक मानवीय निर्णय अछि, मुदा कथा ओकर कारण भविष्यवाणीक पुत्र-प्राप्ति बनबैत अछि। एहि कारण नारीक

संगति स्वयं अपन अधिकार रूपमे नहि, भविष्यक सन्तानक साधन जकाँ प्रस्तुत होइत अछि। आधुनिक आलोचना एहि प्रेरणाक सीमाकेँ चिन्हित करैत अछि।

पक्षी-वाणी काव्यात्मक रूपक अछि; कुन रातिमे प्रतिभावान सन्तान होयत, से आनुवंशिक अथवा चिकित्सकीय रूपसँ पक्षीक कथन द्वारा निर्धारित नहि होइत। कथा अपन काल्पनिक लोकविश्वासक नियममे आगाँ बढ़ैत अछि।

अध्याय ३ : अभिज्ञान-अँठी

प्रेमक सत्य केँ निजी चिन्हमे सुरक्षित करबाक विरोधाभास

शोभनायक रातिक अन्हारमे घर पहुँचि बारी संग भेँट करैत छथि। लोकापवादक भय सँ हुनकर आगमन सार्वजनिक नहि बनैत। जखन ओ पुनः व्यापार लेल मोरंग बिदा होइत छथि, पत्नी केँ प्रमाणस्वरूप एकटा अँठी दैत छथि। ई अँठी पछिला आरोपक समय पहिचानक आधार बनबाक अछि।

इच्छित परिणाम उलटा अछि। लोकापवादसँ बचबाक प्रयास मे सच्चा वैवाहिक भेँट गुप्त रहल; तकर बाद गर्भक सूचना समाजक सोझाँ अविश्वसनीय लगैत अछि। जकर गुप्तता दम्पति सुरक्षित रखबाक चाहैत छलाह, वैह गुप्तता स्त्रीक प्रतिरक्षाक साधन घटबैत अछि। अँठीक आवश्यकता एहि पूर्व सूचना-अभावक प्रतीक अछि।

अभिज्ञानक चिन्ह लोककथात्मक, नाटकीय साधन अछि : भौतिक वस्तु दीर्घ कालक मौन पार कऽ सत्यक सम्बन्ध जोड़ैत अछि। मुदा पत्नीक शरीर, अनुभव आ कथन स्वयं सत्यक विश्वसनीय साक्ष्य किएक नहि—ई प्रश्न सामाजिक लिंगभेदक विवेचन खोलैत अछि।

अध्याय ४ : बारह बरखक व्यापार

धन-संचयक वृद्धि आ सम्बन्धगत शून्यता

मोरंगमे शोभनायकक व्यापार सफल होइत अछि। बारह बरख धरि ओ धन कमबैत छथि, व्यापारीक सम्बन्ध बढ़बैत छथि, मुदा घरसँ सम्पर्क लगभग टूटल रहैत अछि। तेरहम बरख घर घुरबाक निर्णय भेला तक पत्नी आ परिवारक वास्तविक दशाक ज्ञान नहि होइत। आर्थिक सफलताक संग सम्बन्धक जानकारीक कमीक ई विरोध कथा कैँ व्यंग्यमय करैत अछि।

पुरनका युगक संचारक सीमा कृतिमे कारण रूपमे राखल गेल अछि। तथापि नायकक दीर्घ अनुपस्थिति आ समय-समयपर खबरक व्यवस्था नबनेनाइ जिम्मेदारीक प्रश्न उठबैत अछि। परिस्थिति जतबा बाध्यकारी हो, विवाहक सम्बन्धमे संवादहीनताक सामाजिक मूल्य बारी कैँ बेसी देब पड़ैत अछि।

बारह बर्खक कालखंड कथा कैँ ऐतिहासिक वर्षक गणनाक बदला प्रतीक्षाक रसात्मक माप दैत अछि। व्यापार एक बाह्य सफल यात्रा अछि; ओहि समय घर भीतर बारीक जीवन अपमान आ अकेलापनक एक दूभर यात्रा बनैत अछि।

अध्याय ५ : बारीक निर्वासन

पितृसत्ताक सन्देह आ गर्भवती स्त्रीक दोसर परित्याग

शोभनायकक गुप्त रात्रि-भेँटक बाद बारी गर्भवती भेलीह। पति दीर्घ व्यापार-यात्रामे छथि, सासु-ससुर पूरा घटनासँ अनजान। ओ सभ गर्भधारण केँ अपराधक प्रमाण बुझैत छथि आ बारी केँ घरसँ निकालि दैत छथि। एहि निर्णयमे स्त्रीक कथन सुनबाक अथवा प्रमाणक न्यायपूर्ण परीक्षणक अभाव अछि।

बारी दू स्तरपर परित्यक्त छथि—पहिने पति दीर्घ समय लेल दूर गेलाह; आब हुनकर माता-पिता सामाजिक कलङ्कक भय सँ घरक आश्रय छीनि लैत छथि। गर्भवती व्यक्तिक गरिमा, भोजन, निवास आ सुरक्षा एतय अस्थिर बनैत अछि। सन्देह मात्रक आधारपर परिवारसँ निष्कासन मानवीय अन्याय अछि, चाहे बादमे बारीक निर्दोषिता प्रमाणित हो।

कथा ‘लोकापवाद’ केँ अत्यन्त प्रभावकारी शक्ति बनबैत अछि। वास्तविक सत्यसँ बेसी लोकक आशंकाक भय परिवारक निर्णय बदलैत अछि। एहि सामाजिक प्रक्रियामे बारीक शरीर पितृसत्ताक प्रतिष्ठाक सार्वजनिक परीक्षा बनि जाइत अछि।

अध्याय ६ : चतुरगनक आश्रय

देवरक सहमति आ गीतमे स्त्रीक आत्मकथन

चतुरगन बारी कैँ आश्रय दैत अछि। स्रोत अनुसार ओकरा शोभनायकक गुप्त रात्रि-भेँटक सूचना अछि, मुदा ई सूचना ओकरा ठीक कोन माध्यमसँ भेटल, से निश्चित नहि। समूचा परिवार अविश्वास करैत अछि, जखन कि चतुरगनक सहयोग बारीक गरिमा रक्षाक वास्तविक सामाजिक साधन बनैत अछि।

एहि अध्यायमे बारीक विलाप लोकगीतक रूपमे अबैत अछि। गीतक ‘तब बारी रे कानय जार बेजारो कानै रे ना’ तथा कोहबरसँ निकालि देल जाएबाक करुण पंक्ति हुनकर पीड़ा कैँ कथकक वर्णन सँ अलग, अपन आवाज देइत अछि। कथा भरि जकरा ऊपर निर्णय भेल, ओ गीतक माध्यमसँ स्वयं पीड़ा अभिव्यक्त करैत छथि।

चतुरगनक भूमिका केवल ‘दयालु देवर’क भावुक आदर्श नहि। झूठ आरोपक बीच सुरक्षित आश्रय देब एक सामाजिक प्रतिरोध अछि। एहि सहायताक बिना बाहरी मान्यताक अभावमे बारीक जीवन पर संकट आरो बढ़ित।

अध्याय ७ : सत्यक पुनर्स्थापना

अँठीक प्रमाण, सामाजिक क्षमा आ दुखक अपूरणीय समय

तेरहम बरख शोभनायक घुरैत छथि आ बारीक निर्वासन, चतुरगनक सहयोग आ परिवारक आरोपक बात जनैत छथि। ओ बारी लग पहुँचि गुप्त भेँटक तथ्य स्पष्ट करैत

छथि; अभिज्ञान-अँठी पुरान भेटक प्रमाण बनैत अछि। एहि परिणामसँ सासु-ससुरक सन्देह समाप्त होइत अछि आ परिवारक पुनर्मिलनक सुखान्त प्रकट होइत अछि।

मुदा बारह बर्खक अपमान, गर्भावस्थाक असुरक्षा आ सामाजिक बहिष्कारक खोआएल समय एकटा अँठी भेटिते भौतिक रूपसँ वापस नहि अबैत। स्रोतक सुखान्त बारीक निर्दोषिता स्थापित करैत अछि, किन्तु आरोप लगेनिहारक औपचारिक पश्चात्ताप, क्षतिपूर्ति अथवा दीर्घकालीन सामाजिक पुनर्वासक विस्तृत दृश्य नहि दैत। एकरा पाठमे अनुपस्थित प्रश्न रूपमे चिन्हित करब जरूरी।

अन्तिम लोकगीत बारीक करुण प्रतीक्षाक स्मृति टिकबैत अछि। एहि कारण सुखान्तक बादो गाथा करुणता पूर्ण रूपसँ नहि छोड़ैत; गीत परित्यागक इतिहास कैँ स्मृतिमे जीवित रखैत अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

विरहक कालरचना आ वस्तु-प्रतीक

‘नैका बनिजारा’मे समय दू भिन्न गतिमे बहैत अछि : शोभनायक लेल व्यापारिक उन्नतिक बारह बर्ख, बारी लेल प्रतीक्षा आ अपमानक बारह बर्ख। एके अवधि के व्यक्तिगत मूल्य असमान अछि। नायक धनक संचय करैत छथि, नायिका सम्मानक रक्षा लेल संघर्ष करैत छथि। अँठी एहि समूचा कालभेद कैँ जोड़निहार लघु वस्तु अछि : एक क्षणक गुप्त भेटक पदार्थ बारह वर्ष बाद सार्वजनिक सत्यक प्रमाण बनैत अछि।

पक्षी-वाणी आ वस्तुगत सत्यक भेद

डकहर-दम्पतिक ‘शुभ रात्रि’ भविष्यकथन लोककथाक चमत्कार-नियम अछि। एहि वचनक कारण शोभनायक घर घुरैत छथि; गर्भधारण कथामे वास्तविक दाम्पत्य भेँटक परिणाम अछि। भविष्यवाणीक ‘प्रतिभावान पुत्र’क इच्छा कथा-संरचना केँ गति दैत अछि, मुदा मानवीय प्रजननक वैज्ञानिक नियम एहि सँ सिद्ध नहि होइत। असल सामाजिक न्याय अभिज्ञान-अँठीक स्मृति आ शोभनायकक स्वीकारोक्तिसँ सम्भव होइत अछि।

लोकापवादक संरचनात्मक हिंसा

शोभनायक रात्रिक वापसी गुप्त राखि समाजक सम्भावित बात सँ बचए चाहैत छथि। एहि सतर्कताक परिणाम उलटा भेल : सार्वजनिक सूचना नहि रहने गर्भवती बारी पर सन्देह पड़ैत अछि। सासु-ससुर बिना तथ्य जाँच निर्वासनक निर्णय लैत छथि। एतय लोकापवाद वास्तविक अपराधसँ अधिक शक्तिशाली सामाजिक व्यवस्था बनैत अछि। कथाक करुण पीड़ा केवल व्यक्तिगत गलतफहमी नहि, स्त्रीक शरीर आ गर्भपर समाजक एकतरफा नियंत्रणक रूप अछि।

स्त्रीक साक्ष्य आ पुरुषक प्रमाणक विषमता

बारीक अनुभव, स्मृति आ सत्यक कथन पहिने विश्वास नहि पबैत अछि। किन्तु पतिक पहिचानक अँठी आ हुनकर घुरतीपछाँ वैह सत्य स्वीकार कएल जाइत अछि। एहि अन्तरमे स्त्रीक वचनक उपेक्षा आ पुरुष–चिह्नक विशेष प्रमाण-मूल्य देखाइत अछि।

आधुनिक न्यायबोधक अनुरूप व्यक्तिक विश्वसनीय कथन, निष्पक्ष सुनवाई आ सहायक प्रमाण सभक न्यायसंगत परीक्षण आवश्यक अछि; केवल पारिवारिक पदक आधारपर सत्य तय नहि होएत।

चतुरगन आ सामाजिक स्नेहक राजनीति

चतुरगन बारी कैँ आश्रय दैत अछि। हुनकर भूमिका संकटग्रस्त व्यक्तिकैँ परिवारसँ बाहर दोसर मानवीय सम्बल भेटबाक उदाहरण अछि। मुदा सहायताक अर्थ केवल पाछा सँ निर्दोष साबित करब नहि; संकटमे आश्रय देबाक निर्णय अपनेमे नैतिक साहस अछि। कृतिक सामाजिक मानचित्रमे सासु-ससुरक कठोरता आ देवरक करुणा परस्पर विरोधी छथि। एके विस्तृत परिवार भीतर हिंसा आ सहयोगक सम्भावना संग-संग अछि।

करुण लोकगीतक सौन्दर्य

बारीक लोकगीत प्रतीक्षाक पीड़ा कैँ मौखिक सामूहिक स्मृति बनबैत अछि। गद्य कथक जे निर्वासनक घटना कहैत अछि, गीत ओहि अनुभवक आत्मीय ध्वनि दैत अछि। ‘कोहबर’क स्मरण विवाहक आश्रयक अपेक्षा छल; ओहि ठामसँ निष्कासन व्यक्ति–संबंधक टूटबाक बिम्ब बनैत अछि। सात अध्यायक चौदह चित्र-संकेतक बीच गीतक प्रवेश भावात्मक अन्तराल उत्पन्न करैत अछि। एहि शिल्पसँ साहित्य केवल निर्णयक हिसाब नहि, दुखक सजीव स्मृति बनैत अछि।

सुखान्तक न्यायिक सीमा

अभिज्ञान-अँठी देखला पर परिवार एकजुट होइत अछि, मुदा बारी जे बारह बर्ख भोगलीह तकर अपूरणीय क्षतिक प्रश्न बचि जाइत अछि। कथाक सुखान्त पुनर्मिलनक पक्षमे अछि; सामाजिक क्षमायाचना आ प्रतिष्ठा-पुनर्निर्माणक विस्तृत विवेचन स्रोत नहि करैत। एहि अभावकेँ चिन्हित करब पाठमे नव घटना जोड़ब नहि, कथाक नैतिक संरचना केँ पूर्ण देखब अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘नैका बनिजारा’क विशेष उपलब्धि अभिज्ञान-अँठीक सूक्ष्म वस्तु-प्रतीकद्वारा बारह बर्खक विरहक समापन करब अछि। कथा डकहरक भविष्यवाणी सँ आरम्भिक कौतूहल बनबैत अछि, व्यापारक दीर्घ अवधि सँ नारीक प्रतीक्षाकेँ चरम करुणा दैत अछि, आ लोकगीत द्वारा अपमानक स्मृति केँ जीवन्त रखैत अछि। मुदा मूल कथा सामाजिक न्यायक प्रश्न केँ पूर्णरूपेँ नहि सुलझबैत : बारीक बयानक उपेक्षा, गर्भावस्थाक निष्कासन आ परिवारक उत्तरदायित्व सुखान्तपछाँ सेहो आलोचनाक विषय छथि। एहने बहुस्तरीय पठनमे ई कृति केवल सत्य–विजयक शिक्षा नहि, स्त्रीक विश्वासनीयता आ सामाजिक सम्मानक गम्भीर लोकगाथा बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। नैका बनिजारा : बारह बरखक विरह आ एकटा गुप्त वरदानक गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, कृति क्रमाङ्क ३२; PDF पृष्ठ १६७३ सँ आरम्भ, अध्याय १–७ पृष्ठ १६७६–१६९६।

कृति ३४ : रघुनी मरर

उपक्रम : तीन भाइ

साधारण गोपालकक जीवन सँ न्याय-संघर्षक पूर्वसूचना

देवदत्त, काशीराम आ रघुनी मरर तीन भाइ छथि, जे गाए चराबैत छथि। उपक्रम अकाल, जमीन्दारीक कुचक्र, जोगीक कथित तान्त्रिक शक्ति आ राजकीय दण्डक संघर्षक पूर्वघोषणा करैत अछि। कथा रघुनी कैं जन्मजात शासक नहि, आजीविका खोजनिहार गोपालकक रूपमे स्थापित करैत अछि। एहि सामाजिक आरम्भसँ भूमिहीनता, पलायन आ अधिकारक प्रश्न भविष्यक दैवी कथानकक पृष्ठभूमि बनैत अछि।

अध्याय १ : अकालक विपत्ति

विस्थापन आ आजीविकाक खोज

अकालमे फसल आ पशुधनक स्थिति बिगड़ैत अछि। रघुनी गाम छोड़ि सहरसाक बनमां क्षेत्रक बिदिया बरहमपुर गाम पहुँचैत छथि। अकाल नायकक निजी इच्छा नहि, प्राकृतिक–आर्थिक विवशता बनैत अछि। पहिने परिवारसँ अलग होएब आ पछाँ

अपरिचित जमीन्दारीक क्षेत्रमे जीवन बनएब—ई दू चरण कृषकक असुरक्षाकेँ उघारैत अछि।

ओहि ठाम जुगल आ कमला प्रसादक प्रभुत्व अछि। पलायनक क्षण सँ सामाजिक शक्तिक असमानता स्पष्ट होइत अछि : रघुनी श्रम आ हुनकर अपन कौशल लऽ अबैत छथि, मुदा भूमि आ अधिकारक निर्णय आन व्यक्तिक नियन्त्रणमे अछि।

अध्याय २ : दंगल-विजय आ भूमि-दान

बलक सार्वजनिक मान्यता सँ भूमि-अधिकार धरि

जुगल प्रसाद दंगल आयोजित करैत छथि; रघुनी अपन बल आ कुशलतासँ प्रतियोगिता जीतैत छथि। जुगल प्रसाद हुनका एक सय बीघा भूमि दैत छथि। ई पुरस्कार केवल सम्मान नहि, आजीविकाक संरचनात्मक परिवर्तन अछि। रघुनी सुगमां गाममे बथान बनबैत आ खेती करैत छथि।

मुदा कथा दानक लिखित शर्त, भूमि-पत्र अथवा राजस्व-दायित्वक विधिक ब्यौरा नहि दैत। एहि रिक्तताक कारण तेसर अध्यायमे जमीन्दारी बेचल जाएब हुनकर भविष्यपर प्रश्न बनैत अछि। लोकगाथाक उदारताक आदर्श आ वास्तविक भूमि-अधिकारक संस्थागत सुरक्षा पृथक विषय छथि।

अध्याय ३ : जमीन्दारीक कलह

दानदाता बदलला पर सामाजिक आश्रयक संकट

जुगल प्रसादक घरमे कलह होइत अछि आ जमीन-जत्था गागोरी राज कैँ बेचि देल जाइत अछि। विवादक विस्तृत कारण मूल पाठ नहि बतबैत। रघुनी एहि परिवर्तनसँ दुखी छथि, कारण जकर हाथसँ भूमि भेटल छल, तकर अधिकार आब दोसराक हाथमे अछि।

एहि स्थितिमे भूमि-दानक नैतिक ऋण आ नव राजस्व-प्रशासनक आदेश बीच तनाव उत्पन्न होइत अछि। कृति एखन पट्टा अथवा लगानक कानून विस्तारसँ नहि रचैत; मुदा पछिला झूठ आरोपक सामाजिक पूर्वभूमि एतय सिद्ध होइत अछि।

अध्याय ४ : चौधरीक ईर्ष्या

उपहारक मूल्य आ प्रतिष्ठाक असंगत प्रतिस्पर्धा

रघुनी सिमरीक चौधरीक दलानपर नाच देखए जाइत छथि। चौधरी कलाकार कैँ आँठी आ दुशाला दैत छथि। रघुनी अपन बथानसँ एक जोड़ी गाय देबाक घोषणा करैत छथि। नटुआ गाय लऽ प्रसन्न होइत अछि, किन्तु चौधरी एकरा अपना प्रतिष्ठाक अवमानना बुझैत छथि।

दानक मुख्य प्रयोजन कलावन्तक सम्मान छल, मुदा तुलना सँ चौधरी ईर्ष्यालु होइत छथि। घटना एहि बातक प्रतीक अछि जे सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रतियोगिता ककरो उदार काजकेँ प्रतिद्वन्द्विता बनाबि सकैत अछि। रघुनीक प्रत्यक्ष अपमानजनक शब्द अथवा आक्रमण स्रोत प्रस्तुत नहि करैत, तैं चौधरीक राग निजी अर्थनिर्णयक परिणाम अछि।

अध्याय ५ : जोगीक काला जादू

स्वतन्त्र व्यक्ति केँ पराधीन करबाक अभिलाषा

चौधरी मकदूम जोगी लग रघुनी केँ नोकर बना देबाक आग्रह करैत छथि। एतय विवादक केन्द्र भौतिक सम्पत्ति मात्र नहि, मनुष्यक स्वतन्त्रता छी। जोगी सरिसओक मन्त्रप्रयोग करैत अछि, मुदा कथानक अनुसार देवीभक्त रघुनी प्रभावित नहि होइत छथि।

अगिला प्रयत्नमे जोगी चण्डिकाक सिद्धिसँ सए बाघ द्वारा रघुनीक मृत्यु करबबैत अछि; कामाख्याक हस्तक्षेप सँ रघुनी फेर जीवित होइत छथि। ई लोकविश्वासक अलौकिक विधान अछि, वास्तविक मृतकक पुनर्जीवनक प्रमाण नहि। गाथाक नैतिक ध्येय अत्याचारीक अनुचित इच्छा आ पीड़ितक आस्थाक विरोध देखब अछि।

अध्याय ६ : जोगीक पराजय

आक्रामक युक्तिक अवरोध आ राजकीय षड्यन्त्रदिस मोड़

जोगी तेसर बेर सरिसओ मन्त्रित करए चाहैत अछि, मुदा ओकर मुट्ठी बन्दे रहि जाइत अछि। पहिने दैवी प्रतिरोध बाह्य हानिसँ रक्षा करैत छल, आब आक्रामकक अपन हाथ बन्धक बनैत अछि। एहि रूपकमे हिंसाक प्रयत्न स्वतः बाधित होएबाक नैतिक कल्पना अछि।

जोगीक विफलतापछाँ चौधरी रघुनीक लगान नहि देने रहने विषय पकड़ैत छथि। दान आ जमीन्दारी बदललाक कारण प्रशासनिक अस्पष्टता भऽ सकैत अछि, मुदा स्रोत निश्चित कारण नहि कहैत। चौधरी एहि तथ्यकेँ नव राजनीतिक अभियोगक आधार बनएबाक बाट चुनैत छथि। कथा अलौकिक संघर्ष सँ राजकीय न्याय-व्यवस्थाक परीक्षादिस मुड़ैत अछि।

अध्याय ७ : झूठ आरोप

लगानक तथ्य सँ राजनीतिक विद्रोहक असत्य निष्कर्ष

चौधरी गागोरी राजा लग रघुनीक लगान नहि देबाक शिकायत करैत छथि। आरोप एहि सीमापर नहि रुकैत : ओ इहो कहैत छथि जे रघुनी आन लोककेँ सेहो लगान नहि देबाक कहलनि। मूल स्रोत एहि दोसर आरोपकेँ झूठ बतबैत अछि। राजकीय प्रशासन एक निजी ईर्ष्याक आधारपर सामूहिक विद्रोहक शंका बनबैत अछि।

राजा बिना पर्याप्त जाँच सिपाही पठबैत छथि। रघुनी नहि भेटलाक कारण सिपाही हुनकर भाइ देवदत्तकेँ पकड़ैत छथि। ई स्पष्ट निर्दोष–दण्डक संकट अछि : जे व्यक्ति आरोपक मुख्य लक्ष्य नहि, ओकरा गिरफ्तार कएल जाइत अछि। रास्तामे देवदत्त

रघुनीकेँ देखैत छथि, मुदा सिपाही हुनका देखए नहि पबैत—ई लोकगाथाक दैवी अदृश्यताक दृश्य अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ अदृश्यता अत्याचारी शासनक सीमा देखबैत अछि, मुदा वास्तविक न्यायिक प्रक्रिया साक्ष्य, अभियुक्तक पहिचान आ उचित सुनवाईपर निर्भर होएबाक चाही। अलौकिक संरक्षणक आशा गिरफ्तारीक अन्यायपूर्ण कार्यपद्धतिक विकल्प नहि।

अध्याय ८ : न्यायक चमत्कार

देवदत्तपर अत्याचार आ राजाक मन परिवर्तन

राजा देवदत्तकेँ कालकोठरीमे राखि मारबाक आदेश दैत छथि। सैनिक जखन कोड़ा चलबैत छथि, कथा अनुसार चोट उलटे प्रहार करनिहारपर पड़ैत अछि। एहि अलौकिक घटना सँ राजा भयभीत होइत छथि आ अपन गलती स्वीकार करैत छथि। गाथाक न्याय–कल्पना उत्पीड़कक हिंसा केँ उसी दैहिक स्तरपर घुरबैत अछि।

देवदत्त एहि अवसरक प्रयोग व्यक्तिगत बदला लेल नहि, सामूहिक राहत लेल करैत छथि। ओ लगान नहि देबाक कारण जेलमे रहल लोकसभकेँ छोड़बाक कहैत छथि; राजा हुनका मुक्त करैत छथि। एहि मोड़मे पीड़ित व्यक्तिक नैतिक प्रतिष्ठा अछि : अपन मुक्ति सँ आगाँ बढ़ि आन प्रजाक रिहाइ माँगब।

किन्तु न्यायिक प्रश्न बचैत अछि—लगान नहि देबाक कारणसभ अलग होए सकैत अछि; दोष, असमर्थता आ प्रशासनिक अनियमितताक परीक्षण बिना सभकेँ कैद करब उचित नहि। गाथा चमत्कारद्वारा सुधार करबैत अछि, संस्थागत राजस्व-सुधारक विस्तृत उपाय नहि प्रस्तुत करैत।

अध्याय ९ : अन्तिम सम्मान

सार्वजनिक प्रतिष्ठा आ ‘घट्टी’क अनिश्चित अर्थ

राजा पछतैत छथि आ रघुनीक सम्मान विषयक प्रसंग अबैत अछि। मूल अध्यायमे ‘घट्टी’ शब्दक उल्लेख अछि, मुदा ओकर निश्चित संपत्ति, अधिकार अथवा कर-माफी विषयक विवरण नहि। एकरा बिना शब्दकोशीय–दस्तावेजी प्रमाण ‘जलमिलक अधिकार’ वा अन्य विशिष्ट अनुदान कहब अनुचित होयत। एहि घटनाक स्पष्ट कथात्मक अर्थ राजकीय प्रतिष्ठा आ नायकक सम्मानक पुनर्स्थापन अछि।

उपक्रममे अकालक कारण घर छोड़निहार गोपालक आब भूमि, प्रतिष्ठा आ न्याय-संघर्षक केन्द्र बनैत छथि। चौधरीक ईर्ष्या, जोगीक कथित तान्त्रिक हमला आ राजाक अन्यायी आदेश विफल भेलाक बाद कथा भक्तिक विजय घोषित करैत अछि।

मुदा समाजक न्याय व्यवस्था नायकक विशेष दैवी शक्तिपर निर्भर होए तऽ सामान्य असुरक्षित प्रजाक रक्षा केना होएत? एहि प्रश्नकेँ आधुनिक पठनमे पूछब जरूरी अछि। नायकक सम्मानक एक स्थायी सामाजिक अर्थ न्यायिक समानताक आकांक्षा अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

कृषि-अकाल, पलायन आ भूमिसम्बन्धी अधिकार

‘रघुनी मरर’क सामाजिक आरम्भ अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि : जीविका नष्ट भेलाक कारण पलायन, दंगलक पुरस्कार रूपमे भूमि प्राप्ति आ जमीन्दारी बेचल गेलापछाँ नव राजस्व संकट। एहन आर्थिक सम्बन्धक बिना कथा केवल देवीक शक्ति-परीक्षण बुझाइत। भूमि पर किसानक स्थायी अधिकार सुनिश्चित नहि रहने व्यक्तिगत उदार दान जीवनक शाश्वत सुरक्षा नहि बना सकैत—ई कृतिक अन्दर उठैत महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।

उदारतासँ ईर्ष्या : चौधरीक मनोवृत्ति

नटुआ कैँ एक जोड़ी गाय देबाक प्रस्ताव साधारण उपहार छल, मुदा चौधरी ओकरा प्रतिष्ठाक चुनौती मानैत छथि। ईर्ष्याकैँ धार्मिक-विरोध मानि सीमित करब उचित नहि; ई व्यक्तिगत सामाजिक वर्चस्व बचएबाक प्रवृत्ति अछि। लोकगाथा नायकक बल आ भक्तिक प्रशंसा करैत, प्रतिपक्षक मानसिकता कैँ अपराधजन्य ईर्ष्याक रूपमे चित्रित करैत अछि।

जोगीक शक्ति आ नैतिक वैधताक अलगाव

मकदूम जोगी कथानकमे मन्त्रद्वारा पराधीन करबाक कोशिश करैत अछि। चण्डिकाक सिद्धि, बाघद्वारा हत्या आ कामाख्याक कृपासँ पुनर्जीवन लोकगाथाक अद्भुत विधान छथि। एहि दृश्यसभक महत्त्व सांस्कृतिक विश्वासमे अछि, न कि ऐतिहासिक घटनाक प्रमाण अथवा चिकित्सा विज्ञानमे। दोसर व्यक्तिक स्वतन्त्रता नष्ट करबाक इच्छा नैतिक समस्या अछि, चाहे कथामे प्रयुक्त साधन जादुई हो अथवा सांसारिक।

राजकीय दण्ड, साक्ष्य आ निर्दोष व्यक्ति

देवदत्तक गिरफ्तारी झूठ आरोपक निर्णायक अन्याय अछि। सिपाही वास्तविक आरोपित नहि भेटलापर भाइ कैँ उठा लैत छथि। राजा बिना स्पष्ट परीक्षण शारीरिक दण्डक आदेश दैत छथि। अद्भुत कोड़ा-प्रत्याघात राजाक विचार बदलैत अछि, मुदा न्यायव्यवस्थामे निर्दोषक अधिकार संरक्षण लेल चमत्कारक आवश्यकता नहि होएबाक चाही। प्रमाण, सुनेबाक अधिकार आ उत्तरदायित्व इएह न्यायिक आधार छथि।

व्यक्तिगत मुक्ति सँ सार्वजनिक राहत

देवदत्त राजा सँ लगान-सम्बन्धी बन्दीसभक मुक्ति माँगैत छथि। एहि घटनामे कथा अजेय रघुनीक महिमा सँ आगाँ प्रजाक साझा दुःखक समाधान दिस बढ़ैत अछि। नायकक शक्ति जँ केवल अपन रक्षा करैत, तँ कथा निजी विजय रहित; बन्दीसभक रिहाइ एहि विजयकैँ व्यापक नैतिक आधार दैत अछि। मुदा राजस्व-नीतिक स्थायी सुधारक उल्लेख नहि, तैं गाथा तत्काल अन्याय-संशोधनपर समाप्त होइत अछि।

ऐतिहासिक–शब्दार्थक सीमा

स्रोत विशेष स्थान, भूमि-दान आ ‘घट्टी’क उल्लेख करैत अछि, मुदा संबंधित अभिलेख, भूमिपट्टा अथवा शब्दार्थक प्रमाण प्रस्तुत नहि करैत। समीक्षामे मूल सूचनाकेँ जसक तस राखि तकर अनिश्चितता चिह्नित करब आवश्यक अछि। लोककथाक स्मृति-परम्परा सम्माननीय होइतहुँ सम्पूर्ण दस्तावेजी इतिहासक विकल्प नहि।

शिल्प, रस आ दृश्यरचना

उपक्रमक बाद नौ अध्यायक अठारह चित्र-संकेत छथि। अकाल आ पलायनक करुण भूमिका, दंगलक वीरता, उदारताक उत्सव, ईर्ष्याक भाव, तान्त्रिक संघर्षक अद्भुत दृश्य, निर्दोष बन्दीक कारावास आ राजाक क्षमा—ई सभ परस्पर बदलैत रसक क्रम रचैत अछि। अद्भुतरसक तीव्रता अन्तमे न्यायक भावमे रूपान्तरित होइत अछि। आक्षेप ई जे देवदत्तक स्वतंत्र व्यक्तित्व आ राज्यक स्थानीय राजस्वव्यवस्था पर्याप्त विस्तार नहि पबैत।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘रघुनी मरर’ लोकदेवीक भक्तिक प्रशंसा भरि नहि; किसानक विस्थापन, भूमि प्राप्ति, निजी ईर्ष्या आ न्यायिक दुरुपयोगक बहुस्तरीय कथा अछि। एकर साहित्यिक उपलब्धि ई अछि जे साधारण गोपालकक प्रतिष्ठाक संघर्ष सामूहिक बन्दीक मुक्ति धरि पहुँचैत अछि। एकर सीमा नायकक संरक्षण अलौकिक प्रतिरोधपर निर्भर रहब, भूमि-दानक वैधानिक अस्पष्टता आ राजकीय जवाबदेहीक स्थायी व्यवस्था नदेखाएब अछि। एहि

भेदसँ कृति मानवीय गरिमा आ सत्ता सँ न्याय माँगबाक लोकआकांक्षाक पाठ बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। रघुनी मरर : देवीभक्तक अजेय शक्ति आ न्यायक विजय। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, मूल कृति क्रम ३३; PDF पृष्ठ १६९८–१७२८।

कृति ३५ : राजा अनसारी

उपक्रम : चौद्दह कोशक राज्य

सम्पन्नता मे अज्ञातक जिज्ञासा

राजा अनसारी चौद्दह कोशमे पसरल सम्पन्न राज्यक स्वामी छथि। तीन पुत्र रहितो राजाक कथा एक अद्भुत सपनाक कारण आरम्भ होइत अछि। एहि आरम्भमे भौतिक सुखक कमी नहि; कमी सपनाक अर्थ बुझबाक अछि। कृतिक अभियान संपत्ति जोड़बाक नहि, स्वप्निल बिम्ब कैँ साकार देखएबाक इच्छा सँ जन्मैत अछि।

छोट पुत्र पिताक सपना पूरा करबाक वचन दैत अछि। बालकक आत्मविश्वास कथा कैँ गाम–वन–इनार–सात समुद्रक यात्रा बनबैत अछि। मुदा पिताक इच्छा पूरा करबाक दायित्वक संग बालकक अपन सुरक्षा आ स्वतंत्र निर्णयक प्रश्न सदैव उपस्थित रहत।

अध्याय १ : तीन बेटाक वचन

सपना, धनक अतिरेक आ पुत्रक साहस

राजा सपना देखैत छथि जे हीरा–मोती झरैत अछि आ मोजर चुगि–चुगि खाइत अछि। जागलाक बाद ओ तीनू बेटाकैँ सपना सुनबैत छथि। छोट पुत्र ओकरा यथार्थ बनएबाक

आश्वासन दैत अछि। सपना दृश्यतः बहुमूल्य पदार्थ, वृक्ष आ जीवक असामान्य संयोग अछि; ओहि बिम्बक अर्थ तत्काल स्पष्ट नहि।

बालकक वचन व्यक्तिगत साहसक कथा-प्रेरक अछि। ओ सपना वैज्ञानिक संकेत नहि, पूरा करबाक लक्ष्य मानैत अछि। एहि चयनसँ अज्ञात समस्या कैँ यात्रा द्वारा सुलझएबाक परिकथा-विधान स्थापित होइत अछि।

अध्याय २ : बोनमे बिछुड़ल भाइ

साझा यात्रा सँ एकाकी नायकक निर्माण

तीनू भाइ घोड़ा लऽ सपना पूरा करबाक लेल निकलैत छथि। घन बोनमे रस्ता बँटैत अछि आ भाइसभ अलग भऽ जाइत छथि। दू भाइक पछिला यात्रा मूल गाथा विस्तारसँ नहि कहैत; मुख्य कथा छोट पुत्रक भूख, पियास आ थकानसँ जूझैत पएर चलबाक अनुभवपर केन्द्रित होइत अछि।

यात्रीक साधन घोड़ा संग छोड़ि देब नायकक सामान्य सुरक्षा घटबैत अछि। दैहिक असहायता आ संकल्पक तीव्रता एक संग उपस्थित छथि। बालकक साहसक काव्यात्मक महिमा होए, तइयो बिना सुरक्षित यात्रा-योजना अज्ञात बोनमे बढ़ब व्यवहारिक अनुकरणीय मार्ग नहि।

अध्याय ३ : बटोहीक संकेत

अज्ञात व्यक्ति पर भरोसा आ परीक्षणक सीमा

छोट पुत्र एक बटोहीसँ सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िक मार्ग पूछैत अछि। बटोही एकटा इनार दिस संकेत करैत अछि आ कहैत अछि जे ओही बाटे रस्ता अछि। बालक आभार मानि आगाँ बढ़ैत अछि। कृतिक गूढ़ दिशा-सूचना नायकक श्रद्धाकेँ दृढ़ करैत अछि।

मुदा बटोहीक बताओल रस्ताक वास्तविक सुरक्षा अथवा गन्तव्यक कारण पाठककेँ नहि बताओल जाइत। लोकगाथा एहन अस्पष्ट वचन केँ रहस्यक प्रवेशद्वार बनबैत अछि; वास्तविक यात्रामे अनजान निर्देशक स्वतन्त्र पुष्टि आवश्यक अछि।

अध्याय ४ : इनारमे खसब

ऊर्ध्व यात्राक बदला पाताल-प्रवेश

बटोहीक मार्ग इनार लग पहुँचि समाप्त होइत अछि। बालक इनारमे उतरि अथवा खसि गुप्त मार्ग पबैत अछि आ ओहि मार्ग सँ भैरवानन्द जोगीक ठाम पहुँचैत अछि। साधारण स्थलरचना एहि क्षण अलौकिक प्रवेशद्वार बनैत अछि। यात्रा पहिने आकाशक सपना सँ चलल, एखन भूमिक भीतर अन्हारक बाट लैत अछि।

इनारमे खसबक जोखिम घातक होए सकैत अछि। कथा भीतर ई प्रवेश चमत्कारी साहसक साधन अछि, मुदा बालपाठक लेल ई व्यवहारिक निर्देशन नहि। प्रतीकात्मक रूपसँ नायकक यथार्थबाह्य क्षेत्रमे दीक्षा आरम्भ होइत अछि।

अध्याय ५ : भैरवानन्द जोगी

सेवा, विश्वास आ वरदानक विनिमय

भैरवानन्द जोगी बालककेँ देखि विस्मित छथि। ओ अपन सपना-यात्राक विवरण कहैत अछि आ जोगीक संग रहि सेवा करैत अछि। दीर्घ सेवा सँ जोगीक स्नेह प्राप्त होइत अछि; अन्ततः ओ वरदान माँगबाक कहैत छथि। कथानकमे कठिन परिश्रम पुरस्कारक पूर्वशर्त बनैत अछि।

बालकक अनुरोध पूरा करबाक जोगीक तत्परतामे गुरु–शिष्य सम्बन्धक आदर्श अछि। लेकिन एक छोट यात्री अपरिचित साधुक पूर्ण आदेश पर निर्भर होएब स्वायत्तता आ सुरक्षा सम्बन्धी प्रश्न सेहो उठबैत अछि। आगे गुरु द्वारा देल निर्देशसभक नैतिक सीमा स्पष्ट होयत।

अध्याय ६ : वरदानक माँग

असम्भव वस्तु लेल अगिला यात्राक निर्देशन

बालक सोनाक गाछ, रूपाक ठाढ़ि आ मोती झरबाक अभिलाषा कहैत अछि। जोगी वचन पूरा करबाक स्वीकृति दैत छथि, मुदा एक नव कठिन शर्त रखैत छथि—सात समुद्र पार अमरफल तोड़ि अनब। एहि घटनामे वरदान तत्काल दान नहि, लंबा परीक्षात्मक प्रक्रिया बनि जाइत अछि।

जोगी बालक कैं एक जंत्र दैत छथि। एहि जंत्रक सहायतासँ अगिला यात्रामे रूपपरिवर्तन संभव होइत—एहन स्रोतक अलौकिक विधान अछि। कृतिक परीक्षा–क्रममे गुरु आधिकारिक मार्गदर्शक छथि, बालक कठिन काज करनिहार कर्मशील पात्र।

अध्याय ७ : सुग्गाक रूपमे उड़ान

रूपपरिवर्तनक अद्भुत विधान आ पीछे देखबाक निषेध

जंत्रक सहायतासँ बालक सुग्गाक रूप लैत अछि आ सात समुद्र पार अमरफल लऽ अनबाक लेल उड़ैत अछि। फल तोड़ि घुरबाक समय तीन परी ओकरा पाछू घुरि देखबाक लेल बजबैत छथि। स्रोत अनुसार एक बेर मुड़ि देखलापर बालक प्राण गमा दैत अछि। एहि संकटमे निषेध-वचनक स्मृति आ कौतूहलक टकराव कथा-चरम बनबैत अछि।

मृत्युक कारण कथाभित्र अलौकिक नियम अछि। परीक वचन सुनब अथवा घुरि देखब वास्तविक जीवनमे प्राणहानिक ज्ञात भौतिक कारण नहि। परिकथा नायकक ध्यान, नियमपालन आ मोहमयी आकर्षणक संघर्षकैं नाटकीय बनबैत अछि।

अध्याय ८ : जोगीक चमत्कार

मृत्यु सँ पुनर्जीवनक कल्पना आ पुनः कएल परीक्षा

जोगी ध्यानमे बालकक संकट देखैत छथि आ विशेष साधन लऽ पहुँचैत छथि। ओ सुग्गाकेँ पुनर्जीवित करैत छथि, फेर स्पष्ट चेतावनी दैत छथि जे फल लऽ घुरैत पाछू नहि देखब। दोसर प्रयासमे बालक परीसभक पुकार अनसुना कऽ जोगी लग सफलतापूर्वक पहुँचैत अछि।

एके काज दोसर बेर सफल होएब लोककथाक पुनरावृत्तिपर आधारित सीखबाक प्रविधि अछि। किन्तु पहिल मृत्यु आ पछिला पुनर्जीवन अलौकिक कथा-विश्वक घटना अछि; वास्तविक आपात स्थितिमे प्राणरक्षा शिक्षा, सावधानी आ चिकित्सकीय सहायता आवश्यक होइत अछि। जोगीक चमत्कारक बिम्ब कथा केँ अद्भुतरस दैत अछि, व्यावहारिक सुरक्षा-उपाय नहि।

अध्याय ९ : अमरत्वक वरदान

फलप्राप्ति आ पुनः अमूर्त लक्ष्यक खोज

बालक अमरफल जोगी केँ देइत अछि। जोगी ओकरा फल खुआ कऽ अमर होएबाक घोषणा करैत छथि। एहि वरदानक अन्तर्गत मृत्यु–भय दूर भऽ गेल अछि—एहन

लोकविश्वासक कथा-अर्थ अछि। मुदा नायकक जीवित रहबाक वास्तविक गारंटी अथवा चिकित्सकीय अमरत्वक प्रमाण कृति नहि दैत।

वरदानक बाद जोगी तीन बहिनक ठाम जायबाक कहैत छथि। एहि नव अभियानक वर्णन पहिल यात्रासँ मिलैत अछि—सात समुद्र, अज्ञात स्थान, गुरु पर भरोसा। चरण-दर-चरण परीक्षा कथा कैं अनुक्रमिक आरोह दैत अछि, मुदा नायकक स्वायत्त इच्छा पिताक सपना पूरा करबाक मूल दायित्वक अधीन रहैत अछि।

अध्याय १० : तीन बहिनक भेँट

सम्पर्कक क्रम आ स्त्रीपात्रक स्वतंत्रताक प्रश्न

सात समुद्र पार कलम-गाछीमे बालक पैघ बहिनक लग जाइत अछि, ताहिसँ माझिल, फेर छोट बहिनक लग पठाओल जाइत अछि। एहि त्रिक्रममे लोकगाथाक परिचित आवर्तन अछि : एक व्यक्ति समस्या सुलझाबए अगिला व्यक्ति लग पठबैत अछि। अन्ततः तीनू बहिन संग बालक जोगी लग घुरबाक लेल सहमत होइत छथि।

तीनू बहिनक भूमिका मूल पाठमे रहस्यक प्रवेश–कक्ष जकाँ बनैत अछि। हुनकर अपन परिचय, जीवनक लक्ष्य आ स्वतंत्र इच्छा विस्तारसँ विकसित नहि। एखन ई अस्पष्टता अगिला अध्यायक चमत्कारक कारण बनबाक अछि। स्त्री पात्रकेँ केवल पुरुषक सपना पूरा करबाक साधन मानबाक जोखिम एहि बिन्दु सँ उत्पन्न होइत अछि।

अध्याय ११ : जोगीक अन्तिम खेल

अद्भुत फल प्राप्तिक हिंसक शर्त आ नैतिक संकट

बालक तीनू परी कैँ जोगी लग अनैत अछि, मुदा सोनाक गाछ नहि देखला पर प्रश्न करैत अछि। जोगी एक भयावह हिंसक कृत्यक आदेश दैत छथि, जाहिमे परीसभ आ स्वयं बालकक देह कैँ चोट पहुँचाओल जाएब अछि। स्रोतक अलौकिक विधान अनुसार एहि हानिक बाद सोनाक गाछ, रूपाक ठाढ़ि आ मोती झरबाक दृश्य प्रकट होइत अछि।

ई घटना कृतिक सर्वाधिक गम्भीर नैतिक समस्या अछि। गुरु–शिष्य भरोसक नामपर हिंसक आदेश मानब बालपाठक लेल स्वीकार्य आदर्श नहि। सहमति, जीवनक गरिमा आ शारीरिक सुरक्षा वरदान अथवा चमत्कारक अपेक्षासँ ऊपर छथि। पात्रसभक शरीरक उपयोग राजाक स्वप्न-दृश्य प्रकट करबाक साधन बनबैत अछि, आ कथा एहि हानिक वास्तविक परिणामक विवरण नहि दैत।

लोककथाक चमत्कार पढ़ब शाब्दिक अनुकरणक आमन्त्रण नहि। एहि प्रसङ्गक साहित्यिक अर्थ कल्पनाक चरम हो सकैत अछि, मुदा नैतिक अर्थ दैहिक हानि कैँ वैध नहि करैत।

अध्याय १२ : राजाक सपनाक पूर्ति

भौतिक दृश्य आ मनुष्यक पहिचानबीचक भ्रम

बालक तीनू परी संग अपन देश घुरैत अछि आ राजा सँ कहैत अछि जे सोनाक गाछ लऽ आयल अछि। राजा सोझाँ तीन स्त्री कैं देखि भ्रमित छथि। एहि भ्रमक केन्द्र ई अछि जे पिताक सपना एक अमूर्त–प्रतीकात्मक दृश्य, जखन कि पुत्र ओकरा विशिष्ट व्यक्तिसभक संग जोड़ैत अछि। जोगी द्वारा दियाओल असामान्य प्रदर्शन राजाक मनमे समझ पैदा करबाक कथात्मक साधन बनैत अछि।

पूरा नगर जमा भेलापर हिंसक क्रिया दोहराओल जाइत अछि आ सपनाक सोनाक गाछ–रूपाक ठाढ़िक चमत्कार प्रकट होइत अछि। सामूहिक साक्षीक उपस्थिति कथाक भीतर आश्चर्यक सत्यता बढ़बैत अछि, मुदा वास्तविक हिंसक चोट कैं चमत्कारिक परिणाम लेल उचित नहि ठहरबैत। नायकक वचन पूरा भेल अछि, पर स्त्री-पात्रक सुरक्षा आ देहगत अधिकारक प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि।

राजाक सपना पूरा होएबाक सुखान्त नायकक साहस आ दीर्घ यात्रा सँ जुड़ल अछि। तथापि सपनाक पूर्ति लेल अपन आ आनक शरीर पर हिंसा करब कृतिक नैतिक सीमा अछि; आधुनिक व्याख्यामे वचनपालनक मूल्य अहिंसा आ सहमतिसँ अलग नहि हो सकैत।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

सपनाक प्रतीक आ बारह चरणक कथासंरचना

‘राजा अनसारी’ अपन बारह अध्यायकेँ सपनाक अनसुलझल अर्थ सँ पूर्ण दृश्य धरि क्रमित करैत अछि। पहिने तीन भाइ, ताहि में छोट भाइक एकाकी यात्रा; तखन बटोही, इनार, जोगी, सात समुद्र, अमरफल, तीन बहिन आ अन्तिम प्रदर्शन—ई क्रम लोकपरिकथाक परीक्षात्मक सीढ़ी बनैत अछि। सपना कृतिक आरम्भिक प्रतीक अछि, नायकक विश्वास यात्रा केँ चलबैत अछि, मुदा अन्तिम रूपान्तरण आश्चर्यक सुखान्त संग नैतिक संशय सेहो उत्पन्न करैत अछि।

पुत्रधर्म आ स्वायत्त निर्णय

छोट पुत्र पिताक सपना साकार करबाक प्रतिज्ञा करैत अछि। एहि काजमे दृढ़ता आ साहस देखाइत अछि। मुदा नायकक साहस धीरे-धीरे जोगीक आदेशक पूर्ण आज्ञापालनमे बदलैत अछि। गुरु द्वारा कहलक वचन सही कि नहि, तकर स्वतंत्र नैतिक परीक्षण कएल जाएब आवश्यक अछि। आज्ञापालनक मूल्य तखने सकारात्मक होइत अछि जखन ओकरा मानैत ककरो जीवन अथवा स्वतंत्रता अनावश्यक संकटमे नहि पड़य।

अमरफल, रूपपरिवर्तन आ तथ्यक सीमा

सुग्गा बनि सात समुद्र पार उड़ब, पाछू घुरि देखलाक कारण मरब, पुनर्जीवन, अमरफल आ सोनाक गाछ—ई सभ अद्भुत लोकगाथाक विधान अछि। कृतिक बिम्ब कल्पनाशीलता बढ़बैत छथि, मुदा वास्तविक जीवन, प्राणीविज्ञान वा चिकित्साक परीक्षा पर प्रमाण नहि। बालपाठक लेल प्रतीकात्मक संसारक सौन्दर्य आ व्यवहारिक जगतक सुरक्षा-अनुशासनक भेद स्पष्ट राखब उचित।

तीन परी आ स्त्रीक शरीरक वस्तुकरण

तीन बहिन पहिने रहस्यमयी मार्गदर्शक छथि; अन्तिम दृश्यमे हुनकर शरीर सपनाक प्रदर्शनक साधन बनैत अछि। स्रोत हुनकर स्वतन्त्र इच्छा, आघातक पीड़ा आ पछिला जीवनक स्थिति विस्तारसँ नहि बतबैत। एहि अभावमे कृतिक अति-विलक्षण रूपान्तरण स्त्रीक व्यक्तित्वक मूल्य घटबैत अछि। समीक्षा एहि प्रसङ्गकेँ केवल अद्भुतरसक विजय मानि छोड़ि नहि सकैत; हिंसा आ सहमतिक प्रश्न केन्द्रीय अछि।

नव्य-न्यायपरक अर्थपरीक्षा

राजा जे सपना देखलाह, पुत्र जे यात्रा कएलक आ जोगी जे वस्तु प्रकट करैत छथि, ओकरा बीच प्रतीक आ प्रत्यक्षक सम्बन्ध सीधा नहि। राजाक अनुमान तीन स्त्री केँ देखि साधारण मनुष्य बुझब अछि; पुत्रक दावा गुप्त रूपान्तरणक ज्ञानपर निर्भर अछि। एहि घटना सँ प्रत्यक्ष वस्तु आ कथित गुह्य अर्थक सम्बन्ध विषयक प्रश्न उठैत अछि। तथापि कथा कोई औपचारिक प्रमाण-पद्धति द्वारा चमत्कार स्थापित नहि करैत; अलौकिक नियम स्वीकार करएबाक आग्रह करैत अछि। एहिमे ज्ञानमीमांसा आ साहित्यिक विश्वासक सीमा स्पष्ट अछि।

लोकचित्रक शिल्प आ रस

बारह अध्यायक चौबीस चित्र-संकेत घटना केँ अनेक द्रुत दृश्य इकाइमे रखैत अछि। वनक अन्हार, इनारक मार्ग, जोगीक तपोभूमि, अमरफल, सुग्गाक उड़ान, तीन बहिनक

भेँट आ राजसभाक अन्तिम चमत्कार दृश्यात्मक आरोह बनबैत अछि। अद्भुतरस प्रधान अछि; यात्रा–संकटमे वीर, पुनर्जीवनमे करुण–अद्भुत आ अन्तमे आश्चर्यक अनुभव अछि। मुदा चरित्रसभक भीतरक विचार, परीसभक अधिकार आ चोटक मानवीय परिणामक विस्तार अल्प अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘राजा अनसारी’ पिताक स्वप्न पूरा करबाक वचनपर निर्मित कठिन यात्रा आ अद्भुत लोकपरिकथाक कृति अछि। बालकक दृढ़ता, गुरु–शिष्य सम्बन्ध आ बहुचरणीय यात्रा एकर कथात्मक शक्ति अछि। एकर गम्भीर सीमा ई जे चमत्कारक चरम पात्रसभक देहपर हिंसा द्वारा प्रदर्शित होइत अछि। एहि कारण कृतिक साहित्यिक रूपकक प्रशंसा करैत मानवीय गरिमा आ जीवन-सुरक्षाकेँ प्राथमिकता देब अनिवार्य अछि। प्रतिज्ञाक सफलतासँ अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न रहैत अछि—कुन मूल्यपर इच्छा पूरा भेल?

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। राजा अनसारी : सपनाक पूर्ति — सोनाक गाछ आ रूपाक ठाढ़िक अद्भुत गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन २०२६, कृति क्रमाङ्क ३४; PDF पृष्ठ १७२९–१७८०।

कृति ३६ : राजा ढोलन

उपक्रम : गढ़ नारियलक हाट

राजकीय वचनसँ व्यक्तिगत विस्थापन धरि

गढ़ नारियलक राजा दत्तक हाट लगएबाक एक सार्वजनिक वचनसँ कथा आरम्भ होइत अछि। बिनु बिकल वस्तु राजा स्वयं किनताह—ई नियम व्यापारकेँ प्रोत्साहनक नीतिजकाँ देखाइत अछि। मुदा एक वस्तुक खरीदपछि राजाक आर्थिक पतनक लोककथात्मक सम्बन्ध स्थापन होइत अछि। राजसत्ताक निर्णायक वचन व्यक्तिगत जीवन नष्ट करैत अछि, आ राजा स्वयं आन दरबारमे सेवक बनबाक स्थिति धरि पहुँचैत छथि।

सामाजिक दृष्टिसँ कथा राजा आ नोकरक स्थिर पदक्रम उलटबैत अछि। एही उलटावमे भविष्यक ‘नोकरक बेटा’ ढोलनक पहिचान संकट जन्मैत अछि। शाप–कथनक पाछाँ वास्तविक समस्या पद, जन्म, विवाह आ सत्य नुकेबाक निर्णयक अछि।

अध्याय १ : हाटक हठ

सार्वजनिक वचनक अनपेक्षित परिणाम

राजा दत्त अपन राज्यमा हाट नहिएँ होएबाक कारण अविक्रीत वस्तु किनबाक घोषणा करबैत छथि। किछु दिन धरि व्यापार चलैत अछि। एक दिन एक विक्रेताक ‘सूत’ नहि बिकैत; राजा स्वयं ओकरा किनि लैत छथि। तकर बाद हुनकर धन–सम्पत्ति क्षीण होएब शुरू होइत अछि। स्रोत एहि घटनाकेँ शाप–सदृश संयोग कहैत अछि, अर्थव्यवस्थाक निश्चित कारण–व्याख्या नहि दैत।

राजाक वचन रखब एक गुण अछि, मुदा बिनु सीमा के राजकोषसँ सब अविक्रीत वस्तु किनब आर्थिक नीति रूपमे प्रश्नयोग्य अछि। राज्यक संसाधनक दायित्व सामूहिक अछि। लोकगाथा एहि निर्णयक एक प्रतीकात्मक दण्ड रचैत अछि; ठोस वित्तीय अभिलेखक साक्ष्य उपलब्ध नहि।

अध्याय २ : देश-त्याग आ नोकरी

राजा सँ सेवकक बदलैत सामाजिक स्थिति

गरीबी बढ़लापर राजा दत्त पत्नी अम्बिका संग राज्य त्यागि गढ़पिंगल पहुँचैत छथि। ओतय एक सय एकटा घोड़ा रखनिहार राजाकेँ एकटा अतिरिक्त सेवक चाही; दत्त ओहि नोकरीमे लगैत छथि। राजपद छोड़ि घोड़ा सँ जुड़ल सेवा करब कथा भीतर राजसत्ताक क्षणभंगुरताक तीव्र दृश्य अछि।

दूनू रानी एकहि दिन सन्तान जनमबैत छथि। एहन संयोग ढोलन आ मड़ुनक जीवनक सम्बन्धक बीज बनैत अछि। आर्थिक पतन तथा वर्ग–अवरोहक बावजूद सन्तान जन्मब कथाक आशाक नब आधार अछि।

अध्याय ३ : मड़ुनक जन्म आ विवाहक भविष्यवाणी

नवजातक विवाह आ सहमतिक पूर्ण अभाव

गढ़पिंगलक राजकुमारी मड़ुनक जन्मपर ज्योतिषी छठी राति विवाह होएबाक भविष्यवाणी करैत अछि। राजाक खबासिन सेवक दत्तक नवजात बेटा ढोलनक नाम सुझबैत छथि। एही राति दुनू शिशुक विवाह कएल जाइत अछि। एहि घटनाक स्वर लोकविश्वासक नियति–नियम अछि, बच्चा–अधिकारक मानक नहि।

दूनू नवजात अपन इच्छा व्यक्त करबाक अवस्थामे नहि छथि। एहि कारण आधुनिक नैतिक दृष्टिसँ एहि विवाहकेँ स्वतंत्र सहमति पर आधारित सम्बन्ध मानब असम्भव। कथा एक भविष्यवाणी पूरा करब मुख्य लक्ष्य बनबैत अछि, मुदा बच्चोंक शैशव, शिक्षा आ भविष्यक स्वायत्त निर्णयक प्रश्न गौण छोड़ैत अछि।

अध्याय ४ : बाघिनक शाप

भविष्यक भयसँ वन्यजीवक हत्या आ संवादक तूटब

राजा दत्त घुरतीक बाटमे बाघ–बाघिन देखैत छथि। आशंका करैत छथि जे भविष्यमा बेटा सासुर जायत तँ बाघ हुनका खा लेत, तैं बाघ केँ मारैत छथि। बाघिन प्रतिशोधक

शाप दैत अछि जे ढोलनक पत्नी विधवा बनतीह। कथाक असल नैतिक आरम्भ राजाक अप्रमाणित भयसँ अनावश्यक पशुहत्या अछि।

राजा शाप परिवारसँ नुका लैत छथि। ई गोपनीयता जीवनरक्षक सतर्कता जकाँ लगैत अछि, मुदा अनजान कनियाँ आ बेटाक भविष्यमे एही मौनक परिणाम दीर्घ विरह बनैत अछि। लोकविश्वासक शाप वास्तविक भविष्यक निश्चित प्रमाण नहि, स्रोतक परिकथा-विधान अछि।

अध्याय ५ : साढ़नीक बलिदान

प्राणीकेँ बिना दोष कैद कऽ सत्य दबएबाक प्रयास

शापक भेद बाहर नहि जाए एहि डर सँ दत्त साढ़नी केँ गहिर खोधल स्थानमे कैद कऽ दैत छथि। कथाक अध्याय ‘बलिदान’ कहैत अछि, मुदा पशु स्वयं अपन प्राण अथवा स्वतंत्रता त्यागबाक सहमति नहि देने अछि; ओकरा जबरन बन्द कएल गेल। तैं ई स्वेच्छिक बलिदान नहि, दीर्घ अन्यायपूर्ण कैद अछि।

बालक ढोलन मालिन बहिनसभक देखभालमे पैघ होइत अछि; अपन जन्मपरिचय आ नवजात विवाहक जानकारीसँ अनजान। ओम्हर मड़ुन सेहो पैघ होइत छथि, मुदा सखीसभक ताना सुनि वैवाहिक जीवन विषयक चिन्ता बढ़ैत अछि। एतय दूनू जीवनक उपरका नियन्त्रण पुरान पीढ़ीक निर्णयक परिणाम अछि।

अध्याय ६ : सदाव्रत आ पत्रक यात्रा

मड़ुनक स्वतन्त्र सूचना-अनुसन्धान

मड़ुन अपन मातासँ जानैत छथि जे छठी राति ढोलन संग विवाह भेल छल। ओ जबुनाक कात सदाव्रत–वितरण करबाक व्यवस्था करबैत छथि, एहि आशामे जे भिन्न-भिन्न ठामसँ अबैत यात्रिक द्वारा पतिक समाचार भेटत। एहि काजमे नायिकाक सक्रियता अछि; ओ निष्क्रिय प्रतीक्षा नहि, सार्वजनिक सम्पर्कक माध्यम खोजैत छथि।

गढ़नारियल सँ गढ़पिंगल जाइत बनिजारा सभ पत्र लऽ जेबाक वचन दैत छथि। सांस्कृतिक दृष्टिसँ व्यापारिक यात्रा केवल वस्तुक आदानप्रदान नहि, समाचारक वाहक बनैत अछि। वैवाहिक अन्यायक समाधान दिशा मे पहिल ठोस प्रयास मड़ुनक हाथसँ शुरू होइत अछि।

अध्याय ७ : जरल पत्र आ सुग्गाक साहस

संदेशक अवरोध आ नायिकाक दोसर योजना

बनिजारा द्वारा लाएल पत्र हरेबा–परेबा बहिन रोकि जरा दैत छथि। ढोलन सच्चाइ नहि जनैत छथि, मड़ुन उत्तरक प्रतीक्षामे रहैत छथि। सूचना पर ककर अधिकार अछि, से एहि घटनाक मुख्य प्रश्न अछि—गोपनीयता आ छल द्वारा व्यक्ति अपन जीवनक जरूरी सत्यसँ दूर राखल जाइत अछि।

मड़ुन दोसरा प्रयासमे सुग्गाक माध्यमसँ पत्र पठबैत छथि। सुग्गा ढोलन लग पहुँचि पत्र खसाबैत अछि, मुदा पुष्पवाटिकामे जलैत आगिक कारण पत्र फेर नष्ट होइत अछि। पहिल विनाश योजना-बद्ध छल, दोसरक प्रत्यक्ष परिस्थिति अलग अछि; दुनूकेँ एके जानबूझि रचल अपराध मानब पाठमे समर्थित नहि। एहि लगातार असफलतासँ प्रतीक्षाक करुणा तीव्र होइत अछि।

अध्याय ८ : मालिनक क्रोध

पत्रक विनाशक बाद दोषारोपणक अस्पष्टता

सुग्गा द्वारा पठाओल दोसर पत्र सेहो जरा जाइत अछि। ढोलन घटना देखि हरेबा–परेबा बहिनपर क्रोधित होइत छथि आ हुनका अपमानित कऽ दूर जेबाक आदेश दैत छथि। कथा एहि प्रतिक्रियाकेँ पत्र–अवरोधक प्रतिकार बनबैत अछि, मुदा मूल प्रसंगमे दोसर पत्र आगिमे केना पड़ल, तकर विवरण पहिल पत्र सँ भिन्न अछि। तैं समस्त दोष बिना प्रमाण एकहि व्यक्ति पर थोपब प्रश्नयोग्य अछि।

मड़ुन पुनः उत्तर नहि पबैत छथि। ओ तखन एकटा महात्माकेँ अपन पीड़ा सुनबैत छथि आ तेसर पत्र पठबाक सहायता माँगैत छथि। एहि दृश्यमे नायिकाक प्रयत्न तीन चरणमे बढ़ैत अछि—यात्रिक, पक्षी, साधु। प्रत्येक माध्यम कृतिक मौखिक कथा-पद्धतिमे नव रोचक बाधा बनैत अछि।

अध्याय ९ : मोहिनी बाँसुरी

संगीतक माध्यमसँ गोपित सूचना प्राप्ति

महात्मा गढ़ नारियल पहुँचि फुलबारीमे रहैत छथि आ बाँसुरी बजबैत छथि। कथामे ध्वनिक जादुई आकर्षण ढोलन कैँ साधु लग आनैत अछि; हरेबा–परेबा बहिनक प्रतिरोध विफल होइत अछि। ई अलौकिक संगीत–रूपक अछि, व्यवहारिक मनोनियन्त्रणक प्रमाण नहि।

महात्मा मड़ुनक पत्र ढोलन कैँ देइत छथि। पत्र पढ़लापर ढोलन अपन जन्म-विवाह आ पत्नी संग दीर्घ विछोहक गुप्त जानकारी पबैत छथि। सत्यक सूचनात्मक शक्ति एहि दृश्य कैँ नैतिक मोड़ दैत अछि; जकरा बचपनसँ अज्ञानमे रखल गेल, ओ एखन स्वतंत्र निर्णय लए सकैत अछि।

कथा महात्माक यात्रा मे नशाद्रव्यक उल्लेख करैत अछि। एहि वस्तुसभक अस्तित्वक कथानक–विवरण कैँ सुरक्षित अथवा चिकित्सकीय प्रयोगक सलाह नहि मानल जाए। मुख्य प्रसङ्ग नायिकाक सफल पत्र पहुँचब अछि।

अध्याय १० : पिताक स्वीकारोक्ति

भयसँ झूठ धरि आ साक्ष्यसँ सत्य उद्घाटन

ढोलन पत्र लऽ पिता दत्त लग जाइत छथि। दत्त पहिने विवाह करौने नहि होएबाक झूठ बजैत छथि। मुदा पत्रक प्रमाणक समक्ष हुनका पुरान घटना—नवजात विवाह, बाघक वध, बाघिनक शाप आ साढ़नीक कैद—स्वीकार करब पड़ैत अछि। एहि स्वीकारोक्तिमे सत्य उद्घाटित भेल अछि, मुदा अनेक बर्खक नुकेनाइ स्वतः उचित नहि बनैत।

बेटाक जीवन रक्षाक चिन्तामे पिता ओकरा अपन पत्नीक जानकारीसँ वंचित राखलनि। एहि सुरक्षावादी निर्णयक परिणाम मड़ुनक अन्यायपूर्ण प्रतीक्षा आ साढ़नीक दीर्घ कैद अछि। व्यक्तिगत भय जब दूसरक जीवनपर आदेश बनि जाइत अछि, तखन दायित्वक सीमा लाँघल जाइत अछि।

अध्याय ११ : साढ़नीक पुनर्जीवन आ यात्रा

कैदपछिल देखभालक संग हिंसक प्रतिशोधक विरोध

ढोलन साढ़नी कैँ धरहराक नीचाँसँ निकालैत छथि। ओ बरखोक उपेक्षा कारण अशक्त अछि। ढोलन ओकरा साफ करैत छथि आ भोजन दैत छथि; एहि देखभालसँ पशु फेर सक्षम बनैत अछि। अध्याय ‘पुनर्जीवन’ कहैत अछि, मुदा स्रोत वर्णन दीर्घ कैदपछाँ देखभालक माध्यमसँ पशुक स्वास्थ्यक वापसी देखबैत अछि, मृत शरीरक पुनर्जीवन नहि। ई मूल पाठक महत्त्वपूर्ण अर्थभेद अछि।

साढ़नी संग यात्रा करैत ढोलन रास्तामे बाघिन देखैत छथि आ ओकरा मारि दैत छथि। कथा एहि घटना कैँ शापक अन्त कहैत अछि। मुदा वन्यजीवक हत्या हिंसक समस्या अछि; शाप सँ बचबाक लोकविश्वासक आधारपर प्राणीहिंसाकैँ सामान्य न्याय नहि

मानल जा सकैत। पिता द्वारा बाघ मारबाक प्रायश्चित्त दोसर वन्यजीव मारि सम्पन्न भेल—एहि नैतिक असंगति आलोचनाक विषय अछि।

अध्याय १२ : पहचानक पुनर्स्थापना

राजकीय स्वीकृतिक मार्गमे विनाशक अनावश्यक कार्य

गढ़पिंगल पहुँचि ढोलन अपन वास्तविक परिचय लुका फुलबारीमे ठहरैत छथि। ओ फुलबारीक बाड़–गाछ कैं क्षति पहुँचबैत छथि। मालिन राजा लग शिकायत करैत छथि; सैनिकक प्रश्न पर ढोलन अपन गढ़ नारियलसँ आबि सासुर गढ़पिंगल होएबाक दावा करैत छथि। एहि सूचना कैं राजासँ जोड़िते ओ राजसम्मान पबैत छथि।

कथात्मक रूपसँ ई ‘पहचानक पुनर्स्थापना’ अछि; मुदा फुलबारीक सम्पत्ति नष्ट करबाक औचित्य स्पष्ट नहि। अपन वास्तविक परिचय कहबाक लेल हानि पहुँचाएब आवश्यक नैतिक उपाय नहि। मालिनक शिकायत वैध शिकायत होए सकैत; तकरा केवल दुष्ट बाधा बुझब उचित नहि।

एहि प्रसङ्गमे प्रमाणक दिलचस्प उलटाव अछि : पत्र पतिकैं पत्नी सँ जोड़ैत, अपन क्षेत्रक नाम राजा कैं दामाद पहिचानए मदति करैत अछि। दूनू ठाम सूचना सार्वजनिक होएब सम्बन्धक सत्यक आधार बनैत अछि।

अध्याय १३ : पुनर्मिलन

मड़ुनक परिश्रमक प्राप्ति आ सुखान्तक शेष प्रश्न

गढ़पिंगलक राजा ढोलनक स्वागत करैत छथि आ मड़ुन संग विदाइ दैत छथि। दूनू गढ़ नारियल घुरैत छथि, जकरा पहिने दत्त गरीबीक कारण छोड़ने छलाह। कथा ढोलन कैँ अपन राजकीय पहिचानक प्रतिष्ठा प्राप्त करनिहार नायक कहैत अछि। लोकपरिकथाक सुखान्तमे दीर्घ विरहक अन्त आ सामाजिक मान्यताक वापसी अछि।

मड़ुनक दीर्घ सदाव्रत, तीन बेर पत्र पठबाक प्रयत्न आ महात्मा खोजबाक सक्रियता एहि पुनर्मिलनक वास्तविक कथात्मक केन्द्र अछि। ढोलन सत्य पएने बाद यात्रा करैत छथि, मुदा सत्यधरि पहुँचबाक बाट पत्नी स्वयं बना रहल छलीह। अतः कृतिक न्याय-निर्णयमे नायिकाक पहल कैँ गौण राखब उचित नहि।

कथा अन्तमे राजकीय जीवन सुरू होएबाक घोषणा करैत अछि, मुदा नवजात विवाहक स्वतन्त्र सहमतिक समस्या, हरेबा–परेबाक भूमिकाक न्यायिक परीक्षण आ पशुहत्या सँ जुड़ल नैतिक संकट पूर्णरूपेँ हल नहि होइत।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

वचन, शाप आ सूचना-नियन्त्रणक त्रिपदी संरचना

‘राजा ढोलन’क कथात्मक संकट तीन प्रकारक वचनसँ उपजैत अछि—हाटमे राजा दत्तक अविक्रीत वस्तु किनबाक प्रतिज्ञा, बाघिनक बदला लेबाक शाप आ विवाहक गोपनीयता रखबाक पिता–निर्णय। पहिल वचन राजकीय धनक पतनसँ जुड़ैत अछि, दोसर भय उत्पन्न करैत अछि, तेसर दीर्घकालीन विछोहक कारण बनैत अछि। एहि त्रिक्रममे कथाक वास्तविक सामाजिक प्रश्न अछि : कोन व्यक्तिक निर्णयक परिणाम के भोगैत अछि?

नवजात विवाह आ पितृसत्ताक नियति

मड़ुन आ ढोलनक विवाह छठी राति कएल जाइत अछि। दूनूक समझ आ स्वतन्त्र सहमति एखन सम्भव नहि। भविष्यवाणी पूरा करबाक लक्ष्य बाल्यकालक अधिकारक तुलनामे प्राथमिक बनैत अछि। कथा बादमे युगल कैँ पुनः जोड़ि सुखान्त रचैत अछि, मुदा आरम्भिक निर्णयक अधिकारसम्बन्धी समस्या समाप्त नहि होइत। एहि तत्त्व कैँ समकालीन बालविवाहक नैतिकता सँ अलग राखल बिना बालक–किशोर पाठक लेल समीक्षाक उत्तरदायित्व पूर्ण नहि होयत।

साढ़नीक पीड़ा आ ‘बलिदान’क गलत संकेत

राजा अपन डरक कारण साढ़नी कैँ वर्षों कैद राखैत छथि। एतय पशु द्वारा स्वेच्छिक समर्पणक कोनो दृश्य नहि। अध्यायक ‘बलिदान’ शीर्षक एहि दृष्टिसँ विचारणीय अछि। ढोलनक हाथसँ देखभाल द्वारा ओकर स्वास्थ्य वापस अबैत अछि, से पशुक दीर्घ उपेक्षाक प्रत्यक्ष प्रतिकार अछि। तकरो बाद बाघिनक मृत्यु कैँ शाप–निवारण कहनाइ

हिंसक समस्या कैँ दोहरबैत अछि। कथा भीतर बाघ–बाघिनक अपन जीवनक मूल्य विचारणीय रहैत अछि।

मड़ुनक सक्रियता आ पत्र-प्रविधि

नायिका जबुनाक कात सदाव्रत आरम्भ करैत छथि। व्यापारिक यात्रिक, सुग्गा आ साधु—तीन पत्रवाहक प्रयास कृतिक संरचनात्मक रीढ़ अछि। पत्र नष्ट होएब खाली भाग्यक विघ्न नहि, व्यक्तिसभ द्वारा सूचना रोकबाक आ घटनात्मक दुर्घटनाक अलग-अलग परिणाम अछि। एहि बाधासभक बीच नायिका निरन्तर नब मार्ग खोजैत छथि। नायकक अंतिम साहसक संग हुनकर दीर्घ बौद्धिक दृढ़ताक तुलना कएल जाए तँ कथा स्त्रीक कर्मक महत्त्व उद्घाटित करैत अछि।

संगीतक आकर्षण आ सत्यक प्रत्यक्षता

मोहिनी बाँसुरी लोकगाथामे अद्भुत आह्वान अछि। मुदा निर्णायक क्षण पत्र पढ़ब अछि—ढोलन अपन जीवनक छिपाओल सत्य जनैत छथि। एहि बिन्दुमे जादू सँ अधिक महत्त्व सूचना प्राप्तिक अछि। महात्माक भूमिका बाधित संवाद पुनर्स्थापित करबाक अछि। कथा अज्ञातक भयसँ चलि ज्ञात तथ्यक आधारपर निर्णय धरि पहुँचैत अछि।

राजसत्ता, हिंसा आ नैतिक विरोधाभास

गढ़पिंगल आ गढ़ नारियलक राजकीय पद-क्रम आपसमे बदलैत रहैत अछि। स्वामी सेवक बनैत छथि, सेवकक बेटा राजकीय सम्मान पबैत अछि। मुदा एहि सामाजिक

उलटावक संग अनावश्यक हिंसा उपस्थित अछि—बाघक हत्या, साढ़नीक कैद, बाघिनक वध, फुलबारीक विनाश आ पत्र रोकेनिहार स्त्रीसभपर शारीरिक अपमान। कथा वीरताक साधन रूपमे किछु हिंसक प्रतिक्रिया प्रस्तुत करैत अछि; आधुनिक पठनमे साधन आ लक्ष्यक न्यायिकता अलग जाँचबाक अछि।

लोककथाक द्रुत दृश्य–रचना

तेरह अध्यायक छब्बीस चित्र-संकेत हाट, घोड़ा-सेवा, नवजात विवाह, वनक शाप, कैदखाना, पत्र–यात्रा, मोहिनी बाँसुरी, पिताक स्वीकारोक्ति आ पुनर्मिलन कैं क्रमशः दृश्य बनबैत छथि। करुणा, अद्भुत, वीर आ सुखान्तक संयुक्त गति अछि। बालपाठकक कौतूहल जानकारी कखन ढोलन धरि पहुँचत, एहि प्रश्नपर टिकल रहैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई कृति घटनाबहुल लोकपरिकथा अछि, मुदा चरित्रक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक संवाद सीमित अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘राजा ढोलन’क साहित्यिक सार सत्यक पुनरुद्धार आ प्रतीक्षाक अन्त अछि। राज्याभिषेक अथवा शापक पराजय सँ बेसी मड़ुनक संकल्प कथा कैं सामाजिक अर्थ दैत अछि। पिता जकरा रक्षाक नामपर सत्य नुकेलनि, तकर मूल्य पत्नी आ पशु भोगलक। पत्र पहुँचला पर समुच्चय बदलैत अछि। एहि उपलब्धिक संग नवजात विवाह, प्राणीहिंसा, स्त्रीक अपमान आ सम्पत्तिविनाशक नैतिक सीमा स्वीकारि पढ़लापर गाथा आस्थापरक सुखान्त सँ आगे परिवारक उत्तरदायित्व आ संवादक अधिकारक आलोचनात्मक पाठ बनैत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। राजा ढोलन : बाघिनक शाप आ नोकरक बेटाक अन्तिम विजय। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, संकलन संस्करण २०२६, मूल कृति क्रमाङ्क ३५; PDF पृष्ठ १७८१–१८३६।

कृति ३७ : उगना

उपक्रम : नचारी

गान जे आराध्य कैँ श्रोता बनबैत अछि

गाथाक आरम्भ मिथिलाक कवि विद्यापतिक नचारी सँ होइत अछि। शिवक वन्दनाक गीत देवता कैँ एतेक आत्मीय लगैत अछि जे ओ कविक घरमे रहि प्रतिदिन सुनबाक अभिलाषा करैत छथि। एहि कल्पनामे भक्ति एकतरफा स्तुति नहि, देवता आ भक्तक परस्पर स्नेह-संबन्ध अछि। गीतक सौन्दर्य केवल ईश्वरक महिमा गेनाइ नहि, हुनका अपन नजदीक व्यक्ति जकाँ संबोधित करब अछि।

कथा अपन आगामी दुखान्तक संकेत सेहो दैत अछि : एक घरेलू बाढ़नि, कंठसँ निकलल नाम आ गोपनीयताक भंग। परिकथाक शर्त पहिनेसँ भावात्मक अस्थिरता बनबैत अछि, कारण श्रोता जानैत अछि जे भक्तक सहज व्यवहारहि वियोगक कारण बनेत।

अध्याय १ : गीतक भूखल देवता

उलटल भक्तिक्रम आ श्रवणक अधीरता

कैलासपर शिव विद्यापतिक नचारी सुनि तन्मय होइत छथि। पार्वती द्वारा पूछला पर हुनकर ध्यान मिथिलाक गीतमे लागल देखाइत अछि। आराध्य भक्तकेँ सुनबाक लेल आकुल छथि—भक्ति-साहित्यक ई विस्मयकारी उलटाव अछि। देवता स्वयं कला-प्रेमी श्रोता बनैत छथि; एहि दृश्यसँ कविताक मूल्य राजदरबार, धन अथवा पदक सीमासँ बाहर जाइत अछि।

शिव प्रतिदिन गीत सुनबाक उपाय सोचैत छथि। अतिथि रूपमे रहला सँ भेद प्रकट होएबाक आशंका अछि, तेँ सेवकक रूप चुनैत छथि। जगतक स्वामी घरेलू श्रमक पद ग्रहण करैत छथि। ई शक्ति–क्रमक उलटाव लोकभक्तिक कल्पनामे विनम्रताक चरम बिम्ब अछि।

अध्याय २ : उगना आयल

गृहस्थ श्रमक भीतर देवत्वक अदृश्य उपस्थिति

विद्यापतिक घरमे पत्नी चन्दन गृहस्थीक काजसँ थाकल छथि। नवयुवक आगाँ आबि अपन नाम ‘उगना’ बतबैत अछि आ खेनाइ–कपड़ाक बदला नौकरी माँगैत अछि। विद्यापति हुनका रखि लैत छथि। कथा एहि रूपमे देवताको भोजन–निवासक सामान्य सम्बन्धमे प्रवेश करबैत अछि; भक्तिक मूल्य घरक दैनिक व्यवस्था सँ जुड़ैत अछि।

उगना पानि अनब, बासन माँजब आ घरक काज कुशलतासँ करैत छथि। चन्दन हुनकर श्रमक लाभ पबैत छथि, पर विशेष परिचय नहि जनैत छथि। घरक समान काम ईश्वरीय

रूपक बनि उठैत अछि। मुदा एहिठाम प्रश्न अछि जे श्रमक सम्मान देवता भेला पर बढ़ब उचित नहि; साधारण सेवकक श्रम सेहो गरिमा आ सुरक्षाक अधिकारी अछि।

अध्याय ३ : बाटक पियास

देहक संकट आ सेवक-स्वामी सम्बन्धक मानवीय परीक्षा

जेठक उमस आ सूखल बाटमे विद्यापति उगना संग यात्रा करैत छथि। प्रबल पियाससँ कवि थाकि मूर्छित होइत छथि। उगना चारू दिस पानि खोजैत छथि, मुदा पोखरि, इनार अथवा बसेरा नहि भेटैत। कथाक एहि यथार्थवादी संकटमे जीवनरक्षाक व्यवहारिक आवश्यकता पानि अछि, संगीतक सौन्दर्य नहि।

उगना अब तक अपन गुप्त रूप बनौने छथि; स्वामीक प्राणसंकट भेष बचएबाक अपेक्षासँ अधिक महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। एहि नैतिक चयनमे करुणा प्रधान अछि। आधुनिक पठनमे निर्जलीकरण आ मूर्छा तत्काल सहायता चाहैत; जटासँ जल आनबाक आगामी अद्भुत घटना काव्यात्मक समाधान अछि, सामान्य आपत्कालीन उपचारक उदाहरण नहि।

अध्याय ४ : जटाक गंगधार

चमत्कारक गुप्त उपयोग आ कविक अनुभूतिजन्य पहिचान

उगना निर्जन बाटमे शिवरूप धारण कऽ जटासँ गंगाजल प्रदान करैत छथि। विद्यापति पानि पीबि चेतन होइत छथि। उगना पुनः सेवक बनि जाइत छथि, मुदा जटाक भीजल रूप आ पानिक स्वाद कवि केँ असाधारण अवस्थाक बोध दैत अछि। देहक स्वाद–स्मृति सँ रहस्य खोलनाइ कृतिक आंतरिक ‘प्रत्यक्ष’ निर्माण अछि।

गंगाजल कथामे देवताक करुणाक संकेत अछि। तथापि केवल स्वाद द्वारा विशिष्ट नदीक पानिक निश्चित वैज्ञानिक पहचान सम्भव नहि; एहि घटना केँ कविक आध्यात्मिक अभिज्ञानक रूपमे देखल जाए। कवि हस्त जोड़ैत छथि—शब्दक शिल्पकार स्वयं कथित देवदर्शनक क्षणमे अवाक् भऽ जाइत छथि।

अध्याय ५ : भेद आ शर्त

भक्तिक विस्मय, अपराधबोध आ गोपनीयताक विरोध

शिव अपन भेद प्रकट करैत छथि। विद्यापति एतेक काज करौने लेल अपराधबोध अनुभव करैत छथि, मुदा शिव हुनका आश्वस्त करैत छथि जे हुनकर नचारीक सान्निध्य लेल स्वयं ई रूप चुनलनि। एहि कथनसँ ईश्वरक सेवा कएल मनुष्य महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। भक्तिक सौन्दर्य अपन आराध्यकेँ वर्चस्वशून्य आत्मीयता सँ देखबामे अछि।

शिव शर्त रखैत छथि : जखन ई रहस्य आन ककरो लग प्रकट होएत, अथवा कविक मुँहसँ असली नाम निकलत, तखन ओ अन्तर्धान भऽ जाएताह। विद्यापति वचन दैत

छथि। एतय शर्त दोसर पक्षक हित सँ असंगत स्थितिमे नैतिक द्वन्द्व बनएबाक सम्भावना रखैत अछि—आगाँ सेवक पर अन्याय देखलापर मौन रहब कि सत्य बजब?

अध्याय ६ : पार्वतीक एकाकीपन

देवता–भक्तक सान्निध्यक घर–परिवारपर प्रभाव

कैलासपर पार्वती एकाकी छथि। शिवक गीत-प्रेमक कारण हुनकर अनुपस्थिति लम्ब होइत जाइत अछि; देवीलोकक प्रतीक्षा मास सँ बरखमे बदलैत अछि। ई कथा नायकक अनुपस्थितिमे पाछू बचल व्यक्ति केर अनुभवकेँ स्वतंत्र मूल्य दैत अछि। शिवक सांगीतिक अनुराग हुनका लेल सुखद अछि, मुदा पार्वती लेल सान्निध्यसँ वंचित रहबाक पीड़ा बनैत अछि।

पार्वती शर्त जानैत छथि जे सेवकक असली नाम प्रकट होएबाक बाद शिव घुरि जेताह। ओ परिस्थिति बदलबाक योजना बनबैत छथि। कथक एकरा दाम्पत्यक प्रेम आ अधिकारक तनाव बनबैत अछि। पार्वतीक रणनीति केवल ईर्ष्याक सरलीकृत चित्र नहि; अपन सम्बन्धमे संवादक स्थान पर परोक्ष नियन्त्रणक उपाय चुनबाक नैतिक समस्या अछि।

अध्याय ७ : तेतरिक चालि

खटासक एक फल सँ नियतिक बड़का फेरबदल

चन्दन रान्हबामे खटाइ लेल तेतरि माँगैत छथि। उगना गाछ लग पहुँचैत छथि, मुदा फल नहि भेटैत। मूल कथामे पार्वती पहिने सँ तेतरि हटाए देने छथि। एक छोट घरेलू अभाव परिस्थितिक निर्णायक संकट बनैत अछि। रसोइघरक आवश्यकताकेँ देवीक दूरस्थ योजना सँ जोड़ि कथा घरेलू–दैवी दुहरी स्तर पर चलैत अछि।

उगना चमत्कार कऽ फल उत्पन्न करि सकैत छथि—एहन कथा-विश्वक सम्भावना होइतहुँ ओ भेष बचएबाक लेल खाली हाथ घुरैत छथि। एहि निर्णयक कारण पार्वतीक योजना आगाँ बढ़ैत अछि। एक साधारण सेवकक विश्वसनीय उत्तर पर चन्दनक भरोसा कतेक अछि, अगिला अध्यायमे ओकर परीक्षा होएत।

अध्याय ८ : बाढ़नि

घरेलू श्रमक थकान सँ सेवकपर हिंसक प्रहार

तेतरि नहि अनला पर चन्दन उगनाकेँ आलसी अथवा बहन्नाबाज बुझैत छथि। गृहस्थीक थकान आ चूल्हिक अधीरतासँ क्रोध बढ़ैत अछि। ओ बाढ़नि उठा उगनाकेँ मारए लगैत छथि। ई कृत्य कथाक संकट अछि; श्रमक अनुशासनक वैध उपाय नहि। सेवकक असहायता, हुनकर चुप्पी आ निजी घरक भीतर पिटाई सत्ताक असमानता देखबैत अछि।

शिव स्वयं प्रतिरोध नहि करैत छथि; सेवक-रूपमे मौन ठाढ़ रहैत छथि। विद्यापति ई दृश्य देखैत छथि। भक्तक सोझाँ दोसर मनुष्यक—आ कथाक विश्वासानुसार महादेवक—अपमान घटैत अछि। ओ शर्त निभाबि मौन रहितथि तऽ हिंसा जारी रहबाक आशंका छल; हस्तक्षेप करितथि तँ प्रेममय सान्निध्य टुटि जेतनि। एहि नैतिक संकटक केन्द्र भेष मात्र नहि, दैहिक गरिमा अछि।

अध्याय ९ : हा शिव!

आवेगमे प्रकट सत्य आ शर्तक दुखान्त

विद्यापतिक मुँहसँ शिवक नाम अचानक निकलैत अछि। गोपनीयताक शर्त टुटैत अछि आ उगना ओही क्षण अन्तर्धान भऽ जाइत छथि। घटना द्रुत अछि : बाढ़नि उठेनिहार चन्दन, स्तब्ध विद्यापति आ बीचमे रिक्त ठाम। परिकथा अपन पहिने रचल शर्तकेँ निभबैत अछि; पाठकक बुझल भविष्य घटना रूपमे प्रकट भऽ जाइत अछि।

चन्दनकेँ उगनाक दैवी परिचय ज्ञात नहि छल, मुदा अज्ञान पिटाईक औचित्य नहि देत। विद्यापतिक आवेश सुरक्षात्मक प्रतिवाद छल, तथापि ओकर परिणाम सान्निध्यक अनन्त क्षति बनल। कथाक मौलिक करुणा एहि बातमे अछि जे पीड़ाक कारण ककरो संग घोषित वैर नहि, परस्पर विरोधी कर्तव्य आ क्षणिक हिंसा छल।

अध्याय १० : विक्षिप्त कवि

विरहक गीतमे रूपान्तरण आ मानवीय शोकक भाषा

उगनाक अन्तर्धानपछाँ विद्यापति बाट, घाट आ गाछी-कलममे हुनका तकैत घुमैत छथि। अपन पुकार गीत बनि उठैत अछि। कथा ‘उगना’ सम्बोधित गीतसभक लोकप्रियताक कथन करैत अछि, मुदा कोन गीतक कोन पाठ प्रामाणिक विद्यापति-रचना अछि, से अलग पाण्डुलिपि–अध्ययन बिना निश्चित नहि कएल जा सकैत।

पूर्वक नचारी देवता कैँ निकट आनैत छल; पश्चातक गीत गुमाएल सान्निध्य कैँ स्मृतिमे राखैत अछि। ऐहें रचनात्मक उलटाव गाथाक मुख्य सौन्दर्य अछि। दुःख स्वतः कला बनैत अछि—एहन सार्वभौम नियमक बदला एतय विशिष्ट कथानकमे विरह गीतक अभिव्यक्ति बनबाक उल्लेख अछि।

अध्याय ११ : उगनाक थान

लोकस्मृति, स्थानक पवित्रता आ चन्दनक नैतिक जटिलता

समापन भीठ-भगवानपुरमे उगनाक थानक उल्लेख करैत अछि। महादेवक नोकररूप लोकभक्ति भौतिक पूजास्थलक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। संसारक ईश्वरक सान्निध्य एक कविक घरक श्रममे उपस्थित छल—एहि विश्वासक सांस्कृतिक स्थायित्व गाथाक विशिष्टता अछि। भक्तिगीत आ स्थानीय स्मृति परस्पर एक दोसराकैँ पुनर्जीवित करैत अछि।

मूल उपसंहार चन्दनपर प्रत्यक्ष दोष लगएबसँ बचैत अछि, कारण हुनका शिवक परिचय नहि छल। मुदा घरेलू सेवकपर प्रहारक नैतिक दोष परिचय सँ निर्धारित नहि होइत। समीक्षामे चन्दनक श्रम–थकान, पार्वतीक छलयुक्त योजना, विद्यापतिक अनायास उच्चरित नाम आ शिवक निभाओल भेष—चारू कारण कैं अलग राखल जाए। एक अज्ञात नोकर होथि वा देवता, हुनका मारब अनुचित अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

भक्तिक उलटल शक्ति-सम्बन्ध

‘उगना’क गहन शिल्प ई अछि जे शिव जे आराध्य छथि, ओ विद्यापतिक सेवक बनैत छथि। शक्ति सामान्य क्रममे मालिकक हाथमे होइत अछि, मुदा कथाक भीतर वास्तविक सर्वोच्च सत्ता भेष धऽ निम्न घरेलू श्रमक स्थानपर अवतरित अछि। एहि उलटावमे भक्तिक सहज स्नेह अछि : संगीतक कारण ईश्वर अपन पद छोड़ि सुननिहार बनैत छथि। भक्त सेहो अन्तमे समझैत छथि जे सामाजिक हैसियत सँ आध्यात्मिक मूल्य निर्धारित नहि होइत।

संगीतक सामाजिक प्रतिष्ठा

कथा नचारीकैं अलौकिक श्रवण–आकर्षणक स्रोत बनबैत अछि। शब्द आ स्वर एतेक महत्त्वपूर्ण छथि जे शिव देवस्थान छोड़ि कविक घर पहुँचैत छथि। साहित्यिक रूपसँ ई कल्पना मैथिली गीतक सांस्कृतिक शक्ति विस्तार करैत अछि। मुदा संगीतक कारण

देवता वास्तवमे रूप बदलिए रहलाह—ई ऐतिहासिक साक्ष्यक बदला लोकभक्तिक काव्यात्मक विश्वास अछि।

गृहस्थ श्रमक द्वैध मूल्य

चन्दन लगातार काजसँ व्यस्त छथि, उगना श्रम करैत छथि, विद्यापति गीत रचैत छथि। कथा काव्यगत महिमा गीतक देइत अछि, पर ओकर मानवीय आधार रसोइ, पानि, सफाइ आ दैनिक व्यवस्था अछि। चन्दनक थकान वास्तविक होए सकैत अछि; हुनकर हिंसक प्रतिक्रियाक औचित्य ताहिसँ स्वतः सिद्ध नहि होइत। ई घरेलू श्रमक असमान वितरण आ सेवकक असुरक्षाक आलोचनात्मक अवसर अछि।

पार्वतीक दृष्टि : प्रेम, एकाकीपन आ नियन्त्रण

पार्वतीक मनोव्यथा कथा कैँ शिव–विद्यापति संबंधसँ बाहरक पारिवारिक जगतसँ जोड़ैत अछि। ओ अपन दाम्पत्यक सान्निध्य फेर चाहैत छथि; तकर लेल छलपूर्वक तेतरि हटबैत छथि। इच्छा मानवीय रूपसँ बोधगम्य होए तइयो अन्यक जीवनमे संकट बनएबाक साधन नैतिक रूपसँ प्रश्नयोग्य अछि। पार्वतीकैँ केवल ईर्ष्यालु पात्र बनब या दैवी न्यायाधिकारी घोषित करब दूनू एकाङ्गी पठन होयत।

शर्त, धर्मसंकट आ करुण रस

विद्यापति गोपनीयताक शर्त मानैत छथि, मुदा प्रत्यक्ष हिंसा देखिते नाम उच्चरित करैत छथि। एहि क्षणमे सत्य नुकेबाक प्रतिबद्धता आ पीड़ितक पक्षमे हस्तक्षेपक कर्तव्य

टकरबैत अछि। शर्त टुटलासँ उगनाक अन्तर्धान कथा-विश्वक नियम अनुसार अनिवार्य अछि; नैतिक दृष्टिसँ अन्याय देखिकऽ बोलेनाइ अनुचित नहि। दुखान्तक शक्ति एहि विरोधमे अछि जे योग्य भावनासँ प्रेरित क्रियाक परिणाम सेहो कष्टकर होइत अछि।

नव्य-न्यायपरक अभिज्ञानक सीमा

विद्यापति जटाक नमी आ विशिष्ट पानिक स्वाद सँ उगनाक देवत्व पहचानैत छथि। कथामे ई संवेदनात्मक चिह्न अभिज्ञानक साधन अछि, मुदा वस्तुगत प्रमाणक कड़ी स्पष्ट नहि : पानिक स्वादक आधारपर नदी अथवा दैवी स्रोतक अचूक पहचान सम्भव नहि। साहित्यक ‘चिह्न’ आ ज्ञानमीमांसाक पर्याप्त हेतु बीच ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। भक्तिक विश्वास भीतर छविसभ अर्थपूर्ण होइतहुँ आलोचनामे तकर प्रमाणस्तर साफ राखल जाए।

विरहक सांस्कृतिक पुनर्जन्म

उगनाक अनुपस्थितिक बाद विद्यापतिक पुकार गीतरूप पबैत अछि; भौतिक सान्निध्य समाप्त होइत अछि, पर साहित्यिक स्मृति बढ़ैत अछि। भीठ-भगवानपुरक थानक उल्लेख एहि स्मृतिक भौगोलिक रूप अछि। पाण्डुलिपिगत प्रामाणिक गीतक स्थिर पाठ, स्थल-साक्ष्य आ शिवरूपक लोकविश्वास अलग परीक्षण विषय छथि। मिथिलाक सांस्कृतिक आत्मचित्रमे ‘नोकर-रूप’क देवता विशिष्ट मानवीय निकटता प्रतीक बनैत अछि।

शिल्प, दृश्य आ कृतिक सीमा

एगारह अध्यायक बाइस चित्र-संकेत कैलासक गीत, सेवकक आगमन, सूखल बाट, जटाक जल, पार्वतीक योजना, खाली तेतरि-गाछ, बाढ़नि, अन्तर्धान आ अन्तिम थानक दृश्य बनबैत छथि। उपक्रमक आनन्द क्रमशः संदेह, करुणा, विस्मय, भय आ वियोगमे बदलैत अछि। कथा चन्दनक बचावक प्रयास करैतहुँ हुनकर मारपीटक नैतिक परीक्षण सीमित छोड़ैत अछि; पार्वती आ विद्यापतिक निर्णयक परस्पर जिम्मेदारी सेहो पूर्ण समाधान नहि पबैत।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘उगना’ मैथिली भक्तिगाथामे श्रवण, सेवाभाव आ विरहक बहुस्तरीय कल्पना अछि। एहि कृतिक साहित्यिक उपलब्धि देवताकेँ आत्मीय श्रोता आ सेवकक रूपमे देखएब, दैनिक श्रमक भीतर आध्यात्मिक अर्थ खोजनाइ आ एक आकस्मिक नामोच्चारणकेँ मार्मिक वियोगमे बदलनाइ अछि। आधुनिक आलोचना एहि सौन्दर्यक संग सेवकपर घरेलू हिंसा, पार्वतीक हस्तक्षेप आ गोपनीयताक शर्तक न्यायिकताक प्रश्न राखैत अछि। भक्तिक गहिराइ केँ मानब आ व्यक्ति-गरिमाक कसौटी पर कथाक परीक्षण करब परस्पर विरोधी नहि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। उगना : विद्यापतिक नोकर बनल महादेव — भक्तिक दुखान्त गाथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, मूल कृति क्रम ३६, PDF पृष्ठ १८३७–१८८४।

कृति ३८ : ऊँटनी

उपक्रम : बा आ ओमक साँझ

कथा-भीतर कथा आ हास्यक श्रोता

साँझमे ओम बा सँ एकटा हास्यकथा सुनए चाहैत अछि। बा हरियाणाक खेत, ऊँटनी आ कथित डॉक्टरक घटना सुनबैत छथि। एहि फ्रेममे लोककथा केवल अपन कथानक नहि, दू पीढ़ीक बीच शिक्षण–संवाद सेहो अछि। बाह्य कथक कथाक आरम्भहिंमे संकेत दैत छथि जे हँसीक भीतर नकलक सीमा विषयक चेतावनी अछि।

श्रोता बालक अछि, तैं कथाक अर्थ केवल मूर्ख व्यक्ति पर हँसब नहि होएबाक चाही। बाएक कथनकेँ परीक्षण कएल जाए तँ प्रश्न उठैत अछि जे कथामे प्राणहानि सँ उत्पन्न करुणा आ हास्यक मेल कोना सम्भव भेल। एहि विरोधक समझ बालसाहित्यक नैतिक पठनक केन्द्र अछि।

अध्याय १ : हरियाणाक खेत

कृषकक श्रम आ ऊँटनीक आकस्मिक संकट

हरियाणाक खेतमे किसान ऊँटनी सँ हर जोतैत अछि। खेतक कात एक पातबला गाछक उल्लेख अछि। कामक समय ऊँटनी पात खएबाक प्रयास करैत अछि, मुदा पात गरदनिमे अँटकि गेलाक कारण बेचैन भऽ जाइत अछि। किसान स्थिति देखि परेशान अछि। एहि आरम्भक आधार साधारण कृषि–जीवन अछि; असामान्य घटना पशुक स्वास्थ्य संकट अछि।

मूल कथा पात गरदनिमे कोना अँटकल, से अपन लोकवृत्तान्तक भाषा मे बतबैत अछि। पशुक गिलबामे कठिनाइ वा घाँटिक अटकल वस्तुक परीक्षण योग्य पशुचिकित्सकक काज अछि। कहानीक एक प्रसंग कैँ चिकित्सकीय सत्य–प्रयोग मानि अनुकरण करब अनुचित होयत।

अध्याय २ : बटोहीक आगमन

समस्या देखबाक इच्छा आ अधिकारक अस्थायी स्थापना

एक बटोही खेतक आरिसँ जाएत समय ऊँटनीक परेशानी देखैत रुकैत अछि। किसान ओकरा स्थिति सुनबैत अछि। बटोही पशु लग जा जाँच-जकाँ किछु प्रश्न शुरू करैत अछि। एहि ठाम बटोही अपन निरीक्षण द्वारा किसानक विश्वास अर्जित करैत अछि— औपचारिक प्रमाणपत्र वा प्रशिक्षित चिकित्सकीय पृष्ठभूमिक जानकारी स्रोत एखन नहि दैत।

कथाक शिल्पमे अचानक आएल व्यक्ति समस्याक सम्भावित समाधानक भूमिका ग्रहण करैत अछि। किसान तकर प्रश्नसँ प्रभावित अछि; अवलोकनक अर्थ बुझबाक

बदला उत्तर मात्र दैत अछि। एही अज्ञानक कारण आगामी घटना मुँहदेखी नकलबाजी बनैत अछि।

अध्याय ३ : प्रश्नक क्रम

दिशासभक पूछताछ आ कारण-अनुमानक सीमारेखा

बटोही ऊँटनीक सिर कुन दिस मुड़ल छल, तकर दहिना, उत्तर, दक्षिण आ बाम दिसक प्रश्न पूछैत अछि। किसान अन्ततः बाम दिसक उत्तर सकारात्मक दैत अछि। बटोही गाछक पात खएबाक सम्भावना पुछैत अछि आ किसान सहमति देइत अछि। एहि क्रममे निरीक्षण सँ संभाव्य कारणक अनुमान होइत अछि।

मुदा दिशाक उत्तर अपने आपमे चिकित्सा ज्ञान नहि। बटोहीक सफलता एक विशेष प्रसंग पर निर्भर अछि, सामान्य निदान–विधिक मानक नहि। कथाक आवर्ती व्यंग्यक बीज इएह : किसान प्रश्नक शृंखला याद राखैत अछि, मुदा प्रश्न किएक पूछल गेल, से नहि बुझैत।

अध्याय ४ : गरदनिपर हाथ

कथाक आकस्मिक समाधान आ ओकर असुरक्षित अनुकरण

बटोही ऊँटनीक गर्दनिपर जोर सँ हाथ मारैत अछि आ स्रोत अनुसार पात निकलि जाइत अछि। पशु सहज होइत अछि। किसान एहि त्वरित परिणाम देखि विस्मित अछि। ई घटना लोककथाक समाधानक अति-संक्षिप्त दृश्य अछि; लक्षण–जाँच, जोखिम, विकल्प अथवा पुनर्परीक्षणक चिकित्सकीय विवरण नहि।

चमत्कारजकाँ तात्कालिक सफलता पाठककेँ हँसा सकैत अछि, मुदा पशुक घाँटि अथवा गर्दनिपर मारि अटकल वस्तु हटब सुरक्षित उपचारक मान्य विधि नहि। साहित्यिक दृष्टिसँ एहि प्रसङ्गक उपयोग आगाँक गलत अनुकरणक आधार बनएबाक लेल कएल गेल अछि।

अध्याय ५ : डॉक्टरी दावा

एक घटनाक सफलता सँ पेशागत दक्षताक असत्य विस्तार

समस्या दूर भेलापर बटोही अपना डॉक्टर कहैत अछि। किसानक मनमे एहि शब्दक विशेष प्रभाव पड़ैत अछि : ओकरा लगैत अछि जे किछु प्रश्न आ एक जोरदार हाथमारि द्वारा इलाज करब सहज अछि। ओ शिक्षण, प्रशिक्षण आ कारणबोधक स्थानपर देखादेखी केँ पर्याप्त मानैत अछि।

कथामे बटोहीक स्वयं घोषित पेशागत परिचय स्वतंत्र रूपसँ जाँचल नहि गेल अछि। ओकर सफल हस्तक्षेपक आधारपर किसान जखन अपना ‘डॉक्टर’ मानैत अछि, तखन ओ एक उदाहरणकेँ सार्वभौम नियम बना दैत अछि। एहि दोषकेँ नव्य-न्यायक भाषा मे अपर्याप्त हेतु सँ व्यापक निष्कर्षक त्रुटि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

अध्याय ६ : नव ‘डॉक्टर’ गामक बाट

स्वघोषित अधिकार आ रोगीक असुरक्षित विश्वास

किसान अपन खेतक काज छोड़ि दोसर गाममे ‘हम डॉक्टर छी’ कहि प्रचार करैत अछि। ओतय एक वृद्धा बीमार छथि; परिवारजन ओकर आवाज सुनि सहायता लेल बजबैत छथि। ई त्रासदीक कारणक प्रथम चरण अछि : रोगी परिवारक चिंता आ नब व्यक्तिक झूठ पेशागत दावाक भेँट होइत अछि।

बीमार व्यक्ति आ परिवार संकटमे अक्सर त्वरित सहायता चाहैत छथि। एहि परिस्थिति मे अप्रमाणित दक्षता पर भरोसा गंभीर हानिक कारण बनि सकैत अछि। कथा किसानक अज्ञानपर व्यंग्य करैत अछि; संगहि उपचार लेल योग्य व्यक्ति पहिचानबाक सामाजिक आवश्यकता सेहो उघारैत अछि।

अध्याय ७ : नकल-प्रश्नावली

सन्दर्भहीन प्रश्न आ परिवारसँ बलपूर्वक स्वीकृति

नव ‘डॉक्टर’ वृद्धा लग पहुँचि ऊँटनीक प्रसङ्गमे सुनल वैह दिशासम्बन्धी प्रश्न पूछैत अछि। परिवारजन दहिना, उत्तर, दक्षिण आ बाम सभ दिसक उत्तर नकारात्मक दैत छथि। उपचारक लक्ष्य आरंभहि सँ गलत अछि : बीमार मनुष्यक लक्षण अथवा

आवश्यक चिकित्सकीय परीक्षणक बदला पशुक पात खाएबाक परिस्थिति दोहराओल जा रहल अछि।

अपेक्षित ‘हाँ’ नहि भेटला पर किसान जोर दैत अछि जे एक बेर सकारात्मक उत्तर देल जाए। परिवारजन परिस्थितिक अर्थ नहि बुझितो मानि लैत छथि। एहि ठाम असत्य उत्तर ज्ञानदायक नहि, अधिकार-भ्रमक परिणाम बनैत अछि। रोगीक परिवारक आवाजक दमन आ अयोग्य प्रश्नकर्ता पर भरोसा दुखान्तक सामाजिक परिस्थिति रचैत अछि।

अध्याय ८ : जालक पातक हास्यास्पद प्रश्न

मनुख–पशुक भेद नबुझबाक तर्कगत दुर्घटना

किसान बीमार वृद्धाक विषयमे पूछैत अछि जे ओ जालक पातपर मुँह मारने छलीह कि नहि। ई प्रश्न ऊँटनीक खेत–घटनामे सन्दर्भ पबैत छल; मानव रोगिणीक सन्दर्भमे अनर्थक अछि। परिवारजन आश्चर्य करैत छथि, मुदा कथित चिकित्सकक आत्मविश्वासक कारण अन्ततः सहमति देइत छथि।

ई घटनामे संवादक बाह्य रूप तऽ विद्यमान अछि, मुदा वास्तविक जानकारी प्राप्त नहि होइत। प्रश्नक विषय वस्तु असंगत अछि, उत्तरक अर्थ अविश्वसनीय अछि, आ दू पक्ष अधिकारक असमानता सँ बाधित छथि। हास्य तर्कक एही विफलता सँ जन्मैत अछि; पाठक आगाँ भयानक परिणामक आशंका करैत अछि।

अध्याय ९ : दुखान्त मोड़

नकल–कृत्यसँ वृद्धाक मृत्यु आ हँसीक नैतिक सीमा

ऊँटनीक घटनाक अनुकरण करैत किसान वृद्धाक गर्दनिपर जोर सँ प्रहार करैत अछि। वृद्धा पहिनेसँ अस्वस्थ छथि; एहि आघातक बाद हुनकर मृत्यु भऽ जाइत अछि। कथा एहि दृश्य केँ एक निर्णायक दुखान्त मोड़ रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। एक जानवरक प्रसङ्गमे देखल प्रक्रिया मनुष्यपर बिना कारणबोध लागू कएल गेल—एहि नकलक मूल्य जीवित व्यक्तिक प्राण अछि।

घटना केँ सरल ‘मूर्खता’ कहि हँसीमे उड़ा देब पीड़िताक गरिमा घटबैत अछि। किसानक असत्य चिकित्सकीय दावा, रोगीक अवस्था नबुझब, बलपूर्वक प्रहार आ परिवारक असहाय विश्वास अलग-अलग जिम्मेदारीक प्रश्न खोलैत अछि। वास्तविक चिकित्सामे घाँटि अथवा गर्दनिपर हिंसक दबाव/प्रहार घातक होए सकैत अछि; कृति एहि हानिक चेतावनी रूपमे पढ़ल जाए।

अध्याय १० : लहासक कान्हा

प्राणहानिपछाँ फीसक माँग आ संवेदनहीनताक चरम

वृद्धाक मृत्यु भेलाक बाद परिवारजनक शोक अछि। लोक कम रहबाक कारण किसानकेँ सेहो मृतकाक अर्थी उठएबाक लेल कहल जाइत अछि। ओ कान्हपर लहासक बोझ लैत अछि—कथात्मक रूपसँ अपन काजक परिणामक भार उठाएब। बाह्य शारीरिक श्रम आ आन्तरिक अपराधबोधक सम्भावना संग राखल गेल अछि।

अन्त्येष्टिक बाद किसान इलाजक फीस माँगैत अछि। एहि मांगसँ संवेदनहीनता आ गलत आत्ममूल्याङ्कन स्पष्ट होइत अछि। परिवारजन क्रोधित भऽ ओकरा पीटि भगबैत छथि। गाथा एहि प्रतिक्रियाकेँ हास्यास्पद प्रतिफल बनबैत अछि, मुदा सामाजिक जवाबदेहीक न्यायपूर्ण प्रक्रिया—घटनाक जाँच, पीड़ित परिवारक सहायता, आगाँ उपचारक नामपर खतरा रोकबाक उपाय—पाठमे विकसित नहि।

अध्याय ११ : दोसर गामक बाट

गलतीक नबोध आ खतराक पुनरावृत्ति

पीटाइ खा किसान दोसर गाम दिस भागैत अछि। ओ पहिल मृत्यु सँ चिकित्सकीय अयोग्यताक शिक्षा नहि लैत, उलटे फेर ‘डॉक्टर’ होएबाक घोषणा करैत अछि। एहि चरित्र-गतिक क्रूर विडम्बना अछि : दण्ड भेटल, मुदा दोषक कारणपर विचार नहि भेल।

नव गामक एक व्यक्ति अपना बीमार बाबूजीक उपचार लेल किसानकेँ बजबैत अछि। एहि क्षण कथा पुनरावृत्तिक डर उत्पन्न करैत अछि—पहिल दुर्घटना फेर होएत कि नहि? नायकक आत्मविश्वास घटल नहि, केवल लहास उठएबाक स्मृति ओकरा सतबैत अछि। आब कृतिक हास्य भयमिश्रित बनैत अछि।

अध्याय १२ : अन्तिम शर्त

सीखबाक गलती : जोखिम नहि, जिम्मेदारीक बोझ सँ पलायन

किसान नव रोगी देखबाक स्वीकृति दैत अछि, मुदा एक शर्त रखैत अछि : ककरो मृत्यु भेलापर ओकरा लहासक कान्ह नहि देबय पड़त। ई उत्तर कृतिक सर्वाधिक तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। ओ पहिल अनुभवक वास्तविक शिक्षा—अनधिकृत उपचार नहि करब—नहि ग्रहण कएलक। ओकरा केवल पछिला अन्त्येष्टिमे भेल शारीरिक कष्ट याद अछि।

व्यंग्यक लक्ष्य एक व्यक्तिक सामान्य बुद्धिक कमी सँ बेसी गलत प्रकारेँ सीखब अछि। तर्कक साधारण रचना बुझल गेल तऽ अनुभव बदलाव करैत; एतय बाह्य दण्डक सतही पक्ष सीखल गेल। लोकहास्यक अल्पवाक्यक मारकता एहि असमानतामे अछि : जीवनक नाश छोट प्रसङ्ग, कान्ह पर भार नब स्वीकारब मुख्य नियम बनि गेल।

अध्याय १३ : बा-ओमक उपसंहार

बच्चाक हँसी सँ अनुभवक अर्थ धरि

बा ओमक सोझाँ कथा समाप्त करैत छथि। ओम हँसि उठैत अछि आ कथित डॉक्टरक मूर्खतापर टिप्पणी करैत अछि। बा कहैत छथि जे हास्यक पाछाँ गम्भीर पाठ अछि—

अपना दिस सेहो एहन अनुकरणक प्रवृत्ति होइ सकैत अछि। एहि कारण मूल कथा श्रोता लेल केवल हास्यक मनोरंजन नहि, आत्मपरीक्षणक अवसर बनैत अछि।

उपसंहारमे बाएक अपन परिहास आ ओमक कौतूहल संलग्न अछि। ई घरेलू कथनपरम्पराक विशेषता अछि : बड़ोंक ज्ञान उपदेशक कठोर भाषासँ नहि, कहानी आ स्नेहपूर्ण संवादसँ देल जाइत अछि। मुदा बालसाहित्यक जिम्मेदारी ईहो अछि जे पीड़ित वृद्धाक मृत्युकेँ हँसीक सजावट नहि बनाओल जाए। वास्तविक अर्थ सीखब, योग्य व्यक्तिसँ सहायता लेब आ असमर्थित दावापर प्रश्न करब कृतिक प्रासंगिक शिक्षा अछि।

सम्पूर्ण कृतिक समेकित आधुनिक साहित्यिक मूल्याङ्कन

दू कथनस्तर : लोकहास्य आ पीढ़ीक संवाद

‘ऊँटनी’मे मुख्य घटना स्वतन्त्र रूपमे नहि, बा द्वारा ओम कैँ सुनाओल कथा रूपमे उपस्थित अछि। एहि कथन–भीतर–कथन युक्तिसँ एक बखत किसानक अनुकरणमूलक गलती नाटक बनैत अछि, दोसर बखत बा ओमकेँ ओहि घटनाक अर्थ बुझबैत छथि। ई द्विस्तरीय रचनामे बालश्रोता प्रश्न करबाक संभावना पबैत अछि। हँसीक उद्देश्य निरक्षर अथवा ग्रामीण लोकक अपमान होएबाक बदला प्रशिक्षण–बोधबिना अधिकारक दावा करबाक आलोचना बनि सकैत अछि।

असमर्थित समानता आ गलत अनुमान

ऊँटनीक एक विशेष घटना सँ किसान एक नकली ‘चिकित्सकीय विधि’ अनुमान करैत अछि। पशुक गरदनि पर पात अँटकल छल, मुदा मनुष्य वृद्धाक बीमारी कोन कारणसँ छल, से कृति नहि बतबैत। एहि दूनू स्थितिक बीच कोनो प्रामाणिक समान हेतु स्थापित नहि। नकल करनिहार केवल बाह्य प्रश्न आ क्रिया दोहरबैत अछि। नव्य-न्यायक तर्कभाषामे एहि उदाहरणकेँ हेतु–साध्यक अपर्याप्त संबंध तथा अनुपयुक्त दृष्टान्तक त्रुटि कहि बुझल जा सकैत अछि; ई औपचारिक न्यायशास्त्रीय ग्रन्थक प्रत्यक्ष उद्धरण नहि, आधुनिक आलोचनात्मक तुलना अछि।

प्रमाणक अधिकार आ चिकित्सा-नामक जोखिम

बटोही एक घटना मे सहायता करैत अछि आ अपना डॉक्टर कहैत अछि, मुदा ओकर योग्यता कृति जाँचैत नहि। किसान एहि दावेकेँ ज्ञानक शॉर्टकट मानैत अछि, आ स्वयं सेहो डॉक्टर कहि गाम पहुँचैत अछि। एहि प्रकार ‘डॉक्टर’ एक सामाजिक विश्वास–शब्द बनैत अछि, जकर अर्थ पेशागत प्रमाणक बदला निर्भीक घोषणा सँ भ्रामक रूप पबैत अछि। चिकित्सकीय कुशलता प्रशिक्षण, प्रसंगानुकूल जाँच, रोगीक सुरक्षा आ जिम्मेदारीसँ जुड़ल अछि; बाहरी अभिनय द्वारा एकरा प्राप्त नहि कएल जा सकैत।

रोगी व्यक्तिक अनुपस्थित आवाज

बीमार वृद्धा कथा मे प्रायः निष्क्रिय दृश्य-पात्र छथि। हुनकर बीमारी, कथन, सहमति अथवा प्राणरक्षाक वैकल्पिक प्रयास विस्तारसँ नहि प्रस्तुत। परिवारजन प्रश्नक असंगति अनुभव करैतहुँ दबावमे ‘हाँ’ कहैत छथि। मृत्यु पछाँ हिंसा पर क्रोध व्यक्त होइत अछि, मुदा वृद्धाक स्वतंत्र मानवीय जीवनक इतिहास अनुपस्थित अछि। आधुनिक पठनमे

हास्यक केन्द्रसँ पीड़ित व्यक्तिक गरिमाकेँ बाहर नहि करब कृतिक नैतिक जटिलता खोलैत अछि।

अर्थी, फीस आ नैतिक उत्तरदायित्व

लहासक कान्हा उठब कृतिक व्यंग्यात्मक वस्तु बनैत अछि। किसान अपन कर्मक विनाशकारी परिणामक साक्षी बनैत, मुदा फीस माँगब बतबैत अछि जे ओकरा अजस्र आत्मविश्वास सँ मुक्त नहि कएल गेल। एक घटना मे उत्तरदायित्वक मूल विषय प्राणहानि अछि; किसान केवल शारीरिक दण्ड आ बोझ सँ बचबाक नियम सीखैत अछि। आखिरी शर्त एहि विचलन केँ लघु हास्यक कठोर कटाक्ष बनबैत अछि।

बालसाहित्यमे करुणा आ हास्यक अनुपात

एक व्यक्ति केँ मूर्ख कहि हँसब सहज पाठकीय प्रतिक्रिया भऽ सकैत अछि, मुदा वृद्धाक मृत्यु कृतिक हास्य केँ करुण–वीभत्स दिश मोड़ैत अछि। बालक ओम उत्साहसँ हास्य चाहैत छल; बा कथा सुनाओलाक बाद मर्म बुझबैत छथि। एहि संरचनामे जिम्मेदार पाठक केँ मरनिहार व्यक्ति, हुनकर परिवार आ भ्रामक उपचारक पुनरावृत्ति सभ पर ध्यान देबाक आवश्यकता अछि। ‘नकल नहि करब’सँ अधिक सूक्ष्म शिक्षा अछि—संदर्भ बदलला पर पुरान उत्तर स्वतः सत्य नहि रहैत।

दृश्यरचना आ पुनरावर्तन

तेरह अध्यायक छब्बीस चित्र-संकेत अछि। खेतमे ऊँटनीक बेचैनी, बटोहीक प्रश्न, सफल देखाएल उपाय, नकली डॉक्टरक प्रचार, वृद्धाक दुखान्त, अर्थीक शोक आ अगिला गाममे दोहरायल प्रचार—ई क्रम हास्यसँ त्रासदी आ फेर व्यंग्यक चक्र रचैत अछि। प्रश्नक दहिना–बाम दिशा, पात खएबाक पूछताछ आ गरदनिपर प्रहारक बाह्य पुनरावर्तन कथाक मुख्य शिल्प अछि; एकर नैतिक अर्थ सन्दर्भपर निर्भर ज्ञानक असमानता होइत अछि।

अन्तिम साहित्यिक निर्णय

‘ऊँटनी’ मैथिली लोकहास्यक एक असाधारण कृति अछि, कारण हास्यक परिणाम वास्तविक कथाभित्र एक वृद्धाक मृत्यु होइत अछि। एही मोड़सँ कृति सिर्फ बेबुझ नकलक विनोद नहि, बिना दक्षता उपचार करबाक दम्भ आ सामाजिक विश्वासक दुरुपयोगक चेतावनी बनि उठैत अछि। बा–ओमक उपसंहार पाठक केँ स्वबुद्धिक जाँच दिस अनैत अछि। कृतिक साहित्यिक शक्ति आवर्तन, असंगत प्रश्न आ अन्तिम आत्मविरोधी शर्त अछि; नैतिक सीमा मृतकाक व्यक्तित्वक अपर्याप्त विस्तार आ प्राणहानिक बाद पूर्ण जवाबदेही नहि देखाएब। उचित आलोचनात्मक पठनमे मानवीय गरिमा, योग्यता आ विवेक हँसी सँ ऊपर रहैत अछि।

सम्पूर्ण ग्राफिक संकलन : अन्तरकृति-विमर्श

सैंतीस कथा एकहि विधाक सरल उदाहरण नहि। किछु लोकदेवता आ भक्तिक गाथा, किछु वीरकथा, किछु स्त्रीक सामाजिक संघर्ष, किछु पशु–मानव परिकथा आ किछु व्यंग्य–हास्यरचना छथि। प्रारम्भिक ‘तरहड़िमे परीलोक’ सँ अन्तिम ‘ऊँटनी’ धरि स्वप्न,

शाप, वरदान, पानि, भूमि, विवाह, सामाजिक सम्मान आ न्याय निरन्तर रूप बदलिए उपस्थित छथि। ‘उगना’मे सेवकपर हिंसा भावात्मक दुखान्त उत्पन्न करैत अछि; ‘ऊँटनी’मे रोगीपर हिंसा तर्कशून्य नकलक कारण प्राणहानि बनैत अछि। ई दू अन्तिम कृतिमे व्यक्ति–गरिमा, अनुचित अधिकार आ परिणामबोधक साझा विमर्श अछि।

मुदा प्रत्येक कृतिक पृथक् विश्लेषणकेँ एतय समेटि एक साधारण नीति बना देब उचित नहि। सैंतीस समीक्षाक अन्तिम प्रकाशनग्रन्थ तैयार करबाक समय मूल उपन्याससभक प्रमाण-आधारित घटनाक सारणी, क्रमागत अनुक्रमा, वास्तविक पृष्ठाङ्क आ विधागत वर्गीकरणक फेर जाँच जरूरी होयत। एहि खण्डक समापन मात्र संकलनक सैंतीस कृतिपर अध्यायवार समीक्षा सम्पन्न होएबाक चिह्न अछि; सभ अन्य बाल-किशोर कृतिक समीक्षा समाप्त भऽ गेल—एहन दावा नहि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। ऊँटनी : नकली डॉक्टरक हास्य-कथा। ३७ मैथिली बाल ग्राफिक उपन्यास, विदेह, २०२६, मूल कृति क्रमाङ्क ३७; PDF पृष्ठ १८८५–१९४०।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय · खण्ड २०

बाल आ किशोर उपन्यास · खण्ड १

गजेन्द्र ठाकुरक अड़तीस कृतिक पाठाधारित आधुनिक साहित्यिक समीक्षा — मूल साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक आ समीक्षक आशीष अनचिन्हार।

अनुक्रमणिका

१. कूट नाम : तरहड़िमे गोहि
२. तरहड़िमे परीलोक
३. बाल गुरु
४. दीना-भदरी
५. अमर बाबा
६. मोतीदाइ
७. राजा सलहेस
८. बगियाक गाछ
९. बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल
१०. चौहड़मल आ रेशमा
११. महुआ घटवारिन
१२. छेछन
१३. गरीबन बाबा
१४. वर्णमाला शिक्षा : अंकिता
१५. गांगोदेवीक भगत
१६. मीरांसाहेब
१७. जट-जटिन
१८. लालमैन बाबा
१९. मूँगा आ जालिम सिंह
२०. बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे
२१. बत्तू
२२. भाट-भाटिन
२३. बिहुला
२४. ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा
२५. डाकू रौहिणेय
२६. डोकी डोका
२७. गोनूझा आ दस ठोप बाबा
२८. ज्योति पँजियार
२९. कौवा आ फुद्दी
३०. माधव सिंह आ अमता गाम
३१. मोतीसाएरि
३२. मूर्खाधिराज
३३. नैका बनिजारा
३४. रघुनी मरर
३५. राजा अनसारी
३६. राजा ढोलन
३७. उगना
३८. ऊँटनी

विदेह वेबसाइट

https://www.videha.co.in/

विदेह ई-जर्नल (GitHub)

https://videha-ejournal.github.io/videha/

विदेह · प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर · सर्वाधिकार